

# अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और सी०आई०ए०



दस्तावेजें,  
गवाहियां,  
सबूत

अंतर्राष्ट्रीय  
आतंकवाद  
और सी० आई० ए०

यह पुस्तक संयुक्त राज्य  
अमरीका की सी० आई० ए०  
( सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी )  
के आपराधिक कार्य-कालाप पर  
प्रकाश डालती है। अमरीकी  
कांग्रेस के ऊपरी सदन  
( सीनेट ) की एक प्रवर  
समिति द्वारा प्रदत्त सूचना,  
जांच संबंधी दस्तावेजों और  
मृतपूर्व सी० आई० ए०  
एजेंटों की आत्मस्वीकृतियों  
के आधार पर सोवियत  
प्रकारों और अंतर्राष्ट्रीय  
विषयों के विशेषज्ञों ने  
वर्ष-पूर्व एशिया, लातीनी  
अमरीका, मध्य-पूर्व,  
अफ्रीका और पश्चिमी यूरोप  
के देशों में इस क्रिया  
एजेंसी की ध्वंसात्मक-  
व्यवस्थामय कार्यवाहियों  
का वर्णन किया है।

अंतर्राष्ट्रीय  
आतंकवाद  
और  
सी.आई.ए.

दस्तावेज़ें, गवाहियां, सबूत



प्रगति प्रकाशन, मास्को



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

५ ई. गली ज़ादो रोड, नई दिल्ली-११००४३

अनुवादक: नरेश बेदी

संपादक: बुद्धिप्रसाद भट्ट

लेखकगण: व० सिरोकोम्स्की, व० स्वेतोव, ओ० तारिन,  
इ० तिमोफ़ेयेव, व० असोयान, ल० ज़मोइस्की

Международный терроризм и ЦРУ  
ДОКУМЕНТЫ, СВИДЕТЕЛЬСТВА, ФАКТЫ  
На языке хинди

International Terrorism and CIA  
DOCUMENTS, EVIDENCE, FACTS  
in Hindi

© Издательство „Прогресс“, 1983

© हिंदी अनुबाद, प्रगति प्रकाशन, १९८५

सोवियत संघ में मुद्रित

M 0800000000-152  
014(01)-85 362-85

अनुक्रमणिका

व० सिरोकोम्स्की। 'मेड इन यू० एस० ए०' . . .	५
व० स्वेतोव, ओ० तारिन। हिंसा और आतंक का सिंडीकेट . . . . .	३१
इ० तिमोफ़ेयेव। घट्टयंत्रों का पुंजोत्पादन . . . .	२१४
व० असोयान। अफ़्रीका में नये-नये राज खुलते हैं .	२५८
ल० ज़मोयस्की। मित्र-देशों के ही खिलाफ . . . .	३०८
निष्कर्ष . . . . .	३६२

पश्चिमी प्रचार के “सोवियत सैनिक खतरे” के मिथक को इस सदी का सबसे बड़ा झूठ ठीक ही कहा जाता है। सचमुच, इससे ज्यादा बेहूदा बात को सोचना भी मुश्किल होगा कि जिस देश का सबसे पहला ही विधायी कार्य शांति के बारे में आज्ञाप्ति रहा हो, जिसका आदर्श निःशस्त्रीकरण हो, जो लगातार नये-नये शांति-प्रस्ताव सामने रखता हो और एकपक्षीय अस्व-परिसीमन और कटौती का उदाहरण प्रस्तुत करता हो, उसी देश के विकट आक्रमकता का आरोप लगाया जाये। इसके बावजूद पश्चिमी प्रचार-साधन, विद्यालय, पादरी और विश्वविद्यालयों के विद्वान, बल्कि राजनेता तक, हर दिन और हर घड़ी इस मिथक को करोड़ों लोगों की चेतना में रूँसने में लगे रहते हैं।

... इस सिलसिले में मुझे १९७६ की गरमियों में संयुक्त राज्य अमरीका की एक यात्रा की याद आती है। हम लोग, सोवियत पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य, ओहायो, पाइंट-लुकआउट (मिसूरी राज्य) का एक स्कूल देखने गये हुए थे।

इस स्कूल में असहमति की कोई गुंजाइश नहीं है, यहां धर्म ही शिक्षा की आधारसिला है। कॉलिज के



प्रधान, सैम क्लार्क, ने हमसे साफ-साफ कहा: निश्चयात्मक स्वर में कहते हैं—पूरे २५० लाख, न कम, न ज्यादा।

“आपके देश के प्रति हम लोग पूर्वाग्रह रखते हैं और अपने छात्रों को उसके अनुसार ही पढ़ाते हैं। आपकी व्यवस्था के बारे में हमारा अपना दृष्टिकोण है...”

कोई बात नहीं, सोवियत लोगों का भी “मुक्त उद्यम”—पूँजीवादी शोषण और सामाजिक असमानता की व्यवस्था के बारे में अपना ही नज़रिया है। लेकिन ऐसा एक भी सोवियत स्कूल या कॉलेज नहीं है कि जहाँ ऐसी पुस्तिकाएँ या परचियाँ देखी जा सकें, जैसी हमने इस कॉलेज के गिरजाघर में देखी थीं। सोवियत छात्रों में अमरीका जनता के प्रति वैर या विद्वेष उपजानेवाली कोई पुस्तक-पुस्तिका या परची देखने को भी नहीं मिलेगी।

“यह हमारे यहाँ भी हो सकता है”, कॉलेज के गिरजाघर में देखी गयी एक पुस्तिका का यह भयावह शीर्षक था। छात्रों और भक्त-समुदाय के अन्य सदस्यों को उसमें क्या बतलाया गया है? “कम्युनिज्म अब भी दुनिया को जीतने का इरादा रखता है और उसके लिए निरंतर प्रयास किये जा रहा है”, और रूसी कहते हैं कि “जब हम संयुक्त राज्य अमरीका को जीत लेंगे, ... तो छः करोड़ अमरीकियों का सफाया करना होगा...” और इसके बाद गिरजाघरों और दीनदारों पर नाबिल होनेवाली विभीषिकाओं की एक पूरी सूची थी और किन्हीं जॉन नोबल के उद्धरण थे, जिनमें बतलाया गया है कि “लौह आबरण के पीछे २५० लाख लोग दास शिविरों में हैं”। श्री नोबल एकदम

अंत में दीनदारों की सलत भर्त्सना है—वे लोग भौतिक तुष्टियों के बारे में अत्यधिक सोचते हैं और चर्च की परवाह करना नहीं चाहते। निष्कर्ष एकदम व्यावहारिक है—अगर आप नहीं चाहते कि अमरीका को रूसी जीत लें और देश कम्युनिस्टों के नियंत्रण में चला जाये, तो चर्च को दान दीजिये। चर्च भी अपना “बिज़नेस” करता है, मगर इस मामले में नफ़रत और खौफ़ का।

यह कोई किसी दो टके के धर्मांध का प्रलाप नहीं है। पुस्तिका को—और यह जानकारी, मानो विनम्रता दिखाते हुए, छोटे अक्षरों में दी गयी है—अमरीकी जीवन प्रणाली की बेहतर समझ फैलाने के लिए वाशिंगटन सम्मान पदक प्रदान किया गया है। बेचारी अमरीकी प्रणाली! और ओज़ार्न्स स्कूल के बेचारे छात्र...

न्यूयार्क में मेरी प्रोफ़ेसर मार्शल जुल्मान से भेंट हुई, जो उस समय कोलंबिया विश्वविद्यालय के रूसी संस्थान के प्रधान थे। इस विख्यात सोवियतविद ने तनिक संकोचपूर्वक कहा: “अगर आप किसी आम आदमी से, मसलन किसी टैक्सी ड्राइवर से सोवियत संघ के बारे में पूछें, तो वह बहुत करके वही दुहरायेगा, जो उसने कहीं पढ़ा या सुना है—रूस की क्रांती ताक़त बहुत ही ज्यादा है और वहाँ आजादी बहुत ही कम है। इसी तरह की कोई बात...”

तब से कितने ही साल गुजर चुके हैं। सोवियत आतंकवाद को बढ़ावा, समर्थन और विस्तार प्राप्त संघ शांति के प्रति अपने समर्पण को अपने कार्यों द्वारा होता है...

बारंबार प्रदर्शित कर चुका है और वह शांतिपूर्ण सह-विदेश विभाग (मंत्रालय) के आधिकारिक प्रवक्ता अस्तित्व और परस्पर लाभदायी सहयोग के आधार पर द्वारा लगाये गये आरोप भी वेबुनियाद और अविश्व-वर्जुआ राज्यों के साथ संबंध विकसित करने की अपनी सनीय मिट्ट हुए—उन्होंने कहा था कि सोवियत संघ आकांक्षा और दक्षता को भी दिखा चुका है। लेकिन फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन को "आतंकवादी कार्रवाइयों" "आम" अमरीकी ने अब भी सोवियत "सतरे" के लिए हथियार मुहैया करता है, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और "कम्युनिस्ट घटुयंत्र" के बारे में ही पढ़ा और का समर्थन करने के लिए क्यूबा और लीबिया जैसे सुना है। अकेला फर्क सिर्फ यह है कि अब, नवें देशों का उपयोग करता है, तथाकथित राष्ट्रीय मुक्ति दशक के आरंभ में, इस प्रचार का सुर न केवल जनमत संघर्षों को बढ़ावा देता है, आदि।

यह अभियान जोर पकड़ता गया। अमरीकी सीनेट की फिर से स्थापित सुरक्षा तथा आतंकवाद विषयक उपसमिति के सामने सुनवाईयां शुरू हो गयीं—इस उपसमिति का कार्यभार था रूसियों के "विश्वव्यापी आतंकवादी जाल" का परदाफाश करना। लेकिन सारे जतन करके भी सी० आई० ए० (सैटुल इंटीलीजेंस एजेंसी—अमरीकी सरकार की केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी) आतंकवाद के साथ सोवियत संघ को जोड़नेवाला कोई भी सबूत न जुटा सकी। इस अभियान के लिए कोरे प्रचार के शोर-शराबे की नहीं, ठोस सबूत की जरूरत थी और यह सबूत कहीं था ही नहीं।

वाशिंगटन के मौजूदा सोवियतविरोधी अभियान की अकेली "नीतिकता" यह है कि इस बार "कम्युनिस्ट घटुयंत्र" को "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद" के रूप में पेश किया जा रहा है। इस अभियान का समारंभ भूतपूर्व विदेश मंत्री एलेक्जेंडर हेग ने २८ जनवरी, १९८१ को किया था। उन्होंने एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि सोवियत संघ आज ऐसी नीति, ऐसे कार्यक्रमों पर अमल कर रहा है, जिनसे अंतर्राष्ट्रीय

इस नाकामी की सफाई वाशिंगटन ने यह कहकर देने की कोशिश की कि अमरीकी गुप्तचरों के हाथ बंधे हुए हैं, जिसके लिए अमरीकी कांग्रेस (संसद) दोषी है, जिसने सी० आई० ए० के कुत्सित कार्यों

की तहकीकात के बाद उसकी कार्यवाहियों पर बर्दिश परदे के पीछे संचालक" घोषित कर दिया गया। लगा दी है। बस, इन बंधनों को दूर भर कर देने कुछ अमरीकी अखबारों ने तो एक तुर्क नवप्रशंसित की जरूरत है कि किसियों का परवाफा हो जायेगा द्वारा पोष की हत्या का प्रयास भी "मास्को के हितों" वास्तव में ये बंधन तो दिखावा मात्र थे। अब "आतंक-के अनुरूप घोषित करने में देर नहीं की। बाद का ज़्यादा कारगर ढंग से सामना करने" के नाम सोवियत संघ ने सभी सुननेवालों की सुनाकर कहा पर व्यवहार में राष्ट्रपति रैसन ने उन्हें हटा भी दिया कि वह सिद्धांत रूप में सरकारों के तथा उनके प्रति- है। सबूत फिर भी नहीं मिल पाये हैं। लेकिन वाशिंगटन निधियों के राजनयिक कार्य-कलाप, अंतर्राष्ट्रीय संचार में कोई घबड़ाहट नहीं है। उसका सोवियतविरोधी और सामान्य अंतर्राष्ट्रीय संपर्कों तथा समागम में बाधा प्रचार पहले की तरह ही जारी है।

अभियान के संघटनकर्ताओं ने अपने आक्रमण है और हिंसा के ऐसे सभी कार्यों के विरुद्ध सामने आता की घड़ी को चुनते समय अमरीकी और विश्व जनमत है, जो किसी सकारात्मक लक्ष्य की सिद्धि में सहायक को ध्यान में रखा। उस समय अतिवादी दक्षिणपंथी नहीं बनते और जिनमें निरर्थक जाने जाती है। लेकिन और अतिवादी वामपंथी तत्वों की आतंकवादी कार्यवाहियाँ पश्चिमी प्रचार, जो सामान्य रूप में इतना मुखर है, पश्चिमी यूरोप और खासकर इटली को हिला रही है। इस वक्तव्य पर या तो चुपी साध जाता है, या उसे धिक्कृत करता है और करोड़ों लोगों को बहुकाकर उनके दिमागों में यही विश्वास जमाने का प्रयत्न करता है कि मुसुलु क्म्युनिस्ट विचारधारा स्वभाव से ही "आतंकवाद का दर्शन" है, बोल्शेविकों ने आतंक-वाद की बदीलत ही सत्ता प्राप्त की थी और सोवियत संघ "बस दिखावे के लिए" ही आतंकवाद की निंदा करता है, क्योंकि वह तनाव शिथिलन को किसी भी कीमत पर इसीलिए बनाये रखना चाहता है कि वह उसके हित में है (नया तनाव शिथिलन अन्य राष्ट्रों के हित में नहीं है?)। सबूत कोई भी नहीं दिया जाता, मगर इसकी वजह भी बहुत साफ है— मास्को बड़ा धूर्त है, वह बड़े गुप्त रूप में काम करता है और

सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों को पश्चिमी जर्मनी के अराजकतावादी बादर-माइनहाँफ़ शहरी छपामार गिरोह से लेकर इतालवी लाल बिग्रेड तक लगभग सारे ही आतंकवादी दलों का

मुरागों को बड़ी होशियारी से छिपा देता है।

जहाँ "मानवाधिकारों की रक्षा" के पाखंडपूर्ण अभियान के दौरान वाशिंगटन ने कम से कम वस्तुपरकता का तो आभास देने की कोशिश की थी और चिली में बर्बर शासन की, दक्षिण कोरिया में दमन की और कुछ अन्य "स्वतंत्र राष्ट्रों" में व्यापक उत्पीड़न की अनिच्छापूर्वक निंदा तक की थी, वहाँ इन बाहरी नफ़ासतों को इस बार बिलकुल आरंभ से ही तिलांजलि दे दी गयी—सारा दोष पूरी तरह से, शुरू से लेकर आखिर तक सोवियतों और उनके मित्र देशों के मध्ये मढ़ दिया गया और सीधे-सीधे इस आदिम दलील के साथ कि वे तो वास्तुदा "कम्युनिस्ट" हैं। निर्दोष लोगों की जान लेनेवाले बमकांडों के दोषी वे हैं और हवाई जहाजों को हार्डजैक करने और लोगों को बंधक बनाने के दोषी भी वे ही हैं। वाशिंगटन के "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्षकर्ताओं" का सर्वोपरि लक्ष्य सोवियत संघ को दुनिया की आंखों में गिराना, समाजवादी समुदाय और सभी वामपंथीय शक्तियों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध को तेज करना और लोगों को समाजवाद से विमुख करना है।

दूसरा लक्ष्य राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को लांछित करना है। इसमें भी सोवियत संघ को ही मुख्य अपराधी की तरह पेश किया जाता है। मास्को और उसके "अनुचरों" द्वारा "ध्वंसकार्य" को ही सारे क्रांतिकारी आंदोलनों का कारण बताया जाता है। जैसा कि रॉनाल्ड रैगन ने १९८० में, ह्वाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन)

में पहुंचने के भी पहले कहा था: "किसी भी दूर-दराज संकट स्थल की गहराई में चले जाइये—उसकी जड़ में आपको सोवियत संघ ही मिलेगा..." ('न्यू रिपब्लिक', ५ अप्रैल, १९८०)।

मतलब यह कि राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक उद्धार के लिए संघर्ष आंतरिक कारणों, ऐतिहासिक विकास की मांगों अथवा पिछड़ेपन, शरीबी और पराधीनता पर पार पाने की आकांक्षा से नहीं उत्पन्न होता है, बल्कि विदेश से सोवियतों द्वारा, जैसे कि रॉनाल्ड रैगन कहते हैं, "अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं" के लिए प्रेरित है। अतः सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों द्वारा राष्ट्रीय स्वतंत्रतासंग्रामियों को दी जानेवाली सहायता "आतंकवाद के समर्थन" के अलावा और कुछ नहीं है। और यह सब "संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय हितों" के लिए गंभीर खतरा है।

और इसलिए संयुक्त राज्य अमेरिका को किसी भी साधन का उपयोग करने का "अधिकार" है। उसे गांवों को उनमें रहनेवाले शांत निवासियों सहित भस्मीभूत कर देने का, अव्यक्त सरकारों को उलट देने और अवज्ञाकारी राजनीतिक कार्यकर्ताओं और राजनीतिज्ञों की हत्या करने का "अधिकार" है; पूर्णतया शस्त्रसज्जित होने, "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से लड़ने" के बहाने की आड़ में हज़ारों लेबनानी और फिलिस्तीनी बूढ़ों, बालकों और स्त्रियों की कत्ल

करनेवाले इसराएली आकांक्षाओं की सर्वतोमुखी सहायता देने का "अधिकार" है; नसलवादी दक्षिण अफ्रीका के साथ सांठ-गांठ करने और अफ्रीका के दक्षिण में स्वाधीनता आंदोलनों को कुचलने में उसकी मदद करने का "अधिकार" है; निकारागुआ और सल्वादोर के देशभक्तों के खिलाफ प्रचंड और खुला युद्ध चलाने, अनेक लातीनी अमरीकी देशों को सुन में डुबानेवाली तानाशाहियों को वित्तीय सहायता देने और शस्त्रसज्जित करने का "अधिकार" है।

"आतंकवाद के जनस्थलों" की श्रेणी में वाशिंगटन सर्वोपरि फ़िलिस्तीनी मुक्ति संगठन, लीबिया, निकारागुआ के सैदीनिस्टो नेतृत्व और स्वापो (दक्षिण-पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन) के नाम लेता है। लेकिन वास्तव में अमरीकी राजनीतिज्ञों ने जनगण की अवहेलना करते हुए और उनके अधिकारों तथा आकांक्षाओं का तिरस्कार करते हुए सारे ही राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर यह लेबल चस्पा कर दिया है।

इन आंदोलनों के प्रति वाशिंगटन का रवैया रैगन प्रशासन के अधीन स्पष्टतः बदल गया है। आठवें दशक के उत्तरार्ध में, अपनी विपतनाभी मुहिमबाजी के डेर होने के बाद, वाशिंगटन ने विकासमान देशों में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को सीधे ही न नकारने, बल्कि उसे संयुक्त राज्य अमरीका को स्वीकार्य दिशा में मोड़ने का "तत्कालीन" विद्यमान की कोशिश की थी। लेकिन ईरान और निकारागुआ में क्रांतियों ने इस "विभेदित नीति" का बंटाधार कर दिया,

जिसके बाद "बाजों" (युयुतुओं) ने प्रशासन से सल्ला के साथ "तीसरी दुनिया" में किसी भी प्रगतिशील परिवर्तन का प्रतिरोध करने के लिए कड़ी से कड़ी विदेश नीति अपनाने की मांग की। और यही राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को आतंकवादी और अवैध कहकर बदनाम करने, उन्हें आतंकित करने और कुचलने के प्रचंड अभियान का कारण है। इसका लक्ष्य सोवियत संघ पर उसे अपनी नीति को बदलने और राष्ट्रीय मुक्ति के व्यावसंगत संघर्ष को अपने नैतिक तथा भौतिक समर्थन को घटाने के लिए विवश करने की आशा में दबाव डालने की कोशिश भी है।

उन देशों के खिलाफ भी मनोवैज्ञानिक युद्ध अचानक तेज कर दिया गया, जिन पर सोवियत संघ के "छूट-भेदे" और "एजेंट" होने का ठप्पा लगाया जाता है। यही नहीं, कुछ पश्चिमी यूरोपीय देशों तक को हमले का लक्ष्य बनाया गया, जिन पर लाभदायी व्यापारिक सौदों को हाथ से निकल जाने के डर से "अंतराष्ट्रीय आतंकवाद को प्रोत्साहन देने में रूस की कूटिल भूमिका" पर जानबूझकर परदा डालने का आरोप लगाया जाता था।

संक्षेप में अंतराष्ट्रीय आतंकवाद और उसके साथ सोवियत संघ के "संबंधों" के बारे में इस अभियान का मुख्य लक्ष्य एकदम प्रत्यक्ष है—वर्तमान अमरीकी प्रशासन द्वारा तनाव शिथिलन के परित्याग और शीत-युद्ध की तरफ़, विश्व शक्ति संतुलन को साम्राज्यवाद के पक्ष में बदलने और विकासमान देशों में प्रगतिशील



रूपांतरणों को रोकने के लिए सोवियत संघ पर सैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करने की तरफ प्रत्यावर्तन का औचित्य-स्थापन और समर्थन करना। लक्ष्य "सोवियत सतरे और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के सतरे को कम करके आंकनेवाले" जनमत को बदलना, इन सारे अदूरदर्शी उदारों और युद्धविरोधी आंदोलनकारियों की ज़बान बंद करना और इस तरह से संयुक्त राज्य अमरीका की आक्रामक विदेश नीति के लिए व्यापक समर्थन प्राप्त करना भी है।

यहां भी तफ़रत और खौफ़ के धंधे से लाभ उठाने की ही बात है। बिल्कुल ओज़ार्न्स गिरजाघर के कठमुल्ला ज्ञानविरोधियों की ही तरह अमरीकी राजनेता अमरीकियों से अपने खोसे खाली करने की अपील कर रहे हैं—हथियारों की अभूतपूर्व होड़ के लिए, बख़्ती हुई सेना के लिए, नये प्रौद्योगिकियों के लिए, गुप्तचर सेवाओं के लिए और घोरतम प्रतिक्रियावादी शासनों को करोड़ों डालर की आर्थिक सहायता देने के लिए। अगर नहीं चाहते कि सोवियत अमरीका को जीत लें और कम्युनिस्ट सारी दुनिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें, तो खोसे खाली करो।

इस कुत्सापूर्ण शोर-शराबे का एक लक्ष्य और है—दोष दूसरे के मथे मड़ना। सामान्य रूप में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या है या नहीं? निस्संदेह है। आतंकवाद की दो किस्में हैं—सरकार और उसके अधिकारियों का अथवा सरकार द्वारा समर्थित आतंकवाद, और प्राइवेट व्यक्तियों या उनके संगठनों का

आतंकवाद। दोनों ही प्रकार के आतंकवाद निन्दनीय हैं और अंतर्राष्ट्रीय अपराध हैं। लेकिन फिर भी पहले प्रकार का आतंकवाद ज्यादा खतरनाक है और दावे के साथ यह कहने का हर कारण है कि राजकीय आतंकवाद सासे बड़े अरसे से अमरीकी साम्राज्यवाद की विदेश नीति का एक अंग बन चुका है, जिसने जगत बानेदार की भूमिका ग्रहण कर ली है। राजकीय आतंकवाद क्रांतिकारी तथा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के विरुद्ध उसके संघर्ष के लगभग मुख्य साधन का अधिकाधिक रूप ग्रहण करता जा रहा है। साम्राज्यवाद के पास स्वाधीनता तथा सामाजिक प्रगति का मुक़ाबला करने के लिए कोई राजनीतिक, वैचारिक अथवा आत्मिक मूल्य नहीं हैं, उसके पास राष्ट्रों को आकर्षित करने के लिए कुछ भी नहीं है। यही कारण है कि वह हिंसा पर ही सब दांव लगाता है और आर्थिक प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयों, राजनीतिक हत्याओं, अंतर्ध्वंस और बलात सत्ता-परिवर्तनों द्वारा औरों पर अपनी इच्छा को थोपता है। अमरीकी केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी (सी० आई० ए०) क्रांतिकारी तथा प्रगतिशील गतिियों के विरुद्ध इस ध्वंसकार्य में मुख्य हथियार का काम करती है।

लेकिन हम वाशिंगटन की राजनीतिज्ञों का अनुकरण नहीं करेंगे, जो प्रमाण की अवहेलना करते हैं। आइये, कम से कम बिकासमान देशों में सी० आई० ए० की कार्रवाइयों के प्रमाण पर तज़र डालें।

जनवरी, १९८१ तक अखंडनीय रूप में प्रमाणित

हो चुका था कि निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय अपराध सी० आई० ए० की सहभागिता से या उसके निदेशन में किये गये थे : ईरान में राज्य-परिवर्तन और मुस्लिम सरकार का उलटा जाना (१९५३); ग्वाटेमाला में सैन्य राज्य-परिवर्तन और आर्बेस सरकार का उलटा जाना (१९५४); मिस्र के राष्ट्रपति नासिर की हत्या का षड्यंत्र (१९५८); सीलोन (अब श्रीलंका) के प्रधान मंत्री सीलोमन भंडारनायक की हत्या (१९५६); भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के विरुद्ध षड्यंत्र; कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (अब जाइर) के प्रधान मंत्री पनीस लुमुंबा की हत्या; डोमिनिकन गणतंत्र में अत्याचार राज्य-परिवर्तन (१९६१); मोरिशस की मुक्ति मोरचा (फेलीप्स) के अध्यक्ष एडुआर्ड मोंदलाने की हत्या (१९६६); गिनी तथा केप वर्दे द्वीप समूह की अफ्रीकी स्वतंत्रता पार्टी के महासचिव आमीलकार कबाल की हत्या (१९७३); चिली में जन एकता सरकार का उलटा जाना और राष्ट्रपति सल्वादोर अल्वारेडे की हत्या (१९७३); बांग्लादेश के पहले राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या (१९७५); कांगो लोक गणराज्य के राष्ट्रपति एम० मूआबी की हत्या (१९७७)।

बेशक, यह पूरी सूची नहीं है—इसमें और नाम भी जोड़े जा सकते हैं, लेकिन अगर विश्व जनमत को ज्ञात सारी ही सी० आई० ए० कार्रवाइयों का भी उल्लेख कर दिया जाये, तो भी यह समुद्र में तैरते हिमखंड के दिखायी देनेवाले ऊपरी सिरे के समान

ही होगा, जिसका अधिकांश पानी के नीचे रहता है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा "आतंकवाद के खिलाफ जिहाद" शुरू किये जाने के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके बुनियादी गुणों के अंतर्राष्ट्रीय अपराध किसी भी तरह घट नहीं गये हैं, बल्कि सिर्फ उनका कपटावरण ही बेहतर हो गया है। सी० आई० ए० खुद पीछे रहने और अपने कठपुतलों के जरिए ध्वंसकार्य करने को ही ज्यादा तरजीह दे रही है।

उदाहरण के लिए, १९८१ में दो षड्यंत्रों का भेद खुला था—एक भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ और दूसरा जॉर्जिया के राष्ट्रपति केनेथ काउंडा के विरुद्ध। प्रथमोक्त षड्यंत्र का मुख्य आयोजक आनंद मार्ग था, जो सी० आई० ए० तथा अन्य पश्चिमी गुप्तचर सेवाओं से घनिष्ठतः संबद्ध एक धोर प्रतिक्रियावादी संगठन है; दूसरे षड्यंत्र में सी० आई० ए० की अपने दक्षिण अफ्रीकी समवर्ती संगठन के साथ मिलीभगत थी। सी० आई० ए० और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर सेवा की संश्लेष्य द्वीपसमूह गणराज्य पर भाड़े के सैनिकों के हमले में शिरकत थी; सी० आई० ए० ही प्रीटोरियाई नस्लवादी हुकूमत और उसकी गुप्तचर सेवाओं के साथ घनिष्ठ रूप से मिलकर अंगोली लोक गणराज्य के विरुद्ध पार्थक्यवादी यूनीटा और अंगोली राष्ट्रीय मुक्ति मोरचा (एफ० एन० एल० ए०) गुटों के जरिए ध्वंसकार्य कर रही है।

लेकिन जहाँ सी० आई० ए० अब भी छिपे-छिपे की काम करती है, वहाँ राष्ट्रपति रैगन के सत्ता में आने के बाद से ह्वाइट हाउस अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिकाधिक खुले तौर पर राजकीय आतंकवाद का प्रयोग कर रहा है। लगता है कि प्रभुसत्तासंपन्न राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में अप्रच्छन्न हस्तक्षेप और प्रति-क्रांति के निर्यात की नीति को अमरीकी इतिहास में पहली बार राष्ट्रीय नीति का दर्जा दे दिया गया है।

१९७८ के वसंत में ही सी० आई० ए० ने अफ़ग़ानिस्तान की वैध सरकार के विरुद्ध लड़ने के लिए गहनतम गोपनीयता की अवस्थाओं में तोड़फोड़ करनेवाले गिरोहों को प्रशिक्षित और हथियारबंद करना शुरू कर दिया था। आज रैगन प्रशासन सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय पुनरुत्थान का पथ उन्मुक्त करनेवाली सामंतवादविरोधी राष्ट्रीय जनवादी अफ़ग़ान क्रांति के विरुद्ध अधोषित युद्ध में अपनी सक्रिय सहभागिता को छिपाने की सोचता भी नहीं है। यही नहीं, वाशिंगटन आतंकवादी कार्र-बाइयाँ और तोड़फोड़ करने के लिए मुख्यतः पाकिस्तान से अफ़ग़ानिस्तान में भेजे जानेवाले अफ़ग़ान प्रतिशक्ति-कारी गिरोहों को हथियारबंद करने और आर्थिक सहायता देते रहने के अपने इरादे को खुले तौर पर घोषित करता है।

जैसे ही किसी देश की वैध सरकार अमरीकी प्रशासन की आँखों में "ज्यादा वामपंथी" हो जाती है, जैसे ही वह वैदेशिक मामलों में स्वतंत्रता दिखाने लगती या प्रगतिशील सामाजिक रूपांतरण लाने लगती

है कि वाशिंगटन उसे भिड़क देता है और जन-संचार साधनों द्वारा उस पर हमले शुरू किये जाने का आदेश दे देता है। जैसे ही कहीं साम्राज्यवादविरोधी क्रांति होती है या अत्याचार, गुटतंत्र अथवा सैनिक तानाशाही के खिलाफ़ राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक उद्धार के लिए जन-आंदोलन उभरता है, वाशिंगटन क़ौरन ही "संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा को ख़तरे" की आड़ में कोलाहलपूर्ण अभियान छेड़ देता है।

अगर घुड़की काम नहीं करती, तो वाशिंगटन पहले से प्रत्याभूत कर्ज देने से इन्कार कर देता है, अवज्ञाकारी देश से आपातों में कटौती कर देता है, अथवा साज-सामान, प्रविधि तथा खाद्य सामग्री के निर्यात पर रोक लगा देता है, या राजनीतिक दबाव को बढ़ा देता है। अगर इससे भी वांछित प्रभाव नहीं पैदा हो पाता, तो ज़ैकमेल, धमकियों और सैन्य शक्ति प्रदर्शन का दौर आ जाता है; सी० आई० ए० उस देश में अस्थिरता लाने के लिए अभियान शुरू कर देती है; अवांछित सरकार के खिलाफ़ साजिशें और राजनीतिक नेताओं की हत्याएं करवाती है।

लातीनी अमरीका पर, जिसे किसी कारण से वाशिंगटन अपना अनन्य अधिक्षेत्र समझता है, अपना हुकम चलाने की कोशिशों में अमरीकी साम्राज्यवाद खासकर डीठता दिखलाता है। सल्वादोर और निकारा-गुया के जनगण के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के अपराध इसका एक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।



अमरीकी हथियारों से लैस, अमरीकी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित, अमरीकी "सलाहकारों" द्वारा निदेशित और अमरीकी पैसों पर जीनेवाले प्रतिक्रियावादी सल्वादोरी हुंता (सैनिक शासक गुट) के सैनिक अपनी ही जनता के विरुद्ध जघन्य युद्ध चला रहे हैं। दसियों हजार शांतिकामी निवासी आतंक के राज के शिकार हो चुके हैं, हत्यारों के हाथों मारे जा चुके हैं। उधर वाशिंगटन इस खुनी शासन को अपनी सहायता में निरंतर बुद्धि करता जा रहा है और अधिकाधिक उद्‌डता-पूर्वक देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता जा रहा है।

उन्हें से निकारागुआ के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का एक पूरा सिलसिला शुरू कर दिया गया है। सारा घटनाक्रम वाशिंगटन के क्लाइवी नमूने पर चला है। पहले, क्रांति के प्रौरन बाद, अमरीकी प्रशासन ने निकारागुआ के नये नेताओं के साथ सौदा करने की, उन्हें सही, "पारंपरिक लातीनी अमरीकी" रास्ता दिखाने की पूरी-पूरी कोशिश की। लेकिन इससे कुछ हुआ नहीं—क्रांतिकारी जनता ने स्वयं अपना रास्ता चुनने, निर्धनता और शोषण से मुक्त समाज का निर्माण करने का निश्चय किया। देश के भीतर निकारागुआ अमरीकी इजारों के प्रभुत्व को समाप्त करने की और लक्षित सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण करने लगा; विदेश नीति के क्षेत्र में उसने स्वतंत्र साम्राज्यवाद-विरोधी रवैया अपनाया और क्यूबा के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये।

बस, तभी आसमान फट पड़ा। सत्ताच्युत तानाशाह सामोसा के हजारों ही भूतपूर्व राष्ट्रीय रक्षादलियों (सैनिकों) को गिराहों में जन्दी-जल्दी संगठित किया गया। हांदुरास में स्थित जहाँ से वे लोग छिपकर निकारागुआ में प्रवेश करने, तोड़फोड़ करने और किसानों और शिक्षकों को कत्ल करने लगे। इन आतंकवादी गिराहों को गुप्त रूप में प्रशिक्षित करने, उन्हें पैसा और हथियार मुहैया करने का जिम्मा सी० आई० ए० ने लिया। बाद में पैदागॉन (अमरीकी सशस्त्र सेनाओं का मुख्यालय) ने १०० सैनिक सलाहकार हांदुरास भेजे, ताकि वे निकारागुआ पर सशस्त्र अक्रमण करने के लिए प्रतिक्रतिकारी उत्प्रवासियों में से सशस्त्र दलों के संगठन के काम को पूरा कर सकें।

कैरीबियन सागर में बड़े पैमाने पर नौसैनिक अभ्यास किये गये, जिन्हें स्पष्टतः आक्रमक शक्ति-प्रदर्शन की ही संज्ञा दी जा सकती है। वाशिंगटन ने निकारागुआ को पहले से तय ऋण देना स्थगित कर दिया, ऋणसामग्री की सप्टाई को रोक दिया और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा संगठनों द्वारा निकारागुआ को ऋण दिये जाने में अड़ने लगाये। निकारागुआ के भीतर सी० आई० ए० एजेंटों ने "उदारों"—सरकारविरोधी गुटों और मालिकों के संघों—को मूलतः वित्तीय सहायता प्रदान की और उन्हें आर्थिक रूपांतरणों का अंतर्ध्वंस करने के लिए प्रोत्साहित किया। सब कुछ बिलकुल वैसे ही हो रहा है कि जैसे चिली में हुआ था। इतना ही नहीं। राष्ट्रपति रेगन ने निकारागुआ

के विरुद्ध प्रच्छन्न सक्रियाओं की योजना को अनुमोदित किया, जिसके अनुसार सी० आई० ए० की भूतपूर्व सामोसाइयों और स्पूबाई तथा अन्य प्रतिक्रांतिकारियों के अर्धसैनिक भाड़े के दस्ते स्थापित करने का अधिकार प्रदान किया गया। इन भाड़े के सैनिकों को हांडुरास से निकारागुआ में महत्वपूर्ण ठिकानों - पुलों, बिजली-घरों, बांधों और औद्योगिक उद्यमों - पर हमले करने और सीमांतवर्ती इलाकों पर छापे मारने थे। ५०० लोगों के इन दस्तों की संगठित करने के लिए पूरे १६० लाख डालर की रकम विनियुक्त की गयी।

निकारागुआ के विरुद्ध ध्वंसकार्य में संयुक्त राज्य अमरीका ने उसके पड़ोसी देशों को भी खींच लिया। अमरीकी "सलाहकारों" के निदेशन में हांडुरासी सेना सीमा पर लगातार भड़कावे की कारवाइयाँ करती रहती है। हांडुरास और कोलंबिया की सरकारों के साथ उनके देशों में नये सैनिक अड़े कायम करने और पुरानों का आधुनिकीकरण किये जाने के बारे में वार्ताएं हुईं। फ्रैंजी हेलीफैंटरों द्वारा पनामा नहरक्षेत्र से छतरीधारी सैनिक कोस्टा रीका पहुंचाये गये और वहाँ युद्ध अभ्यासों का सिलसिला शुरू किया गया।

सभी तरफ से दबाव बढ़ाया गया। हांडुरास से लगे निकारागुआ के उत्तर-पूर्वी सीमांत पर भड़पे शुरू हो गयीं। अमरीकी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित आतंकवादियों ने निकारागुआ में दो पुलों को उड़ा दिया और राजधानी में अनेक उद्यमों को उड़ाने और गणराज्य के नेताओं की हत्या करने की कोशिशों की

और निकारागुआई हवाई जहाजों में बम रखे। देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय, मिसकीतो इंडियनों (आदिवासियों) के क़बीले को क्रांतिकारी सरकार के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसाया गया। अमरीकी जासूसी हवाई जहाजों ने निकारागुआ के वायुक्षेत्र का और अमरीकी नौसैनिक पोतों ने उसकी जलसीमा का बारंबार उल्लंघन किया। संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप - जैसे स्वाटेमाला और सोमीनिकन गणराज्य में हुआ था - का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है।

और अंत में, शरद, १९८३ में संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय क़ानून को बलाये ताक़ रखकर येनाडा पर सशस्त्र आक्रमण, जिसने विश्व जनमत को हिला डाला। क्या यह भी अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का स्पष्ट उदाहरण नहीं है?

अमरीकी साम्राज्यवाद को स्पष्टतः "स्वतंत्र विश्व का नासुदा कम्युनिस्टों से बचाव" करने के बहाने की आड़ में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में लगने के लिए कोरा परवाना चाहिए। लातीनी अमरीका के जनगण के लिए यह "बचाव" क्या मानी रखता है, इसका एक पनामाई सार्वजनिक कार्यकर्ता ने बहुत ही सजीव शब्दों में बर्णन किया है:

"... चिलीयाई नदियाँ ऐसे लोगों की सैकड़ों लाशें बहाकर प्रशांत महासागर में पहुँचा रही हैं, जो शांतिपूर्वक काम करते थे और जिन्होंने कभी किसी हथियार को हाथ भी नहीं लगाया था। सीवरों में हुआ

दिये गये, दंतचिकित्सकों के बरमों और धमन ज्वालकों से सता-सताकर मारे गये, प्लास्टिक के बोरो में दम घुटने से मरे, हैलीकॉप्टरों से समुद्र में या ज्वालामुखियों के मुँहों में फेंके गये लोग। कलाइयाँ और पैर कटे हुए, आँखें निकाले हुए और जबानें काटे हुए दसियों हजार शरीर। माँ, जिनकी आँखों के आगे उनके बेटों को बिजली से यंत्रणा दी जाती है और काँच के टुकड़ों पर पड़े अपने बच्चों के ऊपर चलने को मजबूर किया जाता है ("नहीं तो हम उनके सिर काट देंगे")। अपने परिवार में सभी व्यक्तियों के मार डाले जाने और उनकी लाशें कुँओं में फेंक दिये जाने अथवा डायनामाइट से उड़ा दिये जाने के बाद विदेशों में बेचे गये दुधमुँह बच्चे। यंत्रणा से पागल हुए हजारों-हजार लोग। अपने घरों के भीतर जला दिये गये परिवार। स्कूली बच्चे, जिनकी छातियों को छुरों से चीरकर उनके दिलों को निकाल लिया गया था। हवा में ऊपर उछाले गये और गंदासों की धार पर गिरे शिशु..."

ये सभी वर्जस कांड, जिनमें से प्रत्येक किसी एक लातीनी अमरीकी देश या अनेक देशों में घटा है, वर्जुआ प्रेस से लिये गये हैं और पूर्णतः प्रलेखित-प्रमाणित हैं, वे उतने ही प्रलेखित-प्रमाणित हैं कि जितनी यह पुस्तक, जो अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उपकरण के नाते सी० आई० ए० के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत करती है और दक्षिण-पूर्वी एशिया, लातीनी अमरीका, अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप और

मध्य-पूर्व में उसके ख़सात्मक तरीकों और प्रविधियों तथा प्रच्छन्न कार्यों का वर्णन करती है।

यह पुस्तक अंतर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ सोवियत पत्रकारों द्वारा लिखी गयी है। वे कितने ही वर्ष विभिन्न देशों में रह और काम कर चुके हैं और अपने द्वारा वर्णित कितनी ही घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी भी रहे हैं। लेकिन वे यथासंभव पृष्ठभूमि में ही रहने का प्रयास करते हैं। पुस्तक का उपशीर्षक है—'दस्तावेज़ें, गवाहियाँ, सबूत'। पुस्तक का पन्ना-पन्ना सरकारी एजेंसियों तथा समितियों द्वारा प्रदत्त सूचना, भूतपूर्व और वर्तमान सी० आई० ए० एजेंटों की आत्मस्वीकृतियों और पश्चिमी प्रेस में—ऐसे प्रकाशनों में कि जिन्हें चाहे और कुछ भी कहा जा सके, सिर्फ "लाल प्रचार" नहीं कहा जा सकता—प्रकाशित सामग्री पर आधारित है।

इस बात को भली भाँति जानने के कारण कि अगर आरोप या रहस्योद्घाटन का स्रोत मास्को हो, तो पश्चिमी राजनीतिज्ञों और गुप्तचर सेवाओं द्वारा बारंबार पुष्टिकृत और प्रमाणित तथ्यों का भी किस तरह खंडन किया जाता है, लेखकों ने इसका ध्यान रखा है कि ऐसे ही लोगों को उद्धृत करें, जो सबसे बड़े ब्यूरोक्राट पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखते रहे हैं और अमरीकी कांग्रेस की समितियों के सामने बयान दे चुके हैं। ऐसे लोगों को कोई भी समझदार आदमी किसी भी तरह "मास्को के एजेंट या गुर्गे" नहीं कह सकता।

... साम्राज्यवाद ने अवांछित अफ्रीकी शासनों के

खिलाफ लड़ने के लिए गोरे भाड़े के सैनिकों का बारंबार उपयोग किया है। ये भाड़े के हत्यारे जहाँ भी गये हैं, वहाँ-वहाँ - कांगो (जाइर), नाइजीरिया, रोडेशिया (ज़िम्बाब्वे), अंगोला, मदागास्कर, मोज़ाम्बीक, मारी-शस, कॉमरो द्वीपसमूह, सेशैल्स द्वीपसमूह - उन्होंने अपने खूनी पदचिह्न छोड़े हैं। इन लोगों में सबसे आगे-आगे 'संयुक्त राज्य अमरीका में निर्मित' भाड़े के सैनिक रहे हैं - वास्तव में यह इतालवी पत्रिका 'ल'एस्प्रेसो' में छपे एक रिपोर्टाज का शीर्षक है, जिसके संवाददाता ने स्कॉट्सडेल (ऐरीज़ोना राज्य) में एक वार्षिक सम्मेलन में कुछ भाड़े के सिपाहियों से बातें की थीं। यह सम्मेलन 'सोलजर ऑफ़ फ़ॉर्च्यून' पत्रिका द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी बिक्री की तादाद अब २ लाख के ऊपर जा चुकी है।

विलियम टी० "बिल" सकेट, जो २७ साल सेना में सेवा कर चुका है, अमरीकी वायुसेना में लेफ्टीनेंट-कर्नल था और वियतनाम, कंबूचिया तथा लाओस में देशभक्तों के खिलाफ लड़ चुका है, अपने सीने पर एक चटकीला खिल्ला लगाये रहता है, जिस पर लिखा है: "मैं वहीं होना पसंद करता हूँ, जहाँ कम्युनिस्टों को मारा जाता है"। बिल कहता है: "मैंने इसे इसलिए लगा रखा है कि यह मेरे विचार को व्यक्त करता है। मुझे कम्युनिस्टों को मारना पसंद है। मेरी समझ में यह सही है - कम्युनिज्म दुनिया की पीछे की तरफ़ ले जाने का खतरा पेश करता है..."

जॉन अर्ली १२ साल अमरीकी सेना के घिन

बैरट्स (हरी टोपिया) नामक विशेष सैन्य दल में अफसर और उसके बाद अंगोला, मोज़ाम्बीक, जाम्बिया तथा रोडेशिया में भाड़े का सैनिक और कमांडर रहा। "मैं जो भी पैसा दे, उसके लिए लड़ने को तैयार हूँ - कम्युनिस्टों को छोड़कर," वह कहता है। "यह इसलिए है कि इस देश में हमारी परवरिश ही इसी ढंग से होती है - हम और वे, हम भले और वे बुरे, हम अमरीकी और वे रूसी। मेरे दिल में ये विचार मजबूत जड़ें जमाये हुए हैं।"

कहीं ये बटमार ओज़ार्क्स गिरजाघर तो नहीं जाया करते थे? पर महत्व की बात यह नहीं है। ये लोग, ये लकड़ और अर्ली जैसे लोग रट तो यह लगाते हैं कि वे "नाखुदा कम्युनिज्म" और "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद" के खिलाफ़, "स्वतंत्र विश्व" के आदर्शों के लिए लड़ रहे हैं, मगर नज़रें डालें की गद्दी पर टिकाये रहते हैं और उसी के लिए सी० आई० ए० और उसी जैसे संगठनों के आदेशों पर वे हत्या, लूटमार, अत्याचार, बलात्कार और आगबनी करते हैं...

नहीं, राजनीतिक आतंकवाद कम्युनिस्टों के लिए, समाजवाद के लिए या विकासमान देशों के लिए किसी काम का नहीं है - संसार के क्रांतिकारी रूपांतरण के लिए, सामाजिक प्रगति तथा राष्ट्रीय मुक्ति के लिए लड़नेवाले सभी जानते हैं कि इतिहास की गति उन्हीं के साथ है और इसलिए वे आतंकवाद को सिद्धांततः अस्वीकार करते हैं। आतंकवाद सिर्फ़ साम्राज्यवाद

के लिए ही उपयोगी है, जिसका कोई भविष्य नहीं है और जो इतिहास की गति को धीमा करने और अपने अंत को रोकने की निरर्थक चेष्टा में अधन्यतम और निम्नतम कारसाजियों से बाज नहीं आता। यह पुस्तक इसी के बारे में है—यह अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद और उसके सूत्रधार तथा संगठक अमरीकी केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी के विरुद्ध विश्व जनमत का अभियोगपत्र है।

बिताली सिरोकोम्स्की

बोरीस स्वेतोव, ओलेग तारिन

## हिंसा और आतंक का सिंडीकेट

### बिना नियमों का खेल

दूसरे विश्वयुद्ध से साम्राज्यवाद कमजोर होकर निकला। उसके सर्वोत्कृष्ट आक्रामी दस्तों — नात्सी जर्मनी, फ़ाशिस्त इटली और सैन्यवादी जापान की पराजय और सोवियत संघ की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा विश्व समाजवादी व्यवस्था के उदय ने संपुक्त राज्य अमरीका के शासक हलकों को काफ़ी परेशान कर दिया। कम्युनिस्ट विचारधारा और सोवियत विदेश तथा आंतरिक नीति को बदनाम करने के लिए अट-सांटिक के पार एक विराट प्रचारतंत्र को चालू कर दिया गया और जल्दी-जल्दी मनोवैज्ञानिक युद्ध की रणनीति तथा कार्यनीति को निरूपित किया गया।

इस प्रचार अभियान की प्रच्छन्न संक्रियाओं से अनुपुर्ति करने का निश्चय किया गया, अर्थात् विश्व-व्यापी पैमाने पर अंतर्ध्वंस, षड्यंत्रों, हत्याओं और "छापामार" किस्म के अर्द्ध-सैनिक दलों की स्थापना सहित ध्वंसकार्य। इस ध्वंसकार्य को वैधता का आवरण पहनाने और जनमत को छलने के लिए उपयुक्त "विधि-व्यवस्था" की गयी।

संपुक्त राज्य केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी — सी० आई० ए० — की स्थापना तथाकथित राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम

के अंतर्गत १९४७ में की गयी थी, जब शीतयुद्ध ने जोर पकड़ना अभी शुरू ही किया था। इसके बावजूद कि आसूचना संग्रहण ही इस नये अभिकरण का मुख्य कार्य माना गया था, प्रच्छन्न कार्रवाइयों का उसके काम में आरंभ से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

यह दृष्टव्य है कि राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम में प्रच्छन्न सक्रियाओं का कोई उल्लेख न था। लेकिन उसका एक प्रावधान सी० आई० ए० को "राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा समय-समय पर निर्दिष्ट राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करनेवाली आसूचना से संबद्ध अन्य कार्यों तथा कर्तव्यों का निष्पादन" \* करने में समर्थ बनाता था।

१९४७ के राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के रचनाकारों में एक, भूतपूर्व अमरीकी प्रतिरक्षा मंत्री क्लार्क एम० क्लिफर्ड ने इस प्रावधान के बारे में यह कहा है:

"यह तय किया गया कि केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी को स्थापित करनेवाले अधिनियम में अप्रत्याशित संभावनाओं की व्यवस्था के लिए एक 'सर्वग्राही' धारा रहनी चाहिए... इसी धारा के अंतर्गत १९४७ के अधिनियम के प्रचलन में आते ही प्रच्छन्न कार्रवाइयों की मंजूरी दी गयी थी। मुझे याद आता है कि ऐसी पहली कार्रवाइयां १९४८ में हुई थीं और यह तक संभव है कि १९४७ के अंत में ही कुछ योजना हो

चुकी हो। मूल विचार यह था कि आरंभ ही से अधिनियम के अंतर्गत की जानेवाली कार्रवाइयों को ध्यानपूर्वक सीमित और नियंत्रित रखा जाये... अधिनियम की इबारत में यह व्यवस्था है कि यह 'सर्वग्राही' धारा सिर्फ उसी हालत में लागू हो कि जब राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल हो।" \*

इस तरह से राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम की "सर्वग्राही" धारा उन लोगों के लिए एक तरह का कानूनी बचाव का रास्ता बन गयी, जिन्होंने बिल्कुल आरंभ में भी सी० आई० ए० की अमरीकी विदेश नीति के एक गुप्त उपकरण की तरह कल्पना की थी।

दिसंबर, १९४७ में ही अमरीकी विदेश विभाग ने यह सलाह दी थी कि राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (रा० सु० प०) विदेश नीति के परंपरागत तरीकों की प्रच्छन्न सक्रियाओं से अनुपूर्ति करने के उपायों पर विचार करे। उसी महीने परिषद ने रा० सु० प० निदेश सं० ४ जारी किया, जिसने अमरीकी विदेश मंत्री को गुप्तवार्ता सूचना के संग्रह से संबंधित कार्यों के समन्वयन में काफी व्यापक अधिकार प्रदान किये। १४ दिसंबर, १९४७ को अंगीकृत रा० सु० प० निदेश सं० ४/अ ने सी० आई० ए० को मनोवैज्ञानिक युद्ध चलाने का अनन्य अधिकार प्रदान किया और वह वास्तव में संयुक्त राज्य अमरीका के बाहर प्रच्छन्न सक्रियाएं चलाने के लिए एक कोरा परवाना था।

\* *Final Report of the Select Committee to Study Governmental Operations With Respect to Intelligence Activities.* US Senate, Book I, US Government Printing Office, Washington, 1976, p. 512.

\* *Final Report* —, p. 512.



रा० सु० प० निदेश सं० ४/अ ने मनोवैज्ञानिक युद्ध को इस प्रकार परिभाषित किया था :

“प्रचार से लेकर अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइयों तक, आर्थिक कार्रवाई से लेकर विदेशी राजनीतिक पार्टियों, सूचना-माध्यमों और धार्मिक संगठनों की आर्थिक सहायता और समर्थन तक प्रचलन कार्य प्रविधियाँ, ... विदेशी राजनीतिक पार्टियों को अमरीकी समर्थन, 'आर्थिक युद्ध', अंतर्ध्वंस, शरणार्थी मुक्ति दलों की सहायता ...”\*

जून, १९४८ से मार्च, १९५५ तक राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने सी० आई० ए० की प्रचलन स-क्रियाओं के बारे में निदेशों की एक पूरी शृंखला जारी की। १८ जून, १९४८ को रा० सु० प० निदेश सं० १०/२ ने तथाकथित १०/२ परिषद का गठन किया, जो राष्ट्रपति फ़ोर्ड के अधीन स्थापित तथाकथित “विदेश गुप्तचर्या कार्य परामर्शदातामंडल” की पहली पूर्वगामी थी। इस परिषद के अधिदेश में प्रस्तावित प्रचलन कार्रवाइयों पर विचार करना सम्मिलित था। २३ अक्तूबर, १९५१ को रा० सु० प० निदेश सं० १०/५ जारी किया गया, जिसने प्रचलन कार्रवाइयों के सारे दुनिया में और अधिक प्रसार की व्यवस्था को\*\* और उनके समन्वित किये जाने के ढंगों में कुछ

परिवर्तन किये।\*

“प्रचलन कार्य” पद का आशय क्या था? सी० आई० ए० के प्रतिष्ठापकों की कल्पना के अनुसार उसमें क्या-क्या समाहित था?

रा० सु० प० निदेश सं० १०/२ में इसके बारे में यह लिखा है :

“प्रचलन कार्य का मतलब विदेशी सरकारों, घटनाओं, संगठनों और व्यक्तियों को अमरीकी विदेश नीति के समर्थनार्थ प्रभावित करने के अभिप्राय से इस प्रकार संचालित गुप्त कार्रवाइयों से है कि अमरीकी सरकार की सहभागिता प्रकट न हो... बहरहाल, इन पदों का कभी इस तरह से प्रयोग नहीं किया गया कि जिससे यह इंगित हो कि कांग्रेस का उनमें समाविष्ट कार्रवाइयों का अनुमोदन करने का इरादा रहा है...

“...प्रचलन कार्रवाइयों में ... यह सम्मिलित है : प्रचार, आर्थिक युद्ध, निरोधक प्रत्यक्ष कार्रवाई, जिसमें अंतर्ध्वंस, अंतर्ध्वंसविरोधी कार्रवाइयाँ, विध्वंस तथा

रेडियो प्रसारणों तथा मिथ्या सूचना के फैलाने में आर्थिक सहायता का उपयोग शामिल था। रा० सु० प० निदेश सं० १०/२ ने मनो-वैज्ञानिक युद्ध की श्रेणी में आनेवाले कार्यों में तीन प्रकार के प्रचलन कार्य और जोड़ दिये : राजनीतिक युद्ध, आर्थिक युद्ध और निरोधक सीधी कार्रवाई (जैसे विद्रोही विरोधी और अंतर्ध्वंस में लगे संगठनों की सहायता)।

\*विशेषकर नीति समन्वयन कार्यालय का सी० आई० ए० के विशेष संचिका कार्यालय के साथ, जो जासूसी का काम करता था, नियंत्रण कर दिया गया।

\* *Final Report* ... pp. 142, 144.

\*\* इसके पहले सी० आई० ए० का प्रचलन कार्य अधिकांशतः मनोवैज्ञानिक युद्ध से ही संबद्ध था और लगभग पूरी तरह से जन-सूचना साधनों से जुड़ा हुआ था, जिसमें जासूसी प्रकाशनों और “स्वाहू”

निष्क्रमण उपाय भी आते हैं, विरोधी राज्यों के बिरुद्ध ध्वंसकार्य, जिसमें छापामार तथा शरणार्थी मुक्ति दलों की सहायता भी शामिल है और स्वतंत्र विश्व के संकटग्रस्त देशों में स्थानीय कम्युनिस्ट-विरोधी तत्वों का समर्थन।”\*

प्रच्छन्न संक्रियाओं के विस्तारित पैमाने के लिए न केवल अतियोग्यताप्राप्त ध्वंसकार्य विशेषज्ञों का ही, बल्कि इन कार्रवाइयों का दुनिया भर में संगठन और संचालन करने के बास्ते एक विशेष निकाय का होना भी आवश्यक था।

ठीक इन्हीं उद्देश्यों से पाँचवें दशक के अंत में अर्धस्वायत्त नीति समन्वयन कार्यालय (नी० स० का०) की स्थापना की गयी, जो राजनीतिक स्वरूप के निदेश सीधे विदेश विभाग और प्रतिरक्षा विभाग से प्राप्त करता था। नी० स० का० की संस्थापना करने-वाले निदेश में “सोवियत ध्वंसकार्य” के उल्लेख और “सोवियत खतरे” के बारे में संवे परोक्ष संकेत थे। निदेश के रचयिताओं के विचार में यह नी० स० का० को राजनीतिक, आर्थिक तथा विचारधारात्मक ध्वंसकार्य सहित विभिन्न प्रकारों के प्रच्छन्न कार्यों के लिए हरी भंडी दिखाने का पक्का आधार प्रदान करता था।

१९४६ में नी० स० का० में कुल ३०२ कर्मी थे, १९५२ में उनकी संख्या बढ़कर २,५१२ हो गयी।

\* Final Report ..., pp. 131-132.

इनके अलावा विदेशों में सविदा के अंतर्गत विभिन्न काम करनेवाले ३,१४२ लोग और थे। १९४६ में नी० स० का० बजट ४७ लाख डालर था, १९५२ में वह उछलकर एकदम ८२० लाख डालर पर पहुँच गया। १९४६ में विदेशों में उसके ७ केंद्र थे, १९५२ में नी० स० का० के कर्मी ४७ केंद्रों में काम कर रहे थे।

विदेशों में सी० आई० ए० की कार्रवाइयाँ विलकुल आरंभ से ही प्रचंड सोवियत-विरोध पर आधारित थीं। ह्यूडट हाउस ने अध्यवसायपूर्वक सोवियत संघ को एक “आक्रामक शक्ति” के रूप में चित्रित किया और अपनी प्रच्छन्न संक्रियाओं की तैयारी और क्रियान्विति में नी० स० का० ने इसे ही अपना प्रस्थान बिंदु बनाया। रा० सु० प० के ध्वसात्मक कार्रवाइयों को अनुमोदित करनेवाले निदेशों में “सोवियत चुनौती का सामना करने” की आवश्यकता का सीधे-सीधे उल्लेख था। १९५० और १९५१ में जारी किये गये रा० सु० प० के निदेशों में इन संक्रियाओं को सब तरह से बढ़ाने का आग्रह किया गया था। जल्दी ही विदेश विभाग तथा पैटागॉन द्वारा नी० स० का० की कार्रवाइयों का निदेशन औपचारिक हो रह गया, जिससे नी० स० का० के लिए कितनी ही संक्रियाओं का संचालन अपने निर्णयानुसार करना संभव हो गया।

भिन्न-भिन्न अभिकरणों के हितों में विशेष नी० स० का० संक्रियाएँ चलायी जाती थीं। विदेश विभाग अपने राजनयिक लक्ष्यों की सिद्धि के लिए राजनीतिक



कार्रवाई और प्रचार अभियानों को प्रोत्साहित करता था, तो प्रतिरक्षा विभाग कोरियाई युद्ध के समर्थन में अथवा कम्युनिस्टों से संबद्ध छापामारों से लड़ने के लिए अर्द्ध-सैनिक संक्रियाओं की मांग करता था। लक्ष्यों की इस विविधता ने नी० स० का० के लिए विशेषकर प्रशिक्षित कर्मिंदल और उसके प्राविधिक साज-सामान सहित व्यापक साधनों को तैयार करना आवश्यक बना दिया।

नी० स० का० की स्थापना और सी० आई० ए० में उसकी विशेष स्थिति ने दो गंभीर प्रशासनिक समस्याओं को पैदा किया—सी० आई० ए० के निदेशक और नी० स० का० के बीच प्रतिद्वंद्विता और नी० स० का० तथा विशेष संक्रिया कार्यालय (वि० सं० का०) के बीच वैमनस्य।

स्थानीय स्तर पर विवाद विशेषकर गंभीर थे। हर कार्यालय के विदेश स्थित सी० आई० ए० केंद्रों में अपने अलग प्रतिनिधि थे। अक्सर ऐसा होता था कि इन कार्यालयों को समान कार्यभार दिये जाते थे, जिसके लिए वे उन्हीं एजेंटों का उपयोग करते थे और कभी-कभी ऐसा भी होता था कि कोई एक कार्यालय किसी एक एजेंट की सेवाओं का सिर्फ अपने लिए ही उपयोग करने की कोशिश करता था। १९५२ में बैंगकाक में नी० स० का० और वि० सं० का० के एक प्रचंड विवाद में तो सी० आई० ए० के अधिशासी निदेशक लोमैन कर्कषेद्रिक के आपातक हस्तक्षेप तक की नीबत आ गयी थी। यह विवाद वि० सं० का०

द्वारा एक ऐसे महत्वपूर्ण स्थानीय अधिकारी को अपने पक्ष में लाने के प्रयास से पैदा हुआ था, जिसके नी० सं० का० के साथ घनिष्ठ संबंध थे।

१९५० और १९५१ के बीच सी० आई० ए० के निदेशक, जतरज वाल्टर बेडेल स्मिथ ने दोनों सेवाओं के बीच समन्वयन सुधारों के लिए कई कदम उठाये। अगस्त, १९५२ में नी० स० का० और वि० सं० का० का योजना निदेशालय में विलयन कर दिया गया। इस विलयन के परिणामस्वरूप ध्वंसात्मक संक्रियाओं की संख्या सहसा बढ़ गयी और प्रचलन आसूचना संग्रहण कार्रवाइयों की क्षति पहुँची। एजेंट ध्वंसकार्य को अकारण ही तरजीह नहीं देते थे, क्योंकि उनके परिणाम जल्दी ही प्रत्यक्ष हो जाते थे, जब कि अपने लिए भेदियों को भरती करना लंबा, धीमा और क्षमसाध्य काम था, जो कोई तात्कालिक परिणाम नहीं उत्पन्न करता था।

१९५३ तक सी० आई० ए० ने समूचे तौर पर वह आकार प्राप्त कर लिया, जो अगले २० साल लगभग अपरिवर्तित बना रहा। कोरियाई मुहिमबाजी और शीत युद्ध के तीव्रीकरण ने सी० आई० ए० की तीव्र वृद्धि में योग दिया—१९४७ की तुलना में उसका आकार छः गुना अधिक हो गया।

सी० आई० ए० में तीन निदेशालयों की स्थापना की गयी। बजट, कर्मियों तथा अन्य साधनों का सबसे बड़ा हिस्सा योजना निदेशालय को मिला। १९५२ में सी० आई० ए० के बजट का ७४% और उसके

कर्मोदल का ६०%। गुप्त आसूचना संग्रहण और ध्वंसात्मक कार्यों के लिए ही विनियुक्त था।

छठे दशक के मध्य तक प्रच्छन्न संक्रियाएं सोवियत संघ तथा समाजवादी विरादरी के दूसरे देशों के साथ "स्थायी द्वंद्व" का अभिन्न अंग बन चुकी थी। सितंबर, १९५४ में प्रच्छन्न सी० आई० ए० संक्रियाओं के बारे में एक गुप्त रिपोर्ट राष्ट्रपति आइज़नहॉवर के सामने पेश की गयी। रिपोर्ट की प्रस्तावना में प्रच्छन्न कार्रवाई की आवश्यकता का अत्यंत कुटिल औचित्यस्थापन किया गया था:

"जब तक यह (प्रच्छन्न कार्रवाई-अनु०) राष्ट्रीय नीति बनी रहती है, एक ऐसा आक्रामक प्रच्छन्न मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक तथा अर्द्ध-सैनिक संगठन स्थापित करना बहुत जरूरी है, जो अधिक कारगर, अधिक अनन्य, और अगर आवश्यक हो, तो अधिक निर्मम भी हो। इस लक्ष्य की तत्काल, सफल और सुनिश्चित सिद्धि में किसी को भी बाधक नहीं होने देना चाहिए।

"अब यह स्पष्ट है कि हमारा एक दुर्दम शत्रु से सामना है... ऐसे खेल में कोई नियम नहीं होते। इसमें मानव अचरण के अब तक स्वीकार्य मानक लागू नहीं होते... हमें कारगर जासूसी और जासूसीविरोधी सेवाएं विकसित करनी चाहिए और अपने शत्रुओं का उच्छेदन, अंतर्ध्वंस और नाश करना सीखना चाहिए। ... यह आवश्यक हो जा सकता है कि अमरीकी लोगों को इस मूलतः अप्रतीतिकर दर्शन से अवगत कराया

जाये और वे इसे समझें तथा समर्थन दें।"\*

अमरीकी लोगों को इस अप्रतीतिकर दर्शन के बारे में बहुत ज़ाद में पता चला। अभ्यासवश, अपनी प्रच्छन्न कार्रवाइयां करने के लिए सी० आई० ए० को उनकी अनुमति की आवश्यकता नहीं थी।

१९५५ में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने ध्वंसात्मक कार्य के बारे में एक नया निदेश-रा० सु० प० निदेश सं० ५४१२-जारी किया, जो फ़रवरी, १९७० तक लागू रहा, जब तत्कालीन समिति-५० की स्थापना हुई। निदेश में सी० आई० ए० की ध्वंसात्मक कार्रवाइयों के मुख्य लक्ष्य सैन्यादेशों जैसी सक्षिप्तता और सटीकता से सूचीबद्ध थे:

"अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के लिए समस्याएं पैदा करना और उनका लाभ उठाना।

"अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म को बदनाम करना और उसकी पार्टियों तथा संगठनों की शक्ति को घटाना।

"संसार के किसी भी इलाके पर अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट नियंत्रण को घटाना।

"संयुक्त राज्य अमरीका की और स्वतंत्र विश्व के राष्ट्रों के भुकाव को मजबूत करना, जहां भी संभव हो, वहां इन राष्ट्रों और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच हित-साम्य पर बल देना और इसी प्रकार, जहां उचित हो, वहां ऐसे पारस्परिक हितों के उन्मूलन की हिमायत और वस्तुतः कामना करनेवाले समूहों

को प्रोत्साहन देना और ऐसे राष्ट्रों तथा राज्यों की अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रतिरोध करने की क्षमता और इच्छा को बढ़ाना।

"सुस्थापित नीतियों के अनुसार और जहाँ तक व्यवहार्य हो, उन इलाकों में भूमिगत प्रतिरोध विकसित करना और प्रच्छन्न तथा छापामार कार्रवाइयों में सहायता पहुँचाना, जहाँ अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म का प्रभुत्व है अथवा उसकी आशंका है..."\*

निदेश के एक विशिष्ट हिस्से में इन लक्ष्यों की सिद्धि में सहायक उपायों और विधियों की चर्चा थी:

"विशिष्ट रूप से, ऐसी... प्रच्छन्न संक्रियाओं में प्रचार, राजनीतिक कार्रवाई, आर्थिक युद्ध, अंतर्ध्वंस, अंतर्ध्वंसविरोध, ध्वंस, पलायन, बचाव और निष्क्रमण उपायों सहित निरोधक सीधी कार्रवाई, विरोधी राज्यों अथवा दलों के विरुद्ध भूमिगत प्रतिरोध आंदोलनों, छापामार तथा शरणाधीन मुक्ति दलों को सहायता सहित ध्वंसकार्य, स्वतंत्र विश्व के संकटस्थ देशों में स्थानीय तथा कम्युनिस्टविरोधी तत्वों का समर्थन, छल योजनाएं तथा संक्रियाएं और पूर्वोपलब्धि की सिद्धि के लिए आवश्यक सभी संगत कार्रवाइयां सम्मिलित हैं।" \*\*

निदेश ने प्रच्छन्न संक्रियाओं के नियंत्रण और अनुमोदन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। कार्रवाई समन्व-

यन परिषद के कृत्य विदेश मंत्री, प्रतिरक्षा मंत्री और राष्ट्रपति के प्रतिनिधियों को हस्तांतरित कर दिये गये। सी० आई० ए० की प्रच्छन्न संक्रिया योजनाओं पर विशेष दल को, जो इस निकाय को दिया गया नया नाम था, विचार करना और अनुमोदन देना था।

लग सकता है कि सी० आई० ए० की हर बड़ी कार्रवाई अब सरकार के सख्त नियंत्रण के अधीन थी। लेकिन रा० सु० प० निदेश सं० ५४१२ में यह निर्धारित करने का कोई स्पष्ट मानदंड नहीं था कि किन प्रच्छन्न संक्रियाओं को विशेष दल के अधीन किया जाना चाहिए और किन्हे नहीं।

इसके बारे में १९६७ के एक सी० आई० ए० जापान में कहा गया है:

"किन प्रच्छन्न कार्यों का विशेष दल द्वारा अथवा विदेश विभाग तथा अमरीकी सरकार के अन्य अंगों द्वारा अनुमोदन आवश्यक है, इसका निर्धारण करने की प्रक्रियाएं १९५५ से मार्च, १९६३ तक की अवधि में कुछ अस्पष्ट थी और इसलिए उन्हें सी० आई० ए० के निदेशक के मूल्य-निर्णयों पर आधारित बताना ही शायद सबसे बेहतर रहेगा।" \*

\* *Final Report* —, p. 52.

मार्च, १९५७ में सगन्ध प्रक्रियाओं में कुछ परिवर्तन किये गये। विशेष महत्व के कार्यों को अनुमोदन प्रदान करने का अधिकार विदेश मंत्री को दिया गया। इसके अलावा सी० आई० ए० के लिए सभी अनुमोदित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में प्रतिरक्षा मंत्री और विदेश विभाग को रिपोर्ट करना आवश्यक हो गया।

\* *Final Report* ..., p. 51.

\*\* *Ibid.*

आरंभ में विशेष दल की बैठकें कभी-कभी होती थीं—सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस, उनके भाई और तत्कालीन विदेश मंत्री जॉन फ्रॉस्टर डलेस और राष्ट्रपति आइज़नहावर के अंतरंग संबंधों के कारण निर्णय लेने के लिए औपचारिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं थी।

१९५६ से विशेष दल की बैठकें नियमित हो गयीं। इससे प्रच्छन्न संक्रिया योजनाओं के बारे में विशेष दल के अधिकार निर्धारित करने के मानदंड को और विकसित करने में सहायता मिली।

जनवरी, १९६१ में राष्ट्रपति कनेडी के सत्तारोहण के साथ विशेष दल की बैठकें ह्वाइट हाउस में होने लग गयीं। अब वे राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए विशेष सहायक मैकजॉर्ज बंडी की अध्यक्षता में होती थीं (कुछ समय तक राष्ट्रपति के विशेष सलाहकार जनरल मैक्सवेल टेलर अध्यक्ष रहे थे, मगर उनके संयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान बना दिये जाने के बाद यह पद बंडी को फिर मिल गया)।

क्यूबई प्रतिप्रतिकारियों की कोचीनोस की खाड़ी (वे ऑफ पिग्स) की कार्रवाई की घोर विफलता के बाद प्रच्छन्न कार्रवाइयों पर सरकारी नियंत्रण को दृढ़ करने के लिए कदम उठाये गये। विशेष दल ह्वाइट हाउस में अपनी साप्ताहिक बैठकें करता रहा और राष्ट्रपति कनेडी को प्रस्तावित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में अधिकाधिक प्रापिकता से सूचित किया जाने लगा। साथ ही अनुमोदन तथा नियंत्रण व्यवस्था को

तीन भागों में विभक्त कर दिया गया। विशेष दल के अलावा दो अधिशासी निकायों का गठन किया गया—एक विशेष ध्वंसकार्यविरोधी दल और एक संबंधित विशेष दल।

नये-नये निदेशों का सतत सिलसिला चल पड़ा। अपने अंतर्गर्भ की दृष्टि से वे सभी एक समान थे—सभी का लक्ष्य प्रच्छन्न कार्रवाइयों की सफलता को सुनिश्चित करना था।

दिनांक १० जनवरी, १९६२ के एन० एस० ए० एम० निदेश सं० १२४ ने एक विशेष दल की स्थापना की, जिसका मुख्य कार्यभार अर्द्ध-तैनिक स्वरूप की संक्रियाओं का संचालन था। इस निदेश ने ध्वंसात्मक कार्रवाइयों के बारे में पूर्ववर्ती रा० सु० प० निदेशों का स्थान नहीं ले लिया—हुआ सिर्फ यह कि कुछ कार्य, जो पहले विशेष दल के क्षेत्र में थे, अब नवस्थापित विशेष दल २ को अंतरित कर दिये गये। इस दल के अध्यक्ष जनरल मैक्सवेल टेलर थे और मैकजॉर्ज बंडी तथा सीनेटर रॉबर्ट कनेडी उसके सदस्यों में थे।

जॉनसन प्रशासन के अंतर्गत भी विशेष दल, जिसका नाम अब 'समिति ३०३'<sup>\*</sup> हो गया था, की

<sup>\*</sup> जून, १९६४ में एन० एस० ए० एम० निदेश सं० ३०३ जारी किया गया। इस निदेश ने विशेष दल के गठन, कृत्यों और अधिकारों में कोई भी परिवर्तन नहीं किया, मगर उसका नाम बदलकर 'समिति ३०३' कर दिया, क्योंकि उसका डेविड वाइज़ और टोमस रॉस द्वारा लिखित पुस्तक *The Invisible Government* ('अदृश्य सरकार') में खुल्लोखाटन हो गया था।

अध्यक्षता राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक द्वारा ही की जाती थी। लेकिन प्रच्छन्न कार्रवाइयों की योजनाओं के बनाने में मुख्य भूमिका अब ह्वाइट हाउस में पारंपरिक मंगलवारीय "लंच" (मध्याह्न भोजन) अंदा करने लग गये—इन "लंचों" ने राष्ट्रपति जॉनसन, विदेश मंत्री डीन रस्क, प्रतिरक्षा मंत्री रॉबर्ट मैकनमारा और राष्ट्रपति के विशेष राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक मैकजॉर्ज बंडी की अनौपचारिक बैठकों का रूप ले लिया था। कालांतर में इन बैठकों में राष्ट्रपति के प्रेस सचिव, सी० आई० ए० निदेशक और संयुक्त स्टाफ-अध्यक्ष समिति के प्रधान भी भाग लेने लग गये, जिनमें बियतनाम के विरुद्ध सी० आई० ए० की प्रच्छन्न कार्रवाइयों से संबंधित योजनाओं पर विचार किया जाता था।

१७ फरवरी, १९७० को एन० एस० ए० एम० निदेश सं० ४० जारी किया गया, जिसने 'समिति-४०' की स्थापना की। इस निदेश ने प्रच्छन्न कार्रवाइयों के बारे में सभी पूर्ववर्ती रा० सु० प० निदेशों का स्थान ले लिया। इसमें कहा गया था कि अमरीकी सरकार के प्रत्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय कार्यों की भविष्य में भी प्रच्छन्न कार्रवाइयों से अनुपूरति होती रहनी चाहिए।

एन० एस० ए० एम० निदेश सं० ४० ने प्रच्छन्न संक्रियाओं के नियंत्रण तथा समन्वयन का उत्तरदायित्व सी० आई० ए० के निदेशक को दे दिया। लैंग्सी के बांस को अमरीकी विदेश तथा गृह नीति के लक्ष्यों के अनुसार प्रच्छन्न कार्रवाइयों की योजना बनाने और

संचालन करने का जिम्मा मिला। उसे सभी संबद्ध अभिकरणों तथा संगठनों से परामर्श करना था और उनमें से प्रत्येक पर जितना विश्वास किया जा सकता था, उसको सटीकतापूर्वक आंकने के बाद प्रत्येक की सहमति प्राप्त करनी थी।

नये निदेश ने 'समिति-४०' की भूमिका की भी रूपरेखा दी। उसमें सासकर यह कहा गया था कि सी० आई० ए० के निदेशक को प्रच्छन्न कार्रवाइ के सभी महत्वपूर्ण और राजनीतिक दृष्टि से नाजुक कार्यक्रमों का 'समिति-४०' से अनुमोदन प्राप्त करना होगा। यह अपेक्षा एक सर्वथा नयी व्यवस्था थी कि अनुमोदित प्रच्छन्न कार्रवाइयों के परिणामों पर 'समिति-४०' द्वारा प्रति वर्ष विचार किया जाना चाहिए।

जहाँ तक प्रच्छन्न कार्य के प्रस्तावों को 'समिति-४०' के सामने रखने की व्यवस्था की बात है, उसे सी० आई० ए० के एक आंतरिक निदेश में परिभाषित किया गया था। इसके अनुसार यह निर्णय सी० आई० ए० के निदेशक को करना था कि प्रच्छन्न कार्रवाइ का यह या वह प्रस्ताव राजनीतिक अनुमोदन के लिए 'समिति-४०' के आगे रखा जाये या नहीं।

सी० आई० ए० के आंतरिक निदेश में स्पष्टतः निर्दिष्ट किया गया था कि इसके पहले कि प्रस्ताव 'समिति-४०' में रखे जाने के लिए सी० आई० ए० के निदेशक को दिये जायें, उनका "विदेश विभाग के साथ समन्वय किया जाना चाहिए। इसके अलावा, अर्द्ध-सैनिक कार्रवाइ के कार्यक्रम प्रतिरक्षा विभाग के

साथ समन्वित किये जाने चाहिए और, सामान्यतया, संबद्ध देश में (अमरीकी) राजदूत की सहमति आवश्यक होगी। \* \*

इस तरह से तीस साल से अधिक समय तक प्रचलन सक्रियता तंत्र को बनाया और तोड़ा जाता रहा, जो अमरीकी राजनीतिक व्यवस्था का एक मूलभूत तत्व बन गया। केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी की हैरतानूनी और आपराधिक पहलों पर अमरीकी राष्ट्रपतियों और उनके उच्चस्तरीय सहायकों के अनुमोदन के "ठगने" लग जाते थे।

तथापि यह सोचना गलत होगा कि प्रचलन कारवाइयां अमरीकी विदेश नीति की सिर्फ अनुपूरक ही थीं। बल्कि अधिक ठीक कहें, तो वे ही उसे सक्रियता-पूर्वक रूप देती थीं। लैंग्ली के चालाक विश्लेषकों द्वारा "अदूरदर्शी" राजनीतिज्ञों को उल्लू बनाये जाने की सारी बात कल की तरह आज भी सर्वथा अविश्वसनीय प्रतीत होती है। पूरे के पूरे देशों और राष्ट्रों के विरुद्ध सी० आई० ए० द्वारा चलाया जानेवाला गुप्त युद्ध, जिसे राष्ट्रपति आइज़नहॉवर द्वारा एक रिपोर्ट में "बिना नियमों का खेल" कहा गया है, अमरीकी विदेश नीति का एक अभिन्न अंग रहा है और अब भी है।

१९७५ में ह्याइट हाउस ने अपने को सी० आई० ए० की आपराधिक गतिविधियों से सार्वजनिक रूप

में अलग करने की कोशिश की—अमरीकी और विश्व जनमत को इनमें से बहुतों का चिली में सैन्य हुंता द्वारा सत्ता हथियाने जाने के बाद पता चला। विदेशों में सी० आई० ए० के घृणाजनक कार्यों की जांच करने के लिए सीनेटर फ्रैंक चर्च की अध्यक्षता में एक विशेष सीनेट समिति की स्थापना की गयी, जिनकी अमरीकी जन-सूचना साधनों ने तुरंत ही एक स्वतंत्र और सत्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में छवि बना दी। सी० आई० ए० की गंदी कारसाजियों पर से परदा उठाकर अमरीकी शासक हलके एक साथ दो शिकार करना चाहते थे—एक तो जनता को यह विश्वास दिलाना कि लैंग्ली की हैरतानूनी कारस्तानियों से उनका कोई सरोकार नहीं है और इस तरह से दोष के भागी होने से बचना; और, दूसरे, "निष्पक्ष न्याय" का, जिसे चिल्ला-चिल्लाकर अमरीकी लोकतांत्रिक व्यवस्था की अंतर्निहित विशेषता बताया जाता है, दिखावा करना।

चर्च समिति की रिपोर्ट २० नवंबर, १९७५ को प्रकाशित हुई। जैसे कि पहले ही से कहा जा सकता था, उसने अमरीकी राजनीति में कोई सनसनी नहीं पैदा की। उसके भंडाफोड़ करने के उत्साह को और ध्वंसात्मक कार्यों की मिसालों के तौर पर उसके द्वारा उद्धृत तथ्यों को सी० आई० ए० के सेंसर की कैंची ने, सासकर विशेष सी० आई० ए० के परामर्शदाता मिशेल रोगोविन ने सीमित कर दिया था। इसका निर्णय रोगोविन को ही करना था कि कौनसे तथ्य सीनेटर जनता के सामने ला सकते



हैं और कौनसे गुप्त रखने होंगे।

इसके बारे में टीका करते हुए 'न्यूयॉर्क टाइम्स मैगेजीन' ने लिखा, "रिपोर्ट कोई बहुत बड़ी खबर नहीं बनी और उसने कोई जोरदार बहस-मुवाहसा नहीं पैदा किया। उसमें सी० आई० ए० के प्रतिनिधियों की ही चली और उन्होंने ऐसी कोई बात सामने नहीं आने दी, जो किसी भी तरह से प्रच्छन्न कार्रवाइयों में कोई भी दिलचस्पी जगा सकती थी।" पत्रिका ने चर्च समिति की कार्रवाइयों को अकारण ही "अमूर्त और अपूर्ण" नहीं कहा।

लेकिन अत्यंत सावधानीपूर्वक चलाये प्रचार अभियान के बावजूद ह्वाइट हाउस जनता को यह विश्वास दिलाने में नाकाम रहा कि प्रशासन को सी० आई० ए० के अपराधों की कोई जानकारी न थी। तथ्यों ने साबित कर दिया कि सैंगली के कुचक्री कार्य विशेषज्ञ और ह्वाइट हाउस में रहनेवाले असल में एक ही पैली के चट्टे-बट्टे हैं।

## “मिस्टर डैथ” की आत्मस्वीकृतियां और मृत्यु

याद दिला दें कि सी० आई० ए० के भीतर प्रच्छन्न कार्रवाइयों का पहला उपकरण—पिछले अध्याय में वर्णित नीति समन्वयन कार्यालय—१९४८ में स्थापित किया गया था, जिसे और कामों के अलावा “अंतर्ध्वंस, शरणार्थी मुक्ति दलों को सहायता और अधिकृत

अथवा संकटस्थ इलाकों में कम्युनिस्टविरोधी दलों का समर्थन”\* भी करना था। बाद में, सी० आई० ए० की आंतरिक संरचना के विकसित होने के साथ-साथ ये कुत्प अमरीकी गुप्तचरी कार्रवाई कार्यालय के डांचे के भीतर स्थापित एक विशेष प्रभाग के सुपुर्द कर दिये गये।

कुदरती तौर पर इस तरह के “नाजुक” कामों को क्रियान्वित करने के लिए सी० आई० ए० को सुप्रशिक्षित कर्मियों की आवश्यकता थी और उसने इस आवश्यकता को अविलंब पूरा किया। संयुक्त राज्य अमरीका में, और बाद में, विदेशों में, आतंकवादियों, अंतर्ध्वंसकों और हत्यारों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष अट्टे और शिविर स्थापित किये गये। उनमें विशेष संक्रिया प्रभाग के नियमित कर्मियों और इसी प्रकार तथाकथित अर्द्ध-सैनिक संक्रियाओं अथवा अन्य “नाजुक” कार्यों में इस्तेमाल किये जानेवाले विदेशी एजेंटों तथा भाइ के सैनिकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता था।\*\*

ऐसे ही एक शिविर में प्रशिक्षित भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट फ़िलिप एन्जी ने अपनी पुस्तक 'कंपनी के राजः सी० आई० ए० की डायरी' में उसका इस तरह वर्णन किया है:

\* *Final Report* ..., p. 144.

\*\* Victor Marchetti and John D. Marks. *The CIA and the Cult of Intelligence*, Alfred A. Knopf, New York, 1974, p. 124.

"...प्रशिक्षण केंद्र घने जंगल में है और ऊंची जंजीरदार बाड़ों और काटेदार तारों से घिरा हुआ है, जिन पर जगह-जगह आसानी से दिखायी देनेवाले 'सरकारी आरक्षित क्षेत्र। अतिधिकार प्रवेश वर्जित' के चेतावनी पट लगे हुए हैं। केंद्र की उत्तरी सीमा न्यूगॉर्क नदी है और वह स्वयं कठोर नियंत्रणाधीन क्षेत्रों में विभाजित है, जिनमें हवाई... तथा समुद्री संक्रियाओं में प्रशिक्षण देने की अलग-अलग स्थलियां हैं।

"किसी निषिद्ध क्षेत्र में सुरक्षित घुसपैठ कर लेने के बाद अकेले एंजेट या पूरी टोली को कई तरह के काम करने पड़ सकते हैं। अक्सर घुसपैठिया टोली का कार्यभार किसी गुप्त स्थान में हथियार, संचार उपस्कर अथवा अंतर्ध्वंस सामग्री छिपाना होता है, जिसे बाद में वहां पहुंची कोई दूसरी टोली खोज निकालेगी और उसका प्रयोग करेगी। अथवा घुसपैठिया टोली लक्ष्य-स्वामी पर कई दिन, सप्ताह या महीनों बाद कियाशील होनेवाली दाहक अथवा विस्फोटक युक्तियों को रखकर अंतर्ध्वंस कर सकती है। अंतर्ध्वंस आयुधों में मोटर-गाड़ियों को जाम करनेवाले तेल तथा पेट्रोल संदूधक, छपाई मशीनों को ठप्प करनेवाले संदूधक, जहाजों को डूबोने वाली मुरगें, विस्फोटक तथा दाहक यौगिक भी सम्मिलित हैं... अंतर्ध्वंस प्रशिक्षकों अथवा 'जलाने-उड़ानेवालों' ने अपनी क्षमताओं के प्रभावोत्पादक प्रदर्शन किये हैं, जिनमें से कुछ कार्रवाइयां इतनी चतुराई की हैं कि वे अपने पीछे मुश्किल से ही कोई

मुराग छोड़ती हैं।"\*

ऐसे ही विशेष पाठ्यक्रम के एक और "स्तातक" ने अपने प्रशिक्षण के बारे में 'रैपर्ड्स' पत्रिका को विस्तार से इस प्रकार बताया है:

"अर्द्ध-सैनिक विशालय का घोषित लक्ष्य हमें उन ग्रामीण किसानों के शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित और सज्जित करना था, जो छापामारों से अपनी रक्षा करना चाहते थे। मैं इसमें विश्वास कर सकता था...

"लेकिन फिर हम सी० आई० ए० के ध्वंसकार्य प्रशिक्षण मुख्यालय में जा पहुंचे... और वहीं हमें ऐसी युक्तियों तथा कामों में प्रशिक्षित किया गया... जिनकी जेनीवा समझौते से शायद ही कोई संगति थी।

"हमें जिन अनेक विधिवर्जित शस्त्रों से परिचित कराया गया, उनमें लगते ही फट जानेवाली गोलियां, आवाज न होने देनेवाली युक्ति से सज्जित मशीनगन, हस्तनिर्मित विस्फोटक और नपाम भी थे...

"और फिर एक ठोसी घैतानी ईजाद भी थी, जिसे लघु तोप कहा जा सकता है। यह युक्ति एक सुनम्य विस्फोटक से भरे इस्पात के नतोदर टुकड़े से बनी थी... उसे पेट्रोल की टंकी के साथ इस तरह से जकड़ दिया जाता था कि दाहक गोला टंकी को

\* Philip Agee, *Inside the Company: CIA Diary*, Penguin Books, Baltimore, 1975, pp. 45-46, 83-84.



पाइ दे और दहकते पेट्रोल को बस की पूरी लंबाई में फैला दे, जिससे भीतर हर कोई आदमी भस्म हो जाये। यह शेष कक्षा को मुझे ही दिखाना था कि ऐसा कितनी आसानी से किया जा सकता है...

"मैं वहाँ बड़ा लपटों को बस की निगलते देख रहा था। मेरे खयाल में यही सत्य को जानने की घड़ी थी। जलते हुए लोगों से भरी इस बस का स्वतंत्रता से क्या संबंध हो सकता है? लोकतंत्र और सी० आई० ए० के नाम पर मुझे यह सत्य करने का क्या अधिकार है कि यों ही लोग मौत का शिकार बनें?"\*

अपनी पुस्तक 'कंपनी के राज' में फ्रिलिप एजी इसी का विस्तृत चित्र प्रस्तुत करते हैं कि विदेशों में कार्यरत और अमरीकी गुप्तचरों द्वारा निदेशित आतंकवादी गुटों को सी० आई० ए० किन लक्ष्यों से और किस प्रकार शस्त्रसज्जित करती है:

"अर्ध-सैनिक सक्रियाओं से ही घनिष्ठ रूप में जुड़ी हुई वे विध्वंसकारी कार्रवाइयाँ हैं, जो लड़ाकू कार्रवाई के नाम से जानी जाती हैं। गुटों के गिरोह गठित करके और उनकी सहायता से, जिनमें मिसाल के लिए कभी-कभी ह्यूटी से मुक्त पुलिसवाले या मित्र राजनीतिक पार्टियों के उग्रवादी लोग होते हैं, केंद्र कम्युनिस्टों और दूसरे चरम बायपंथियों को उनके जलसे-जलूसों और प्रदर्शनों को भंग करके डराने की कोशिश करते हैं।

\* Victor Marchetti and John D. Marks, *op. cit.*, pp. 111-112.

"ऑ० एस० डी०\* का प्राविधिक सेवा प्रभाग इन प्रयोजनों के लिए तरङ्ग-तरङ्ग के हथियार और साधन तैयार करता है। सभा कक्षों में कांच की छोटी-छोटी शीशियों में भरे अत्यंत दुर्गंधमय तरल फेंके जा सकते हैं। सभा होने की जगह पर एक बेहद महीन पारदर्शक पाउडर छिड़का जा सकता है, जो नीचे बैठने पर अदृश्य हो जाता है, मगर लोगों की भीड़ की आमद-रफ्त से हिलने पर अश्रु गैस का असर पैदा करता है।

"विशेषकर निर्मित टिकियों पर एक दाहक पाउडर पुता हो सकता है और जलने पर यह संयोग बड़ी मात्रा में ऐसा धूआँ पैदा करता है, जो आंखों और श्वसनपथों पर सामान्य अश्रु गैस की अपेक्षा कहीं जोरदार असर करता है। भोजन में एक स्वादहीन तथा गंधहीन द्रव्य मिलाया जा सकता है, जिससे त्वचा में सूजन आ जाती है। और एक निर्मल द्रव की कुछ ही बूंदों से आदमी तनावमुक्त होकर बेभिभ्रक बातें करने लगता है। मोटरगाड़ियों के स्टीयरिंग पर अथवा शीचालयों में सीटों पर एक अदृश्य खुजलीकारी पाउडर बुरका जा सकता है, और एक अदृश्य मलहम के त्वचा पर लगते ही सलत जलन होने लगती है। सिगरेटों और सिगारों में रसायन-संसाधित तंबाकू मिलाया जा सकता है, जो श्वसन रोग पैदा करता है।" \*\*

\* 'युक्तिम सेवा विभाग'। (Operational Services Division) - सं०

\*\* Philip Agee, *op. cit.*, pp. 84-85.

आज प्राविधिक सेवा प्रभाग इन्हीं कृत्यों का निष्पादन सी० आई० ए० के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी निदेशालय के अंतर्गत करता है।

इस निदेशालय में कोई १,३०० लोग काम करते हैं और इसका वार्षिक बजट १२ करोड़ डालर तक है। यह निदेशालय सिर्फ सी० आई० ए० की अन्य शाखाओं के लिए आवश्यक अधिक महत्वपूर्ण सामग्रियों की संसाधित ही नहीं करता है, बल्कि विशेषकर जटिल अर्द्ध-नैनिक कार्रवाइयों के लिए नये तरीकों और प्रविधियों की खोज भी करता है। सी० आई० ए० के डाँचे में तथाकथित आपूर्ति अनुभाग भी विशेषतः महत्वपूर्ण है। वह साज-सामान और "औजार", अर्थात् विभिन्न संक्रियाओं के लिए हथियार तैयार करता है।

अमरीकी गुप्तचर्या द्वारा विदेशी नेताओं के विरुद्ध की जानेवाली आतंकवादी कार्रवाइयों से संबद्ध अनेक विशेष मामलों की अपनी तहकीकात के दौरान सीनेट प्रवर समिति ने यह स्थापित किया कि साठ के दशक के आरंभ में सी० आई० ए० ने सामान्य संक्रिया कार्यों के डाँचे के भीतर हत्याओं का संगठन और क्रियान्वयन करने के लिए एक विशेष प्रभाग का गठन किया था। प्रभाग का कूटनाम ZR/RIFLE था। "सामान्यरूपेण, ZR/RIFLE को हत्याओं से संबद्ध प्रश्नों का निर्णय करना था और उसके लिए आवश्यक आधार केंद्र तैयार करना था। अधिक सुस्पष्ट शब्दों में, उसे भावी हत्यारों को प्रशिक्षित करना था और

हर नियत मामले में प्रयोग में लायी जानेवाली हत्या-प्रविधि विकसित करती थी।"\*

लोगों को जान से मारने के परिष्कृत तरीके विकसित करने के लिए केंद्रीय गुप्तचर एजेंसी अनेक अनुसंधान संस्थानों और कंपनियों की सेवाओं का उपयोग करती है, जिनमें विविध क्षेत्रों में उच्च योग्यता-प्राप्त विशेषज्ञ काम करते हैं। पत्रकारों को इनमें से एक से भेंट करने का अवसर मिला। उसका असली नाम न जान पाने के कारण पत्रकारों ने उसे "मिस्टर डैच" ("बी मृत्पु") नाम दे दिया।

यहाँ "मिस्टर डैच" के साथ इस भेंटवार्ता का, जो एक अमरीकी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

प्रश्न: सीनेट प्रवर समिति द्वारा सी० आई० ए० के जासूसी कार्यों की जांच के दौरान समिति के अध्यक्ष फ्रैंक चर्च को सी० आई० ए० के भूतपूर्व निदेशक विलियम कॉल्बी ने एक बिखलित डार्ट पिस्तौल (डार्ट अथवा छोटे-छोटे शर फेंकने की पिस्तौल) दिखाया थी... उसे टेबीविज़न पर भी दिखाया गया था और उसके चित्र देश भर के समाचारपत्रों के पहले पन्ने पर छपे थे। आप इस पिस्तौल के बारे में कुछ जानते हैं?

\* 'जासूसी स्मैरेड' ('सी० आई० ए० घटवर्ग'), मास्को, १९७६, पृ०-१=१, (४वीं में)।

उत्तर: मैंने समय-समय पर कम से कम आधा दर्जन हार्ट पिस्तौलें देखी होंगी, क्योंकि मैं या तो प्राक्षेपिकी की परीक्षा करता था या विधाकृतीकरण विधियों की। चर्च समितिवाली उस पिस्तौल को बिजलीचालित कहा गया है। मुझे इसमें बहुत शक है। मैंने जो विद्युत पिस्तौलें देखी हैं, वे चुंबकीय गोलियां इस्तेमाल करती थीं और आकार में अधिक बड़ी थीं।...

प्रश्न: ...आपने कहा था कि आपका काम विधों से ताल्लुक रखता था। यह किस तरह का काम था?

उत्तर: बुनियादी तौर पर सी० आई० ए० ने मुझसे हत्या की कई विधियां और युक्तियां निकालने के लिए कहा था। मैंने जिन भी चीजों पर काम किया, लगभग वे सभी लोगों को मारने के लिए थीं। मेरा जिन तीन मुख्य हत्या-प्रविधियों से सरोकार था, वे गोली से मारने, जहर से मारने और विस्फोटक युक्तियों से मारने की प्रविधियां थीं...

प्रश्न: क्या आप हमें किसी ऐसे हथियार की मिसाल दे सकते हैं, जो जहर का उपयोग करता था?

उत्तर: हां। छठे दशक के मध्य में मुझसे संपर्क रखनेवाला सी० आई० ए० का एक एजेंट एक समस्या लेकर मेरे पास आया, जिसे वह हल करवाना चाहता था। वे बातें हमेशा परिकल्पनात्मक रूप में रखी जाती थीं। मिसाल के लिए, मान लीजिये कि आप किसी को हवाई जहाज पर बिना बहुत ध्यान आकर्षित किये मारना चाहते हैं। और, इसका सबसे सीधा

उपाय है कोई संपर्क-विष। मुझे एक ड्रब्य दिया गया, एक तरल, जो त्वचा में प्रवेश कर जाता है और उसमें आप जो भी मिला दें, वह उसे अपने साथ ले जाता है। किसी के कपड़ों पर, उसके जूतों में बस एक बूंद डाल दीजिये। यह इस तरह के काम के लिए सबसे बुनियादी औजार होगा।

प्रश्न: आपने अपना ऐसा विष तैयार किया?

उत्तर: हां, बल्कि मैं एक कदम और आगे गया। मैंने सर्प-विषों के साथ प्रयोग करना शुरू किये।... पहले मैंने हिमशुष्कित व्याघ्र-सर्प-विष का अध्ययन किया। अंततः मैंने जिसे चुना, वह बूमस्लेंग (अफ्रीकी बनो का एक वृक्षवासी महानाग) नामक एक और ही सांप था, क्योंकि उसके विष के लक्षण बहुत ही सूक्ष्म होते हैं। वह आंतरिक रक्तस्राव पैदा करता है और आदमी की मौत कई दिन बाद ही आकर होती है। बताना भी मुश्किल होगा कि उसके साथ हुआ क्या था।...

प्रश्न: आपको बूमस्लेंग का विष कहां से मिला?

उत्तर: उस समय, छठे दशक के आरंभ में, विदेशी जीवों को पालतू जीवों की दुकानों से पाना खासा आसान हुआ करता था।...

प्रश्न: आपने कहा कि सी० आई० ए० ने आपको ऐसे काम करने को दिये, जिनके उद्देश्य के बारे में आपको कोई जानकारी नहीं थी। क्या ऐसे मौके भी आये, जब आपको ठोस काम के बारे में विस्तार से बताया गया?

उत्तर: जिस अकेले मीके पर उसे मुझसे महज "मान लीजिये" के बजाय कुछ निश्चित रूप में कहना पड़ा, वह तब था, जब वह एक काले आदमी को हटाना चाहता था, जो जैगुआर कार चलाया करता था।

प्रश्न: हटाना?

उत्तर: जी हाँ, यह बात को मीठी बनाने का उनका अंदाज था... बहरहाल, इस काले आदमी को अपनी यात्रा में एक निश्चित घड़ी पर, कह लीजिये कि स्टार्ट करने के आठ मिनट बाद, मरना था—क्यों—यह मैं नहीं जानता... फिर भी मुझे काफी कुछ जानना जरूरी था—उसका ब्रजन, वह सब्बा तो नहीं है, ऐसी ही सारी बातें। आखिर उन्होंने मुझे एक जैगुआर कार का स्टीयरिंग लाकर दिया और कार चलाते एक आदमी का फोटो भी, जो सिर्फ स्टीयरिंग पर उसके हाथों का ही था। इसी से मैंने जाना कि वह काला है। पता नहीं क्यों, मगर मुझे यह अजीब लगा।...

बहरहाल, मैंने एक लेप तैयार किया... और उसे चक्के पर वहाँ लगा देने को कहा, जहाँ वह आम तौर पर अपने हाथ रखा करता था। मैंने मात्रा ऐसी रखी थी कि बिप आठ मिनट में, या जो भी समय रहा हो, उसमें अपना काम कर डाले। लगता है कि वे उससे खुश हुए।

प्रश्न: आप कैसे कह सकते हैं कि वे खुश हुए?

उत्तर: बात यह है कि एक आदमी ने, जिसे मैं

सासी अच्छी तरह से जानता था, मुझे एक बाहरी काम पर चलने का निमंत्रण दिया और मुझे कुछ ऐसा लगा कि यह निमंत्रण अच्छी तरह से किये काम के बोनास की तरह है।

प्रश्न: "बाहरी" से आपका क्या आशय है?

उत्तर: देश के बाहर।

प्रश्न: यह किस तरह का काम था?

उत्तर: मुझे लेने के लिए कार आयी। मेरा परिचित भी उसमें था। हमें सीधे एक हवाई जहाज पर पहुँचाया गया। फिर हम सारी रात उड़ते रहे, मुझे तो यही लगा। जहाज कहीं उतरा। एक और कार हमें लेने आयी हुई थी। हमें बाहर देहात में कहीं ले जाया गया। वहाँ एक आदमी के पास एक टैंकमार हथियार था। उसने पूछा, "आप इसे इस्तेमाल करना जानते हैं?" मैंने कहा, "हाँ।" उसने कहा, "ठीक है, इस्तेमाल कीजिये।" मैंने पूछा कि वह उसे किस पर इस्तेमाल करवाना चाहता है, तो उसने एक पहाड़ी पर एक संकरी सी सड़क पर जाते फ्रॉजी ट्रकों के ताफिले की तरफ इशारा किया। सो मैंने एक-दो ट्रकों को उड़ा दिया... मैंने हथियार चलाया ही था कि मेरे दोस्त ने मुझे कार की तरफ वापस भेज दिया और वह, जैसे उसने बताया, "उन्हें खत्म करने" के लिए चला गया।

प्रश्न: इसका क्या मतलब है?

उत्तर: बस, उसने अपनी पिस्तौल निकाली और हर आदमी के सिर में एक-एक गोली दाग दी, जिससे

यह पक्का विश्वास हो जाये कि वह मर गया है। बहरहाल, मुझे यही लगा कि मुझे विष प्रणालियों के साथ अच्छे काम का इनाम दिया जा रहा है। मुझे ऐसा इनाम नहीं चाहिए था। बाद में मैंने उस आदमी से, जिसने मुझे निर्मज्जित किया था, पूछा कि यह सब क्या है। उसने बस चकित भाव से मेरी तरफ देखा और कहा, "क्या तुम्हें इसमें मजा नहीं आया?"

प्रश्न: अभी तक हम रासायनिक प्रणालियों के बारे में ही बातें करते रहे हैं। क्या आपने उस हार्ट फिस्तील जैसी जुगतें भी डिजाइन की थीं?

उत्तर: बिल्कुल वैसी ही तो नहीं, मगर उस किस्म की कई और चीजें। मोटरकार कांड के बाद मेरा परिचित मेरे पास एक और परिकल्पनात्मक समस्या लेकर आया: "मान लीजिये कि आप ऐसी स्थिति में हैं, जिसमें कमरे में कोई भी आनेयासब या ऐसी कोई भी चीजें लाना असंभव हो, जो संदेह पैदा कर सकती हैं। आप कमरे में मौजूद लोगों से कैसे निपटेंगे?" कुदरती तौर पर मैंने पूछा है: "निपटने" का मतलब क्या है?" मेरा मतलब है कि क्या आप उन्हें हटाना चाहते हैं, या अस्थायी रूप में कार्यक्षम बनाना? जान के साथ बलात्कार? जरा अश्लील होने पर भी यह क्रिकरा मुझे हमेशा से पसंद है। और, इस विशेष प्रसंग में मेरे संपर्क आदमी ने कहा, "हम उन्हें हटाना चाहते हैं, पूरे ही तौर पर। पर वे औसत आकार के कमरे में सासी बड़ी संख्या में होंगे।" और मैं अपने द्वारा तैयार की गयी दुष्टतम जुगतों में से एक

की तैयारी में जुट गया। प्रसंगतः, इन जुगतों का हमारी बोली में नाम भी यही था - "मिश्रित दुष्ट-ताएं"। यह चीज थी: कोई ०.४५ इंची (११.४ मि० मी०) कारतूस के आकार का एक अतिलघु बम। आपने फेंका कि वह फट गया। उसमें दृढ़ीकृत इस्पात के छर्रे भरे हुए थे, ... जो जहर में बुझे थे।...

प्रश्न: क्या यह बम फेंकनेवाले के लिए भी खतरनाक नहीं था?

उत्तर: बेशक था। वह उसे भी वही का वही मार सकता था।

प्रश्न: क्या एजेंसी ने इस सामान पर आपत्ति नहीं की?

उत्तर: नहीं। और मुझे यह दिलचस्प लगा। प्रसंगतः, उन्होंने कहा कि मैं उसकी और किस्में तैयार करूं, जिनमें एक ऐसी हो, जो फेंकनेवाले को जिंदा रहने का मौका दे। इसमें एक पलीते जैसी चीज थी, जिसे आप सिगरेट से या किसी और चीज से सुलगा सकते थे। एक और रूपांतर दूसरे ढंग से सुलगाता था। बस, टेप को उखाड़ना होता था, जिसके नीचे माचिस की तीलियों पर लगे मसाले जैसी ही एक सामग्री लगी थी - बस, उसे तीली की तरह रगड़िये और फेंक दीजिये। तीसरे रूपांतर में मैंने ... पलीते के साथ लाल फ्रॉस्फोरस मिला दिया। अगर आप इसे क्ला... तॉर्न से तर कर दें, तो कारतूस नहीं फटेगा। लेकिन अगर पलीते को आप सूख जाने दें, तो वह अत्यंत विस्फोटक हो जाता है। बस कारतूस कमरे के बीच में फेंक



दीजिये और वह फट जायेगा। आप उसे किबाड़ के ऊपर, शौचालय में सीट के नीचे और कहीं भी रख सकते थे, जहाँ उस पर रगड़ लग सके। एक बार सजिय कर दिये जाने पर उसे अक्रिय करना आसान नहीं था।

प्रश्न: आपने ये कितने बनाये?

उत्तर: यही कोई १५ या २०।...

प्रश्न: सी० आई० ए० के लिए आपने और क्या चीजें बनायी थीं?

उत्तर: कई बहुत बार अजीब अनुरोध भी आते थे। मैंने कुछ ऐसे कारतूस तैयार किये, जिनमें ट्रिटिल नामक विस्फोटक भरा था, जिससे कि अगर आप ऐसे कारतूस को छोड़ें, तो वह आपको और साथ में हथियार को भी उड़ाकर सीधे छत तक फेंक दे। मैं जिन सी० आई० ए०-वालों को जानता था, उनका सामान्य हथियार ५.६ मि० मी० व्यास की वाल्टर पिस्तौल थी। मुझे जो पिस्तौल मिली हुई थी, उसकी नाल में सायलेंसर लगाने के लिए चूड़ियां काटी हुई थीं। और एक बार मुझे एक पिस्तौल में इस तरह की तबदीली करने को कहा गया कि जिससे चलाये जाने पर उसका नालपृष्ठ फटकर पीछे की तरफ उड़े और चलायेवाले को मार दे। मेरा खयाल है कि वह हमारे लोगों में से ही किसी के लिए था।

प्रश्न: क्या आपके कहने का यह मतलब है कि वे अपने ही लोगों की हत्या कर रहे थे?

उत्तर: मैं इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता कि

उन्होंने उस युक्ति को—या मेरे द्वारा बनायी गयी सारी ही युक्तियों में से किसी को भी—किस तरह इस्तेमाल किया। मैं तो उन्हें सिर्फ बनाता ही था। लेकिन एजेंसी में कई आदमियों ने मुझे यह स्पष्ट आभास दिया था कि अगर जरूरी होया, तो वे अपने ही लोगों को भी "अलग" कर देंगे।...

प्रश्न: आपने कहा कि आपको सी० आई० ए० से एक पिस्तौल मिली हुई थी। मगर किसलिए?

उत्तर: वह भी शायद एक तरह का इनाम थी। मैंने कुछ काम किया, जो उन्हें पसंद आया। फिर मेरा एक परिचित—वही, जो मुझे कराकस ले गया था—एक दिन मुझे दोपहर खाना खिलाने ले गया। उसने बताया कि वे मेरे काम से खुश हैं। फिर उसने मुझे एक पैकट दिया। उस समय मैं... अनुसंधान संस्थान में काम करता था। मैं यह पैकट वहां लाया और यह देखने के लिए उसका एक्स-रे किया कि उसमें क्या है।

प्रश्न: आपने उसे सीधे ही क्यों नहीं खोल लिया?

उत्तर: बात यह है कि मैंने सोचा कि अगर वे इतने खुश हैं, तो वे मुझे जख्म भी भेजना चाह सकते हैं। सच पूछें, तो यह बस सामान्य सावधानी ही थी। और देखता क्या हूँ!—एकदम नयी वाल्टर पिस्तौल और उसके साथ सायलेंसर बना बढ़िया, नया सायलेंसर।

प्रश्न: अभी तक आपने जिस काम के बारे में बताया है, क्या वह उसका नमूना है, जो आप पचास

के दशक के मध्य से लेकर अंत तक की अवधि भर करते रहे थे?

उत्तर: जी हां, मगर, बेशक, मेरे पास नियमित घंटा भी था। मैं... संस्थान के लिए अनुसंधान कार्य कर रहा था, जो उन सभी कामों में लगा हुआ था, जिनकी कल्पना की जा सकती है। संस्थान में मेरी पहली परियोजनाओं में एक मिनिएचर डिटोनेटर (लघु अधिस्फोटक) डिजाइन करना और उनकी परीक्षा करना था। मुझे मालूम था कि वहां एक तिजोरी है, जिसमें गुप्त कामों की रिपोर्टें रखी जाती हैं और मैं नियमित रूप से उन्हें पढ़ने के लिए जाया करता था, मज़बूत इसलिए कि वे मुझे दिलचस्प लगती थीं। नाभिकीय युक्तियों से लेकर तोप प्रौद्योगिकी तक सभी कुछ... मेरे वहां काम करने के समय प्रयोगशालाएं तलधर में थीं और वहां सुसज्जित चांदमारी मैदान भी था, जिसमें मिनिएचर गोलियों से लेकर २२ मि० मी० गोलों तक तरह-तरह के गोली-गोलों के प्रयोग किये जा सकते थे। मैं छद्मदर की तरह काम करता। खासकर सरदियों में मैं अक्सर सवेरे ही नीचे चला जाता, जब अंधेरा ही होता था, और रात गये ही उभर आता, जब फिर अंधेरा ही होता। मैंने दिन की रोशनी कभी देखी ही नहीं।

प्रश्न: क्या यह कोई गुप्त संस्थान था?

उत्तर: नहीं, स्वयं संस्थान गुप्त नहीं था। मैं जो काम कर रहा था, उसका अधिकांश गुप्त था, मगर संस्थान के कई विभाग खुले अनुसंधान के लिए

थे और बाहरी लोग आ-जा सकते थे।...

प्रश्न: आपने मिनिएचर डिटोनेटरों का उल्लेख किया। वे सी० आई० ए० के लिए थे या संस्थान के लिए आपके औपचारिक काम में आते थे?

उत्तर: दोनों ही बातें थीं। औपचारिक रूप में मैं मिसाइलों (प्रक्षेपास्त्रों) के आयुध शीर्ष और तोप-गोलों के लिए डिटोनेटर विकसित कर रहा था। अनौपचारिक रूप में मैं शक्तिशाली विस्फोटक पदार्थों को स्फोटित करने के लघुकृत टाइमर और डिटोनेटर विकसित कर रहा था।...

प्रश्न: तो संस्थान के लिए विकसित किये जानेवाले और सी० आई० ए० के लिए विकसित किये जानेवाले डिटोनेटरों में क्या फर्क था?

उत्तर: बुनियादी तौर पर सिर्फ रूप का। सी० आई० ए० के लिए निर्मित मॉडलों को अधिकतर मार्लबोरो सिगरेट की डिब्बियों का रूप दिया जाता था। उन्होंने अनुरोध किया था कि मैं उन्हें ऐसा बनाऊं कि जिससे वे सिगरेट की डिब्बियां जैसे लग सकें और इसके लिए सबसे सुविधाजनक मार्लबोरो की डिब्बियां ही थीं।

इसके बाद कुछ और अजीब अनुरोध आये। बाद में, संस्थान में मेरे काम करने के आखिरी दिनों में, ग्रेवल सुरंग को विकसित किया जा रहा था। ग्रेवल चाय की पुड़िया के आकार की स्थल सुरंग को दिया गया कूटनाम था। इन सुरंगों को हवाई जहाजों से गिराया जाता था और जमीन पर पहुँचकर

वे अपने को उद्वाष्पन द्वारा सक्रिय कर लेती थी। उनका प्रयोजन वह था कि हवाई जहाजों द्वारा विशाल भाषाओं में उन्हें गिराकर किसी इलाके को शत्रु के लिए अगम्य बना दिया जाये। ये सुरंगें आदमी की जान नहीं लेती थीं। लेकिन अगर उस पर कदम पड़े, तो वह फट जाती थी और पैर की एक-एक हड्डी को चूर-चूर कर देती थी। दर असल, मेरा काम उनके लिए एक अक्रियकरण पद्धति विकसित करना था। और सो भी इसलिए कि एक बैठक में मैं यों ही पृष्ठ बैठा था: "भाई, अगर आप कहीं अरबों-खरबों ग्रेवल सुरंगें गिरा देते हैं और बाद में उस इलाके को सर करने के लिए जाते हैं, तो आप वहां क्या करेंगे? क्या वहां पैरबांसों पर चलेंगे?"

प्रश्न: यह काम संस्थान के लिए था या सी० आई० ए० के लिए?

उत्तर: यह भी दोनों ही के लिए था। मेरा काम अक्रियकरण पद्धति विकसित करना था। मैंने कुछ ऐसी ग्रेवल सुरंगें बनायीं, जो इन अर्थों में सामान्य थी कि वे उसी तरह से काम करती थीं कि जैसे उन्हें करना चाहिए था। इसके अलावा मैंने कुछ सुरंगें सी० आई० ए० के लिए भी बनायीं, जिनमें जहर में बुझे कांच की किरबें भरी हुई थी। मैंने कुछ इस तरह की भी बनायी थी, जो देखने में तो अक्रियकृत लगती थी, पर असल में थीं नहीं। एक पद्धति के अनुसार अक्रियकृत होने पर ग्रेवल सुरंग अपना रंग बदल लेती थी। इसलिए मैंने कुछ ऐसी

ग्रेवल सुरंगें बनायीं, जो रंग तो बदल लेती थीं, पर अक्रिय नहीं होती थीं। मैं उन्हें अपने हाथ से बनाया था और मैक्सवेल हाउस कॉफी के डिब्बों में रखकर अपने संपर्क आदमी के सिपुर्द कर देता था। किसी अजीब कारण से घड़ी निर्दिष्ट था कि वे इन डिब्बों में सीलबंद हों। संस्थान में मेरे काम के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी। मुझे मैक्सवेल हाउस कॉफी खरीदनी होती, डिब्बों को बोलकर खाली करना होता, फिर सुरंगें भरकर डिब्बों की दुबारा भलाई और घिसाई करनी होती और उन पर फिर से रोगन करना होता, जिससे ऐसा लगता कि उन्हें खोला नहीं गया है। किस मजसद के लिए करना था, यह मैं नहीं जानता। मुझे पता चला है कि स्वाम द्वीप पर, जहां ग्रेवल सुरंगें विशाल भाषाओं में विशेष गोदामों में लोहे के विशेष ढक्को में अब भी संग्रहीत हैं, उनमें से कुछ सक्रिय हो गयी हैं। उन्हें जब तैयार किया जाता है, तब उनमें भरा मसाला गीला होता है और अगर वह सूख जाता है, तो सुरंग सक्रिय हो जाती है। प्रत्यक्षतः, वहां ऐसा ही हुआ होगा।...

प्रश्न: क्या ये सुरंगें कभी इस्तेमाल में आयीं?

उत्तर: भगवान मेरे, बेशक! वियतनाम शायद ग्रेवल सुरंगों का एक विराट मैदान बना हुआ था। वह कोई प्राणघातक चीज नहीं थी। वह तो बस पैर की हड्डी-हड्डी का मलीदा ही बना देती थी। मेरा मतलब है जैली।... मैं यह इसलिए जानता हूँ कि



मैंने उनकी परीक्षा होते देखा है, जो सचमुच एक भयानक दृश्य है।

प्रश्न: उनकी परीक्षा कैसे की जाती थी?

उत्तर: इसके लिए हमें लाशों से कटी टांगों को लेना होता था, जो, प्रसंगत, वियतनाम में मारे जानेवाले लोगों की लाशें थीं। उनके परिवारों से यह कह दिया जाता था कि उनकी टांगें लड़ाई में जाती रही थीं। बहरहाल, हम पैर को फौजी मोजे में घुसाते और उसे फौजी बूट में डाल देते और इसके बाद उसे एक व्यक्ति से जोड़ देते, जो उसे ग्रेवल सुरंग पर १७० पाउंड (लगभग ८५ किलोग्राम) वजन के आदमी जितने बल के साथ रख देती थी।...

प्रश्न: आपने शुरुआत यह कहने के साथ की थी कि आपका मुख्यतः जान लेने के तीन बुनियादी तरीकों से सरोकार था। चर्च समिति की तहकीकात के दौरान औषधों और मादक द्रव्यों की ज़ाती चर्चा चली थी। आपने कभी ऐसी चीजों पर काम किया?

उत्तर: जहां तक मुझे याद है, सिर्फ़ दो बार। मेरा संपर्क आदमी मेरे पास एक-दूसरी के भीतर रखी २७ बोतलों में बंद आधा ग्राम एल० एस० डी० लाया। मुझे यह सामान संस्थान के भोजनालय में दिया गया था। आम तौर पर उसका तौर-तरीका बड़ा रूखा-सा और सीधा हुआ करता था। मगर इस बार वह ज़रा उद्भिन्न था। यह छठे दशक की बात है और एल० एस० डी० क्या होता है, इसके बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं था। मुझे उससे कुरेद-कुरेदकर

जानकारी हासिल करनी पड़ी। आखिर उसने मुझे बहुत ही मोटी रुपरेखा देनी शुरू की, जिससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इन लोगों तक के लिए वह एक सैरकानूनी चीज़ थी। मेरी यह जानने की इच्छा थी कि वह मुझे क्या दे रहा है। "अगर इसमें बाटुलिस्मस टॉक्सिन" या ऐसी ही कोई और चीज़ है, तब तो, भैया, मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहता," मैंने कहा। लेकिन, बहरहाल, आखिर उसने पैकट मुझे दे ही दिया। खैर, मैंने एल० एस० डी० को खांसी की गोलियों में मिला दिया और डिब्बों को फिर सीलबंद कर दिया। मेरे पास निओ-सिनेफ्रीन स्प्रे की बोतलों का एक पूरा डिब्बा था, जिनमें मैंने एल० एस० डी० मिलाया। वह स्प्रे ज्यादातर जुकाम में इस्तेमाल होता है।

प्रश्न: आप कैसे मात्राओं का उपयोग कर रहे थे?

उत्तर: भारी मात्राओं का। इतनी कि आपकी चेतना शायद हमेशा के लिए खत्म कर दे।

प्रश्न: आपने दो छतरनाक रसायनों की बात कही थी। दूसरा रसायन कौनसा था?

उत्तर: दूसरे का नाम बी० जेड० था। उसके साथ वायुरुद्ध बक्से में दस्ताने पहनकर ही काम करना होता था, क्योंकि वह सांस के साथ दिया जाता था। मैंने

\* बाटुलिस्म अथवा डिब्बाबंद खाद्यसामग्रियों में मौजूद बाय-विषजन्य रोगों को पैदा करनेवाला जीवविष। - सं०

ऐसे सैनिकों की, जिन्हें बी० जेड० दिया गया था, कुछ बहुत ही दहलानेवाली फिल्में देखी हैं। वे लोग विलकुल कैटेडोनी मूर्च्छाघस्तों (पेशियों की स्तब्धता के साथ इन्द्रियज्ञानशून्यता से ग्रस्त) की तरह हो गये थे। वे लोग लार चुआते हुए कुत्तों की तरह बैठे हुए थे, जिनका अपने वैहिक कृत्यों पर कोई नियंत्रण न था। अगर कोई उन्हें "खड़े हो" या "हैलमेट पहनो" जैसा आदेश भी देता था, तो वे आपे से बाहर हो जाते थे और आदेश देनेवाले को जान से ही मार देने की कोशिश करने लग जाते थे। मैंने सुना है कि इस पदार्थ का असर हफ्तों बना रहता है।...

प्रश्न: आपने देश में आंतरिक उपयोग के लिए भी कुछ ईजाद किया?

उत्तर: मैं सोचता था कि एल० एस० डी० के काम तक मैंने लगभग जो कुछ भी तैयार किया था, वह, और हो सकता है कि वे सर्वाधिक कलम भी, संयुक्त राज्य में उपयोग के लिए नहीं थे। लेकिन अब मेरे स्याल में उन कलमों का यही उपयोग किया गया।... मुझे यह न पृष्ठिये कि क्यों, अगर मुझे कुछ ऐसा लगा कि उनका कोई स्थानीय उपयोग ही था।

प्रश्न: बी० जेड० के साथ आपने कब काम किया?

उत्तर: पचास के दशक के अंत में।

प्रश्न: संस्थान छोड़ने के लिए आपको किस बात ने मजबूर किया?

उत्तर: १९९० के आसपास मुझे नफरत होने लग गयी।... मैं बेहद दुखी था।... मेरा परिवार

टूट गया था। और मैं स्पीड (मैथफ्रीनेटामाइन नामक मादक द्रव्य-अनु०) का सेवन कर रहा था।... आखिर एक दिन मैंने बड़ी कोशिश से उसे छोड़ दिया और अपने को अपने फ्लैट में बंद कर लिया।... जब मैं हफ्ते भर बाद फ्लैट के बाहर आया, तो मेरी तबीयत लासी खराब थी, अगर मैंने उस लत से पीछा छुड़ा लिया था। और उसी समय मेरी सृजन क्षमता भी फिर लौट आयी और मैंने एक छोटी सी पुक्ति डिजाइन की, जो एक छोटे से बिस्कोटक पाउडर की सहायता से एक खूजली पैदा करनेवाला रसायन छोड़ती। उस समय देश में बलात्कार कांडों की लहर आयी हुई थी।... इससे मैं सोचने लगा था कि कोई ऐसा तरीका होना चाहिए, जिससे स्त्री अपनी रक्षा कर सके। और तभी इस जुगत का विचार मेरे दिमाग में आया। मैंने उसका उत्पादन शुरू करने के लिए किसी आदमी को तैयार किया और इस तरह से... एक नयी कंपनी की स्थापना हुई।

प्रश्न: इस बीच आपका सी० आई० ए० के उस आदमी से संपर्क बना रहा?

उत्तर: नहीं, संस्थान को छोड़ने के साथ मेरा उससे संपर्क टूट गया। मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। वे शायद यही देखना चाह रहे थे कि आगे क्या होता है। फिर मेरे स्याल में कोई साल भर बाद की बात है, जब यह छोटी सी कंपनी अच्छी तरह से चल रही थी कि एक दूसरे आदमी ने मुझसे संपर्क किया।...

प्रश्न: जब उस आदमी ने आपसे संपर्क किया,

तो आपको कैसे मालूम हुआ कि वह सी० आई० ए० का है?

उत्तर: उसने मुझे सी० आई० ए० प्रत्यक्षपत्र दिखाया था। यह एक तरह का पहचानपत्र था। इसके अलावा, एक तरह से अंदाज भी हो जाता है कि वे लोग देखने में कैसे लगते हैं। जब वह शस्त्र आया, तो वह ऐसा अजीब लग रहा था कि मेरी सेक्रेटरी ने कहा, "बाहर एक आदमी आया है, जो शायद पुलिस का है।" और वह निश्चय ही पुलिसवाला लगता था—चौकोर जबड़ा, कठोरतापूर्ण आँखें।

प्रश्न: आप इन लोगों को उनके हुलिये से ही पहचान सकते थे?

उत्तर: खैर, कुछ और भी संकेत थे। जब वह शस्त्र आया, तो उसके साथ एक बहुत ही बुरा आदमी था, जो देखने में कुछ-कुछ किंग-कांग जैसा लगता था। जब वह कुर्सी पर बैठा, तो कुछ झनझनाया, जिस पर मैंने कुछ ऐसी टिप्पणी की थी, "आपकी परतली पेटी में जो भी है, वह कोई देखने लायक चीज होनी चाहिए।" वह बस मुसकराया और उसने अपना कोट खोला और वहाँ ०.४४ इंची मैग्म पिस्तौल थी। मैंने उसके पहले या बाद में कभी कोई ऐसा आदमी नहीं देखा कि जो इतना बड़ा हो कि ऐसी पिस्तौल को परतली पेटी में छिपा सके। बहरहाल, मैंने उसे देखना चाहा—उसने उसे निकाला और मेरे हाथ में दिया। उस पर कोई नंबर नहीं था। नंबर को मिटाया नहीं गया था, क्योंकि कोई नंबर ही नहीं

था। इसलिए वह या तो आग्नेयास्त्र बनानेवाली किसी कंपनी का प्रधान था या फिर कोई सी० आई० ए० एजेंट था।

प्रश्न: आपने उससे इसके बारे में पूछा?

उत्तर: नहीं। वह उस किस्म के लोगों में से नहीं था, जिनसे इस तरह की बातें पूछी जा सकती हैं।... उसने हमारे छोटे से दफ्तर पर नज़र डाली और कहा, "यह आदर्श जगह है—प्राइवेट भी है और शांत भी। यहाँ आप देरों उपयोगी चीज़ें कर सकते हैं।" मैंने उसे देखने के लिए कुछ जुगतें दीं। कुछ दिनों बाद वह वापस आया और बोला, "ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं, जो हम विशेष गोलों में भरवाना चाहते हैं। क्या आप यह कर सकते हैं?" मैंने ग्रामोफोन की मूर्तियों के आकार के नन्हें-नन्हें प्राक्षेपिक डाटों—जहर बुझी किरिचों—और ज्वालक मिश्रणों से भरे गोले बनाये।

प्रश्न: आप किन किस्मों के जहरों का इस्तेमाल कर रहे थे?

उत्तर: इन गोलों में मैं सबसे ज्यादा सोडियम सायनाइड और कुछेक स्कंदनरोधी पदार्थों (यून को न जमने देनेवाले रसायनों) का उपयोग करता था। मुझे याद है कि मैं किरिचों को उनमें डुबाता था और सुचाता था। कुछ गोलों में विदेशी विष भी भरे गये थे।... कुछ गोलों में खंडनकारी प्रभाव पैदा करने के लिए अतिशक्तिशाली विस्फोटक और छुरें भरे गये थे। मैंने एक ऐसी छोटी सी प्लेट सुरंग—मेरे खयाल में आपको उसे वही नाम देना होगा—तैयार की,

जिसे कालीन के नीचे छिपाकर रखा जा सकता था।

प्रश्न: ऐसी चीज भला किस काम में लायी जा सकती थी?

उत्तर: कौन जाने? शायद विदाई पार्टियों को सजीव बनाने के लिए। जैसे कि मैं कह चुका हूँ, मुझे सम्भव इसकी कोई सीधी जानकारी नहीं है कि इन युक्तियों में से किसे कैसे इस्तेमाल किया गया।

प्रश्न: आपने सी० आई० ए० के लिए काम करना कैसे शुरू किया था?

उत्तर: ... जब मैं कोई १७ साल का था, मेरी एक सहपाठी से दोस्ती थी, जो आग्नेयास्त्रों के मामले में उस्ताद था। उसे बंदूकों-पिस्तौलों की, खासकर नात्सी हथियारों की विलक्षण जानकारी थी। वह पक्का फ़ाशिस्त था। और एक दिन उसने मुझे बताया कि वह सी० आई० ए० के लिए काम करता है।... प्रसंगतः, वही वह शख्स था, जो मुझे कराकस ले गया था।

प्रश्न: क्या आप यह कहना चाहते हैं कि सी० आई० ए० ने आपको तब भरती किया, जब आप १७ साल के थे?

उत्तर: लगभग उसी समय। तब मैं हाई स्कूल में था।

प्रश्न: क्या यह आम तरीका है?

उत्तर: मुझे पता नहीं। मुझे बस इतना मालूम है कि ... उनके लिए इसके भी पहले से काम कर रहा था। अगर आप इस पर खीर करें कि १७ साल के कितने ही छोकरे वियतनाम में और दूसरे विश्व

युद्ध में लड़े थे, तो यह उम्र कोई इतनी कम है भी नहीं। जामुसों की सोग हमेशा चालीस साल के प्रौढ़, जेम्स बॉड क्रिस्म के लोगों के रूप में ही कल्पना करते हैं। छोड़िये भी, वह साइकिल पर जाता छोकरा भी अपनी बैल्ट में स्वचालित पिस्तौल खोसे हो सकता है—सो भी राष्ट्रीय सुरक्षा के बहाने। बहरहाल, मेरा दोस्त मुझे एक रविवार पाठशाला ले जाया करता था। वहाँ एक गिरजाघर था, जिसे हम आड़ की तरह इस्तेमाल करते थे और हम वहाँ जाकर बुनियादी शिक्षण, विचारधारात्मक शिक्षण, आग्नेयास्त्रों और विस्फोटकों, आदि में शिक्षण पाते थे।

प्रश्न: किनसे?

उत्तर: मैं नहीं जानता कि वे कौन थे, अलबत्ता पारदर्शियों, चाटों, साहित्य, आदि से वे अवश्य अच्छी तरह से तैस थे।

प्रश्न: जब आप इतने छोटे थे, तब सी० आई० ए० आपसे क्या काम कराती थी?

उत्तर: अधिकांशतः सायलेंसर बनाने का ... मेरा दोस्त समय-समय पर मेरे पास आता और कहता कि उन्हें ऐसी-ऐसी पिस्तौल के लिए सायलेंसर चाहिए और मैं उसे तैयार कर देता। वे इस तरह के बनाये जाते थे कि आसानी से अलग-अलग किये जा सकें, जिससे इस्तेमाल के बाद फेंके भी आसानी से जा सकें और इसलिए भी कि आप उन्हें हवाई जहाज पर अपने सामान में ले जा सकें और कोई देखे, तो शक भी न पैदा करें। मैक्सिम का सायलेंसर बस मोटर-

गाड़ियों के सायलेंसरो जैसा ही होता है... एक बार मैंने एक ऐसा सायलेंसर तैयार किया, जिसके पुरले गले में पहनने की माला पर लटके हुए थे, जिससे देखने में वह आधुनिक किस्म के जेवर जैसा लगता था। सचमुच वह सासा आकर्षक था। एक और सायलेंसर मैंने छेददार जापानी सिक्कों से बनाया था...

प्रश्न: और हाई स्कूल के बाद आप उस संस्थान में गये?

उत्तर: हाँ, विस्फोट करके चीजों को उड़ाने रखने और ऐसी ही और शरारतों के कारण हाई स्कूल से निकाल दिये जाने के बाद। पहले मैंने संस्थान में काम किया, फिर दंगा-नियंत्रण साधन बनाने की कंपनी में, उसके बाद खुद अपनी फर्म में, और, आखिर में, आग्नेयास्त्र निर्माता के यहाँ।

प्रश्न: लेकिन आपने कहा था कि जब आपने आग्नेयास्त्र कंपनी में काम शुरू किया, तो उस समय आपका सी० आई० ए० से कोई संपर्क नहीं था।

उत्तर: शुरू में नहीं। लेकिन एक दिन कंपनी में काम करनेवाला एक आदमी मेरे पास आया, जिसने कहा कि मेरी "एक दिलचस्प भेंट" होगी। और मेरे पास पांच लोगों का एक दल आया और हमने बातचीत की। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया, मगर जो कहा जा रहा था, उससे मैं समझ गया कि वे सी० आई० ए० के हैं। बहरहाल, वे ज्यादातर बुनियादी बातों की ही टोह ले रहे थे: "आप क्या कर रहे हैं?" "कहाँ काम कर रहे हैं?" एक नये

प्रकार के संपर्कों की स्थापना हुई। असल में ज्यादा औपचारिक। इस बीच मेरे अनुरोध पर मेरे काम में एक ज्वरल मैनेजर को भी सम्मिलित किया गया। सारे काम को मैं अकेला ही नहीं कर सकता था। मैं सिर्फ अनुसंधान ही करना चाहता था।... मुझे स्पष्ट निर्देश दिया गया कि किसी भी और को इस तरह के काम के बारे में हरगिज पता नहीं चलना चाहिए। सी० आई० ए० का दिया हुआ पहला ही कार्यभार सासा बढ़ा था। मुझे एक गुटका तैयार करनी थी, जिसे मैंने 'शीतान की डायरी' का नाम दिया। यह गुटका हाथ से गढ़े जानेवाले हथियारों से संबंधित गुटका का ही सिलसिला था, मगर उसमें विस्फोटक और गोला-बारूद के संश्लेषण के बजाय विशेषकर रासायनिक तथा जैविक अस्त्रों और प्रणालियों के इस्तेमाल के बारे में बताया जाना था। यह ऐसे लोगों के लिए लिखी जाती थी, जिन्हें हाई स्कूल स्तर से अधिक रसायन का ज्ञान नहीं है। मैं आपको ईमानदारी से अभी ही बता दू कि मैं इस सारे विचार के बहुत पक्ष में नहीं था। मैं यह महसूस करने लगा कि एक जगह संग्रहीत करने के लिए यह सचमुच खतरनाक जानकारी है। मतलब यह है कि ऐसी गुटका, जो अगर कहीं बाहर चली गयी और आतंकवादियों की किसी टोली के हाथ लग गयी, तो वह उन्हें बहुत कम ही समय और कम से कम धन लगाकर बड़े-बड़े शहरों को नियंत्रण में ले लेने और बरबाद तक कर देने की क्षमता प्रदान कर देगी। मगर मुझे आदेश

मिला, "लिखिये। एक ही प्रति। कोई कार्बन प्रतिलिपि नहीं।"

इसलिए पहले मैंने जो किया, वह था पादप विषों का सर्वेक्षण। पादप विष इतने सारे हैं कि सिर चकरा जाता है। सबसे आम पीछे भी, जिन्हें आप अपने घर के अहाते में ही पा सकते हैं, उचित संसाधन किये जाने पर बहुत घातक विष उत्पन्न कर सकते हैं, जिनका आसानी से पता नहीं चलाया जा सकता। मेरे खयाल में मैंने गुटका में कोई ४० पीछों और उनकी उपयोग में लाने से संबंधित निर्देशों का समावेश किया था। एजेंसी उससे बहुत सुख हुई।

इसके बाद मैं जैविक प्रणालियों पर आया। मैंने कई संक्रामक रोगों के जीव उत्प्रेरक सुभाये, जिन्हें बिना किसी सास विकृत के उत्पन्न किया जा सकता है। इसकी संख्या सासी बड़ी है। बेशक, अपने बचाव के लिए कुछेक सफल पूर्वोपाय करने होते हैं, नहीं तो आप अपना ही सफाया कर बैठेंगे। यह बहुत खतरनाक धंधा है।

बहरहाल, मैंने यह सब लिख डाला और उसे भेज दिया और वे बेहद सुख हुए। फिर उन्होंने कहा, "अब आप रासायनिक हिस्से और प्रणालियों को ले सकते हैं।" और तब मैंने अत्यंत साधारण सामग्रियों का उपयोग करते हुए उन पदार्थों को बनाने पर कुछ काम किया।

प्रश्न: आपको कुछ पता है कि उन्हें यह दस्तावेज किसलिए चाहिए थी?

उत्तर: यह तो मैं नहीं जानता। अलबत्ता 'शैतान की डायरी' के बारे में एक अजीब बात थी और वह यह कि मुझे सासकर निर्देश दिया गया था कि मैं देश में ही उपलब्ध सामग्रियों और पीछों पर जोर दूं। ऐसे पीछे, जो संयुक्त राज्य अमरीका में उगते हैं, और ऐसी प्रारंभिक सामग्रियां, जो संयुक्त राज्य अमरीका में बिकती हैं। इसका क्या मतलब है, यह तो मैं नहीं जानता, पर यह सोचने की बात है।

प्रश्न: 'शैतान की डायरी' के लिए आपको कितना पैसा मिला?

उत्तर: उस समय मुझे सी० आई० ए० से सीधे पैसा नहीं मिलता था। पैसा आग्नेयास्त्र बनानेवाली कंपनी को दिया जाता था। मैं परियोजना की लागत तैयार करता, इसके बारे में अपने सुपरवाइजर को रिपोर्ट करता और सभी प्रशासनिक व्यौरों की बही देखरेख करता। मैं इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता कि कैसे कटौत जाते थे, उसके बारे में किसी को मालूम था और वे उनके साथ क्या करते थे।...

प्रश्न: मतलब, यह एक भूक समझौता-सा था कि आप सी० आई० ए० के लिए काम अपने काम के हिस्से के तौर पर करेंगे?

उत्तर: सही है। मेरा वेतन सासा अच्छा था। मैं उससे सुख था। मुझे बहुत सी अतिरिक्त सुविधाएं प्राप्त थीं। मसलन, टेलीफोन और ह्वांतरिक उपकरण फालक से, जिसमें एक पिस्तौल छिपी रखी थी, युक्त एक बड़ी कार। बहुत बड़िया कार। इसके अलावा



एक नाल कटो शाईगन भी, लास माफिया के लोगों जैसी ही, जिसकी कुल लंबाई १८ इंच (लगभग ४६ सेंटीमीटर) थी और जो वहीं उपकरण फलक के नीचे छिपी हुई थी।

प्रश्न: सी० आई० ए० का अगला अनुरोध क्या था ?

उत्तर: मैंने बैठे-ठाले था ही एक विशेष .२२ इंची (५.६ मि० मी०) रिम-फायर गोली\* विकसित करने की बात कही थी। सी० आई० ए० ने इसमें बहुत विलक्षणता ली और कहा, "क्या आप ऐसी गोली विकसित कर सकते हैं, जो विस्फोटक क्षमता को बहुत ज्यादा बढ़ा दे?" यह विशेष .२२ इंची गोली वास्तव में एक अतिलघु विलंबित क्रिया बम थी।... इन गोलियों के पहले बैच को खुद मैंने साधोनिक् सायलेंसर लगी हार्ड स्टैंडर्ड पिस्तौल से चलाया था। मेरा संपर्क एक २००० पन्ने की टेलीफोन डायरेक्टरी को पिछले आंगन में ले गया और मैंने उस पर कोई १५ फुट की दूरी से गोली चलायी। और गोली ने उसमें इतना बड़ा छेद कर दिया कि आप अपनी मुट्ठी घुसा लें। उसने कोई ज्यादा शोर भी नहीं किया—बस, ध्वज की सी अजीब आवाज।... गोली में ऐसा मसाला भरा गया था कि उसकी गति अवध्वनिक रहे, ताकि कम शोर पैदा करे। "हे भगवान, हैरत की चीज है!" मेरे

\* रिम-फायर (विस्फोटक) गोली—ऐसी गोली है, जो निशाने पर पड़ने पर विस्फोट पैदा करती है।—सं०

संपर्क ने कहा। फिर उसने जानना चाहा कि क्या वह फ़ौजी ओवरकोट को या रूसी फ़ौजी ओवरकोट को भेद सकती है और फिर भी चोट कर सकती है कि नहीं, क्योंकि गोली की प्रारंभिक गति बड़ी कम थी।

बहरहाल, मुझे इन गोलियों की जैसे ओवरकोट पहने जिंदा निशानों पर परीक्षा करनी थी। इसलिए मैंने अपने संपर्क आदमी से ऐसे ओवरकोट लाकर देने को कहा। मानें या न मानें, हमने ये ओवरकोट पहनायी चार भेड़ों पर परीक्षाएँ कीं। कंपनी में और किसी को इसके बारे में मालूम नहीं था। यह ध्वजवादज्ञापन दिवस\* की बात है। मेरे साथ दो लोग थे—मेरा संपर्क और एक और आदमी, जो गयाह था। उसके पास एक बोलेक्स सिने कैमरा और एक ३५ मि० मी० मूवी कैमरा था। हमने एक साधोनिक् सायलेंसरयुक्त हार्ड स्टैंडर्ड पिस्तौल, एक साधोनिक् युक्त बाल्टर पिस्तौल और एक बीनस सबमशीनगन का प्रयोग किया। इनमें बीनस सबमशीनगन दोहरे बलिषों से चलनेवाले बड़ी रायफलों के .२२ रिम-फायर कारतूसों के असंख्य राउंड प्रति मिनट छोड़नेवाला एक अल्पज्ञात, बहुतनाल हथियार है।

प्रश्न: बीनस की वास्तविक दायरे की रफ़्तार क्या है ?

\* संयुक्त राज्ज अमरीका का एक राष्ट्रीय पर्व। यह अमरीका में अंधेज आदिउपनिवेशों (पश्चिम आदर्श) के आगमन के उपलक्ष्य में नवंबर महीने के चौथे सप्ताह में पड़ता है (चौथा बृहस्पतिवार)।—सं०

उत्तर: कोई एकदम अविश्वसनीय दर है। मैं तो हिसाब ही लगाता रह जाऊंगा। हर क्लिप में ५० राउंड थे और मेरे खयाल में वह इन क्लिपों को १२ सैकंड में खाली कर देती थी। तो वह क्या हुआ— ५,००० राउंड प्रति मिनट न? मेरे खयाल में यही दावने की रफ़्तार है, पर असल में मुझे याद नहीं।

प्रश्न: क्या यह हथियार गुप्त हथियार-सूची में था?

उत्तर: लोग जानते थे कि ऐसा कोई हथियार है, मगर हर कोई यही कहता था, “इसका इस्तेमाल भला किस चीज़ के लिए?” इसे आप क़रीब-क़रीब परतली में लटका सकते हैं। मैंने जो वीनस देखी थी, वह कुल कोई १५ इंच (३८ सेंटीमीटर) लंबी रही होगी। उससे सचमुच अत्यल्प अवधि में तीव्र गति से गोलियों की अविश्वसनीय मात्रा छोड़ी जा सकती थी।

प्रश्न: भेड़ों को कोट किसने पहनाये?

उत्तर: मैंने। क्या आपने कभी किसी भेड़ को ओवरकोट पहनाया है? मेरे खयाल में नहीं। मैंने उसकी टांगें कोट की आस्तीनों में धुसायीं। खैर, वह रूसी ओवरकोट पहनायी जानेवाली पहली अमरीकी भेड़ थी और मैं यह सोच बिना न रह सका कि यह सब कितना हास्यास्पद है। मैं, भेड़चोर, जान से मारने के पहले उन्हें रूसी क़ौजी ओवरकोट पहना रहा हूँ! हमने उसकी छाती में गोली दागी और, बेशक, वह तत्क्षण मर गयी। दूसरी भेड़ की दाहिनी अगली टांग में गोली दागी गयी। और हर किसी को यह देखकर अचरज

हुआ कि वह भी तत्क्षण मर गयी।

फिर वीनस में गोलियाँ भरी गयीं। उसमें दोहरे सायलेंसर लगे थे, जिससे वह एक ऐसा अजीब शोर पैदा करती थी कि उसे आप कभी गोली की आवाज़ समझ ही नहीं सकते थे। और जब उसे चलाया गया, तो भेड़ एकदम चरबी के ढेर में बदल गयी और वह रोंगटे खड़े करनेवाला नरुआरा था। यह सर्वथा अविश्वसनीय था। १२ सैकंड में सी राउंड। भेड़ की शब्दशः ध्वजियाँ उड़कर सब ओर बिखर गयीं। हमने अनचाहे ही दो भेड़ों को मार दिया था, क्योंकि पहली भेड़ इतनी जल्दी गिरी और गोलियों के क्लिप इतनी जल्दी खाली हुए कि गोलियाँ पहली के ऊपर से निकलकर दूसरी को भी जा लगीं।

प्रश्न: सी० आई० ए० को संतोष हुआ?

उत्तर: हाँ, बिल्कुल पूरी तरह से। सी० आई० ए०-वालों ने उसके ५,००० राउंडों का ऑर्डर दिया और इसलिए मैंने उन्हें तैयार कर दिया। बाद में वे फिर आये और बोले, “इस चीज़ के साथ आप और क्या कुछ कर सकते हैं? क्या आप उसकी ‘सांघातिकता’ को और बढ़ा सकते हैं?” मैंने पूछा, “हे भगवान, इस साली को आप कितना और ज्यादा सांघातिक कराना चाहते हैं?” उन्होंने कहा, “बात यह है कि हमें कुछ ऐसी चीज़ चाहिए, जो ज़रा कम नाटकीय हो। हवाई जहाज़ में किसी की छाती में मुट्ठी बराबर छेद करना ज़रा ज्यादा ही प्रत्यक्ष हो जाता है।” मैंने कहा, “हाँ, बात तो है। यह ज़रा ज्यादा ही

गंदगी पैदा करती है।" इसलिए मैंने कुछ ऐसी गोस्तियां तैयार कीं, जिनमें बहुत ही कम मसाला था और जो बहुत ही कम आबाज करती थीं। उनकी गति भी बड़ी कम थी। जब ऐसी गोली प्रवेश करती, तो उसका एक सिरा फट से खुल जाता और आप जो भी चाहते, शरीर में इंजेक्ट हो जाता। इनमें से कुछ गोस्तियों में हिमशुण्कित नागविष भरा हुआ था। कुछ में व्याघ्र-सर्पविष भी था। ... मैं यह बिल्कुल भी नहीं समझ पा रहा था कि सी० आई० ए०-वाले विषयुक्त गोस्तियां आखिर चाहते क्यों हैं। मुझे लगा कि मेरा जेम्स बाँह सरीखे लोगों से पाला पड़ा है, जो बस नयी-नयी जूतों ही चाहते हैं। उन्हें वह गोली बहुत पसंद आयी और बहुत सुविधाजनक लगी।

प्रश्न: बहरहाल, वह खासा परिष्कृत हथियार था। क्या आपने उससे भी अधिक परिष्कृत हथियार बनाये?

उत्तर: हाँ। सवाल फिर परिकल्पना रूप में रखा गया था: "अगर कहीं आप किसी ऐसी जगह में जा फँसें, जहाँ आप शत्रु, कामोन्मुख अल्बानी वीनों से या बेरहम जंगली भीड़ से घिर जायें, तो आप क्या करेंगे?" मैंने सासी अक्ल दी। आखिर मैंने कहा, "शोलाफेंक हथियार मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत कारगर होते हैं। जेबी आकार का शोलाफेंक बनाने का भी कोई तरीका निकाला जा सकता है।"

यह विचार उन्हें बहुत दिलचस्प लगा। लेकिन हमारे पास इस तरह के जो कुछ साधन थे, उनके

लिए डेरों पुरजे-बुरजे जरूरी थे। बहरहाल, मैंने जो चीज तैयार की, वह एकदम सीधी-सादी थी। ... उसमें जिस चीज ने असल में उन्हें आकर्षित किया, वह यह थी कि आप उसे जल्दी से विसर्जित करके अपने सामान में डाल सकते थे और उसे कहीं भी ले जा सकते थे। उस पर किसी भी तरह का शुबहा नहीं हो सकता था। उसके धातु के दोनों पुरजों को आप अपने सफ़री लटकाऊ बेल्ट का हिस्सा कह सकते थे। किसी को गुमान भी नहीं हो सकता था कि वह आला दरजे का हथियार है।

प्रश्न: इसके साथ हम शायद आपके इस तरह के काम के अंत पर पहुँच गये हैं। ऐसा ही है न?

उत्तर: हाँ। आखिरी बड़े कामों में से एक ऐसा बापुदावनियमित बम बनाने का फ़ोरी कार्यक्रम था, जो फटने के बजाय सायनाइड गैस छोड़ता था। इसे बहुत छोटा होना था—मेरे करारनामे में एक वाक्य है: "इतना छोटा और इतना व्यावहारिक कि सामान्य यात्री विमान को लपट कर सके।" डोर इस बात पर था कि वह इतना छोटा हो कि हवाई जहाज के गिरने पर उसका पता न चल सके। ... मैंने इस तरह के दो बम बनाकर दिये थे।

प्रश्न: आपका कहना है कि यह आपका आखिरी काम था। आपने एजेंसी के लिए काम करना छोड़ने का क्यों निश्चय किया?

उत्तर: मैंने आपको नहीं बताया कि मैं मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा था। असली परिवर्तन

का आरंभ तब हुआ, जब मैंने आग्नेयास्व कंपनी के लिए काम करना शुरू किया। ... मेरी लोगों को, जिनमें मैं खुद भी आ जाता हूँ, जान से मारने की चीखें बनाने की बनिस्वत जीने में कहीं ज्यादा दिलचस्पी थी। ... कुछेक अवसरों पर मैं अपने को क़रीब-क़रीब उड़ा ही बैठा था।

प्रश्न: यह सोचकर कि हो सकता है, यह कोई संयोग न था, आप कभी पैरानॉइड (मनोविभ्रमग्रस्त) तो नहीं हुए?

उत्तर: बेशक, मगर अपना ध्यान रखना जरूरी है, नहीं तो आप पागल हो जायेंगे। ... बहरहाल, मैं शारीरिक और मानसिक रूप से इस हद तक निडाल हो गया था कि किसी न किसी चीज़ का जवाब दे जाना अवश्यभावी था और तभी मुझे दिल का दौरा पड़ा। ... एक साल बाद लगभग उसी दिन मुझे दिल का दूसरा दौरा पड़ा। ... तीन महीने बाद मैं काम पर वापस गया, मगर अलग हो जाने के एकके दरादे से ही। ...

मेरे खयाल में यह मेरे औपचारिक रूप में काम से अलग होने के कुछ ही दिन बाद की बात है कि घर फ़ोन आया और मैं एक सी० आई० ए०-वाले से मिला। और कहने को वह बस मेरे स्वास्थ्य के बारे में ही पुछ-ताछ कर रहा था। मगर उसकी दिलचस्पी मेरे सामाजिक जीवन में थी। जानते हैं न, बहुत अस्पष्ट, औपचारिक-से प्रश्न, मगर यह सब असामान्य था। ... तो मैंने कह दिया ... बस, मैं हथियारों का काम और

करना चाहता ही नहीं... इस पर मेरे राजनीतिक विचारों के बारे में सवाल उठने लगे, जिनकी पहले उन्होंने कभी बात भी न की होती। वे पैरानॉइड थे—अगर आप हमारे साथ नहीं हैं, तो हमारे खिलाफ़ है। और उसने मुझसे यह जरूर पुछा कि मेरे पास 'दायरी' की प्रतिलिपि तो नहीं रही है, जो तर्कसंगत रूप में इसका सूचक था कि वह क्या सोच रहा है। मैंने उससे कहा, "नहीं, और मेरा किसी से भी सरोकार नहीं है और न रखना ही चाहता हूँ।" मैं और मेरी पत्नी कुछ समय किसी तरह शांति खींचते रहे। मैं भाति-भाति के कामों, पैरामर्श-कार्य, आदि में लगा रहता। बस किसी तरह गुजर हो जाती थी।

प्रश्न: उन्होंने क्या आपको चैन से रहने दिया?

उत्तर: हरगिज़ नहीं। मैं जानता हूँ कि मेरा पीछा किया जाता था। मैं अपनी गली के बाहर निकलता, तो चाहे जो भी वस्तु हो, एक पिक-अप कार को हमेशा मौजूद पाता। एक आदमी को तो मैं पहचानने भी लगा था। ... फ़ोन को भी टैप किया जाता था। अगर मैं किसी को फ़ोन करता: "फ़्रैंक, मैं क़लां-क़लां वस्तु निकल रहा हूँ", तो रास्ते में एक पिक-अप कार यकीनन होती। ...

फिर मैं सभी ऐसी-बैसी जगहों में सी० आई० ए०-वालों से टकराने लगा, मसलन, छोटे-छोटे रेस्तरां, जहां कोई भी नहीं जाता था। यह जानबूझकर किया जाता था, जिससे मुझे पता रहे कि मुझ पर निगरानी रखी जा रही है।

प्रश्न: उनके साथ आपकी आखिरी मुलाकात कौनसी थी?

उत्तर: आखिरी मूठभेड़ तब हुई, जब मेरी बीवी का ध्यान इस तरफ गया कि उसका पीछा किया जाता है। यह पहली बार था कि जब उसने महसूस किया कि कोई हर वक्त उसके पीछे लगा रहता है और वह डर गयी। बस, इसी ने सब कुछ तय कर दिया। मैंने फोन किया और दो सी० आई० ए०-वालों से ... एक ... रेस्तरां में भेंट निश्चित की। मैं अंदर गया और बैठ गया। उन्होंने पीने के लिए कुछ मंगवाया और मुझसे पूछा कि क्या मैं भी पीना चाहता हूँ। मैंने कहा, "शुक्रिया, नहीं; मैं बस एक बात कहने" यहाँ आया हूँ, जो यह है: अत्यंत संक्षेप में - अगर आप ... मुझे निगरानी में रखना और इस तरह का आचरण करना जारी रखते हैं कि जैसे मैं किसी राजनीतिक वक्तवास में शामिल हूँ, खासकर अब, जब कि आपने मेरे परिवार को भी उसमें घसीट लिया है, तो मैं आपको अब यहाँ खरे-खरे बता रहा हूँ कि मैं लैंग्नी की सेंट्रल एयर कंडीशनिंग प्रणाली में छिपाये YX के कनस्तर को उड़ा डालूंगा। ... अगर मेरे साथ या मेरे परिवार के साथ कोई भी असाधारण बात होती है, तो मैंने व्यवस्था कर रखी है कि यह विस्फोट हो और वह होकर रहेगा।" और मैं उठा और बाहर निकल आया।

प्रश्न: आप भांसा दे रहे थे?

उत्तर: नहीं, मैं सब कह रहा था। मैं जीवरासायनिक

अस्त्रों के साथ इतना समय काम कर चुका था कि उस धमकी को वास्तविक बना सकता था। ...

इस भेंटवार्ता के अंत में एक टिप्पणी में यह सूचना दी गयी थी कि भेंटवार्ता के प्रेस के लिए तैयार किये जाते समय "मिस्टर डैथ" की दिल के दौरे से मृत्यु हो गयी। हमारे लिए यह कहना कठिन है कि कोई "मिस्टर डैथ" सचमुच थे या वह भेंटवार्ता सी० आई० ए० जोड़करमांदों के अनेक मृत्युदूतों की आत्म-स्वीकृतियों का समाहार है। भेंटवार्ता में उद्धृत तथ्यों का कभी कोई खंडन नहीं किया गया। बहरहाल, "मिस्टर डैथ" की आत्मस्वीकृतियों और चर्च समिति की रिपोर्ट में सी० आई० ए० के अपराधों के बारे में सूचना में बहुत समानताएँ हैं। लगता है कि दिवंगत विशेषज्ञ की कृतियाँ आज दिन भी उपयोग में लायी जा रही हैं।

### एक गणराज्य को नष्ट करने का षड्यंत्र

"फ्रीडेल कास्त्रो संयुक्त राष्ट्र संघ के आरंभिक अधिवेशन में भाषण देंगे। ... ऐसे भी लोग हैं, जिन्होंने उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका से ज़िंदा न जाने देने की कसम खा रखी है। स्पष्ट बात यह है कि उनकी न्यूयॉर्क में मौजूदगी हजारों क्यूबाई निर्वासितों का अपमान है, जिन्हें इसे चुपचाप नहीं स्वीकार कर लेना चाहिए। ..." ('उल्लिमा होरा', ६ सितंबर, १९७६)।

"क्यूबाई निर्वासितों के एक अग्रचार के गपराप

स्तंभ में आतंकवाद का यह लोमहर्षक और उतेजक खुला आह्वान सी० आई० ए० द्वारा पिछले पचीस वर्षों में पैदा किये गये और पोषित एक छोटे से, मगर घातक गुट द्वारा किये जानेवाले दुष्कृत्यों में सिर्फ सबसे ताजा ही है। "अमरीकी पत्रिका 'कॉवर्ट एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन' ('प्रच्छन्न कार्य सूचना पत्रिका') ने इंगित किया।

"दो दशकों से," पत्रिका ने आगे कहा, "क्यूबाई निर्वासित-अतिवादी पश्चिमी गोलार्ध में लगभग प्रत्येक और यूरोप तथा अफ्रीका में भी अनेक सनसनीखेज आतंकवादी कार्रवाइयों के केंद्र में या केंद्र के निकट रहे हैं। पुलिस सूत्रों का विश्वास है कि इस इल के केंद्र में कोई १०० लोग हैं, जो न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मियामी और फ्लॉरिडा में निर्वासित समुदायों के भीतर बिखरे हुए हैं। मगर वे ऐसे लोग हैं, जो एक-दूसरे को पचीस साल से जानते हैं, उनमें घुसपैठ करना बहुत मुश्किल है... उन्होंने बेखौफ़ी के साथ चार महाद्वीपों पर बमकांड किये हैं और लोगों को अपाहिज किया और जान से मारा है।...

"सातवें दशक भर और आठवें दशक में भी काफी समय तक इस क्यूबाई निर्वासित जालसूत्र ने सी० आई० ए० और उसके सहयोगियों के लिए न केवल क्यूबा पर असंख्य हमलों में, जिनमें कोचीनोस की खाड़ी (वे ऑफ़ पिग्ज़) का विफल हमला सबसे उल्लेखनीय है, बल्कि कांगो और वियतनाम में भाड़े के सैनिकों की तरह, वाटरगेट के प्लावों की तरह, और चिली

की दीना (DINA) तथा ऐसी ही अन्य गुप्त सेवाओं के, जो सभी कभी न कभी सी० आई० ए० द्वारा कायम की गयी थीं और उसकी कठपुतलियां हैं, भाड़े के हत्यारों की तरह काम किया है।

"लेकिन सी० आई० ए० और एफ० बी० आई० (फ़ेडरल ब्यूरो ऑफ़ इन्वैस्टीगेशन - संघीय अन्वेषण कार्यालय) तक को यह अनुभव हो गया है कि उन्होंने एक 'फ़्रैंकलाइन दानव' को पैदा किया है। विदेशों में आतंकवाद की निंदा करने में तनिक भी कोताही न करनेवाली अमरीकी सरकार दुनिया के एक सबसे दुष्ट आतंकवादी संगठन को आश्रय दे रही है। ये लोग खतरनाक, पेसेवर मुजरिम, किराये के हत्यारे और मादकद्रव्य विक्रेता हैं। वे न सिर्फ़ क्यूबा के लिए ही, जो वास्तव में पूर्णतः सुरक्षित है, बल्कि संयुक्त राज्य अमरीका में क्यूबाई समुदाय की भारी बहुसंख्या के लिए भी, जो उनसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती और उन अमरीकी तथा विदेशी नागरिकों के लिए भी खतरनाक हैं, जिनका क्यूबा के साथ कारबार हो सकता है।...

"साठ के दशक के आरंभ से इन आतंकवादियों ने एजेंसी की छत्रछाया में अपने विस्फोटक पदार्थों के उपयोग में, ध्वंस और बम-निर्माण में और एजेंसी के

\* फ़्रैंकलाइन - अंग्रेज बेथिका मेरी लैरी के १८१८ में लिखित एक उपन्यास का नायक, जिसके शिब के आधार पर पश्चिम में बहुत सी बहुत फ़िल्में बनी हैं। बस्मानुर की ही भांति फ़्रैंकलाइन भी अपने सर्वक के लिए ही खतरा बन जाता है। - स०



तथा स्वयं अपने माफिया संबंधों के जरिए अपहरण और हत्या की कलाओं में महारत पायी। उन्होंने वाशिंगटन, अर्जेंटीना, इटली और अन्य राजनयिकों की हत्याएं की हैं। उन्होंने बार्बेडोस में एक क्यूबाई यात्री विमान को आकाश में ध्वस्त किया है, जिस पर सवार सभी लोग मर गये थे।

"और हाल के महीनों में उन्होंने क्यूबा के साथ किसी भी तरह के संपर्क के विषय सोचा हल्का बोल दिया है। उन्होंने न्यूयॉर्क में क्यूबाई संयुक्त राष्ट्र मिशन और वाशिंगटन में क्यूबाई हित विभाग पर बम फेंके हैं, उन्होंने इसी कारण यात्रा एजेंसियों पर बम फेंके हैं; उन्होंने क्यूबा के बारे में सहानुभूतिपूर्ण कथनों के लिए असवारों पर बम फेंके हैं; उन्होंने क्यूबा को दबाइयों के भेजे जाने का विरोध करने के लिए न्यूजर्स में एक औपधालय तक पर बम फेंके हैं।"

पत्रिका आगे निबटती है, "उनकी जेकेली चलती यह धृष्टतापूर्ण विश्वास था कि वे वाशिंगटन तक में, जो परंपरा से राजनयिकों के लिए एक निरापद आश्रयस्थल रहा है, बेखौफ हत्याएं कर सकते हैं। सितंबर, १९७६ में ओरलादो लेतेलियेर और उनके सहायक रोनी मोफित की वाशिंगटन के केंद्र में हत्या ने न्याय मंत्रालय को इस जालसूत्र के खिलाफ जरा सक्रिय कार्रवाई करने को विवश कर दिया। क्यूबाई आतंकवादियों ने दिखला दिया था कि अमरीकी सरकार का अपने द्वारा ही सर्जित दानव पर अब कोई नियंत्रण नहीं था। चार छूटभेजे पकड़े गये और दंड के भागी

हुए; अमरीका में उत्पन्न संगठनकर्ता, जिसने विस्फोटकों को रखा था और जिसके सी० आई० ए० के साथ संबंध सुस्थापित साबित हो गये थे, कुछ ही साल कैद की सजा पाकर छूट गया।

"लेकिन लेतेलियेर-मोफित अन्वेषण के अलावा इस जालसूत्र के खिलाफ बहुत कम ही कार्रवाई हुई है।... संभवतः, वाटरगेट कांड से संबद्ध बहुत से लोगों की ही तरह इस जालसूत्र के नेतागण भी बहुत ज्यादा जानते हैं। तिस पर भी यही प्रतीत होता है कि संयुक्त राज्य अमरीका के लिए जोखिम बहुत ज्यादा है। ये आतंकवादी संयुक्त राष्ट्र संघ में और वाशिंगटन में बहुत से राजनयिकों के लिए खतरा है...

"अधिकारियों ने इस जालसूत्र के खिलाफ कदम नहीं उठाये हैं, यद्यपि उसके सदस्यों के बारे में अधिकाधिक ज्ञात होता जा रहा है। क्यूबाई निर्वासित समुदाय और क्यूबा सरकार के बीच गत वर्ष के अंत में वार्ता आरंभ होने के बाद से उनकी नीति अधिक प्रकट-और अधिक उन्मत्त-हो गयी है। आतंकवादियों द्वारा इस वार्ता की निंदा किये जाने के बावजूद उसके परिणामस्वरूप तीन हजार कैदियों की रिहाई हुई है, उन सभी को तथा कई औरों को निष्क्रमण वीजा प्रदान किये गये हैं और देश के बाहर रहनेवाले सभी क्यूबाइयों को अपने संबंधियों से मिलने के लिए वापस आने की सर्वसाही अनुमति प्रदान की गयी है। आतंकवादियों का रवैया धमकी भरा रहा है, कीचीनोम की खाड़ी के हमले के एक सहभागी ने खुले तौर पर

हजारों लोगों को धमकी दी। ... उसने कहा, 'हम आपके उन रिश्तेदारों को जान से नहीं मारने जा रहे, जो क्यूबा जायेंगे, हम बस उनकी जिंदगी को दूधर कर देंगे।'

स्वतंत्र अन्वेषणात्मक पत्रकार-जैफ़ स्ट्राइन ने 'न्यूयार्क टाइम्स मैगज़ीन' में हाल ही में प्रकाशित एक लेख में इन आतंकवादियों का, विशेषकर उत्तरी न्यूजर्सी में रहनेवालों का, सूक्ष्म निवेचन किया है। यूनिवर्स सिटी, न्यूजर्सी, में एक गली में क्यूबाई राष्ट्रवादी आंदोलन का सार्वजनिक मुख्यालय स्थित है। गीत्येर्मो नौवो सांपोल इसी दल का सदस्य था। उसने १९६४ में क्वीन्स, न्यूयार्क, से ईस्ट नदी के पार संयुक्त राष्ट्र संघ भवन की एक छिड़की पर बज्रका से गोला फेका था, जब वहां चे गेवारा मौजूद थे। इस संगठन के सदस्यों को बड़े मादकद्रव्य व्यापार के साथ और पिछले कुछ वर्षों के दौरान लगभग सभी अनसुलझी क्यूबाई आतंकवादी कार्रवाइयों के साथ जोड़ा गया है। यद्यपि इन कार्रवाइयों में से अधिकांश को दो दलों, 'ओमेगा-७' और 'कमांडो-०' ने अपनी कार्रवाइयां बताया है, फिर भी अधिकारियों को पक्का विश्वास है कि ये दोनों ही क्यूबाई राष्ट्रवादी आंदोलन के महज दूसरे नाम हैं। वस्तुतः 'कॉवर्ट एक्शन' में स्ट्राइन ने इसके पर्याप्त दस्तावेजी सबूत पेश किये हैं और इस सिलसिले में संघीय तथा स्थानीय अधिकारियों को भी उद्धृत किया है, जो उनसे सहमत हैं। "यह सारी सूचना उपलब्ध होने पर भी अधि-

कारियों ने अधिक दृढ़ कार्रवाई क्यों नहीं की है?" - 'कॉवर्ट एक्शन इन्फ़ॉर्मेशन बुलेटिन' पूछता है। "क्या यह वास्तव में सच है कि क्यूबाई निर्वासित समुदाय में इतने दीर्घकालिक संपर्कों के रहते हुए भी सरकार इन आतंकवादी गिरोहों में घुसपैठ नहीं कर सकती? वे अपने अस्त्रबारों और परचों में फ्रीडेल कास्त्रो के संयुक्त राष्ट्र संघ आने के समय उनकी हत्या करने के प्रयासों के बारे में कैसे खुले आम बात कर सकते हैं? अगर वह कोई और दल हुआ होता, अगर पोप या राष्ट्रपति कार्टर के खतरे में होने की बात हुई होती, तो क्या हम गंभीरतापूर्वक यह सोच सकते हैं कि फौरन ही गिरफ्तारियां न हो गयी होतीं?"

"गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के शिखर सम्मेलन में फ्रीडेल कास्त्रो ने कहा था: 'यह सभी को अच्छी तरह से ज्ञात है और संयुक्त राज्य अमरीका में सरकारी तौर पर स्वीकार किया जा चुका है कि उस देश के अधिकारियों ने घड़पन और अपराध के सबसे परिष्कृत साधनों का उपयोग करते हुए क्यूबाई क्रांति के नेताओं की हत्या संगठित करने और विधिवत पदचरचन में वर्षों लगाये हैं। इस तथ्य के बावजूद कि संयुक्त राज्य अमरीका की सीनेट ने इन कारनामों की तहकीकात की है और उन्हें प्रकट किया है, अमरीकी सरकार ने इन निंदाजनक और असम्मतपूर्ण कार्यों के लिए किसी भी प्रकार का कोई खेद-प्रकाशन करने का अनुग्रह नहीं किया है।'"

'कॉवर्ट एक्शन इन्फॉर्मेशन बुलेटिन' ने आगे बताया, "अमरीकी अधिकारी कोई दृढ़ कदम उठाने का इरादा नहीं रखते - क्यूबाई प्रतिक्रतिकारियों की बड़ी पुष्टि है और यदि राष्ट्रपति तथा विदेश मंत्री के वक्तव्यों को ध्यान में रखा जाये, तो अमरीकी प्रशासन ने क्यूबा के संदर्भ में एकदम शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया हुआ है... लेन्सो के लोग, जिन्होंने क्यूबा के विरुद्ध आतंकवादी कार्यों की योजना बनायी है, भविष्य में काफ़ी व्यस्त दिनों की अपेक्षा कर सकते हैं।... विगत में अमरीकी राष्ट्रपतियों ने फ्रीडेल कास्त्रो की हत्या के प्रयासों में किसी भी तरह से अमरीकी सरकार का हाथ होने से साफ़ इन्कार किया था, यद्यपि उन्हें, निस्संदेह, बहुत कुछ मालूम था।... वर्तमान प्रशासन अपने खुले तौर पर आक्रामक क्यूबाविरोधी वक्तव्यों पर गर्व करता प्रतीत होता है।..."

पहले यह सब ऐसा लगा करता था। (हम यह उद्धरण 'न्यूयॉर्क टाइम्स' से दे रहे हैं) :

"सिनेटर फ्रैंक चर्च ने आज बताया कि सैदल इटैलीजेंस एजेंसी ने तीन राष्ट्रपतियों के प्रशासनों में प्रधान मंत्री फ्रीडेल कास्त्रो की हत्या करने के वास्तविक प्रयास किये थे।

"सिनेट की गुप्तचर्या विषयक प्रवर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि समिति के समक्ष... द्वाइट डी०

आइज़नहावर, जॉन एफ० कनेडी और लिंडन बी० जॉनसन के प्रशासनों में भी कास्त्रो की हत्या करने के वास्तविक प्रयासों का साक्ष्य आया है।...

"लेकिन सिनेटर ने कहा कि समिति को अब तक इसका कोई निराधारक साक्ष्य नहीं मिला है कि इन राष्ट्रपतियों में से किसी ने भी इसका आदेश दिया हो या उसे यह तक मालूम रहा हो कि गुप्तचर्या एजेंसी किसी विदेशी राष्ट्र के नेता को मार डालने के प्रयास में शामिल है।

"उन्होंने कहा, 'हमारे पास इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है, जो इस किया-कलाप को किसी भी राष्ट्रपति द्वारा दिये गये किसी भी आदेश से सीधे जोड़ता हो।'

"... ए० डी० सी० टेलीविजन के 'समस्याएं और समाधान' कार्यक्रम में प्रश्नों के उत्तर देते हुए आईडेलो के डेमोक्रेटिक सिनेटर श्री चर्च ने कहा कि जब राजनीतिक हत्याओं के बारे में उनकी समिति की रिपोर्ट प्रकाशित कर दी जायेगी, तो उसमें 'आपको घट्यंत्र और प्रयास दोनों ही मिलेंगे और वे कई वर्षों के दौर में फैले हुए हैं। वे आइज़नहावर प्रशासन से लेकर कनेडी प्रशासन से गुजरते हुए जॉनसन प्रशासन के वर्षों तक के अरसे में फैले हुए हैं।' उन्होंने कहा।"

तथापि इसका अखंडनीय प्रमाण है कि क्यूबा के खिलाफ आतंकवादी कार्रवाइयों का दौर कहीं ज्यादा लंबा चला है।

उसकी शुरुआत १९६० में हुई थी। १२ नवंबर, १९७६ को क्यूबाई पत्रिका 'ग्रोहेमिया' ने देश के

नेताओं की हत्या के प्रयासों के बारे में लूइस बाएस का एक लेख प्रकाशित हुआ था। हम उसे यहां कुछ संक्षेप में दे रहे हैं:

“अमरीकी सीनेट की प्रवर समिति के अनुसार क्यूबाई आंति के नेताओं की हत्या करने की आठ कोशिशों की गयी हैं। लेकिन हमारे पास फ़ीदेल के विरुद्ध कम से कम २० हत्या प्रयासों का, और उनके सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी द्वारा निदेशित किये जाने, वितीय सहायता दिये जाने और सज्जित किये जाने का ठोस प्रमाण विद्यमान है।

“क्यूबाई प्रधान मंत्री की हत्या करने के प्रयासों के पूर्णतः सभी पहलुओं का विवेचन करने का दावा किये बिना हम यहां अनेक ऐसे मामलों को प्रकाश में ला रहे हैं, जिनमें से अधिकांश के बारे में आम लोगों को अभी तक कोई जानकारी नहीं है और जो इन कार्यों में सी० आई० ए० तथा अन्य ध्वंसात्मक अभिकरणों की निरंतर सहभागिता को प्रमाणित करते हैं।

१. १९६० के मध्य में प्रतिक्रांतिकारी संगठन ‘ला कूझ’ के दो सदस्यों, आर्मांदो क्यूबीआ रामोस और मारीओ ताउलर सागे ने मलांसास में पूंता हिकाकोस के निकट देश में चुपके से प्रवेश किया।

डाकू ताइलर सागे को क्यूबीआ के साथ मिलकर हमारे प्रधान मंत्री की हत्या करने और अन्य अंतर्ध्वंसात्मक तथा आतंकवादी कार्य करने का आदेश दिया गया था।

फ़्लोरिडा से हमारे देश के लिए प्रस्थान करने के

पहले उन्हें सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी से बड़ी मात्रा में सैन्य सामग्री प्रदान की गयी। जब उन्हें पकड़ा गया, तो यह सारा साजसामान उनसे बरामद हुआ।

२. गृहार उन्हेतों सोरी मारीन ने चार और प्रतिक्रांतिकारियों के साथ फ़्लोरिडा से मार्च, १९६१ में हमारे देश में चोरी से प्रवेश किया। यह दल प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को पुनर्गठित करने, फ़ीदेल कास्त्रो की हत्या करने और कोचीनोस की खाड़ी (वे ऑफ़ पिग्ज) के आक्रमण में सहायता देने के लिए सभी प्रकार की ध्वंसात्मक कार्रवाइयां करने के उद्देश्य से हवाना के निकट देश के उत्तरी तट पर उतरा था।

उन्हें इन कार्यों के लिए सी० आई० ए० ने प्रशिक्षित और शस्त्रसज्जित किया था और जब उन्हें पकड़ा गया, तो उनके पास बड़ी मात्रा में हथियार और अन्य सैनिक सामान पाया गया।

सोरी मारीन के अलावा इस घट्यत्र में भाग लेनेवाले अन्य लोग थे रोहेलीओ गंजालेस कोर्चो, मान्वेल लोरेन्जो पूइस मीस्पान, नेमेसीओ रोड्रीगेस नवार्रेत, सास्पर दोमीगेस वूएबा, एक्वेसीओ हे० फ़र्नान्देस ओर्तेगा और रफ़ाएल दीआस हांस्कोस—ये सभी अमरीकी सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी द्वारा निदेशित विभिन्न प्रतिक्रांतिकारी गुटों और संगठनों के मुखिया थे।

३. जून, १९६१ में क्रांतिकारी लोकतांत्रिक

मोरचा नामक प्रतिक्रांतिकारी संगठन के एक एजेंट का क्यूबा में चोरी से आगमन हुआ, जो अपने साथ प्रधान सेनापति फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या करने के सी० आई० ए० के आदेश को लेकर आया था।

यह आदेश हुआन बर्सीगालुपी होर्नेरो, हिगीनीओ मेनेदेस बेलवान, गीलेमों कोऊला फेरर तथा अन्यों द्वारा कार्यरूप में परिणत किया जाना था।

उन्होंने कल्जादा-दे-रांचो-बोयेरोस और सांता-कतलीना सड़कों के चौराहे पर हत्या करने की योजना बनायी। इस काम में इस चौराहे पर स्थित एक मोटरकार धुलाईखाने के मालिक को उनकी सहायता करनी थी। इसके लिए कई कारें, एक छोटा ट्रक, दो बज्जाएँ, फ्रैगमेंटेशन बम\*, मशीनगनों और दूसरे हथियार मौके पर पहुँचा दिये गये; इनमें से ज्यादातर धुलाईखाने के पास ही ज़मीन के एक खाली टुकड़े में छिपाकर रक्ते गये थे।

पकड़े जाने पर गीलेमों कोऊला और हिगीनीओ मेनेदेस ने कबूल किया कि षड्यंत्र को सी० आई० ए० द्वारा निदेशित किया जा रहा था। षड्यंत्रकारी सी० आई० ए० अधिकारियों के साथ संपर्क रखते थे, जो उन्हें गुआन्तानामो स्थित अमरीकी नौसैनिक अट्टे और क्यूबा में एक पूंजीवादी देश के दूतावास के जरिए निर्देश और साज-सामान पहुँचाते थे।

४. जुलाई, १९६१ के उत्तरार्ध में तीस नवंबर,

\* कटने पर छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जायेवाला बम। - स०

लोक क्रांतिकारी आंदोलन और क्रांतिकारी लोकतांत्रिक मोरचा नामक संगठनों के प्रतिक्रांतिकारी तत्वों के एक गुट ने फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या करने की योजना बनायी।

इसके लिए उन्होंने जिस स्थान का चुनाव किया, वह वेदादो मे सेलीआ सांचेस का मकान था। षड्यंत्रकारियों ने योजना को ठीक तरह से कार्यान्वित करने के लिए मौके की बारीकी से जांच-पड़ताल की। हत्या के लिए दूरबीनी लक्ष्यदर्शी से युक्त रायफल को इस्तेमाल किया जाना था। गोशियाँ ग्यारहवीं और बारहवीं सड़कों के चौराहे पर स्थित एक मकान के एक फ्लैट की छिड़की से चलायी जाती थी। षड्यंत्रकारियों ने मालूम कर लिया कि उसमें रहनेवाले कौन हैं, कितने हैं और कैसे हैं। योजना यह थी कि फ्लैट पर धावा बोलकर उसमें रहनेवालों को दबोच लिया जाये और हाथ-पैर बांधकर एक कमरे में बंद कर दिया जाये।

षड्यंत्रकारियों को सी० आई० ए० से निर्देश टोनी बरोना, मान्वेल राय तथा आउरेलीआनो सांचेस अरागो के जरिए और इसी प्रकार गुआन्तानामो नौसैनिक अट्टे में ऐडमिरल आर्ले बर्क तथा सी० आई० ए० अधिकारियों के जरिए मिलते थे।

इस सिलसिले में सुरक्षा अभिकरणों ने मारीओ चानेस दे अर्मांस, फ्रांसिस्को चानेस दे अर्मांस, रोबेर्तो कोस्क्वेला वाल्कार्सेल, ओल्गादो क्लासीआ बाल्देस, फ्रांसिस्को हिल कूब, सेगूंदो गंजालेस तथा अन्यो को गिरफ्तार किया।

५. कोनीनोस की खाड़ी की मुहिमबाजी की विफलता के बाद सी० आई० ए० ने हमारे देश के विरुद्ध अपनी ध्वंसात्मक कार्रवाइयों को बढ़ाया और तेज किया और बिखरे हुए प्रतिक्रांतिकारी संगठनों का प्रतिरोध संघ नामक संगठन के इर्द-गिर्द पुनर्गठन करना शुरू किया।

यह काम क्यूबा में चोरी से प्रविष्ट सी० आई० ए० एजेंटों—एमिलीओ अदोल्फो रीबेरो कारो (ब्रांड); अदोल्फो मेंदोबा (राऊल), होर्से गार्सीआ लबीज (टोनी) और अल्फ्रेदो इन्सुगिरे दे ला रीबा (तीतो) तथा कुछ अन्यो को सौंपा गया। इन लोगों को भाति-भाति की प्रतिक्रांतिकारी कार्रवाइयां शुरू करनी थीं, जिनमें २६ जुलाई, १९६१ को ओरियेते में अंतोनीओ मासेथो स्टेडियम में एक प्रांतीय रैली के दौरान राऊल कास्त्रो की हत्या भी शामिल थी। इसकी असफलता की सूरत में उन्होंने सांतीबागो हवाई अड्डे के रास्ते पर हत्या का एक और प्रयास करने की योजना बनायी थी। इसके बाद उन्हें गुआनतानेमो नौसैनिक अड्डे पर हमला करके भड़कावे की कार्रवाई करनी थी।

उनकी योजना यह थी कि दुनिया को यह विश्वास हो जाये कि राऊल कास्त्रो की मीत से क्रोधांध होकर क्यूबाई सरकार के अन्य नेताओं ने गुआनतानेमो पर हमला करने का आदेश दे दिया है। यह संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा क्यूबा पर प्रत्यक्ष आक्रमण का औचित्य-स्थापन करने के लिए किया जाना था। इसी के साथ-साथ यथासंभव अधिक राष्ट्रों को विवाद में घसीटने

के लिए पड़ोसी देशों पर भी हमले किये जाने थे।

इन योजनाओं में हवाना के प्लाज़ा-दे-ला-रेवोलूसीओन (क्रांति चौक) में उसी दिन, अर्थात् २६ जुलाई, १९६१ को राष्ट्रीय क्रांति-दिवस समारोह के अवसर पर फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या भी सम्मिलित थी। इसके लिए प्रतिक्रांतिकारी होसे पूहाल्स मेदेरो को, जो देश से गैरकानूनी तरीके से बाहर चला गया था, संयुक्त राज्य अमरीका बुलावा गया। वहां उसने सी० आई० ए० अधिकारियों जिम वैंडर (जिम बोल्लिंग के नाम से विज्ञात), हेरल्ड विशप और कार्ल हिच से भेंट की। इस भेंट के दौरान पूहाल्स मेदेरो को क्यूबा में कार्यशील सी० आई० ए० एजेंटों का प्रमुख नियुक्त किया गया।

गुआनतानेमो पर भड़कावे के हमले के लिए अड्डे की सीमा पर स्थित एल कूरों रैंच (पशु फार्म) पर चार तोपें लगायी गयीं—हर तोप को अड्डे पर कोई छः गोले दागने थे। साथ ही एक और तोप को निकटवर्ती क्यूबाई तोपखाना केंद्र पर गोले दागने थे। ऐसा यह विश्वास के लिए किया जाना था कि उस पर नौसैनिक अड्डे से गोलाबारी की जा रही है, जिससे वह भड़कावे में आकर फौरन जवाबी गोलाबारी करे। नौसैनिक अड्डा दोनों हमलों को एक ही आक्रमण मानता और इससे अमरीकी सरकार को क्यूबा में प्रत्यक्ष सैनिक हस्तक्षेप करने का बहाना मिल जाता।

नौसैनिक अड्डे में गुप्त मंत्रणाएँ हुईं और अड्डे के कमांडर, कप्तान कार्ल ई० शिनवैस के नेतृत्व में उसके



अधिकारियों ने इन योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए षड्यंत्रकारियों को बड़ी मात्रा में सैनिक साज-सामान और गोला-बारूद मुहैया किया।

अट्टे में मौजूद अमरीकी अधिकारियों ने कई टन हथियार भेजे जाने में सक्रिय भाग लिया था, जो षड्यंत्रकारियों की गिरफ्तारी के समय उनसे बरामद किये गये।

६ अक्टूबर, १९६१ में एस्केंब्रे का दूसरा मोरचा और क्रांतिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन नामक प्रतिक्रांतिकारी संगठनों ने सी० आई० ए० के निदेशन में क्यूबाई राजधानी में अंतर्ध्वंस करने की एक संयुक्त योजना बनायी, जो जानबूझकर नगरवासियों में नाराजगी पैदा करने की ओर लक्षित थी, जिनका राष्ट्रपति ओस्वाल्डो दोर्तीकोस की समाजवादी देशों की यात्रा से वापसी के अवसर पर उनका स्वागत करने के लिए बड़ी संख्या में एकत्र होना अवश्यभावी था।

प्रतिक्रांतिकारियों की योजना भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रासाद के सामने स्वागत सभा के दौरान फ्रीडेल कास्त्रो तथा क्रांतिकारी सरकार के दूसरे नेताओं पर बज्रूकाएं चलाना था। इस योजना को पूरा करने का दायित्व सी० आई० ए० एजेंट अंतोनीओ वेसीआना (बिक्टर) पर था।

यह योजना ४ दिसंबर को कार्यान्वित की जानी थी। इसके पहले २६ सितंबर को सोडफोट की कई सारी कार्रवाइयां की जानी थीं, मगर यह साजिश

जनसाधारण की सतर्कता की बढीतत अधिकांशतः विफल रही। कुछेक झुट-पुट विस्फोट ही हो पाये—दुकानों में अग्निबम विस्फोटित करने की योजना धरी रह गयी, क्योंकि मुख्य व्यापारिक केंद्रों और प्रतिष्ठानों में रखे गये बमों का समय रहते पता चल गया था।

प्रधान मंत्री की हत्या के लिए २६ अक्टूबर के लास मिस्योनेस की आठवीं मंजिल पर स्थित फ्लैट ८-अ को चुना गया था। निर्धारित तिथि के कुछ दिन पहले अंतोनीओ वेसीआना प्रस्तावित सज्जियों के बारे में सी० आई० ए० को विस्तार से बताने के लिए फोनोरीदा गया।

बज्रूकाएं सांभ धिरने के साथ चलायी जानी थी। षड्यंत्रकारियों ने ठीक यही समय इसलिए चुना था कि उनके हिसाब से सभा के शुरू हो जाने के बाद संभास्थल पर तैनात प्रहरीयों का ध्यान उसी की तरफ लग जायेगा और वे इतने चौकन्ने नहीं रहेंगे। बज्रूकाएं चलाने के बाद दहशत फैलाने के लिए भीड़ पर हथगोले फेंके जाने थे। षड्यंत्रकारियों को सेना और मिलीशिया की बरदियों में होना था।

योजना को अंतोनीओ रेनोल्डो गंजालेस, बरनाबौ परादेला इबार्ने, राउल बेन्ता दे माजो और हुआन एम० इस्कर्वेदो दीआस द्वारा कार्यरूप दिया जाना था। वे सभी पकड़ लिये गये। अपनी गिरफ्तारी के समय उनसे ये चीजें बरामद की गयीं: अमरीका में निर्मित एक बज्रूका, चेकोस्लोवाकिया में बनी दो मशीनगनों, तीन मिलीशिया बरदियां, पांच फ्रैगमेंटेशन हथगोले,

एक फ़ौजी बरदी और एक एम-१७ कारबाइन की कारतूस पेट्टी।

७. १९६२ के आरंभ में सी० आई० ए० और गुआनतानेमो नौसैनिक अट्टे से निर्देश पाकर प्रतिक्रांतिकारी होहें लुईस कुएर्बो काल्वो ने तथाकथित आंतिकारी इकाई संघ की स्थापना करने के उद्देश्य से कुछेक प्रतिक्रांतिकारी दलों और संगठनों का पुनर्गठन करना शुरू किया।

कुएर्बो काल्वो कार्य-योजनाओं को तैयार करने और हथियार तथा साज-सामान प्राप्त करने के वास्ते नौसैनिक अट्टे से जायम किये गये संपर्कों के बारे में सूचित करने के लिए उबेतों गोमेस पेना, राऊल कैप हेनदिस, राऊल कैप हिस्पर्ट तथा और लोगों से मिला।

सी० आई० ए० क्यूबाई क्रांति के नेता की हत्या करने और गुआनतानेमो नौसैनिक अट्टे पर हमले के लिए भड़कावा देने की अपनी योजनाओं से विरल नहीं हुई। उसके आदेशों पर चलते हुए कुएर्बो काल्वो ने तीन अन्य संगठनों से संपर्क स्थापित किया और तथाकथित जेड योजना को तैयार करना शुरू किया।

योजना यह थी कि क्यूबाई क्रांति के नेताओं में से एक की हत्या कर दी जाये और उसके बाद सारे ही नेताओं की, जो स्वाभाविकतया मृतक की कलोन अजिस्तान की तरफ शक्यात्रा में शामिल होते, एक साथ हत्या कर दी जाये।

हत्या प्रयास के पहले लक्ष्य के रूप में विदेश मंत्री

डॉक्टर राऊल रौआ को चुना गया। ... योजना को कार्यरूप देने के लिए तीस लोगों को पांच-पांच के छः दलों में विभाजित किया गया था। पंद्रह सदस्यकारियों को राष्ट्रीय आंतिकारी मिलीशिया की बरदियों में होना था।

८. १९६३ के पहले दिन है। देश ने अभी हाल ही में राष्ट्रीय मुक्ति दिवस की चौथी वर्षगांठ मनायी है और साल के आनेवाले महीनों के लिए फ़ोरेल द्वारा निर्धारित कार्यभारों की पूर्ति के पथ पर उत्साहपूर्वक बढ़ना शुरू किया है, जिसे संगठन-वर्ष की संज्ञा दी गयी है।

दिन के तीन बजे है। वेदादो में एम और पचीसवीं सड़को के संगम पर स्थित कार पार्क में दो आदमी आपस में भड़के में बातें कर रहे हैं। दोनों ही हिल्डन होटल - अब हुवाना लीब्रे होटल - के कर्मचारी थे - सांतोस दे ला करीदाद पेरेस नून्येस, जो होटल की कैफ़ेटेरिया में काम करता था, और मान्वेल दे हेसूस कपानीओनी सोऊसा, जो उसके कैसीनो में काम करता था।

"हमारा एक गुप्त संगठन है, जिसमें कुछ होटलों और कैफ़ेटेरियाओं में काम करनेवाले शामिल है," कपानीओनी कहता है। "तुम उसमें शामिल क्यों नहीं हो जाते?"

"मैं पहले ही ऐसे एक संगठन में शामिल हो चुका हूँ," पेरेस नून्येस जवाब देता है।

कंपानीओनी उससे पूछता है कि क्या सच है कि फ्रीडेल कास्त्रो होटल में अक्सर आया करते हैं, और कहता है कि उसके पास क्रांति के नेता की हत्या करने की "कोई बड़िया चीज" है।

"मतलब?" दूसरा प्रतिक्रांतिकारी पूछता है।

"यह चीज है घालक विषभरे कैपस्यूल।"

"और अगर वे असर न करें, तो?"

"इसका सवाल ही नहीं उठता," कंपनीओनी बताता है, "मुझे ये अमरीकियों ने दिये हैं।"

और वह फौरन ये कैपस्यूल देने को तैयार हो जाता है, ताकि यह अपराध किया जा सके।

पेरस न्यूयर्स प्रस्ताव मान लेता है। तीन दिन बाद वे उसी जगह फिर मिलते हैं। कंपनीओनी उसे कैपस्यूल देता है, जो कफ़-लिक रखने के डिब्बे में छिपाये हुए है।

कैपस्यूल लेने के बाद पेरस न्यूयर्स होटल वापस चला जाता है। वह उन्हें अपनी मेज में रख देता है... फिर वह उन्हें रोज़ कैफ़ेरेरिया में ले जाने लगता है और उन्हें आइसक्रीम फ्रीजर की फ़ेअॉन गैस संवाहक नलियों में छिपा देता है। शाम को वह उन्हें निकाल लेता है और वापस मेज में रख देता है।

आखिर एक दिन दोनों ही षड्यंत्रकारियों को राजकीय सुरक्षा अभिकरणों ने धर पकड़ा। जांच-पड़ताल के दौरान इस षड्यंत्र में सी० आई० ए० की शिरकत का अखंडनीय प्रमाण मिला।

६. कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लॉक, जिसमें क्रांतिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन, मोतेक्रीस्ती दल, केंद्रीय राष्ट्रीय परिषद, क्रांतिकारी एकता, गुप्त कामांडो तथा राष्ट्रीय मुक्ति सेना सम्मिलित थे, सी० आई० ए० के निर्देश उसके एजेंट नीनो दीआस के जरिए प्राप्त करता था।

१९६३ में सी० आई० ए० ने ब्लॉक को ऐसी कई कार्यवाइयाँ करने का आदेश दिया, जिससे यह लगे कि क्यूबा में शक्ति जन-प्रतिरोध हो रहा है। वास्तविक प्रयोजन यह था कि अमरीकी राज्य-संघ के सदस्य-राज्यों के राष्ट्रपतियों के सम्मेलन में क्यूबा के विरुद्ध सशस्त्र हस्तक्षेप करने का सवाल उठाया जा सके।

इन योजनाओं में तीन चरणों की परिकल्पना की गयी थी।

सबसे पहले १३ मार्च\* की समारोही सभा में भाषण देते समय फ्रीडेल कास्त्रो की हत्या। इसके लिए षड्यंत्रकारियों के पास पाँच गोले और एक तोप थी, जिसे हवाना विश्वविद्यालय के पास एक मकान में लगाया जाना था।

इसके बाद क्रांति रक्षा समितियों की शाखाओं और जिला केंद्रों पर एक पूँजीवादी देश के दूतावास के जरिए प्राप्त अमरीकी फ़ैंगमेटेशन हथमोलों से हमले किये जाने थे।

\* ११ मार्च, १९६७ को क्रांतिमत्वा छात्रों ने राष्ट्रपति प्रमाण पर हमला किया था। इस विधि को क्यूबा में एक राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाया जाता है। -सं०

इसके अलावा तामारीदो सड़क पर स्थित एक फौजी भंडार पर भी हमला किया जाना था और देश भर में तोड़-फोड़ की कई कार्रवाइयों की जानी थी।

इस मामले की तत्कालीन और हिरासत में लिये गये लोगों से पूछ-ताछ से यह सिद्ध हुआ कि इस योजना को सी० आई० ए० का अनुमोदन प्राप्त था और वह उक्त राजनयिक मिशन और गुआनतानामो नौसैनिक अड्डे की कमान की जानकारी में तैयार की गयी थी।

इस मामले में गिरफ्तार किये जानेवालों में सबसे प्रमुख थे लुईस बर्दी रोद्रीगस गंशलेस - राष्ट्रीय संयोजक, क्रांतिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन; रीकार्दो आलमेदो मोरेनो - राष्ट्रीय संयोजक, मोंतेक्रिस्ती दल; तोमास मोरेदो मार्तीन - राष्ट्रीय संयोजक, क्रांतिकारी एकता और अध्ययन, कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लॉक; होसे सामोरा सोसा - राष्ट्रीय संगठक, क्रांतिकारी पुनर्स्थापना आंदोलन; डाकू तोमास सान हिल का सहायक होसे मार्तनिंस बाल्देस (हुआनिन नाम से भी विज्ञात); राजल प्रादो सार्दीन्यास - हवाना और तास वीलास पर्वतों में सक्रिय दस्त्रुओं का संपर्क-सूत्र और सी० आई० ए० एजेंट साम्वेल कार्बाल्लो मोरेनो।

गिरफ्तार किये जानेवालों से ये हथियार बरामद किये गये - दो टॉमसन मशीनगनों, एक ३.७५ मि०मी० व्यास की रायफल, एक दूरबीनी लक्ष्यदर्शी युक्त ३२ व्यास की विंचेस्टर रायफल, दो फ्रैममेंटेशन हथगोले, छः गोले सहित एक अमरीकी बजुका, एक सान

कीस्तोबल कार्बाइन और बहुत भारी मात्रा में गोली-बारूद।

१०. विश्वविद्यालय में हत्या प्रयास के असफल होने के बाद कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लॉक के कुछ सदस्यों ने सी० आई० ए० के निदेशन में फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या की एक और योजना बनायी। इस बार यह प्रयास ७ अप्रैल, १९६३ को लातीनो-अमरीकानो स्टेडियम (लातीन अमरीका स्टेडियम) में किया जाना था। उसे पिस्तीलों और फ्रैममेंटेशन हथगोलों से सैस १६ लोगों द्वारा कार्यरूप दिया जाना था।

घड्यंत्रकारी आशा कर रहे थे कि इस दिन फ्रीदेल कास्त्रो राष्ट्रीय बेसबॉल चैम्पियनशिप के फाइनल को देखने के लिए आधेंगे।

इस प्रयास में जिन लोगों को भाग लेना था, उनमें एनरीके रोद्रीगस बाल्देस (मूलादो के नाम से विज्ञात), रीकार्दो लोपेस काब्रेरा, एस्तेबान रामोस केसेल, गोदो बालीएले विस्तान, होसे सेवॉतिंस बार्तोसी, अल्लेदो एद्रो फ़ारोत, ओर्लेदी वालेरो बार्तोला और रेने वील्यार दे फ्रांको मुख्य थे। ये सभी पकड़े गये।

११. प्रतिक्रांतिकारी संगठनों के कम्युनिस्टविरोधी नागरिक प्रतिरोध ब्लॉक ने १९६३ में २६ जुलाई समारोहों के समय क्रांति चौक में फ्रीदेल और राजल कास्त्रो की हत्या करने की योजना बनायी।

इस प्रयास में रेने सिगलर सांचेस एबीआस, हेसूस मांताने दे ओका कूज, ओस्कर सिबीला सोरीआ और एलीसर रोद्रीगेस स्वारेस के नेतृत्व में चार गुटों को भाग लेना था। इब्रहीम माथीन हेनरिसे इन सभी गुटों का नेता था।

गिरफ्तारी के समय इन लोगों से बहुत बड़ी मात्रा में सी० आई० ए० द्वारा मुहैया किये गये हथियार और गोला-बारूद बरामद किये गये।

१२. सितंबर, १९६३ में राजकीय सुरक्षा विभाग को पता चला कि क्रांतिकारी एकता के आंतरिक मोरचे और "तीन ए" संगठनों के सदस्यों ने कतिरक्षा समितियों की स्थापना जयंती समारोह सभा में संघ को विस्फोट द्वारा उड़ा देने की योजना बनायी है। इस कार्य के लिए ६० पाउंड प्लास्टिक विस्फोटकों (सी-४) का प्रयोग किया जाना था।

सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने षड्यंत्रकारियों को तुरंत गिरफ्तार करने का आदेश दिया। ओलांदो मार्टीनीआनो दे ला कूज सांचेस, हुआन इसराएल कसान्यास लेओन, हेसूस प्लासिदो रोद्रीगेस मोस्केरा, लुईस बेल्लान आरेनसीबीआ पेरेस, फ्रांसीस्को ब्लांको दे लास कुएतोस, इंजीनियर फ्रेदेरीको हेनरिसे गंजालेस तथा अन्य प्रतिक्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इन लोगों का हमारे देश में निवास करनेवाले फ्रांसीसी नागरिक, सी० आई० ए० एजेंट पियेर आबेन दीएस दे ऊरे से संपर्क था, जिसने कबूल किया कि

वह कोई दो साल से सी० आई० ए० के लिए काम करता रहा है और उसे भांति-भांति की सूचनाएं प्रदान करता रहा है।

१३. १९६४ के मध्य में ओस्वाल्दो बालेंतीन फिनेरोआ माल्वेस (मान्केका नाम से ज्ञात), रेनाल्दो फिनेरोआ माल्वेस, फेलीपे अलोंस हेरैरा और होसे मान्बेल रोद्रीगेस कूज (लोनो) नामक प्रतिक्रांतिकारियों ने, जो सी० आई० ए० द्वारा निदेशित कम्युनिस्टविरोधी नागरिक ब्लॉक के अंग राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के सदस्य थे, फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या की एक नयी योजना बनानी शुरू की।

इस योजना को सितंबर में लातीनो-अमेरिकानो स्ट्रेडियम में विश्व जूनियर बेसबॉल प्रतियोगिताओं के समय कार्यरूप दिया जाना था। ओस्वाल्दो फिनेरोआ के साथ कार्यरूप दिया जाना था। ओस्वाल्दो फिनेरोआ के साथ भर से ज्यादा से इसका रेकार्ड रख रहा था कि फ्रीदेल कास्त्रो कब-कब स्ट्रेडियम जाते हैं, कहाँ बैठते हैं, कौनसे प्रवेश मार्ग का उपयोग करते हैं, आदि।

इस प्रयास में नौ लोगों को भाग लेना था, जिन्हें पकड़ लिया गया और जिनसे हथियार बरामद हुए। इन लोगों का अल्बेर्तो और रामोन साऊ सीएरा नामक सी० आई० ए० एजेंटों के साथ संपर्क था।

१४. सितंबर, १९६४ में राष्ट्रीय मुक्ति मोरचा और आंतरिक मुक्ति मोरचा संगठनों के प्रतिक्रांतिकारियों के एक दल का सी० आई० ए० के आदेश

पर सैन्गी के नये कार्यभारों की पूर्ति करने के लिए आपस में बिलयीकरण हो गया। ये संगठन सी० आई० ए० के लिए आर्थिक और सैनिक सूचनाएं एकत्र किया करते थे।

सी० आई० ए० के निदेशानुसार नेमेसीओ कूबील्यास पेरेस, एन्टेल मीन्बेल आरेनसीबीआ विदान, रोलांदो गाल्दोस रांसोला, अल्फोंसो तोर्कमादा तेदेरो, मरिनो बैलाक वाल्देस तथा अन्य प्रतिक्रांतिकारियों ने फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या करने की तैयारियां करना शुरू किया।

यह प्रयास ११ वीं सड़क पर किया जाना था, जहां राष्ट्रपति के सचिवालय की प्रधान और मंत्रिपरिषद की सचिव सेलीआ सांचेस का निवास था।

पकड़े जाने पर इन लोगों ने पूरी तरह से इकबाल कर लिया और सी० आई० ए० के साथ अपने संपर्कों को स्वीकार किया।

१५ जनवरी, १९६५ के आरंभ में ठूलोओ ओमार कूज सेसीबीस, फ्रेमीन गंजालेस कार्बांलो और हिराल्दो रेनाल्दो दीएगो सोलानो नामक प्रतिक्रांतिकारियों ने, जो राष्ट्रीय मुक्ति सेना के सदस्य थे, सांतीआगो दे लास वेगास में फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या की एक और योजना को अंतिम रूप देना शुरू किया।

कुछ समय बाद उन्होंने पुरानी योजना को त्याग दिया और एक नयी योजना तैयार की, जिसे ३१ जनवरी को, लातीनो-अमेरिकानो स्टेडियम में बेसबॉल

चेपियनशिप के उद्घाटन के अवसर पर कार्यान्वित किया जाना था।

ये लोग मशीनगनों और फ़्लैगमैशन हथगोलों से लैस थे। उनका इरादा दहशत और अव्यवस्था फैलाने के लिए साथ ही दर्शकों पर गोलीबारी करने का भी था।

१६, १९६५ में सी० आई० ए० ने बिखरे हुए प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को तथाकथित उनीदाद रेसिस्तेसीआ के अंतर्गत एक बार फिर पुनर्गठित करने का प्रयास किया।

१९६५ के आरंभ में राजकीय सुरक्षा अभिकरणों को पता चला कि इस संगठन के सदस्य २० जनवरी से क्रांति के नेताओं के हत्या प्रयासों का एक सिलसिला शुरू करनेवाले हैं।

इन योजनाओं में २१ वीं सड़क और पहली सड़क के संगम पर बीता मोवा रेस्तरां में फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या भी शामिल थी।

पड़्यंत्रकारियों को प्रधान सेनापति के पहुंचने पर रेस्तरां के एक कर्मचारी, प्रतिक्रांतिकारी रोकार्दो गर्गीया देल कस्तीलो से इशारा मिलना था।

हत्या योजना को एनरीके आब्रेऊ बिलायी (हेनरी) द्वारा कार्लोस वीसेंते सांचेस हेर्नांदेस, ठूलोओ दे लास नीएवेस हर्डेस पीतालूगा तथा अन्यो के सहयोग से कार्यरूप दिया जाना था।

गिरफ्तार कर लिये जाने पर इन लोगों ने अपनी कारगुजारियों और सी० आई० ए० के साथ अपने संबंधों को कबूल किया। इन लोगों से ये हथियार



बराबद हुए: एक टॉमसन सबमशीनगन, एक पी-३८ पिस्तौल, एक १ मि० मी० स्टार पिस्तौल, एक दूरदर्शी लक्ष्यदर्शीयुक्त रेमिंगटन रायफल और कारतूसों और संगठन के कानूनों से भरे तेरह बक्से।

१७. राजकीय सुरक्षा अभिकरण १९६२ से राष्ट्रीय पुलिस के भूतपूर्व प्रधान और रामोन घाऊ सान मार्तीन की सरकार के समय शत्रुतापूर्ण गतिविधि कार्यालय के प्रमुख मारीओ सलाबारीआ अगिलार पर नजर रहे हुए था।

मई, १९६५ में पता चला कि सलाबारीआ ने एक टेलीफोन कंपनी से एक ट्रक खरीदने की कोशिश की है और वह उसके लिए १०-१२ हजार पैसे देने को तैयार था।

उसकी योजना यह थी कि ट्रक पर ३० या ५० मि० मी० व्यास की मशीनगन लगा दी जाये और पहला मौका मिलते ही उससे प्रधान सेनापति फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या कर दी जाये।

मारीओ सलाबारीआ सी० आई० ए० से उसके एजेंट डॉक्टर बेर्नार्दो मीलानेस लोपेस के जरिए, जो एक आतंकवादी गुट का प्रधान था, संपर्क रखता था। जब डॉक्टर लोपेस स्पेन गया, तो सलाबारीआ ने उससे अपने भाई हूलीओ से, जो मीयामी में रहता था, संपर्क करने का अनुरोध किया, ताकि वह (हूलीओ) आर्तुरो बरोना से बात करे और फ्रीदेल की हत्या के लिए आर्थिक सहायता मांगे।

मारीओ सलाबारीआ को आर्तुरो बरोना के जरिए, जो एक ज्ञात सी० आई० ए० एजेंट था, १०,००० पैसे, एक सायलेंसर लगी पिस्तौल, चार मैग्नम रिवॉल्वर और बहुत बड़ी मात्रा में कारतूस और वाकी-टाकी प्राप्त हुए।

पूछ-ताछ के दौरान मारीओ सलाबारीआ ने अपने जर्म को और सी० आई० ए० से प्राप्त सहायता को स्वीकार किया।

१८. जून, १९६५ में सी० आई० ए० एजेंटों के एक जाल का भेद खुला, जो रामोन (मोंगो) और लीओपोल्दीना (पोलीता) घाऊ अल्मीना के निर्देशन में भांति-भांति की शत्रुतापूर्ण और असामाजिक कार्रवाइयों में लगे हुए थे और क्यूबा में कुछ पूंजीवादी हुतावासों के जरिए सी० आई० ए० के साथ संपर्क रखते थे।

ये लोग सी० आई० ए० से निर्देश और पैसा पानेवाले रेस्काते, कम्युनिस्टविरोधी क्रांतिकारी आंदोलन और दूसरे प्रतिक्रांतिकारी संगठनों के सदस्य थे।

सी० आई० ए० ने पोलीता घाऊ को अन्य कामों के अलावा प्रधान सेनापति फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या की योजना तैयार करने का भी आदेश दिया। इसके लिए उसे सी० आई० ए० से जहर के कैप्सूल प्राप्त हुए। ये कैप्सूल किसी आल्बेर्तो ब्रूज कासो को दिये गये थे, जिसने अपनी बारी में उन्हें एक डॉक्टर को दिया, जो सी० आई० ए० एजेंटों के एक दल का नेता था।

जब यह योजना विफल हो गयी, तो सी० आई० ए० ने फ्रीडेल कास्त्रो की हत्या के एक और प्रयास के लिए प्रतिक्रियाकारी टोनी बरोना को जहर के कैपसूलों का एक और पैकट दिया।

पोलीता को सी० आई० ए० से इसी प्रयोजन के लिए इसके अलावा विशेष कारतूतों सहित सायलेंसरयुक्त विभिन्न हथियार भी प्राप्त हुए थे। ये हथियार उससे तब बरामद हुए, जब वह जून, १९६५ में पकड़ी गयी।

राजकीय सुरक्षा अभिकरणों ने इन योजनाओं का समय रहते ही परदाकाश कर दिया और षड्यंत्रकारियों को गिरफ्तार कर लिया।

१९. सी० आई० ए० के निदेशन में कमांडोस-एक और तीस नवंबर आंदोलन नामक प्रतिक्रियाकारी संगठनों को, जिनके संयुक्त राज्य अमरीका में अपने प्रतिनिधि थे, विशेष सशस्त्र जहाज तैयार करने का काम दिया गया, ताकि उनकी सहायता से १९६५ के मध्य में क्यूबा में घुसपैठ करके ध्वंसात्मक कार्रवाइयों की जा सकें।

लेकिन बाद में योजना को बदल दिया गया और ध्वंसात्मक कार्रवाइयों के लिए लोगों की घुसपैठ कराने के बजाय जहाजों से देश के राष्ट्रपति साथी ओस्वाल्दो दोर्तीकोस के निवास, छात्रों के मीरामार महल्ले और रिबीएरा होटल पर गोलाबारी करने का निश्चय किया गया। इस आपराधिक कार्य को संपन्न करने के

बाद जहाज संयुक्त राज्य अमरीका वापस लौट गये।

मई, १९६६ में इन्हीं तत्वों ने मीरामार में पांचवें एवेन्यू (महामार्ग) पर फ्रीडेल कास्त्रो की हत्या करने के उद्देश्य से देश में चोरी से प्रवेश किया।

लेकिन इस बार उन्हें उतरने के साथ ही दबोच लिया गया। मुठभेड़ में आर्मांदो रोमेरो मार्टिनेस और सानादालीओ हेर्मीनो दीआस गार्सीआ नामक प्रतिक्रियाकारी मारे गये और कमांडोस-एक के प्रधान अंतोनिओ कुएस्ता बाल्ते और एञ्जेनिओ एनरीके साल्दीवार कार्देनास को हथियारों और सैनिक साज-सामान की विशाल मात्रा के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

इन प्रतिक्रियाकारियों को प्लेटों रीको में प्रशिक्षण दिया गया था। इनमें से कुछ ने वाणिज्यिक पोत 'सान पास्कुआल' पर गोलाबारी करने में हिस्सा लिया था, जो इस हमले के परिणामस्वरूप कैबारियान (लास बील्पास) बंदरगाह में डूब गया था।

२०. १९६६ में राजकीय सुरक्षा अभिकरणों ने भूतपूर्व कमांडेंट रोलांदो कूबेला मेकादेस को गिरफ्तार किया, जो फ्रीडेल कास्त्रो की हत्या की एक और साजिश का सरचना था।

यह योजना सी० आई० ए० द्वारा तैयार की गयी थी। कूबेला की मैट्रिड यात्रा के समय उसे माखेल आर्तीमे, होर्टे ('एल मागो') रोब्रेन्यो, लुईस एनरीके ब्रसानकोस और कार्लोस तेपेदीनो नामक सी० आई० ए० एजेंटों ने अपने साथ मिला लिया था।

हत्या की इस योजना की तैयारी में मैट्रिड में क्यूबाई दूतावास के कर्मचारी होसे लुईस गंजालेस गल्यारेता और आल्वेर्तो ("एल लोको") ब्लान्को भी शामिल थे।

आतंमि ने कुवेला से अपनी मुलाकात में उसे प्रधान सेनापति फ्रीदेल कास्त्रो की हत्या के बाद ७२ घंटे के भीतर शुरू होनेवाले आक्रमण के लिए जहाज, हथियार और लोग मुहैया करने की गारंटी दी।

हवाना लौटने के पहले गंजालेस गल्यारेता ने कुवेला को दूरबीनी लक्ष्यदर्शी और सायलेंसरसुक्त राखफल दी, जो उसके पकड़े जाने के समय कई और हथियारों और गोलाबाराद के साथ उससे बरामद हुई।

गल्यारेता और आल्वेर्तो ब्लान्को को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

२१. १७ मार्च, १९६७ को क्यूबाई सीमांत प्रहरियों ने फ्रेलक्स अस्सेन्सीओ क्रेप्सो, विल्फ्रेदो मार्तनेस दीआस और गुस्तावो अरेसेस अल्वारेस नामक प्रतिक्रांतिकारियों को घर दबोचा, जिन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका से आकर कायो-फ्रागोसो के इलाके में चोरी से घुसने की कोशिश की थी।

उनका मुख्य कार्यभार क्यूबा के प्रधान मंत्री की हत्या करना और प्लास्टिक विस्फोटकों का उपयोग करके बाक्रायदा तोड़फोड़ अभियान छेड़ना था।

इन सभी कार्यों का उद्देश्य विदेशों में यह छाप पैदा करना था कि देश में जबरदस्त व्यवस्थाविरोधी

हलचल मची हुई है, जिससे संयुक्त राज्य अमरीका में क्यूबाई प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को सरकारी आर्थिक सहायता पाने का बहाना मिल सके।

क्यूबा में अपने कामों को अंजाम देने के लिए सी० आई० ए० ने उन्हें 'एम-३०-११', रेसे, लोस पीनोस नुएवोस, कमांडो सेरो, 'आल्फा-६६' तथा अन्य संगठनों में प्रशिक्षण दिया था।

उन्हें अपने काम के लिए आवश्यक सभी हथियारों और साज-सामान से लैस किया गया था।

२२. १९७१ में फ्रीदेल कास्त्रो की चिली यात्रा के समय उनकी हत्या का प्रयास किया गया। इस प्रयास में सी० आई० ए० के निदेशन में चिलीआई फ्रांसिस्तों ने 'आल्फा-६६' के प्रतिक्रांतिकारियों के साथ मिलकर काम किया।

इस योजना के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका हेसूस दोमीगस बेनीतेस (एल इस्लेन्यो) की थी, जिसके लिए वेनेजुएला में रहनेवाले क्यूबाई प्रतिक्रांतिकारियों के जरिए जाली कागजात हासिल किये गये थे, जिनमें उसे वेनेजुएलाई पत्रकार बताया गया था, जो मानो क्यूबाई प्रधानमंत्री की यात्रा की रिपोर्ट करने के लिए आया था।

पहली योजना के अनुसार हत्या टेलीविजन कैमरा में छिपायी पिस्तौल से की जानी थी, मगर उसे बाद में इस कारण त्याग दिया गया कि वह पशुचकारी की निरापदता को प्रत्याभूत नहीं करती थी।

अमरीकी अधिकारियों ने दोमिंगेस बेनीतेस को जो पोदेर कूबानो नामक आतंकवादी संगठन से संबद्ध था, इस संगठन के सदस्य की हैसियत से संयुक्त राज्य अमरीका तथा दूसरे देशों में वैरक्रान्ती कार्यवाहियों के लिए उत्तरदायी ठहराया था। इस सिलसिले में वह १९६८ में संघीय अन्वेषण ब्यूरो (एफ० बी० आई०) द्वारा गिरफ्तार भी किया गया था।

१९७० में उसने 'आल्फा-६६' द्वारा ओरियेंते में देश में प्रवेश करने के असफल प्रयत्न में हिस्सा लिया और फिर भागकर गुजानतानेमो नौसैनिक अड्डे में शरण ली, जहाँ उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया - इस बार जमानत के बाद करार हो जाने के लिए।

इसके बावजूद वह आबाद ही रहा और ब्यूरोई प्रधान मंत्री की हत्या के एक नये प्रयास में भाग लेने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका से दक्षिण अमरीका जाने और वहाँ से वापस आने में उसे किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

२३. जिस अकेले अवसर पर दुश्मन अपनी कुटिल योजनाओं को आंशिक रूप में कार्यान्वित कर पाया, वह १४ सितंबर, १९६१ को डॉक्टर कार्लोस रफ़ाएल रोदीगेस की हत्या का प्रयास था।

यह प्रयास बीआ-ब्लॉक राजमार्ग के पूर्णतः मचादो नामक हिस्से पर किया गया था, जब कार्लोस रफ़ाएल रोदीगेस मातांसास नगर के साऊतो थियेटर में हुई सभा से राजधानी वापस आ रहे थे।

कार्लोस रफ़ाएल के साथ बैठे साथियों ने घट्यंत्र-कारियों की शीलियों का जवाब देते हुए उनमें से एक, टुआन होसे मातौरी सील्वा, को घायल कर दिया, जो कुछ घंटे बाद इमर्जेंसी अस्पताल के आपरेशन कक्ष में मर गया।

मीके की जांच के दौरान राजकीय सुरक्षाकर्मियों की और चीजों के अलावा एक ४५ मि० मी० व्यास की एम-३ सबमशीनगन और कारतूसभरे ज़िप्पो सहित एक ४५ मि० मी० व्यास की कोल्ट पिस्तौल मिली... पूछताछ के दौरान अभियुक्तों में से एक ने कबूल किया कि यह अपराध करने के लिए षड्यंत्रकारी, जिनमें आतंककारी पुनर्स्थापना आंदोलन के प्रतिनिधि और इसे इलाके के मुख्य जासूसी दल के प्रधान शामिल थे, एक सी० आई० ए० एजेंट से मिले थे, जिसने उन्हें आदेश दिये थे।

योजना पहले ही तैयार कर ली गयी थी, क्योंकि रेडियो और प्रेस रिपोर्टों से दो दिन पहले ही पता चल गया था कि कार्लोस रफ़ाएल उस दिन मातांसास में साऊतो थियेटर में होंगे। कई तथ्य यह भी दिखाते हैं कि पहले यह प्रयास संभवतः फ़ीदेल कास्त्रो के विरुद्ध लक्षित किया जाना था, मगर षड्यंत्रकारियों ने इस अपने-आप हाथ आये मीके को ही पकड़ लिया और साथी कार्लोस रफ़ाएल रोदीगेस की हत्या करने का निश्चय कर लिया।

\* \* \*

सी० आई० ए० द्वारा किये जानेवाले अपराधों संगठन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी लंबी फ्रेजरिस्त किसी भी अमरीकी को उद्दिष्ट समाधन और तरीके से परहेज नहीं करते।

“समिति ने पाया है कि कुछेक प्रच्छन्न कार्य अमरीकी हिंसा के इतिहास के जघन्यतम अध्यायों में एक है। सिद्धांतों और आदर्शों के प्रतिकूल रहे हैं और उन वासिगटन की विघटनवादी मुहिमबाजी को “महिले बारे में पता चल जाने पर इस राष्ट्र की संसार भ्रष्ट” की संज्ञा दी गयी है। किंतु इसे अभूतपूर्व पैमाने में नैतिक तथा व्यावहारिक नेतृत्व दे पाने की क्षमता का अंतर्राष्ट्रीय आतंक का कार्य कहना अधिक सही होगा, क्योंकि इसमें मुख्य भूमिका अमरीकी गुप्तचरों को हानि पहुंची है।”

“नैतिक और व्यावहारिक नेतृत्व” के इस आडंबरपूर्ण दावे को हम अलग छोड़ देते हैं। इसके बजाय यह पूछा जा सकता है कि क्या ये प्रच्छन्न कार्य अमरीकी शासकों के आदर्श और सिद्धांत—और सो भी दीर्घकालिक सिद्धांत—बन गये हैं। जहां पहले हत्या प्रयासों को “प्रतिमान से विचलन” कहा जाता था, वहां अब वर्तमान प्रशासन के अधीन लगता है कि समाजवादी क्यूबा के खिलाफ प्रच्छन्न कार्यों में तेजी लाने के लिए सी० आई० ए० और क्यूबाई उत्प्रासियों के बीच सहयोग का पुनराारंभ ही स्वीकृत प्रतिमान बन गया है।

## दक्षिण-पूर्वी एशिया में अप्रकट युद्ध

हाल के वर्षों में प्रकाशित नानासंख्य रिपोर्टें यही दिखलाती हैं कि सी० आई० ए० और उसके जैसे अन्य

हिंसा के इतिहास के जघन्यतम अध्यायों में एक है। सिद्धांतों और आदर्शों के प्रतिकूल रहे हैं और उन वासिगटन की विघटनवादी मुहिमबाजी को “महिले बारे में पता चल जाने पर इस राष्ट्र की संसार भ्रष्ट” की संज्ञा दी गयी है। किंतु इसे अभूतपूर्व पैमाने में नैतिक तथा व्यावहारिक नेतृत्व दे पाने की क्षमता का अंतर्राष्ट्रीय आतंक का कार्य कहना अधिक सही होगा, क्योंकि इसमें मुख्य भूमिका अमरीकी गुप्तचरों को हानि पहुंची है।”

“जनसंहार—सामूहिक निर्मूलन—के कम से कम दो ज्ञात और प्रमाणीकृत मामले हैं।” अर्जेंटीनी पत्रकार म्वात्लेरीआ मादोनेस अपनी पुस्तक ‘मुछोटे के बिना सी० आई० ए०’ में लिखते हैं, “जिनमें सी० आई० ए० की शिरकत थी—इंदोनेशिया में सत्ता पर्युत्थेपण, जिसने राष्ट्रपति सुकार्णो को सत्ताच्युत किया और दक्षिण वियतनाम में तथाकथित फ्रीनिक्स ‘प्रशमन’ कार्यक्रम।

“फ्रीनिक्स कार्यक्रम सी० आई० ए० के तत्कालीन उपनिदेशक विनियम कोल्बी के निर्देशानुसार सैन्यी द्वारा १९६६ से अनुसृत दक्षिण वियतनामी

देहातों के 'प्रशमन' की नीति का ही सिलसिला था। यह 'प्रशमन' प्रांतीय विरोध दल नामक टोलियों द्वारा किया जाता था, जिनमें अनियमित दक्षिण वियतनामी सैनिक काम करते थे, जो आबाद इलाकों पर ताजीरी हमले किया करते थे। इन दलों (अथवा, अधिक सटीक शब्दों में कहें, तो सशस्त्र चरम दक्षिण-पंथी गिरोहों) की सहायता के लिए ४४ प्रांतीय जाच-पड़ताल केंद्र (प्रत्येक प्रांत में एक) थे, जिनके कर्मचारी अपने संदिग्ध देशवासियों को व्यवस्थित तरीके से यंत्रणाएं देते थे...

"लेकिन कुछ लोग इन उपायों को कदाचित् ही कारगर समझते थे। इसलिए कोल्वी ने नेतृत्व और रणनीतिक योजना के पहलुओं पर सावधानीपूर्वक सोच-विचार करने के बाद फ्रीनिक्स कार्यक्रम तैयार किया। कार्यक्रम में दक्षिण वियतनामी पुलिस और गुप्तचर सेवाओं और इसी प्रकार दक्षिण वियतनामी और अमरीकी सैन्य दलों की भी शिरकत सन्निहित थी। १९७१ में सीनेट समिति के सामने साक्ष्य देते हुए कोल्वी ने स्वीकार किया कि फ्रीनिक्स कार्यक्रम के क्रियान्वयन के दौरान २०,५६७ 'संदिग्ध व्यक्ति' मारे गये थे। साइगोन सरकार यह संख्या ४०,६६४ बतलाती थी। वास्तविक संख्या चाहे कुछ भी हो, तथ्य फिर भी यही रहता है: २०,००० का मारा जाना—यह हर सूरत में जनसंहार ही है। साथ ही अमरीकी सशस्त्र सेनाओं और उनके दक्षिण वियतनामी सहयोगियों द्वारा नागरिक आबादी के विरुद्ध नेपाम, श्वेत फॉस्फोरस,

फ़ैगमेटेशन बमों, मोलाफेंकों और दूसरे हथियारों का प्रयोग भी जनसंहार ही है।"\*

फ्रीनिक्स कार्यक्रम में जहां सैनिक गुप्तचर सेवाओं की सक्रिय सहभागिता थी, वहां इसमें भी कोई शक नहीं कि सामूहिक हत्याओं में प्रमुख भूमिका सी० आई० ए० ने निभायी। यह एक तथ्य है कि स्वयं विलियम कोल्वी ने नागरिकों के निर्मूलन के अनिवार्य मासिक कोटा निर्धारित किये थे। सी० आई० ए० के भावी प्रमुख द्वारा स्थापित अमानुषिक प्रक्रिया की कम से कम कुछ सफाई देने के प्रयास में 'पैरेड' पत्रिका ने लिखा:

"फ्रीनिक्स कार्यक्रम के कार्यान्वयन में कुछ ज्यादाियां... हुईं, और कोल्वी ने स्वयं यह स्वीकार किया है... लेकिन ज्यादाियां तो सभी युद्धों में होती हैं, और हमें, कोल्वी पर 'सामूहिक हत्याएं और युद्ध-अपराध' होने की तोहमत लगाना प्रकटतः अनुचित लगता है... दूसरे विश्वयुद्ध में किसीने हमारे सैनिकों पर ऐसी तोहमत नहीं लगायी थी, जब वे जर्मनों को मार रहे थे।" \*\*

द्वितीय विश्वयुद्ध के सैनिकों की बात अलग रहने दें, उन्हें ऐसी "तोहमत" लगाये जाने का कोई अंतरा नहीं है, पर यह "तोहमत" अमरीकी सैनिक गुप्तचरों

\* म्वालेरीआ मार्टेन्स, 'गूडबै के बिना सी० आई० ए०', वील्ड प्रकाशन, मास्को, १९७६, पृ० ६५-६६ (रूसी में)।

\*\* Parade, July 21, 1974, p. 6.



अधिकारियों पर भी बखूबी लगायी जा सकती है, जो अपने सी० आई० ए० सहकर्मियों से किसी भी तरह कम निष्ठुर नहीं थे।

'काउंटरसर्ज' ('प्रतिगुप्तचर') पत्रिका ने वियतनाम में सैनिक गुप्तचर सेवा के गह्रित काम के बारे में एक लेख प्रकाशित किया था। वहाँ हम उसका संक्षिप्त रूप दे रहे हैं:

"प्रश्न: क्या आपने वियतनाम गणराज्य में कभी फ्रीलड टेलीफोन\* के तार कैदियों या हवालातियों के बदनो से जोड़कर और टेलीफोन को चालू करके, जिससे तारों से होकर बिजली गुजरे, उनसे जानकारी हासिल करने की कोशिश की है?

उत्तर: हाँ, मैंने इस तरीके को कई बार इस्तेमाल किया है, क्योंकि वियतनाम में सभी पूछ-ताछ करनेवालों ने यही किया है।" \*\*

यह प्रश्न सैनिक गुप्तचर सेवा के एक सैनिक से पूछा गया था, जो युद्धबंदियों से पूछ-ताछ करनेवाली एक इकाई से संलग्न था। इस शक्ति ने हवालाती वियतनामियों को यंत्रणा देने और उनकी हत्याओं में हिस्सा लिया था।

कम से कम १८ लोगों ने इस सैनिक गुप्तचरों इकाई से संबंधित जांच के दौरान गवाही दी। उन सभी ने स्वीकार किया कि उन्होंने नागरिकों और

सैनिकों की पूछ-ताछ के दौरान अकपीइन के शौतिक साधन उपयोग किये जाते हुए देखा था या उसमें भाग लिया था। इकाई के सदस्यों ने निम्नलिखित विधियों को खामकर अक्सर उपयोग में लायी जानेवाली विधियाँ बतलाया:

१. फ्रीलड टेलीफोन। फ्रीलड टेलीफोन के चालक तारों को शरीर से जोड़ दिया जाता है और फोन का मोटर चालू करके बिजली के धक्के दिये जाते हैं।

२. बिजली की कुरसी। बिजली पैदा करनेवाले सोत के चालक तार धातु की कुरसी से जोड़ दिये जाते हैं। कुरसी को पानी से गीला कर दिया जाता है। जब कैदी उस पर बैठता है, तो उसे बिजली के धक्के लगते हैं।

३. भीगा कपड़ा। हाथ-पैर बंधे कैदी के मुँह और नाक पर एक कपड़ा रख दिया जाता है। फिर उस पर पानी की धार छोड़ी जाती है, जिससे कैदी का दम गुटने लगता है।

४. डुबाना। कैदी के सिर को देर तक पानी में डुबाये रखा जाता है।

५. दिखावटी गोला। कैदी की तरफ पिन निकास-कर बिना वारुद का हथगोला फेंका जाता है।

६. पिटाई और मालियाँ। इनमें रायफल के कुदों से, घुसों से, लातों से और डंडों से पिटाई, संगीन से डराना और रेत भरे मोजे से पीटना, जिससे निशान नहीं पड़ते हैं, शामिल हैं। \*

\* रणक्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाला ओजी टेलीफोन। - सं०

\*\* *Counterspy*, Vol. 3, No. 2, 1976, p. 61.

\* *Ibid.*

सवाहों ने यह भी साक्ष्य दिया कि यंत्रणा देना सामान्य ही नहीं था, बल्कि अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या के लिए "मानक परिचालन प्रक्रिया" भी थी।

एक सैनिक गुप्तचर्या (सी० गु०) कप्तान के अनुसार, "नीति यह थी कि पुछताछकर्ता चाहें, तो कैदियों के साथ सक्ती से पेश आया जा सकता था। मेरे कमांडिंग अफसर... ने मुझसे कहा, "पुछ-ताछ के दौरान सभी तरह का व्यवहार अथवा दुर्व्यवहार उचित है, बशर्ते कि प्राप्त सूचना किसी अमरीकी सैनिक की जिंदगी बचा सकती है। मेरी जानकारी के मुताबिक यह नीति पुछ-ताछ केंद्र के सभी कर्मचारियों को शात थी।"

इस कालाधि में इस सी० गु० दस्ते के दो प्रभारी अफसर थे—कप्तान नॉर्मन और कप्तान रॉबर्ट। कप्तान नॉर्मन को सी० गु० दस्ते को यह आदेश देते बताया गया है कि "कैदियों से सूचना पाने के लिए जो भी मन में आये, करो, क्योंकि यह रणक्षेत्र में लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। सिर्फ कोई निशान मत छोड़ो।" कई सी० गु० सदस्यों ने इसकी सवाही दी कि उन्होंने स्वयं नॉर्मन को कैदियों को यंत्रणा देते देखा है। कप्तान नॉर्मन सी० गु० दस्ते का अकेला सदस्य था, जिसने सवाही देने से इन्कार किया। कप्तान रॉबर्ट ने... "जबानी स्वीकार किया कि उसने वियतनामी कैदियों के साथ दुर्व्यवहार करने में भाग लिया था" ... और कहा कि उसने वियतनामियों के विरुद्ध पुछ-ताछ के कठोर तरीकों का उपयोग करने की अनुमति दी थी।

इन तरीकों में थप्पड़ मारना, धक्के देना, कैदियों को हाथों, मुक्कों या डंडों से पीटना और बिजली और जल-यंत्रणा विधियों का इस्तेमाल सम्मिलित था। उसने बताया कि इस तरह की पुछ-ताछ मेजर जॉर्ज की जानकारी में होती थी।\*

वियतनाम में अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या की कार्य-प्रणाली ऐसी थी। "सी० आई० ए० भी इतनी ही दक्ष थी", यद्यपि उसके द्वारा प्रयुक्त तरीके कई मामलों में सर्वथा भिन्न थे।

"स्थानीय, धरलू दमनकारी शक्तियों के साथ घनिष्ठ सहयोग," ग्वालेरीआ मार्देनिस कहते हैं, "गुप्तचर्या बिरादरी के भड़कावे की कार्रवाइयों में लगे अभिकरणों की कार्य-विधि का एक प्रमुख लक्षण है। यह कुछ विशेषकर नाजुक कामों को स्थानीय पुलिस की सहायता से करना संभव कर देता है। इनमें पत्रव्यवहार की सेंसरशिप, टेलीफोन को टैप करना, विदेश जानेवालों की सूची पर नजर रखना, होटलों में ठहरनेवालों के नामों की जांच करना, आदि शामिल हैं। यह सहयोग सी० आई० ए० के लिए अन्य कार्यों में भी महत्वपूर्ण है, उदाहरण के लिए, छापे मारना, गिरफ्तारियां और सूचना प्राप्त करवाने के लिए यंत्रणा। सुरक्षा के कारणों से किसी भी अमरीकी सी० आई० ए० एजेंट को इन मामलों में प्रत्यक्षतः शामिल नहीं होना चाहिए; रहस्योद्घाटन होने पर

\* *Counterspy*, Vol. 3, No. 2, 1976, p. 61.

इस तरह के तथ्य भावी मित्रों अथवा तटस्थों पर अननुकूल छाप पैदा कर सकते हैं।”\*

इस प्रकार, दमन और आतंक का दौर दूसरों के हाथों चलाया जाता है। वियतनाम में सी० आई० ए० की कार्यवाहियों के इस पहलू के बारे में अमरीकी विदेश विभाग गुप्तचरों के एक भूतपूर्व अधिकारी जॉन मार्क्स ने लिखा है: “मैं एक भूतपूर्व सी० आई० ए० कर्मियों के साथ अपनी एक हाल की मेटवार्ता के बारे में बतलाना चाहता हूँ। इस आदमी ने सातवीं अमरीका और वियतनाम में काम किया था और अपने अनुभवों के बारे में मुझे बहुत खुलकर बातें कीं। शुरू करने के पहले मैं यह बतला दूँ कि प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्र क्या थे। ये विशाल भवन थे, जिन्हें सी० आई० ए० ने पूछ-ताछ कक्षों, हवाजातों, अमरीकी और वियतनामी कर्मचारियों के कार्यालयों, आदि के साथ प्रत्येक प्रांत में बनाया था। मेटवार्ता में सिवाय कुछ शब्दों के, जो बात करनेवाले सी० आई० ए० कर्मियों की पहचान को प्रकट करते हैं, कुछ भी नहीं बदला गया है।

“सी० आई० ए० कर्मियों: मैंने खुद नैतिकता के अर्थों में कभी नहीं सोचा। मुझे आदेश मिलता कि यह किया जाना है, और मेरे काम का आकलन तो लक्ष्यों की सिद्धि से होता था। सो मैं उसे करवाकर ही रहता। लेकिन अगर किसीने किसीको जान से मारने का कार्यभार मेरे सामने रखा होता, तो देशक

में उसकी नैतिकता के बारे में सोचता। लेकिन अगर मेरा काम चे चेबारा के खिलाफ़ है, तो ऐसी की तैसी! उसका सारा काम पूरी तरह से वैरकानूनी था। इसलिए मैं उसे दबोचने के लिए कुछ भी करने को तैयार था, चाहे वह काम वैरकानूनी ही क्यों न होता।”\*

यह है एक सी० आई० ए० कर्मियों की मनोवृत्ति, जो तीस साल से ज्यादा के कम्युनिस्टविरोधी अभ्यन्त-कूलन के परिणामस्वरूप ‘homo sapiens’ (प्राज्ञ मानव) का यांत्रिक बिहूष भर बन गया है और कोई भी वैरकानूनी काम कर सकता है।

“जॉन मार्क्स: यह तो वैसा ही नजरिया लगता है, जो सी० आई० ए० में खासा व्यापक है, अर्थात् यह कि बड़ी भलाई और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सब कुछ किया जा सकता है।

“सी० आई० ए० कर्मियों: मैं फिर वही बात दुहराता हूँ। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी किसीको चोट पहुंचायी हो, अपाहिज किया हो या मारा हो या ऐसा चाहा भी हो। वैरकानूनी बातें अलबत्ता होती थीं, मगर वे छोटी-मोटी ही थीं। और अगर किसीको कोई चोट-चोट लगती भी थी, तो आम तौर पर ऐसा तब ही होता था कि जब काम पर हमारा पूरा नियंत्रण नहीं होता था। और इससे मेरा मतलब यह कि जब हम पुलिस का उपयोग कर रहे

\* *Unhooking the CIA*, Ed. by Howard Franzier, The Free Press, a Division of Macmillan Publishing Co., Inc., New York, 1978, p. 15.

\* खालेरीजा मार्टिनेज़, पुनर्मुद्रित कृति, पृ० ६६-६७।

होते थे, क्योंकि इन लोगों के साथ बात यह है कि उनकी मानसिकता हमारी मानसिकता से भिन्न है। वे लोग बिल्कुल वहशी हैं। वे इन प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्रों का, जो हमारे क्षेत्राधिकार और नियंत्रण में थे, सारे व्ययतनाम में दिहोरा पीटा करते थे... मेरा आधा वक्त एक प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्र से दूसरे को जाने में लगता था, और, कसम भगवान की, मैं यह सारा काम बेदाढ़ा, सफाई से और सलीके से करवाता था। एक बार किसी प्रांत में कुछ व्ययतनामियों का पीट-पीटकर मलीबा बना दिया गया। इसके लिए कभी कोई मजूरी या आज्ञा नहीं दी गयी थी। हम दुनिया भर का तूफान खड़ा कर देते, पर सब बेसूद था, पत्थर की दीवार से बात करने जैसा था।

"इन लोगों (व्ययतनामियों) की मानसिकता ही यह है कि बस डंडे और जबरदस्ती से सब ठीक हो जाता है। इसके अलावा वे आपस में एक-दूसरे से नफरत करते हैं और, ज्यों ही मौका मिलता है, पीट-पीटकर एक-दूसरे का मलीबा बना डालते हैं। सी० आई० ए० को बहुत अधिक दोष का भागी बनना पड़ा। मगर हम पर अकेली जबाबदेही इस बात की है कि हमने इन केंद्रों को स्थापित किया। बेशक, प्रांतीय पूछ-ताछ केंद्रों को, जिन्हें विशेष शाखा पुलिसवाले चलाते थे, पैसा और परामर्श देना हमारे कार्यात्मक क्षेत्राधिकार में था। विशेष शाखा पर भी हमारा कुछ नियंत्रण था, क्योंकि हम उसे सहायता और पैसा देते थे। मगर जहां तक यंत्रणा

की बात है, उसका तो कभी-कभी हमें पता भी नहीं होता था। प्रायः इसके बारे में हमें सुनने को तभी मिलता, जब कोई पत्रकार उस इलाके में घूमता होता और वहां किसी तरह से उसे इसका पता चल जाता। हम यंत्रणा के बारे में अक्सर बार में पड़ते और हमें साइ-गोन से तार आता और पूछा जाता: 'तुम्हारे मनहूस पूछ-ताछ केंद्र में यह सब क्या हो रहा है?' लेकिन हमने एजेंसी की हेसियत से पुलिसवालों को यंत्रणा या बलप्रयोग के लिए कभी प्रोत्साहित नहीं किया... हम तो उनसे ऐसा न करने के लिए ही कहते थे। वे कहते, 'ठीक है, हम ऐसा नहीं करेंगे।' लेकिन हम (सी० आई० ए०-वाले) तो इन पूछ-ताछों में मौजूद रहते नहीं थे। इसके अलावा, इसलिए भी कि इस तरह की बात देखना मुझे पसंद नहीं... लेकिन उसके प्रकाश में आ जाने पर उस टोली की सारी कारस्तानी का कलंक फिर सी० आई० ए० के मत्थे ही आ पड़ता था, क्योंकि एजेंसी ही उस टोली को मदद, पैसा या सलाह तक दे रही थी। असल में यह उचित नहीं है, और जब भी हमारा नाम ऐसे मामलों में घसीटा जाता था, तो हम में से अधिकतर ऐसा ही सोचते थे।"\*

"यह भूतपूर्व सी० आई० ए० कर्मी उस 'गुप्त मानसिकता' की एक भयावह मिसाल पेश कर रहा है", लेखक आगे कहता है, "जो इस एजेंसी में

इतनी व्यापक है... वह उस किस्म का आदमी है, जिसे अधिकार और प्रभाव की जगहों से अलग कर दिया जाना चाहिए। वह उस किस्म का आदमी भी है, जो किसी भी सीनेट समिति के सामने सच नहीं बोलेंगा। फिर भी वह शायद ऐसा आदमी है, जो अपने बच्चों को प्यार करता है, जो अपने लॉन को क़रीने से सँवारता है। आप उससे बातचीत करें, तो आपको वह खासा मोहक भी लगेगा। दूसरे शब्दों में, वह कोई मस्तिष्कहीन स्वचालित यंत्र नहीं, जीता-जागता इन्सान है। लेकिन वह सी० आई० ए० के लिए अपने काम को व्यक्तिगत नैतिकता के किसी भी अहसास से पूर्णतः अलग रखता है...

"वह समय आ गया है कि हम सब इस तरह के कामों के लिए, जो दुनिया भर में हमारे नाम से किये जा रहे हैं, अपने को भी उत्तरदायी मानें। हम अपने रेडियो की आवाज़ को चाहे कितना ही ऊँचा क्यों न कर दें, आखिरकार हमें लोगों की चीत्कारों को सुनना ही पड़ेगा। समय आ गया है कि सी० आई० ए० के गुप्त कार्यों का अंत किया जाये और संयुक्त राज्य अमरीका को अंतर्राष्ट्रीय क़ानून और शांतिनता का कम से कम न्यूनतम मानदंड तो मानने को विवश किया जाये...

"संयुक्त राज्य अमरीका इस तरह की कार्रवाइयों से जितना ही जल्दी अलग हो जाये, उतना ही बेहतर है।" \*

\* *Ibid.*, pp. 16-17.

यह अपील अमरीकी समाज में क्या अनुक्रिया उत्पन्न कर सकती है? और अनुक्रिया होगी भी, तो ज़िलमें? प्रचलन कार्यों में भाग लेनेवाले उन लोगों में, जो जॉन मार्क्स के शब्दों में, "गुप्त मानसिकता" रखते हैं और जो सी० आई० ए० के लिए अपने काम को व्यक्तिगत नैतिकता से अलग रखते हैं? शायद ही। इस तरह के लोग यही विश्वास करते हैं कि वे इस आदेशों का पालन कर रहे हैं और आदेशों पर बहस-मुबाहसा नहीं किया जा सकता। सत्ता की आज्ञानुवर्तिता हत्यारे को नैतिक दायित्व से मुक्त कर देती है। तो अनुक्रिया शायद उन लोगों में होगी, जो आदेश जारी करते हैं, प्रचलन सक्रिय मोजनाएँ तैयार करते हैं और अपने मातहतों की विचारणा को ढालते हैं?

आइये, इन लोगों में से एक, सी० आई० ए० के भूतपूर्व (लेकिन अमरीकी गुप्तचर समुदाय में अब भी एक प्रभावी हस्सी) निदेशक विलियम कोलबी को ज़रा निकट से जानें।

भला वियतनामी युद्ध का "हीरो" होने की कुख्याति अर्जित करनेवाले यह विलियम कोलबी कौन हैं? "नफ़ासत, शराफ़त और तमीज़ के इस पुतले" ने लाखों लोगों के स्रात्मे के आदेश क्योँकर दे दिये? इसके पीछे मज़सद क्या था?

भूतपूर्व सी० आई० ए० निदेशक के बारे में कुछ व्योरे लाँपड और ने 'पेरेड' पत्रिका में दिये हैं: "बिल कोलबी ने कानून की शिक्षा प्राप्त की है।

देखने में भी वह वकील, अध्यापक, पादरी, बैंकर, डाक्टर ही लगते हैं, यानी सिवा उसके और सब कुछ, जो वह असल में हैं—वेश के प्रधान जामूस, वर्षों तक सी० आई० ए० के गुप्त अधवा 'अर्द्ध कर्म' निदेशालय के उपनिदेशक।...

“सैनिक अप्रसर एलरिज कोल्बी की एकमात्र संतान... विलियम कोल्बी के जामूसी कैरियर का सबसे विवादास्पद अंश उनकी वियतनामी प्रशमन कार्यक्रम में सहभागिता से संबद्ध है।... इस कार्यक्रम का एक हिस्सा वह संक्रिया है, जिसे फ्रीनिक्स का कूटनाम दिया गया था..., जिसमें वियतकामियों को पकड़ा जाना, कैद में रखा जाना, स्वपक्षत्याग और मारा जाना शामिल था।...

“कट्टर रोमन कैथोलिक, ... ४२,००० डॉलर सालाना पानेवाले परिश्रमी सरकारी कर्मचारी, अपने चार बच्चों के स्नेही और कर्तव्यपरायण पिता... वकील की हेसियत से वह नागरिक जीवन में उससे तीन गुना अधिक कमा सकते थे, जितना सरकारी नौकरी में पाते हैं। 'मगर', वह कहते हैं, 'इससे मुझे वह संतोष न मिल पाता, जो यह काम मुझे देता है।'”\*

कोल्बी को जो काम “संतोष” देता था, वह किस तरह का था, इसकी भूलक 'सी० आई० ए० फ़ाइल' नामक पुस्तक में उद्धृत सीनट समिति की सुनवाइशों के विवरणों से पायी जा सकती है:

\* Parade, July 21, 1974, p. 6.

“अध्यक्ष: मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आपने कहा है कि प्रच्छन्न कार्य राष्ट्रीय नीति को प्रतिबिंबित करता है। बात यह है कि अगर सारा प्रच्छन्न कार्य गुप्त रूप से किया जाता है और जब वह प्रकट हो जाता है, तो सी० आई० ए० द्वारा उससे इन्कार किया जाता है और अगर वह जनसाधारण के आगे न लाया जाता है और न स्वीकारा ही जाता है, तो वह राष्ट्रीय नीति को कैसे प्रतिबिंबित कर सकता है?

“कोल्बी: अध्यक्ष महोदय, इसलिए कि ऐसे कार्य का आदेश हमें संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार के स्थापित निर्वाचित प्राधिकरणों, राष्ट्रपति और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद द्वारा दिया जाता है और कांग्रेस को रिपोर्ट किया जाता है।”

फिर वही चिरपरिचित बहाना—मैं तो बस आदेशों का पालन करता हूँ।

पैंतीस साल पहले न्यूरेबर्ग मुकदमे में लाखों लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार लोगों ने भी वही बात कही थी।

“श्रोतावृंद में से एक आवाज: आपने वियतनाम में कितने लोगों को मारा?

“कोल्बी: मैं इस सवाल का जवाब देना चाहूंगा। मैंने खुद किसीको भी नहीं मारा (श्रोतावृंद में हंसी)। फ्रीनिक्स कार्यक्रम वियतनामी सरकार के समस्त प्रशमन कार्यक्रम का एक हिस्सा था। उसके अनेक अन्य अंग भी थे: गांवों की रक्षा के लिए इलाकों



में स्थानीय सुरक्षा सेनाओं का निर्माण, स्वयंसेवक आत्मरक्षा दलों में उपयोग के लिए दक्षिण वियतनाम के लोगों को पांच लाख हथियारों का दिया जाना, जो एक ऐसा कार्य है कि जिसे करने का साहस, मेरे सवाल में, कई सरकारें शायद ही बटोर पाये।...

“इसमें गांवों और प्रांतों को विकसित करने का, प्रांतीय चुनावों का और उनके निर्वाचित अधिकारियों को सत्ता सौंपने का कार्यक्रम भी शामिल था। इसने स्थानीय अधिकारियों को इलाकों में आर्थिक विकास के बारे में निर्णय लेने का अधिकार दिया। इस तरह के कितने ही कार्यक्रम थे, जिनमें, प्रसंगतः ऐसे एक-दो लाख से अधिक वियतनामियों के प्रलोभन, अंगीकरण और पुनर्वासन का कार्यक्रम भी था। जो वियतकांग\* के साथ रहे थे और जिन्होंने सरकार के पक्ष में आने का फैसला किया था और जिन्हें अंगीकृत किया गया और उन्होंने जो कुछ भी किया था, उसके लिए दंडित नहीं किया गया। इस कार्यक्रम में लाखों शरणार्थियों का अंगीकरण और पुनर्वासन और सुरक्षा व्यवस्था के सुधारने के साथ उन्हें अतः गांवों को लौटाना भी शामिल था। और इसमें प्रीनिक्स कार्यक्रम भी था, जिसे उस कम्युनिस्ट तंत्र के नेताओं का पता चलाने की दृष्टि से तैयार किया गया था, जो दक्षिण वियत-

नाम की आवादी को आतंक और आक्रमण का शिकार बना रहा था।

“प्रीनिक्स कार्यक्रम को उस अत्यंत अग्रिम और संदे युद्ध में कुछ व्यवस्था और नियमितता लाने के लिए १९६८ के आसपास तैयार किया और कार्यक्रम देना शुरू किया गया था, जो पहले से चला आ रहा था। कार्यक्रम में उसे चलाने की प्रक्रियाओं को सुधारने के लिए बहुत सी चीजें थीं।

“थ्रोताबूंद में से एक आवाज: आप जब वहां थे, उस समय कितने लोग मारे गये?

“कोल्बी: मैं इसके बारे में ख्यान दे चुका हूँ और मैंने बताया था कि प्रीनिक्स कार्यक्रम के ढाई साल से अधिक के कार्यान्वयन के दौरान उन्तीस हजार लोग गिरफ्तार किये गये थे, सबहूँ हजार स्वपक्षत्याग करके आये थे और साढ़े बीस हजार मारे गये थे, जिनमें से सत्तासी प्रतिशत नियमित और अर्द्ध-सैनिक दस्तों द्वारा और तेरह प्रतिशत पुलिस तथा ऐसे ही अन्य अभिकरणों द्वारा मारे गये थे।

“मारे जानेवालों का भारी बहुलांश सैनिक मुठ-भेड़ों, अग्निकांडों और घात लगाकर हमलों में मारा गया था और शेष में से अधिकतर उन्हें पकड़ने की कोशिश में पुलिस कार्रवाइयों में मारे गये थे। प्री-निक्स कार्यक्रम का मुख्य खौर बहुत ही उचित और सीधे-सादे कारणों से पकड़ने को प्रोत्साहित करने पर था। एक तो, इसलिए कि जहां भी संभव हो, हम मानव जीवन का सम्मान करते हैं (थ्रोताबूंद में

\* शब्दार्थ: वियतनामी कम्युनिस्ट। यह शब्द दक्षिण वियतनाम के स्वतंत्रता आंदोलन और उसके छापामारों के लिए प्रयोग में आया जाता था। - सं०

हसी), और दूसरे, इसलिए कि जिंदा जैदी सूचना प्रदान कर सकता है, जब कि मुरदा लाश कुछ भी नहीं दे सकती।” \*

जिंदा क्रीदियों से सूचना किस तरह से उगलवायी जाती थी, यह फ्रीनिक्स कार्यक्रम के एक विशेषज्ञ विक्टर मार्चेंसी ने ‘पेंटेहाउस’ पत्रिका को एक भेंटवार्ता में बताया है।

“प्रश्न: कोलंबी कैसे आदमी है?

“उत्तर: कोलंबी बहुत ही खतरनाक आदमी हैं। मेरे खयाल में उनकी मानसिकता हाइनरिख हिमलर\*\* जैसी है... वह उस तरह के आदमी है कि जो सी० आई० ए० जैसी एजेंसी नहीं, बल्कि यंत्रणा शिविर के संचालन के लिए ज्यादा अधिक उपयुक्त है।

“प्रश्न: वियतनाम में जवाबी आतंक कार्यक्रम उन्होंने ही ईजाद किया था न?

“उत्तर: हाँ, वे लोग दूसरे गांव में जाते और वियतकांगों—अथवा सदिरथ वियतकांगों—का पता चलाते और उन्हें मार डालते अथवा पकड़ लाते, यंत्रणा देते, उनसे पूछ-छाछ करते और उनके हृमदलों के दिलों में दहशत बीठाते थे...

“एजेंसी से निकल आने के बाद मैंने वियतनाम से लौटकर आनेवाले लोगों से सुना कि हम ऐसी-ऐसी चीजें किया करते थे कि जैसे जैदी के कान में

\* The CIA File, Ed. by Robert L. Borosage and John Marks, Grossman Publishers, New York, 1976, pp. 188-190.

\*\* हिटलरज्याही जर्मनी में गेस्टापो प्रमुख। - सं०

मेख घुसा देना और जब तक वह बताने न लगे, मेख को ठोक्ते जाना, या उसकी खोपड़ी को फोड़ देना। हम उसकी जनैट्रिय को बिजली के तारों से जौड़ देते और मोटर को तब तक चलाये जाते कि जब तक वह या तो बातें न करने लगता या पागल न हो जाता। हमारे ही अनुमान से २०,००० वियतनामी फ्रीनिक्स कार्यक्रम में मारे गये थे। वियतनामियों के अनुसार यह संख्या दुगुनी है। कोलंबी अपनी सफाई देते हुए यह कहते हैं कि कुछ ज्यादातियां हुई थीं और यह कि इतने बड़े कार्यक्रम में इन बातों का होना रोका नहीं जा सकता था और निश्चय ही हम उनकी अनदेखी नहीं करते थे।

“प्रश्न: क्या यह जरूरी है कि कोलंबी को यह मालूम हो कि उनके आदमी हत्या कर रहे हैं?

“उत्तर: बेशक, उनका जानना अवश्यभावी था। उन्हें पता न हो, इसकी संभावना का कोई सवाल ही नहीं उठता। वह उस प्रभाग के प्रधान थे। वह सारे कार्यक्रम के लिए उत्तरदायी थे—वियतनाम के इलाकाई केंद्रों के प्रमुखों को उन्हें रिपोर्ट करना होता था, उन्हें सब बतलाना होता था कि क्या हो रहा है।

“प्रश्न: क्या यह बात सी० आई० ए० के वर्तमान प्रमुख को हथपारा बना देती है?

“उत्तर: नहीं, कानूनी अर्थ में नहीं। बेशक नहीं।... आप कभी वस्तुतः सिद्ध नहीं कर सकते कि एक समूची संस्था अथवा उसके प्रधान ने व्यक्ति के नाते सक्रिय

हथ में कोई अपराध किया है। वे हमेशा इतने चालाक होते हैं कि औरों के जरिए काम करें। आम तौर पर काम जितना ही ज्यादा गंदा होता है, उसके उतने ही ज्यादा हाथों में बटने की संभावना होती है। अर्द्ध-सैनिक संक्रियाओं में आपको आम तौर पर एजेंसीवाले सबमशीनगने लिये हवाई जहाजों से कूदकर निकलते नहीं दिखायी देगे। आम तौर पर यह काम करनेवाला हमेशा कोई भूतपूर्व गैरीन सैनिक, कोई मुहिमबाज या कोई भाड़े का सिपाही ही होगा, जो किसी दूसरी संक्रिया के बाद बचा रह गया था... इसलिए हथ्या जैसी चीजों, इन बेहद गंदी चीजों के साथ बात यह है कि यह साबित करना लगभग असंभव है कि उमे एजेंसी ने किया है।

“प्रश्न: क्या विलियम कोल्बी फ्रीनिक्स कार्यक्रम के अंतर्गत हुई हत्याओं के लिए अपने नैतिक उत्तरदायित्व का अनुभव करेंगे?”

“उत्तर: नहीं, बेशक नहीं। फ्रीनिक्स कार्यक्रम के प्रति उनका दृष्टिकोण तत्काल वही होगा, जो मिसाल के लिए, उस जनरल का होगा, जो हर दिन बी-५२ अवतरणों को भेजकर गांव के बाद गांव को नेस्तनाबूद कर डालता है और सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार देता है। इस तरह का आदमी सब नियम-धरम वगैरह बरतेगा। वह अपने बच्चों को भूट न बोलने या धोखा न देने की शिक्षा देगा। अगर आप पूछें, ‘आप वैसा काम कैसे कर पाते हैं?’ तो वह कहेगा, ‘मैं आदेशों का पालन कर रहा हूँ।’

गुप्त मानसिकतावाले लोग अपने साथ ऐसा खेल कर सकते हैं।”\*

नहीं, इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हुआ जा सकता। कोल्बी जैसे लोग भली भांति जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, वे अपनी करणियों में मजा तक लेते हैं, लेकिन रंगे हाथों पकड़े जाने पर वे अपने को बचाने के लिए मिरगिटों की तरह रंग बदल देते हैं और यह न समझने का दिखावा करते हैं कि सारी बात किस चीज के बारे में है।

परिष्कृत योजना और सामूहिक हत्या तो वियतनाम में सी० आई० ए० की आपराधिक कारवाइयों का एक ही पहलू है। आज इस बात का पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है कि असल में सेंट्रल इंटेलीजेस एजेंसी ही संयुक्त राज्य अमरीका की वियतनामी मुहिमबाजी की जड़ में थी—उसने जानबूझकर ऐसी स्थिति पैदा की थी कि जिसमें कांग्रेस को मजबूरन वियतनाम में हस्तक्षेप करने का निर्णय लेना पड़ा।

उस समय तक सी० आई० ए० हिंदचीन में प्रच्छन्न संक्रियाओं का पर्याप्त अनुभव अर्जित कर चुकी थी। पचास के दशक में सबसे विश्रुत सी० आई० ए० कर्मी कर्नल एडवर्ड लैसडेल थे, वही व्यक्ति, जिनके बारे में प्रैहम प्रीन ने अपना उपन्यास ‘शांत अमरीकी’ (‘दि क्वाइट अमेरिकन’) लिखा है।

लैसडेल के जामूसी कैरियर का आरंभ फिलीपीन

द्वीप-समूह में हुआ, जहाँ उन्हें पचास के दशक के आरंभ में फ़िलीपीन के रक्षा मंत्री रमोन मैगासैस के सलाहकार की तरह भेजा गया था। अमरीकी सरकार की गुप्त निधियों के लाखों डॉलरों के बूते पर लैसडेल अपने काम में लग गये और जल्दी ही उन्होंने छापामारों से लड़ने के लिए एक छोटी सी, सुप्रशिक्षित सेना खड़ी कर दी। इसके अलावा उन्होंने फ़िलीपीनी नागरिक कार्य कार्यालय की भी स्थापना की, जिसका वह विद्रोहियों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध के केंद्र के रूप में उपयोग करने का इरादा रखते थे। यह मनोवैज्ञानिक युद्ध कैसा था, इसके बारे में लैसडेल ने १९७२ में स्टैनले कानोव नामक पत्रकार को स्वेच्छया बताया था:

“एक मनोवैज्ञानिक संक्रिया में फ़िलीपीनी देहातों में अधविश्वासजन्य भय—असुआंग नाम के पौराणिक पिशाच के भय—का उपयोग किया गया। उस इलाके में एक मनोयुद्ध टुकड़ी जाती और इस आशय की अफवाहें फैला देती कि जिस जगह कम्युनिस्टों का अड्डा है, वहाँ एक असुआंग रहता है। अफवाहों को हुक\* समर्थकों में खूब फैल जाने देने के बाद मनोयुद्ध टुकड़ी बागियों के लिए घात लगाकर बैठ जाती। जब हुक गश्ती दल उधर से गुजरता, तो घात में बैठे लोग उनमें से आखिरी आदमी को दबोच लेते, उसकी गरदन में दो छेद कर देते, जैसे कि उन्हें

रक्त पीने के लिए पिशाच ने किया हो, उसके बदन को उलटा लटकाकर सारा खून टपका देते और लाश को फिर उसी पगडंडी पर लाकर रख देते। सभी फ़िलीपीनियों जैसे ही अधविश्वासी विद्रोही उस इलाके को छोड़कर भाग जाते।”\*

१९५३ तक लैसडेल फ़िलीपीन में अपने मिशन को पूरा कर चुके थे। रमोन मैगासैस देश के राष्ट्रपति बन गये थे और कर्नल ससम्मान वाशिंगटन लौट आये। मगर जल्दी ही उन्हें एक और गंभीर कार्यभार सौंपा गया। १९५४ में उन्होंने साइगोन के लिए प्रस्थान किया, जहाँ उन्हें दक्षिण वीएतनाम के तानाशाह न्गो दीन्ह दीएम को वहाँ का राष्ट्रपति “चुनवाना” था। दीएम शासन के समर्थन के लिए पहली सैनिक इकाइयों का गठन शुरू करके लैसडेल अपने द्वारा प्रशिक्षित फ़िलीपीनियों को नयी सैनिक इकाइयों को प्रशिक्षण देने के लिए साइगोन ले आये। कर्नल ने डटकर मेहनत की और १९५५ में न्गो दीन्ह दीएम राष्ट्रपति बन गये।

साठ के दशक के आरंभ में वाशिंगटन महमूस करने लगा कि दीएम पर अपना दांव लगाकर उठाने गश्ती की है। पृष्ठ तानाशाह पूरी तरह से समझता नहीं था कि उसके समुद्रपारीय संरक्षक चाहते क्या हैं। “पैटार्गॉन दस्तावेजों में इसके पर्याप्त सूचक हैं,” स्वातेरीआ मार्देनेस कहते हैं, “कि दीएम वियतनाम

\* फ़िलीपीनी छापामार। — सं०

\* Marchetti and J. Marks, *op. cit.*, pp. 27-28.

में अमरीकी नीति निर्धारकों के रास्ते में आड़े आ रहा था।" \* फलस्वरूप दीएम की सी० आई० ए० से घनिष्ठतः संबद्ध जनरलों के एक गुट ने हत्या कर दी। इसके बारे में एक अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी, कर्नल फ्लैचर प्राउटी ने जो बताया है, वह यह है:

"दीएम बंधुओं की हत्या अक्टूबर, १९६३ में की गयी थी। १९७१ की गरमियों में चार्ल्स कॉल्सन और ई० हॉवर्ड हंट की दिलचस्पी और बातों के अलावा इस बात में भी थी कि विदेश विभाग के आधिकारिक संदेशों को गढ़ने और बदलने के लिए ऐसा क्या किया जा सकता है, जिससे यह लगे कि राष्ट्रपति जॉन एफ० कनेडी इन हत्याओं के साथ घनिष्ठतः और प्रत्यक्षतः संबद्ध रहे थे। इस 'कुत्सित करतब' परि-योजना—अर्थात् इन दस्तावेजों को इस तरह से गढ़ना कि जिससे वे कनेडी को उलझाएँ—का समय दिलचस्प है। अभी कुछ ही महीने पहले 'न्यूयॉर्क टाइम्स' ने 'पैटागॉन दस्तावेजों' प्रकाशित की थी। इन दस्तावेजों के 'टाइम्स' में प्रकाशित रूप में, जिसे पैटागॉन से ही आया बताया जाता था, १९६३ की गरमियों के उत्तरार्ध में, दीएम बंधुओं के मारे जाने के ठीक पहले, जो कुछ हुआ था, उसका एक विस्तृत और उलझा हुआ विवरण था। इन दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ने-वाले किसी भी व्यक्ति को आसानी से पता चल जाता कि सी० आई० ए० इस योजना से घनिष्ठतः संबद्ध

थी और उसके कर्मी मौके पर मौजूद थे।

"लेकिन 'पैटागॉन दस्तावेजों' में कहाँ ऐसा कोई संदेश या निदेश नहीं है, जिसमें साफ-साफ कहा गया हो कि 'दीएम बंधुओं को मारा जायेगा'। इस तरह की सुस्पष्ट दस्तावेज के न होने के बावजूद बहुत से अपेक्षा और अनुसंधानकर्ता यही निष्कर्ष निकालेंगे कि सी० आई० ए० इस मामले में उलझी हुई थी और वे यह निष्कर्ष नहीं निकालेंगे कि हत्याओं का आदेश कनेडी ने दिया था। ध्यान रखिये कि १९६३ में ई० हॉवर्ड हंट सी० आई० ए० के सक्रिय एजेंट थे और ठीक उसी समय सी० आई० ए० के भूतपूर्व निदेशक, एलेन डब्ल्यू० डलेस की, जिन्हें कनेडी ने बरखास्त कर दिया था, सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक 'गुप्त-चर्या कला' की रचना में भी हिस्सा ले रहे थे।...

"दीएम १९४४ में दक्षिण वियतनाम में सत्तारूढ़ हुए थे... दीएम के नेतृत्व और सत्ता को असल में आरंभ से ही प्रच्छन्न अमरीकी सहायता से कायम किया गया था।... १९६३ की गरमियों तक... दीएम शासन को दक्षिण वियतनाम पर पूर्ण नियंत्रण जमाये दस साल हो चुके थे और हालत बंद से बदतर हो होती जा रही थी। वह ग्रीष्म दीएम बंधुओं के लिए सिर्फ वियतनाम में ही नहीं, वाशिंगटन में भी अति उग्र असंतोष और विरोध का ग्रीष्म था।...

"अगस्त, १९६३ तक अमरीकी सरकार के उच्चतम कार्यालयों में जापन घुमने लगे थे।... ये कागज इतने गोपनीय थे कि उन पर किसी भी तरह

\* ग्यालेरीआ माइनिंग, यूबोस रचना, पृ० ६३।

की कोई टिप्पणी या वर्गीकरण संख्या नहीं थी और उन्हें एक 'सूचनीय' व्यक्ति से दूसरे 'सूचनीय' व्यक्ति को हाथ से पहुंचाया जाता था... इन आपनों में ऐसी-ऐसी बातें खुलकर कही गयी थी कि 'डीएम से हम भर पाये' और 'डीएम परिवार से पीछा छुड़ाने का कोई रास्ता निकाला जाना चाहिए'।

"इन आपनों के परिणामस्वरूप वाशिंगटन में सी० आई० ए० कार्यालय से इस दृष्टि से साइगोन से जल्दरी पूछ-ताछों का सिलसिला चला कि डीएम के विरोध का जायजा लिया जाये, यह जाना जाये कि उसकी शक्ति कितनी है और संभाव्य नेताओं में से कोई बेहतर रहेगा या नहीं।

"सी० आई० ए० में, जिसने डीएम को सत्कार दिया था और एक दशक से ज्यादा तक डीएम के लिए 'देश के पिता' की छवि बनाने की कोशिश की थी, इसके बारे में जबरदस्त मतभेद था कि उनके साथ क्या किया जाये। एक पक्ष उन्हें बनाये रखना और उनकी मांगों को समर्थन देना चाहता था। दूसरा पक्ष इसके लिए तैयार था कि उनसे पीछा छुड़ाया जाये और किसी और के साथ फिर शुरूआत की जाये। निकटवर्तियों को यह लगता था कि जनरल दुओंग वान मीन्ह डीएम परिवार के बाद सबसे अच्छा विकल्प रहेगा। और लोग अपेक्षाकृत शांत और संभवतः अधिक विश्वसनीय जनरल न्गूएन स्यान्ह के पक्ष में थे। वाशिंगटन में इन दो जनरलों को तरजीह दी जाती थी। साइगोन में भी कई लोग उनके पक्ष में थे। इस

तरह से हत्या की साजिश का बुनियादी काम शुरू हो जाता है।

"अफवाहों फैलती हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका डीएम परिवार का समर्थन करना बंद कर 'सकता' है। फलस्वरूप हर गुट तिकड़मों में लग जाता है।... डीएमों की सुफिया पुलिस, उनके प्रवर राजा दल और उनके भीतरी हलकों में सभी महसूस करने लगते हैं कि उनके दिन पूरे हो गये हैं और उनके लिए आगे की योजनाएं बनाना और जल्दी से जल्दी ही कुछ करना बेहतर रहेगा। उन लोगों ने जुल्म किये थे। उन्होंने हत्याएं की थीं। उन्होंने करोड़ों डॉलर चुराये थे। उन्होंने वियतनाम में कितनों ही को बरबाद किया था। संयुक्त राज्य अमरीका, सी० आई० ए० और डीएमों के समर्थन के बिना उनका अंत निश्चित था।

"धीरे-धीरे एक योजना रूप लेने लगी। मदाम न्हू... ने अचानक महसूस किया कि यूरोप और संयुक्त राज्य अमरीका की लंबी यात्रा के लिए यह वक्त अच्छा है। यह पहला चरण था। अगला कदम मदाम न्हू के पीछे-पीछे डीएम बंधुओं को देश के बाहर निकालना होगा। उनके लिए यूरोप में एक महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने की योजनाएं तैयार की गयीं। उन्हें औपचारिक निमंत्रण भेजे गये और उन्हें यूरोप में जाने के लिए एक विशेष वायुमान की व्यवस्था की गयी।

"उनके प्रस्थान की प्रत्याशित तिथि के निकट आने के साथ सी० आई० ए० ने अपने एजेंटों को



संभाव्य नये नेताओं से अधिकाधिक घनिष्ठ संपर्क स्थापित करने का आदेश दिया। ... इस स्थिति ने दीएम के प्रवर रक्षा दल के विघटन को और भी त्वरित किया। फिर, हवाई अड्डे तक चले जाने के बाद, दीएम बंधु किन्हीं कारणों से, जिन्हें कभी स्पष्ट नहीं किया गया है, अचानक लौटकर अपनी कार में बैठ गये और महल की तरफ वापस रवाना हो गये। उन्होंने खेल के नियमों को नहीं समझा होगा। ...

“वे ऐसे महल में लौटकर आये, जो भूतहा शहर की तरह खाली था। कूदरती तीर पर उनके रक्षा दल के सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग गये थे ... कुछ मिनटों के लिए दीएम बंधु अपने कक्षों में जाकर कुरसियों पर बैठे। मगर आखिर उन्होंने महसूस कर लिया कि क्या होनेवाला है और एक भूमिगत सुरंग की तरफ चले। कुछ ही समय के भीतर वे दोनों मर चुके थे।” \*

वाशिंगटन ने अपने एक कठपुतले को इस तरह से राजनीतिक रणमंच से अलग कर दिया। दीएम बंधुओं को वुहार फेंकने के बाद सी० आई० ए० ने ह्लाइट हाउस के सभी आदेशों का बिना चूँचपड़ किये पालन करने को तैयार नये, अधिक उपयुक्त उम्मीदवारों की तलाश करना शुरू किया। सैन्ली के सर्वज्ञाता विशेषज्ञों को अभी यह नहीं मालूम था कि इसमें निर्णायक महत्व विप्लवनामी जनता का होगा, कि इस राष्ट्र को कुचलने

और उस पर अपनी मरजी थोपने के हर प्रयास की विफलता निश्चित है।

फिर भी यह सोचना शलत होगा कि बियतनाम में संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा चलाये जानेवाले “गर्हित युद्ध” की टॉप-टॉप फ़िस ने दक्षिण-पूर्वी एशिया में सी० आई० ए० की आपराधिक कार्रवाइयों का अंत कर दिया। हिंदचीन में संयुक्त राज्य अमरीका की पराजय ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के कितने ही देशों में एक जबरदस्त अमरीकाविरोधी लहर पैदा की। इन देशों, और विशेषकर थाइलैंड, में जनवादी हलकों ने प्रगतिशील रूपांतरणों की और इस इलाके में अमरीकी आर्थिक, सैनिक तथा राजनीतिक उपस्थिति पर प्रतिबंधों की मांग की।

१९७३ के शिशिर में सत्ता में आने के साथ थाइलैंड की बूर्जुआ-उदार सरकार ने कई आम जनवादी सुधार किये, जो देश में सामाजिक-राजनीतिक बाता-वरण को सुधारने में सहायक हुए और उसने थाइलैंड का इस क्षेत्र में सैनिक कार्रवाइयां शुरू करने के स्थल के रूप में उपयोग करने के संयुक्त राज्य अमरीका के अवसरों को सीमित किया।

१९७४ में संयुक्त राज्य अमरीका और थाइलैंड के बीच देश में अमरीकी सैनिकों की संख्या में १०,००० की कमी करने का समझौता हुआ। इसीके साथ-साथ थाइ सरकार ने देश के हवाई अड्डों से अमरीकी हवाई जहाजों की कार्रवाइयों पर प्रतिबंध लगाये। इसके बाद थाइलैंड के प्रगतिशील जनमत ने देश से सभी

\* *Uncovering the CIA*, pp. 201-205.

अमरीकी सेनाओं के सदा-सदा के लिए हटाये जाने की मांग को लेकर आंदोलन छेड़ दिया। मार्च, १९७५ में नयी थार्ड संसद में समाजवादी पार्टियों के संयुक्त ब्लॉक ने कई प्रस्ताव पेश किये, जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी की वैधता प्रदान करने की और मुख्य उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने की अपील भी शामिल थी।

धीरे-धीरे थाइलैंड में अधिकाधिक लोग अमरीकी राजनीतिक बिस्तारवाद के लिए उत्तरदायी अमरीकी अभिकरणों के देश से निकाले जाने के आंदोलन में अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे थे। अनेक जनवादी संगठनों और विशेषकर छात्र संगठनों ने थाइलैंड में अमरीकी शांति कोर की मौजूदगी का यह आरोप लगाते हुए विरोध किया कि उसके सदस्यों का सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संबंध है... सामान्य जनवादी और अमरीकाविरोधी आंदोलन के विराट पैमाने ने थाइलैंड के दक्षिणपंथी हलकों को बेहद आशंकित कर दिया। अक्टूबर, १९७६ में सेना में प्रतिक्रियावादियों और बूर्जुआजी के अमरीकासमर्थक अंशकों की सहायता से दक्षिणपंथियों ने सरकार का तख्ता उलट दिया और देश में सैनिक अधिनायकत्व स्थापित कर दिया।

१९७६ का साल, जब थाइलैंड में प्रतिक्रियावादियों ने अपना हमला शुरू किया, देश के इतिहास में एक आसक मोड़ का चिह्नक है। चरम दक्षिणपंथी अरुण गौर नामक संगठन प्रतिक्रिया के एक दक्षतम उपकरण के रूप में सामने आया। इसके सदस्यों ने प्रगतिशील

छात्रों के विरुद्ध भड़कावे की कार्यवाहियों की और थाइ कृषक संघ के कार्यकर्ताओं की हत्याएं की।

दक्षिणपंथियों द्वारा हत्याओं की संख्या अप्रैल, १९७६ में संसदीय चुनावों के समय विशेषकर बहुत अधिक हो गयी। दक्षिणपंथी थाइ राष्ट्रीय पार्टी के नेता, रत्ना मंत्री प्रमाण आदिरक्षण ने खुले आम "वामपंथियों को मारने के अधिकार" का नारा दिया।

दक्षिणपंथियों के खूनी आतंक ने चुनावों के परिणाम पहले ही तय कर दिये। उदार पार्टियों की गंभीर पराजय हुई और दक्षिणपंथी पार्टियां विजयी हुईं। इन घटनाओं का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह भी निकला कि कई उदार बुद्धिजीवियों और प्रगतिशीलों को, जिन्होंने आतंक की इस लहर को सैनिक सत्ता-परिवर्तन का पूर्वसूचक समझा, भूमिगत हो जाना पड़ा।

थाइलैंड में तैनात अमरीकी सैनिकों की संख्या में कमी ने अमरीकी सेना और नवबल (नवपान) पार्टी और अरुण गौर के संशय के आवरण में क्रियाशील थाइ सेना के दक्षिणपंथियों के बीच व्यक्तिगत और कार्यगत संबंधों को कमजोर करने के लिए कुछ भी नहीं किया। संयुक्त राज्य अमरीका का दक्षिणपंथी अधिकारियों के साथ घनिष्ठ सहयोग बना रहा।

दिसंबर, १९६५ में थाइलैंड में अमरीकी राजदूत प्रैहम एंडरसन मार्टिन के आग्रह पर कम्युनिस्टविरोध

संक्रिया कमान ( जिसे बाद में आंतरिक सुरक्षा कार्रवाई कमान का नाम दिया गया ) की स्थापना की गयी थी।\* इस कमान का मुख्य विभाग संक्रिया निदेशालय था, जो सैयद कैदपोल के अधीन था। यह निदेशालय आंतरिक उपद्रव नियंत्रण विशेषज्ञों के एक छोटे से दल से बना था। ये लोग कम्युनिस्टविरोधी चरमपंथी गुटों की स्थापना में सक्रिय थे। वाइ सरकार ने सैयद की प्रमुख हैसियत उसके अमरीकियों और विशेषकर सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संबंधों की बदौलत ही थी। उसका संपर्क आदमी पिअर डी सिल्वा था, जो मार्टिन का विप्लवविरोधी मामलों का विशेष सहायक और उच्चस्तरीय सी० आई० ए० अधिकारी था। विगत में वह विभिन्न देशों में सी० आई० ए० केंद्रों का प्रमुख और वियतनाम में अमरीकी राजदूत का विप्लवविरोधी मामलों का सहायक रह चुका था।

१९६६-१९६८ में डी सिल्वा ने अनेक ग्राम-रक्षा संगठनों को ग्राम-सुरक्षा बल नामक एक संगठन में एकीकृत कर दिया था, जो बाद में सैयद की कमान के जरिए सी० आई० ए० निधियों से पैसा पाने लगा। इसके अलावा सैयद और डी सिल्वा ने किसानों के मिर्जाज की याह लेने के लिए राजनीतिक कार्य टोलियां भी बनायीं। वियतनाम की ही भांति, जहां इस तरह की टोलियां सी० आई० ए० के कार्यक्षेत्र

के भीतर काम करती थी, ये टोलियां भी राष्ट्रीय तथा प्रांतीय स्तरों पर संयुक्त अमरीकी-वाइ समितियों के निदेशन में काम करती थी। प्रशिक्षण शिविरों, भरती केंद्रों और शस्त्र तथा सामग्री भंडारों की स्थलियों के चयन और एजेंटों के पारिश्रमिक के बारे में इन समितियों में समझौता था। इस कार्यक्रम का छर्च भी सी० आई० निधियों से ही आता था।

संयुक्त राज्य अमरीका यह दिखावा करता था कि जैसे अरुण सौरों और उनके नवबल सहयोगियों द्वारा की जानेवाली आतंक की कार्रवाइयों और हत्याओं के बारे में उसे कुछ मालूम नहीं है और उनके साथ उसका सहयोग बदनूर बना रहा। आतंकवादी संगठनों की कार्रवाइयों के बारे में संयुक्त राज्य अमरीका के रक्षियों के बारे में पूछे जाने पर अमरीकी दूतावास के एक उच्च अधिकारी ने 'काउंटरस्पॉई' पत्रिका को बतलाया कि दूतावास ने यह जतलाने का कोई प्रयास नहीं किया है कि वह दक्षिणपक्षीय आतंक के विरुद्ध है। "मैं तो यह हमारा काम हरगिज नहीं समझता कि वाइयों के पास जाऊं और कहूँ कि यह मत करो," उसने कहा।\*

जब उसके लिए हस्तक्षेप करना लाभदायी या सुविधाजनक नहीं होता, तो संयुक्त राज्य अमरीका अनिवार्यतः "पूर्ण तटस्थता" की स्थिति से चिपक जाता है। अमरीकी दूतावास के उसी अधिकारी ने दक्षिणपक्षीय

\* देखें George K. Tanham, *Trial in Thailand*, Crane, Russak & Co., Inc., New York, 1974.

\* *Counterpsy*, Vol. 3, No 2, 1976, p. 51.

आतंक-अभियान की गंभीरता को घटाने की कोशिश करते हुए कहा, "हिंसा तो दोनों ही पक्षों की तरफ से हो रही थी। मुझे तो यह कभी भी स्पष्ट नहीं हो पाया कि कौन क्या कर रहा है।" \*

यह उल्लेखनीय है कि अमरीकी दूतावास के कुछ अधिकारी नवबल पार्टी और अरुण गौर से अपनी हमदर्दी को बिल्कुल भी नहीं छिपाते थे और उनका घुला समर्थन तक करते थे। दिसंबर, १९७५ में एक ऐसी ही घटना हुई। एक युवा सैनिक कप्तान से, जो अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि सदन की लुप्त व्यक्ति विषयक प्रवर समिति की बैठक का यात्रा के समय सुरक्षा अधिकारी की हैसियत से काम कर रहा था, यों ही अरुण गौरों के बारे में पूछा गया, तो उसने अप्रच्छन्न संतोष के साथ जवाब दिया कि अरुण गौर नेताओं ने उसे बतलाया है कि वे २० मार्च (अमरीकी सेनाओं की वापसी की अंतिम तिथि) के पहले-पहले १०० थाइ कम्युनिस्टों की हत्या कर देने का इरादा रखते हैं।

सत्ता-परिवर्तन के कुछ ही सप्ताह पहले सेनी प्रमोज सरकार के एक उच्च अधिकारी ने एक विदेशी अतिथि को बतलाया कि नवबल और अरुण गौर, दोनों ही को सी० आई० ए० से पैसा मिल रहा है। यद्यपि उसने इसका कोई झूझा नहीं दिया कि यह पैसा किस तरह से दिया जाता है, पर अवस्त,

\* Ibid.

१९७५ में यह बताया गया कि आंतरिक सुरक्षा कार्रवाई कमान के पास कोई ५० करोड़ बत ( लगभग २.५ करोड़ डॉलर ) का गुप्त वार्षिक बजट है। \* सी० आई० ए० इस कमान को अरसे से पैसा देती आयी थी और यह बिल्कुल संभव है कि सी० आई० ए० के पैसे का दक्षिणपंथी अर्द्ध-सैनिक गुटों की स्थापना में उपयोग किया गया था।

जब आंतरिक सुरक्षा मंत्रिया कमान में एक विभागाध्यक्ष कर्नल सुदसाई हासदिन से सी० आई० ए० समर्थन के बारे में पूछा गया, तो उसने जवाब दिया, "मुझे कभी-कभी अचरज होता है कि वे हमारा समर्थन क्यों नहीं करते, क्योंकि हम कुछ ऐसी बातें करते हैं, जिनसे उन्हें खुश होना चाहिए।"

सी० आई० ए० बेशक खुश थी, तभी तो वह कर्नल को मुक्तहस्त पैसा देती थी। जिस अकेली बात पर अचरज हो सकता है, वह है इस भाड़े के टटू की डीठता, जो चासी रकम जेब में डाल लेने के बाद भी भीषता रहता है।

... दक्षिण-पूर्वी एशिया के जनगण के विरुद्ध सी० आई० ए० का प्रच्छन्न युद्ध जारी है। कौन जाने, कल जैंगली के कौनसे नये अपराधों का परदाफाश होगा?

\* Ibid, p. 52.

## वाशिंगटन-रचित पट-कथा के अनुसार

लैम्बो के पेशेवर क्रांतिल लातीनी अमरीका को दशकों से अपना निशाना बनाये हुए है। लातीनी अमरीकी राष्ट्रों के विरुद्ध अमरीकी गुप्तचर सेवाओं के अपराधों का कारण यह है कि अमरीकी एकाधिकारी पूंजी की इस क्षेत्र में बहुत समय से विशेष दिलचस्पी रही है, जो उसके प्राकृतिक साधनों और जनशक्ति के निर्मम शोषण से अपार मुनाफ़े बटोरती आयी है। लातीनी अमरीका को अपने घर के पिछवाड़े जैसा ही समझते हुए अमरीकी इजारे उसके सकल राष्ट्रीय उत्पाद के २० प्रतिशत और उसकी निर्यात से जनित आय के लगभग ३० प्रतिशत को ढकार जाते हैं। लातीनी अमरीका में प्रत्यक्ष अमरीकी पूंजी निवेश साल-दर-साल बढ़ता जा रहा है। १९७३ में वह १६.४ अरब डॉलर कुता जाता था, मगर १९७५ में वह २२.२ अरब डॉलर की कल्पनातीत राशि तक पहुँच गया और फिर भी लगातार बढ़ता ही जा रहा है। लातीनी अमरीका को अपने शिकजे में जकड़े रखने की कोशिश में संयुक्त राज्य अमरीका वहाँ ऐसे हालात पैदा करने और बनाये रखने के लिए ऐसे हुर हथकंडे का प्रयोग करता है, जो एकाधिकारी हितों का अधिकतम साधन करे और संयुक्त राज्य अमरीका के और अधिक आर्थिक प्रसार के लिए असीम संभावनाएं उत्पन्न करे। इतिहास दिखलाता है कि वाशिंगटन की निगाह में लातीनी अमरीका

के लिए इष्टतम व्यवस्था कठपुतली तानाशाही है, जो संयुक्त राज्य अमरीका की विश्व रणनीति का आज्ञाकारितापूर्वक अनुसरण करती हो और अपने उत्तरी पड़ोसी की सहायता से निर्मित अपने शक्तिशाली दमन-तंत्र—सेना और गुप्त पुलिस—पर निर्भर करती हो। वाशिंगटन के रणनीतिज्ञ अपने को अनेक लातीनी अमरीकी देशों में पहले ही विद्यमान तानाशाहियों के सर्वतोमुखी समर्थन तक ही सीमित नहीं रखते, बल्कि वे इस क्षेत्र के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर भी सतत निगाह रखते हैं और उसके विरुद्ध आर्थिक दबाव, ब्लैकमेल और प्रतिक्रियावादियों को हथियारों और सलाहकारों की सहायता से लेकर भाड़े के सैनिकों और सी० आर्इ० ए० एजेंटों द्वारा प्रचलन कार्रवाइयों और प्रत्यक्ष सशस्त्र हस्तक्षेप तक सभी उपलब्ध हथियारों का उपयोग भी करते हैं।

चिली में सैनिक-फ़ाशिस्त सत्ता-परिवर्तन की तैयारी और कार्यान्वित में सी० आर्इ० ए० की सक्रिय सह-भागिता निस्संदेह लातीनी अमरीका में उसकी एक सबसे महत्वपूर्ण ध्वंसात्मक सक्रियता थी। सत्ता-परिवर्तन के बाद विस्फाट चिलीआर्इ सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता ओलांदो लेतेनीअर ने संयुक्त राज्य अमरीका के वास्तविक लक्ष्यों का परदाफ़ाश करते हुए लिखा था:

"चिली की एक यात्रा के बाद, जिसके दौरान उन्होंने सैनिक शासन द्वारा मानव अधिकारों के उल्लंघनों के बारे में बातचीत की थी, विलियम साइमन (संयुक्त

राज्य अमरीका के भूतपूर्व चित्त मंत्री - सं० ) ने पिनोचेत को चिलीआई जनता के लिए 'आर्थिक स्वतंत्रता' लाने के वास्ते बधाई दी। यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की विशेषकर सुविधाजनक सकल्यता है, जिसमें 'आर्थिक स्वतंत्रता' और राजनीतिक आतंक एक-दूसरे को स्पर्श किये बिना सहअस्तित्वमान हैं। ... तर्कानुसार तो यह आशा की जानी चाहिए कि ... जो लोग असीमित 'आर्थिक स्वतंत्रता' लादते हैं, उन्हें तब उत्तरदायी माना जायेगा कि जब इस नीति को लादने के साथ-साथ अनिवार्यतः व्यापक दमन, भूख, बेरोजगारी और स्थायी निर्मम पुलिस राज का भी आगमन होता है।\*\*

४ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निर्वाचन में जन-एकता ब्लॉक के उम्मीदवार सल्वादोर अल्येंदे विजयी हुए थे। वामपंथी पार्टियों के सहमेल की विजय ने सिद्ध कर दिया था कि राजनीतिक सत्ता को लोकतांत्रिक साधनों से सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

"१९७० में चिलीआई जनता की विजय," चिली-आई काम्युनिस्टों ने इंगित किया, "सामाजिक संघर्ष के सभी मोरचों पर प्रखर जन-संश्रमों के दौर की परिणति थी। और यह विजय इस कारण संभव हो पायी कि जनता चिलीआई क्रांति के स्वरूप का सही निर्धारण करनेवाली नीति के आधार पर मोतबद

हो गयी थी। मुख्य शत्रुओं को इंगित कर दिया गया था - साम्राज्यवाद, इजारेदारी और भूस्वामीवर्गीय अल्पतंत्र। यही हमले की मुख्य विधा थी। मजदूर वर्ग ने एक सामाजिक-राजनीतिक मोरचा - जन-एकता सहमेल - बना लिया। ... इस अनुकूल स्थिति से... जन-आंदोलन ने सत्ता के लिए भूतपूर्व शासक वर्गों से विकट मुठभेड़ के वातावरण में चिलीआई समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की प्रक्रिया का समारंभ किया।\*\*

कहने की आवश्यकता नहीं कि जन-एकता ब्लॉक की विजय और उसके बाद चिली में शुरू होनेवाले प्रगतिशील रूपांतरण उन अमरीकी राजनीतिक हलकों के लिए एक आघात थे, जो चिली में अपने अनुकूल व्यवस्था को बनाये रखने के लिए वर्षों से काम करते आये थे। ह्वाइट हाउस ने १९५८ से ही राष्ट्रपति-निर्वाचन के समय दक्षिणपंथ की सहायता के लिए सासी बड़ी रकमें बिनियुक्त करना शुरू कर दिया था। १९६२ से १९७३ तक ४०-समिति ने चिली में संयुक्त राज्य अमरीका के लिए उपयुक्त राजनीतिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए कम से कम कुल ११० लाख डॉलर की मंजूरी दी थी।\*\* अन्य स्रोतों के अनुसार यह रकम २८० लाख डॉलर थी।\*\*\* १९६४ में सांती-आगो व चिली में इसी उद्देश्य से सी० आई० ए० के एक प्रादेशिक केंद्र की स्थापना की गयी थी।

\* *World Marxist Review*, 1974, July, No 7, p. 27.

\*\* Gvalteria Mardonez, *The CIA Without a Mask*, p. 139.

\*\*\* *Ibid.*

\* *Counterspy*, Vol. 3, No 2, 1976, p. 33.



१५ सितंबर, १९७० को राष्ट्रपति निक्सन, उनके राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हेनरी किस्सिंजर, सी० आई० ए० निदेशक रिचर्ड हैल्म्स और एटोनी जनरल (महान्यायवादी) जॉन मिचेल की ह्वाइट हाउस में बैठक हुई। सी० आई० ए० प्रमुख ने बातचीत और राष्ट्रपति के निर्देशों का संक्षिप्त विवरण रखा।

“हो सकता है कि हमारे पास इस में एक ही मौका हो, मगर हमें चिली को बचाना है। इस मामले में कार्रवाई पर खर्च का कोई महत्व नहीं। जोखिमों की परवाह मत कीजिये। दूतावास को अलग रहना चाहिए। १०० लाख डॉलर नकद विनियुक्त कर दीजिये और ज़रूरत हो, तो ज्यादा। दिन-रात काम कीजिये। अच्छे से अच्छे एजेंटों को लगाइये। संकिया योजना को जल्दी से जल्दी तैयार कीजिये।... रणनीति तैयार करने के लिए आपके पास ४८ घंटे हैं।”\*

जन-एकता सरकार के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के गुप्त युद्ध को, नवंबर, १९७० से सितंबर, १९७३ तक चलनेवाले इस युद्ध को, दो चरणों में विभाजित किया जा सकता है। वाशिंगटन के रणनीतिक अध्यक्ष-अल्फ्रेदे सरकार का तल्ला उलटना-में कोई परिवर्तन नहीं आया; परिवर्तन सिर्फ अमरीकी गुप्तचर सेवाओं की कार्यनीति में ही आया। पहले चरण में,

\* ‘सी० आई० ए० वृहत्त’, मास्को, १९७६, पृ० ४१ (कभी में)।

जो मार्च, १९७३ में हुए चिली के संसदीय चुनावों तक चला, लैंग्नी के सूत्रधारों ने अपनी योजनाओं में सारा दांव आर्थिक अंतर्ध्वंस, चिली के अंतर्राष्ट्रीय एकाकीकरण और नाक़ेबंदी, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अव्यवस्था फैलाने, छुटपुट आतंकवादी कार्रवाइयों और तोड़फोड़ और परिष्कृत मनोवैज्ञानिक तथा प्रचार युद्ध पर लगाया। चुनावों के बाद, जब सरकार का “अपने-आप” पतन करवाने के इस तरह के प्रयास स्पष्टतया बेमानी हो गये थे, सी० आई० ए० ने अपने प्रयासों को आतंक, सशस्त्र मुठभेड़ बढ़ाने, परिवहन तथा विद्युत प्रदाय की तोड़फोड़, जन-एकता पक्ष के नेताओं के हत्या-पद्धतियों और प्रतिक्रतिकारी शक्तियों के सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित कर दिया।

भूतपूर्व चिलीआई राजनयज्ञ और सार्वजनिक कार्यकर्ता, वामपक्षीय ईसाई पार्टी के सदस्य आर्मांदो उरीबे अपनी ‘चिली में अमरीकी हस्तक्षेप की काली किताब’ में लिखते हैं कि अल्फ्रेदे सरकार को उलटने के वाशिंगटन के निर्णय के मूल में दो उद्देश्य थे—संयुक्त राज्य अमरीका की विश्व नीति के लक्ष्यों (उसके द्वारा चिली के समाजवाद में शांतिमय संक्रमण के सफल प्रयोग का अस्वीकरण और उन लातीनी अमरीकी और यूरोपीय देशों, विशेषकर फ्रांस और इटली, को सबक सिखाने की ज़रूरत, जो इस उदाहरण का किसी न किसी रूप में अनुकरण कर सकते थे) द्वारा निर्धारित राजनीतिक उद्देश्य, और उन अमरीकी कंपनियों के, जिनकी संपत्ति को राष्ट्रीयकृत कर दिया

गया था, मुआवजे की मात्रा और रूप से संबद्ध आर्थिक उद्देश्य।\*

बहरहाल, अमरीकी शासक हलके अपने को पसंद न आनेवाले शासनों को उलटने के लिए अनिवार्यतः जिस अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का आसरा लेते हैं, उसके सभी कोटों को ठेठ १९७० के शरद में ही कियाशील कर दिया गया था। अल्येदे सरकार के खिलाफ गुप्त युद्ध चलाने का कार्यभार अमरीकी गुप्तचर सेवाओं को सौंपा गया, जिन्हें इसके लिए खुला परवाना दे दिया गया और मुक्तहस्त धन दिया गया। २५ सितंबर, १९७० को अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या और सी० आई० ए० के बीच धनिष्ठ सहयोग के बारे में एक निर्णय लिया गया। इस सिलसिले में सैन्य गुप्तचर्या के उप-प्रमुख ने चिली में अमरीकी सैनिक अटैचे (सहचारी) को एक गुप्त निर्देश भेजा:

"सी० आई० ए० केंद्र-प्रमुख अथवा उनके सहकारी के साथ धनिष्ठ सहयोग करते हुए ऐसे सैनिक नेताओं से संपर्क स्थापित करने की कोशिश कीजिये, जो अल्येदे के विरुद्ध संक्रिया में सक्रिय भाग ले सकते हैं।... अपने सामान्य कार्यों से संबद्ध सभी मामलों में राजदूत के आदेशों का पालन कीजिये। अपनी गतिविधियों का सी० आई० ए० केंद्र-प्रमुख के साथ समन्वय कीजिये।" \*\*

\*Armando Uribe, *The Black Book of American Intervention in Chile*, Beacon Press, Boston, 1975.

\*\* 'सी० आई० ए० वृहत्', पृ० ५६।

राष्ट्रपति अल्येदे ने एक समय अपने देश को "खामोश वियतनाम" की संज्ञा दी थी, और इसका भी कारण था। जन-एकता सरकार के खिलाफ अपने जिहाद में वाशिंगटन ने सी० आई० ए० द्वारा सैन्य गुप्तचर्या के धनिष्ठ सहयोग में संचालित फ्रीक्स कार्यक्रम में अर्जित अनुभव का पूरा-पूरा उपयोग किया था।

चिलीआई प्रतिक्रियावादियों ने जन-एकता ब्लॉक के खिलाफ अपना पहला हमला अक्टूबर, १९७० में किया। उन्होंने चिलीआई सेना के प्रधान सेनापति, जनरल रेने स्नाइदर, की हत्या का संगठन किया, जो कानूनी तौर पर निर्वाचित राष्ट्रपति सल्वादोर अल्येदे का समर्थन करते थे। स्नाइदर के विरुद्ध षड्यंत्र सी० आई० ए० की प्रत्यक्ष सहभागिता से रचा गया था। १९ अक्टूबर को सांतीआगो दे चिली में सी० आई० ए० केंद्र से धनिष्ठतः संबद्ध सैनिक अफसरों के एक गुट ने जनरल स्नाइदर का अपहरण करने का प्रयास किया। प्रयास असफल रहा, अगले दिन उन्होंने फिर प्रयास किया और वह फिर असफल रहा। २२ अक्टूबर, १९७० की सुबह सी० आई० ए० कर्मियों ने षड्यंत्रकारियों को मशीनगनों और गोलियाँ दीं और इस बार उन्हें स्नाइदर की हत्या करने के लिए तैयार कर लिया। सविधान के समर्थक जनरल को उसी दिन कत्ल कर दिया गया।

सांतीआगो दे चिली में सी० आई० ए० केंद्र के लिए ये अत्यंत व्यस्तता के दिन थे। देश में राज-

नीतिक स्थिति के बारे में सूचना एकत्र करने के अलावा केंद्र के अधिकारी शासन के विरोधियों में से एजेंटों के एक व्यापक जाल को स्थापित करने, प्रतिक्रियाकारी नेताओं के साथ संपर्क स्थापित करने, प्रेस तथा राजनीतिक और सार्वजनिक संगठनों के नेताओं को घूस खिलाने और आतंकवादी कार्यों तथा अंतर्ध्वंस की योजनाएं तैयार करने में भी लगे हुए थे। प्रतिक्रियाकारी षड्यंत्र की रचना किये जाने के समय सी० आई० ए० केंद्र के प्रमुख रेमंड वारेन थे। उन्होंने ग्वाटेमाला में ध्वंसकार्य का प्रचुर अनुभव अर्जित किया था, जहां यह १९५४ में एक साधारण सी० आई० ए० कर्मियों की हेसियत से तैनात थे।

चिली में अमरीकी राजदूत मैथेनब्राल डेविस भी सी० आई० ए० कार्य के ग्वाटेमाला में तजुरबा हासिल किये हुए एक और व्यक्ति थे। ग्वाटेमाला में फ्रांसिस्त सत्ता-परिवर्तन के बाद उन्हें तरक्की देकर विदेश विभाग में अफ्रीका प्रभाग का प्रमुख बना दिया गया था।

चिली में सी० आई० ए० की जटिल और नाना-विध संक्रिया के लिए खासी ज़रूरी रकम की आवश्यकता हुई। लैस्ली के भूतपूर्व प्रमुख विलियम कोल्बी द्वारा कांग्रेस में दिये गये बयान से पता चलता है कि १९७० से १९७३ तक सी० आई० ए० ने चिली में आंतरिक स्थिति को संगीन बनाने के लिए अभीष्ट विभिन्न कार्यों पर ८० लाख डॉलर से अधिक खर्च किये थे। सीनेट समिति के सम्मुख कोल्बी का साक्ष्य बताता

है कि १९७० के चुनाव अभियान में ही दक्षिणपंथी राजनीतिक पार्टियों के समर्थन के लिए ५,००,००० डॉलर और संसद-सदस्यों को घूस देने के लिए ३,५०,००० डॉलर विनियुक्त कर दिये गये थे। १९७० के बाद चिली को अस्थिर करने के अभियान पर संयुक्त राज्य अमरीका को ५० लाख डॉलर खर्च करने पड़े - और यह १९७३ में नगरपालिका चुनावों के दौरान खर्च १५ लाख डॉलर के अलावा था। सी० आई० ए० ने ट्रक-चालकों की प्रतिक्रियाकारी "हड़ताल" के लिए, जो परिवहन के क्षेत्र में अंतर्ध्वंस का सबसे बड़ा कार्य था, ५०,००० डॉलर दिये। अगस्त, १९७३ में, जब फ्रांसिस्त सत्ता-परिवर्तन की तैयारियां अपने चरम पर थीं, १० लाख डॉलर और फ़ौरी उपाय के रूप में खर्च करने पड़े। १९७३ की गरमियों तक यह स्पष्ट हो गया कि अमरीका-समर्थित दक्षिणपंथी शक्तियां देश की वैध सरकार को बलात उलटने पर तुली हुई हैं। पात्रीआ-इ-नीयरताय नामक चरम दक्षिणपंथी संगठन इस प्रतिक्रियावादी षड्यंत्र की अमुआ शक्ति था, जो सी० आई० ए० के घनिष्ठ सहयोग में काम करता था। १९७३ के सिर्फ़ जुलाई-अगस्त महीनों में ही इस संगठन के हड़दंगीतों ने कोई ५०० विस्फोट और कई राजनीतिक हत्याएं कीं। आतंकवादियों के शिकारों में राष्ट्रपति अल्येदे का नीसैनिक सहकारी और राष्ट्रीय ट्रकस्वामी संध की सातीआगो द चिली शाखा का नेता, जो हड़ताल का विरोधी था, शामिल थे।

प्रतिक्रियावादी सी० आई० ए० से घनिष्ठ सहयोग करते हुए क्रम-ब-क्रम खुरेजी की तरफ बढ़ते जा रहे थे। हुकबालकों की हड़ताल ने चिलीआई अर्थ-व्यवस्था को भारी हानि पहुंचाई - देश भर में माल की दुलाई छप हो गयी, जिसने देश भर में बीआई के काम को खतरे में डाल दिया और मद्रास्फीति को बेतरह बढ़ा दिया। २६ जून को प्रतिक्रियावादी सैनिक अफसरों के एक दल ने सत्ता पलटने और बिस्तीआई सेना के प्रधान सेनापति, जनरल कार्लोस प्राल्व, की हत्या करने का प्रयास किया।

प्रतिक्रियावादियों की पहली साजिश नाकाम रही। पाक्तीजा-इ-लीबरताद के नेताओं ने भागकर विदेशी दूतावासों में या विदेशों में शरण ली। संगठन को सरकारी तौर पर गैर-ज्ञानुनी करार दिया गया। लेकिन प्रतिक्रियाकारियों ने हथियार नहीं डाले। अपने प्रयासों को सी० आई० ए० के साथ समन्वित करते हुए और वाशिंगटन की आर्थिक सहायता के भरोसे वे सत्ता पर्युत्क्षेपण की तैयारी में फिर लग गये। इस षड्यंत्र का नेतृत्व चिली के उच्चतम सैनिक अधिकारियों को करना था। सितंबर, १९७३ में अभूतपूर्व नृगंसता से परिपूर्ण फ्रांसिस्त-सैनिक विद्रोह फूट पड़ा। सत्ता को हथिया-कर सैनिक तानाशाही ने वामपक्षीय शक्तियों के विरुद्ध निर्मम प्रतिशोध का अभियान छेड़ दिया।

लातीनी अमरीका में पिछले कुछ दशकों के इतिहास का अध्ययन सी० आई० ए० द्वारा इस या उस देश में वांछित शासनों को अधिष्ठापित करने में

प्रयुक्त एक निश्चित प्रतिरूप को उद्घाटित करता है। लातीनी अमरीका में जब भी कोई ऐसी सरकार सामने आयी, जिसका कार्यक्रम इस क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमरीका के "बुनियादी हितों" के प्रतिकूल जाता था, अर्थात् उन बड़े एकाधिकारों के हितों को प्रभावित करता था, जिनका लातीनी अमरीका पर एकच्छत्र राज्य था, तो तैंगली हर बार अपनी प्रच्छन्न क्रियाओं की संभावली को चालू कर देता था। और हर बार बिलकुल उन्हीं उपायों को अपनाया जाता था - धमकियां, घूस, ब्लैकमेल, लांछन-अभियान, आतंक की कार्रबाइयां और अंतर्ध्वंस। हर बार इस सबका अंत एक सत्ता-परिवर्तन में होता था, जो वाशिंगटन के कठपुतलों को सत्तारुढ़ कर देता था और वे फौरन ही वामपक्षीय और देशानुरागी शक्तियों के विरुद्ध आतंक का दौर शुरू कर देते थे।

सी० आई० ए० ने इस प्रतिरूप को सबसे पहले १९५३ में ईरान में आजमाया था, जहां एलैन डलेस के दाहिने हाथ केमिट रुजवेल्ट के नेतृत्व में एक विशेष टोली ने मोहम्मद मुसद्दिक की विधिसम्मत सरकार का सत्ता उलटने की साजिश रचने और कार्यरूप देने में सफलता प्राप्त की थी। इस सफलता से प्रेरित हो सी० आई० ए० ने अगले साल लातीनी अमरीका में भी एक ऐसी संक्रिया को कार्यरूप देने का निश्चय किया। यह देश ग्वाटेमाला था, ह्वाइट हाउस के अनुसार जहां की राजनीतिक स्थिति संयुक्त राज्य अमरीका के लिए प्रतिकूल होती जा रही थी।

मध्य अमरीका के उत्तर-पश्चिम में स्थित इस छोटे से अल्पविकसित देश में कई दशकों से संयुक्त राज्य अमरीका की यूनाइटेड फ्रूट कंपनी का ही सिक्का जमा हुआ था, जो कैला वाशानों, रेलों और बंदरगाहों की मालिक थी, और यही नहीं, उसकी अपनी पुलिस तक थी। दूसरे अमरीकी इजारे स्वाटेमाला की तेल संपदा पर आखें गड़ाये हुए थे और वहां दीर्घकालिक प्रभुत्व प्राप्त करने की आशा कर रहे थे।

१९५० के अंत में जब राष्ट्रपति आर्बेस के नेतृत्व में नयी प्रगतिशील सरकार ने किसानों और सेत मजदूरों की जमीन के हस्तांतरण सहित अनेक जनवादी सुधारों को कार्यान्वित करने के अपने दुरादे की घोषणा की, तो स्वाटेमाला में अमरीकी एकाधिकारों के लिए एक गंभीर खतरा पैदा हो गया। नयी सरकार के जमींदारियों का, जिनमें यूनाइटेड फ्रूट कंपनी की जमींदारियां भी थीं, स्वामित्वहरण करने के निर्णय ने ह्लाइट हाउस को विशेषकर रुष्ट किया। स्वाटेमाला के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करते हुए अमरीकी विदेश विभाग ने आर्बेस सरकार को उसकी भूमि-नीति के विरुद्ध एक विरोधपत्र दिया।

१९५३ में राष्ट्रपति आइजेनहोवर ने आर्बेस सरकार का तफ्ता उलटवाने का फैसला किया। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की इस कार्रवाई का औचित्य-स्थापन करने के लिए अमरीकी प्रचार साधनों ने मध्य अमरीका में कम्युनिस्ट खतरे के बारे में बड़ा जोरदार अभियान छेड़ दिया। इधर सी० आई० ए० के निदेशक एलेन

डलेस ने पहले ही अपने प्रखण्डन संक्रिया आयोजना के प्रभारी सहायक फ्रैंक बिस्लर को स्वाटेमाला में सत्ता-परिवर्तन की योजना तैयार करने का आदेश दे दिया था। लैंगली की इस योजना में यह कल्पना की गयी थी कि स्वाटेमाला पर हमला करनेवाले भाड़े के और आतंकवादी गिरोहों को उसके पड़ोसी नीकारागुआ और हांडुरास में संगठित किया जायेगा, जहां अमरीकी कठपुतले सत्ताकूट थे। साथ ही, स्वाटेमाला में सी० आई० ए० केन्द्र आंतरिक विद्रोह के लिए जल्दी-जल्दी प्रतिक्रियावादियों को गोतबंद कर रहा था।

फरवरी, १९५४ में स्वाटेमाला में नये अमरीकी राजदूत का आगमन हुआ। नये राजदूत, जॉन स्पेरी-फॉय ने यूनान में काले करतबों में प्रभूत अनुभव अर्जित किया था। वेधक, राजनयिक पद मात्र आवरण था, वास्तविक लक्ष्य तो सत्ता-परिवर्तन कर पाना था। स्वाटेमालाई सेना के प्रतिक्रियावादी अफसरों के साथ घनिष्ठ संपर्क स्थापित करके इस राजदूत-जापूस ने उन्हें उस प्रौजी हुता (शासक गुट) का केन्द्र बनाया, जिसे वैध सरकार के खिलाफ विद्रोह करके सत्ता को हथियाना था। सी० आई० ए० ने सशस्त्र आक्रमण की तैयारियों का काम वाशिंगटन में भूतपूर्व स्वाटेमालाई सैनिक सहाचारी कर्नल कस्तीलो अर्मांस को सौंपा, जिसने हांडुरास की राजधानी तेगसिगल्पा में अपना मुख्यालय स्थापित किया। अर्मांस के गिरोहों को हथियार और गोला-बारूद प्रदान करने के लिए

सी० आई० ए० और पैटानॉन में उसका समवर्ती संगठन प्रत्यक्षतः उत्तरदायी थे। उन्होंने विद्रोहियों के लिए हथियारों से लड़े दो जहाज हाइड्रास और नीकारागुआ भेजे। इसके अलावा सी० आई० ए० ने आक्रमण के खर्च के लिए अर्मास को लगभग ५० लाख डॉलर भी दिये।

भाड़े के सैनिकों को नीकारागुआ में मोमोतोंबीतो टापू पर सामोजा के पशुपालन फार्म पर और प्वलॉ-कावेसास के निकट एक भूतपूर्व हवाई अड्डे पर प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण अमरीकी कर्नल कार्ल स्टूडर के निदेशन में दिया जा रहा था, जो युनाइटेड फ्रूट कंपनी का कर्मचारी होने का दिखावा करता था।

यह संक्रिया, जिसे 'एल दीआब्लो' का कूटनाम दिया गया था, १८ जून, १९५४ को आरंभ हुई। सुबह के समय अर्मास को अमरीकियों द्वारा दिये गये और अमरीकी चालकों द्वारा चालित हवाई जहाजों ने स्वाटेमाला की राजधानी और प्रशांततटीन सान होसे बंदरगाह पर बम बरसाये। अर्मास के हथियारों के एक छोटे से, मगर सिर से पैर तक हथियारों से लैस दल ने, जिसे सी० आई० ए० के निर्देशकों ने प्रशिक्षित किया था, स्वाटेमालाई सीमा को पार किया। मगर यह योजना सफल न हो पायी—स्वाटेमालाई सुरक्षा अधिकारियों को १९५४ के आरंभ में इस षड्यंत्र का पता चल गया था, और अर्मास के भट्टेदारों को आसानी से हाइड्रास में वापस धकेल दिया गया।

सी० आई० ए० में खलबली मच गयी। ह्यूइट हाउस ने स्थिति का जायजा लेने के लिए एक आपात बैठक बुलायी। नतीजे के तौर पर राष्ट्रपति आइजेन-हॉवर ने न केवल भट्टेदारों को सहायता देते रहने का फ़ैसला किया, बल्कि उनकी मदद के लिए नये हवाई जहाज तक भेजने का आदेश दिया। आर्जेस सरकार को एक ही दिन में उलटने की भूल-योजना की विफलता के बावजूद सी० आई० ए० ने 'एल दीआब्लो' संक्रिया को आखिर सकल परिणति पर पहुंचा ही दिया। २७ जून, १९५४ को आर्जेस को त्यागपत्र देना और देश से चले जाना पड़ा। कुछ दिन सैनिक हुंता का नेतृत्व कर्नल दीआस ने किया, जिसकी जगह बाद में कर्नल मोनसोन ने ले ली। ३ जुलाई को कस्तीजो अर्मास स्वयं स्वाटेमाला पहुंचा और हुंता ने उसे "राष्ट्रपति" घोषित कर दिया। कुछ दिन बाद उसकी "सरकार" को संयुक्त राज्य अमरीका ने सरकारी तौर पर मान्यता प्रदान कर दी।

युनाइटेड फ्रूट कंपनी के मालिकों की खुशी का बारापार न था—अर्मास हुकूमत ने अमरीकियों को उनसे ज़ब्त की ज़मीनें लौटा देने का फ़ैसला किया। इस इजारेदारी ने जल्दी ही सी० आई० ए० के काले कारनामों की अपनी सराहना को व्यक्त किया—१९५५ में जनरल वाल्टर बैडेल स्मिथ को, जो १९५० से १९५३ तक सी० आई० ए० के निदेशक और बाद में संयुक्त राज्य अमरीका के अवर विदेश मंत्री रहे थे, युनाइटेड फ्रूट कंपनी के निदेशकमंडल



में ले लिया गया। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के धर्मपिताओं का मार्गदर्शन करनेवाले वास्तविक प्रेरक क्या थे, इसका अनुमान इन तथ्यों से भी लगाया जा सकता है: ग्वाटेमालाई सत्ता-परिवर्तन के दोनों मुख्य सूत्रधार, अमरीकी विदेश मंत्री जॉन फ़ॉस्टर डलेस और उनके भाई, सी० आई० ए० निदेशक एलेन डलेस सलीवन एंड कॉमवेल नामक कंपनी के भागीदार थे, जो युनाइटेड फ़ूट कंपनी के कानूनी मामलों को संभालती थी; और अंततः अंतर-अमरीकी मामलों में जॉन फ़ॉस्टर डलेस के सहायक जॉन कैबट युनाइटेड फ़ूट कंपनी के शेयरहोल्डर थे। प्रकटतया अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद मुनाफ़ादायी धंधा है और मुनाफ़ा भी भरपूर देता है।

ग्वाटेमाला में अंतिम सत्ता-परिवर्तन ८ अगस्त, १९८३ को हुआ। राष्ट्रपति की गद्दी भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री ब्रिगेडियर-जनरल ओस्कार उबर्तो मेहिया विक्टोरेस ने हथिया ली, जिन्हें निकारागुआई समाचारपत्रों ने घोर कम्युनिस्टबिरोधी, "बाजों में भी बाण" और देशभक्त शक्तियों के निष्पक्षतम दमन का समर्थक बताया था। वह "कम दक्षिणपंथी" जनरल रिओस भीत की जगह पर आये थे, जिन्हें कुछ ही समय पहले तक राष्ट्रपति रैगन "सच्चा जनवादी" कहा करते थे। इस "जनवादी" के ४६३ दिवसीय सत्ताकाल में देश में १५ हजार लोग भीत के घाट उतारे गये थे। किंतु बाशिगटन को ऐसा पैमाना भी शायद पर्याप्त न लगा और सी० आई० ए० की मदद से सत्ताकण्ड

हुए मेहिया ने नागरिक आबादी के खिलाफ़ ऐसी फ़ौजी कार्रवाइयों शुरू कर दीं, जिन्हें जनसंहार के अलावा और कोई नाम नहीं दिया जा सकता। छापामारों को सहायता देने के संदेह में मेहिया के फ़ौजी दस्ते पूरी की पूरी वस्तियों को नष्ट कर डालते हैं। कुछ मामलों में तो ये रसायनिक और जीवाणु हथियार इस्तेमाल करने से भी बाज नहीं आये हैं।

मैक्सिको की सीमा से कुछ ही दूरी पर स्थित मान-फ़ासिस्को नामक छोटे से रेड इंडियन गांव का तो नामोनिशान भी नहीं रहने दिया गया। उसके सिर्फ़ ये दो निवासी ही अपनी जान बचा सके, जो भागकर मैक्सिको में जा छिपे थे। इन लोगों ने ही पत्रकारों को बताया कि उनके गांव का क्या हृथ हुआ।

... छ: अफ़सरों की कमान में ६०० सिपाही एकाएक गांव में पहुंचे। उन्होंने सारी आबादी को दो समूहों में बांट दिया—मर्दों को एक ओर किया गया और औरतों को दूसरी ओर। फिर उन्हें अलग-अलग जगहों पर—स्थानीय अदालत की इमारत और चर्च में—बंद किया गया। इसके बाद औरतों को बच्चों से अलग करके दूसरी इमारतों में ले जाकर गंडासों से काट डाला गया। भ्रौण्डियों में जो कुछ भी लूटा जा सकता था, लूट लिया गया और मुरदों को उन्हीं में छोड़कर उनमें आग लगा दी गयी।

फिर बच्चों की बारी आयी। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि उनकी हत्या कैसे की गयी: कुछ का पेट चाकू से चीर दिया गया और कुछ को सिर पत्थर या पेड़

के तने से पटक-पटककर मार डाला गया। गोलियाँ चर्च करने की ज़रूरत नहीं समझी गयी। बुधमुहें बच्चों को भी नहीं बचवा गया।

इसके बाद सिपाहियों ने कुछ समय आराम किया और फिर मदों पर टूट पड़े। उन्हें एक-एक करके अदालत की इमारत के बाहर लाया गया और हाथ पीठ पीछे बांधकर जमीन पर औंधा लिटाया गया, जिसके बाद चाकुओं के बार करके मार डाला गया। एक प्रत्यक्षदर्शी बताता है कि कैसे एक सिपाही ने तभी-तभी मारे गये आदमी की लाश से दिल को निकालकर चखा भी था।

यह लोमहर्षक रक्तकांड दिन के एक बजे से शाम के सात बजे तक जारी रहा। इन छः घंटों में ३५२ लोगों को मौत के घाट उतारा गया।

लातीनी अमरीका में घटनाक्रम प्रायः उसी नियमित प्रतिरूप पर चला करता है, जिसकी सी० आई० ए० के कहीं भी अपने कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में सफल हो जाने के बाद हर बार खेदजनक रूप में पुनरावृत्ति होती है। ह्वाइट हाउस द्वारा अनुमोदित प्ररूप के मुताबिक सैन्यी द्वारा खड़े किये कठपुतली शासनों में आपस में शायद ही कोई अंतर किया जा सकता है। उनका मनहूस रूप एक ही है—अमानुषिक आतंक और प्रतिघोषात्मक दमन और अमरीका द्वारा स्थापित तानाशाहों के अपनी-अपनी जनता के विरुद्ध निर्मम और निरंतर युद्ध, जो अमरीकी निर्वेजकों द्वारा ही निर्मित और प्रशिक्षित दमन-तंत्र पर निर्भर है।

ईरान और स्वाटेमाला में यही हुआ। आगे चलकर उरुग्वाय, ब्राजील, थाइलैंड और एल सल्वाडोर में—जहाँ कहीं भी सी० आई० ए० ने अपने रक्तरेजित मुरास छोड़े हैं—यही होना था।

आखिरी मिसाल येनाडा है। किंतु १ लाख की आबादी और पर्याप्त ताकतवर राष्ट्रीय शक्तियोंवाले इस द्वीप के खिलाफ़ सी० आई० ए० और जगहों जैसी "प्रच्छन्न सश्रियाओं" का सहारा लेने की हिम्मत न कर सकी, क्योंकि उसे उनकी सफलता में पक्का विश्वास न था। ऐसी स्थिति में अमरीकी साम्राज्यवाद ने साधारण रास्ता ही अपनाया। "मानव अधिकारों के लिए संघर्ष" का अभियान कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया और हस्तक्षेपात्मक सश्रिया की गयी, जिसके दौरान द्वीप पर उतरी अमरीकी सैनिकों ने शांतिपूर्ण आबादी के बीच सचमुच का काले-आम मचाया।

सी० आई० ए० के विदेशों में प्रच्छन्न कार्य सिर्फ़ विधिसम्मत सरकारों को उलटने और उनकी तानाशाहियों से प्रतिस्थापना तक ही सीमित नहीं हैं। वे तानाशाहियाँ आम तौर पर इतनी कमजोर होती हैं कि सी० आई० ए० की निरंतर सहायता और समर्थन के बिना अपने बूते पर कायम नहीं रह सकती।

इसलिए सी० आई० ए० का एक और महत्वपूर्ण कार्य ऐसी अवस्थाओं का निर्माण करना है, जो कठपुतली हुकूमतों के अनुकूल हों, जिससे वे बिना किसी

बाधा के वाशिंगटन के बताये रास्ते पर चल सकें। ये अवस्थाएं एक शक्तिशाली दमन-तंत्र और चरम दक्षिणपक्ष के ऐसे आतंकवादी संगठनों की पूर्वापेक्षा करती हैं, जो सी० आई० ए० से संबद्ध हों और उसकी सहायता से सभी देशानुरागी, वामपक्षीय तथा जनवादी शक्तियों के विरुद्ध बलायुद्धा संहार का अभियान चलायें। इन अभिकरणों और संगठनों की सतत हिंसा और जबरदस्तियों के बिना वाशिंगटन द्वारा अपने अनुचर राज्यों में खड़े किये शासन ताना के घर की तरह से निम्न भाग में डूब जायेंगे।

लेकिन आइये, स्वाटेमाला पर वापस आये और देखें कि अमरीकी हस्तक्षेप इस चिरपीड़ित देश के लिए क्या लेकर आया और संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा आरोपित "समृद्धि" का यह मॉडल आज कैसे "काम कर रहा है"।

१४ जुलाई, १९८०। अजीब से शिरोवस्त्र पहने लोगों की एक टोली मान कालोंस विश्वविद्यालय के अहाते के पास कई कारों से निकलती है। एक-एक करके वे अहाते में प्रवेश करते हैं, जहां व्याख्यान आरंभ ही होनेवाला है। छात्र अपनी-अपनी कक्षाओं की तरफ लपक रहे हैं और इन अपरिचित आगंतुकों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते। आगंतुक अपने लबाबों के नीचे से मशीनगन निकाल लेते हैं और उन्हें चलाना शुरू कर देते हैं। जब वे अपना मिशन पूरा करके कारों में वापस जाकर बैठते हैं, तो जॉन पर २५ मृतक और १४ घायल पड़े हुए हैं।

ऐसा हत्याकांड, जिसका "थ्रेय" बाद में तथाकथित यमदूत टुकड़ी और गुप्त कम्युनिस्टविरोधी सेना ने ग्रहण किया, आज स्वाटेमाला में रोजमर्रा की बात है, जहां संयुक्त राज्य अमरीका के तत्वावधान में इन गिरोहों द्वारा वामपक्ष के "प्रशमन" के कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जा रहा है।

गुप्त कम्युनिस्टविरोधी सेना (गु० क० सेना) के सदस्य अधिकांशतः संयुक्त राज्य अमरीका में सी० आई० ए० द्वारा प्रशिक्षित नियमित सेना के अफसर हैं। इनमें से कुछ ने इसराएल, चिली तथा अन्य देशों में विशेष पाठ्यक्रम पूरे किये हैं। गु० क० सेना अपनी कारवाइयों के लिए सभी तरह के परिवहन साधनों—मोटर साइकिलों से लेकर हेलीकॉप्टरों और टैंकों तक—का उपयोग करती है। वह अनेक निजी मकानों का गुप्त जैदखानों और यंत्रणा कक्षों के रूप में भी उपयोग करती है। गु० क० सेना के विपरीत, जो आग्नेयास्त्रों को तरजीह देती है, यमदूत टुकड़ी अकसर छुरों और नायलन की रस्सी का प्रयोग करती है।

लूकास गार्सीआ सरकार के अधिकारियों ने स्वाटेमाला में आतंक और हिंसा का दोष चरम दक्षिणपक्ष और चरम वामपक्ष के मध्ये मड़ा, जो कथित रूप में सरकार के नियंत्रण के बाहर है। तथापि, लूकास गार्सीआ सरकार के निकटस्थ सूत्रों का कहना है कि यमदूत टुकड़ियों का नेतृत्व राष्ट्रपति, गृहमंत्री दोनाल्डो अल्वारेस रुइस तथा राष्ट्रपति-स्टाफ के अध्यक्ष

कर्नल हेक्टर मोंताल्वाना और राष्ट्रीय पुलिस के प्रमुख कर्नल हेरमान चुपीना बराहोना द्वारा समर्थित शीर्षस्थ जनरलों के एक गुट के आदेशों पर सेना तथा पुलिस के अधिकारी करते हैं। प्रमुख ग्वाटेमालाई व्यवसायी राजल गार्सीआ ग्रानादोस ने एक भेंटवार्ता में बताया था कि यमदूत टुकड़ियां सशस्त्र सेनाओं द्वारा छड़ी की गयी हैं।

गार्सीआ ग्रानादोस ने आगे कहा: "उनके पास ऐसे लोगों की सूचियां हैं, जिन पर कम्युनिस्ट होने का शक किया जाता है। इन लोगों को मार डाला जाता है।"

इसका पर्याप्त प्रमाण है कि यमदूत टुकड़ियों सरकारी नियंत्रण में हैं। सितंबर, १९८० में इसकी एलीआस बाराहोना ने सार्वजनिक रूप में पुष्टि की, जो चार साल गृहमंत्रालय के प्रेस सचिव रहे थे। उन्होंने पत्रकारों को एक लिखित वक्तव्य दिया, जिसमें विस्तार से बताया गया था कि लूकास गार्सीआ और सेना के जनरल किस तरह यमदूत टुकड़ियों को नियंत्रित करते हैं। बाराहोना ने पत्रकारों को सरकार द्वारा कूद तथा संरक्षण केंद्रों के रूप में प्रयुक्त मकानों के पत्तों की सूची भी दी। ग्वाटेमालाई ईसाई जनतांत्रिक पार्टी के महासचिव खीनिसीओ सेरेसो ने एक प्रेस सम्मेलन में कहा कि उनकी पार्टी के नेता हत्या के लिए अभीष्ट व्यक्तियों की सूची में हैं, क्योंकि उन सभी को कम्युनिस्ट माना जाता है, जो सरकार का विरोध करते हैं।

विरोध-पक्ष के विरुद्ध संघर्ष में आतंक ही ग्वाटेमाला के शासक हलकों का एकमात्र हथियार था और अब भी है। अगस्त, १९८० से लेकर मई, १९८१ तक ईसाई जनतांत्रिक पार्टी के ७६ सदस्य मारे गये। मध्यमार्गी-वामपक्षीय सामाजिक-जनवादी संयुक्त जनतांत्रिक मोरचे के भी १० कार्यकर्ता मारे गये।

ग्वाटेमाला के दमनविरोधी जनतांत्रिक मोरचे द्वारा मार्च, १९८१ में जारी किये गये एक वक्तव्य में कहा गया था कि जन-प्रतिरोध की लहर के उमड़ने के डर से ग्वाटेमालाई सेना ने हाल के समय से देहाती इलाकों में "सर्वशर" नीति पर चलना शुरू कर दिया है। विशेषकर स्थापित ताबोरी दस्तों के पूरे के पूरे गांवों को नष्ट कर देते हैं और नागरिकों को संरक्षण देते तथा जान से मार देते हैं। वक्तव्य में इन दस्तों द्वारा स्त्रियों और बच्चों सहित पूरे के पूरे परिवारों के बिंदा जला दिये जाने के उदाहरण दिये गये थे।

१९८२ के वसंत में ग्वाटेमाला में एक और सत्ता-परिवर्तन हुआ। जनरल लूकास गार्सीआ को राष्ट्रपति पद से अलग कर दिया गया, सरकार और राष्ट्रीय कांग्रेस (विधानमंडल) को भंग कर दिया गया और संविधान को निलंबित कर दिया गया। ग्वाटेमालाई सेना के चरम दक्षिणपंथियों ने जनरल रीओस मोंत के नेतृत्व में एक "प्रतिनिधि हुंता" की स्थापना की।

इस हुंता द्वारा उठाये पहले ही कदमों ने दिखाया दिया कि पुराने निबाम की आतंक और दमन की नीति को त्यागने का उसका कोई इरादा नहीं है।

जनरल रीओस मोंत ने एक वक्तव्य द्वारा स्वाटेमाला में जनतंत्र तथा स्वतंत्रता की बहाली के लिए लड़ रहे देशभक्तों को हथियार न डालने की सूरत में नष्ट कर देने की धमकी दी।

१९६४ में सी० आई० ए० ने ब्राजील में राष्ट्रपति गुलार्त की जनतांत्रिक सरकार को उलटने के लिए बलत सत्ता-परिवर्तन की तैयारी की थी। अपने इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए सी० आई० ए० ने जनवादी शक्तियों के विरुद्ध भड़कावे और आतंक की कार्रवाइयों में पारंगत कितने ही स्थानीय संगठनों और अभिकरणों का उपयोग किया।

१९६४ के सैनिक सत्ता-परिवर्तन की तैयारी में सी० आई० ए० की गृहित भूमिका १९७६ में प्रकाश में आयी, जब ब्राजीली पत्रकारों ने अनेक गुप्त दस्तावेजों को प्रकाशित करके उसका परदाफाश किया। आज यह अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य है कि ब्राजील के आंतरिक मामलों में धृष्टतापूर्वक हस्तक्षेप करते हुए सी० आई० ए० ने कम्युनिस्टविरोधी आंदोलन, मृत्युदूत टुकड़ी, कम्युनिस्ट हनन दल जैसे दक्षिण-पश्चिमी आतंकवादी संगठनों, अर्द्ध-पुलिस संगठन आपरे-शन बंदिइरातेस और राजनीतिक पुलिस के साथ सक्रिय सहयोग किया था।

सी० आई० ए० और अन्य सर्वाधिकारी लातीनी अमरीकी शासनों — उरुग्वय, पराग्वय तथा हाइटी — के दमनकारी अभिकरणों के बीच भी ऐसे ही "मित्रतापूर्ण संबंध" हैं। साम्राज्यवादविरोधी, जनवादी और मुक्ति

आंदोलनों का भय संयुक्त राज्य अमरीका को इस महाद्वीप के विरुद्ध अपने गुप्त युद्ध को तेज करने और आतंकवादी, फ़ासिस्त तानाशाहियों को, जो पश्चिमी गोलार्ध में अमरीकी साम्राज्यवाद की एकमात्र संघवी हैं, स्थापित करने और खुले तौर पर समर्थन देने को प्रेरित करता है।

सी० आई० ए० द्वारा चालित अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की मशीन नहीं बलियाँ चाहती है। हिंसा वह अपरिहार्य टेक है, जिसके बिना लातीनी अमरीका में कोई भी साम्राज्यवाद-समर्थक शासन एक दिन भी नहीं टिका रह सकता। इसकी एक ताजा मिसाल वह भयंकर त्रासदी है, जिसका विश्व जनमत इस समय एक और लातीनी अमरीकी देश, सल्वादोर में प्रत्यक्ष-दर्शी है।

"आतंकवाद तब होता है, जब संयुक्त राज्य अमरीका कहीं कोई तानाशाही प्रतिष्ठापित कर देता है, जो सशस्त्र बल पर आश्रित होती है और स्वयं अपनी जनता के विरुद्ध आतंक का सहारा लेती है," सी० आई० ए० के भूतपूर्व कर्मी फ़िलिप एजी ने फरवरी, १९८१ में सल्वादोर के फ़ाराबूंदो मार्ती राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे द्वारा आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था।

एजी ने यह परिभाषा उनसे पूछे गये इस प्रश्न का उत्तर देते हुए दी थी कि अमरीकी प्रशासन के इस आरोप के बारे में वह क्या कह सकते हैं कि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और आतंकवाद आपस

में जुड़े हुए है। उन्होंने आगाह किया कि वाशिंगटन इसके लिए सभी कुछ करेगा कि सल्वादोर में कोई जनतांत्रिक सरकार सत्ता में न आये। उन्होंने दावा किया कि संयुक्त राज्य अमरीका इस देश पर सीधा सैनिक आक्रमण कर देगा और उसे "दूसरा वियतनाम" बनाने से भी न कतरायेगा। इस चेतावनी की पुष्टि औरो के अलावा भूतपूर्व अमरीकी विदेश मंत्री एलेक्जेंडर हेग तथा राष्ट्रपति के निकटतम परामर्शदाता एडविन मोज के धमकीभरे और तत्वतः भड़कानेवाले वक्तव्यों से हुई।

सल्वादोरी देशभक्तों द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मेलन ने सी० आई० ए० के आपराधिक तरीकों का परदाकाश किया। एक ओर, वह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के, जिनमें सल्वादोर का आंदोलन भी सम्मिलित है, विरुद्ध ध्वंसकार्य करती है, और दूसरी ओर, वह विभिन्न देशों में जनमत को गुमराह करने की कोशिश करती है। एजी ने झूठलाया कि सल्वादोरी विद्रोहियों और समाजवादी राष्ट्यों के बीच संबंधों का वह तथाकथित प्रमाण अमरीकी गुप्तचर्या द्वारा ही गढ़ा गया था, जिसे अमरीकी अवर विदेश मंत्री सरिस ईंगलबर्गर पश्चिमी यूरोप लाये थे। पत्रकार सम्मेलन में उपस्थित पत्रकारों को सी० आई० ए० के ध्वंसात्मक तथा मिथ्या सूचना तंत्र की कार्यप्रणाली को प्रकट करनेवाली दस्तावेजों की फोटो प्रतियां दी गयीं।

अमरीकी स्वतंत्र धर्म विकास संस्थान की बात करते

हुए फ्रिलिप एजी ने कहा कि "इस 'धैरिक' संस्थान का वास्तविक प्रयोजन कार्यकर्ताओं को नये मजदूर संघ संगठित करने या विद्यमान संघों को इस तरह से काबू में ले लेने का प्रशिक्षण देना है कि संघ प्रत्यक्षतः या परोक्षतः सी० आई० ए० के नियंत्रण में रहे।" एजी ने संस्थान की एक दस्तावेज का उल्लेख किया, जिसमें सामाजिक-जनवादी पार्टियों के सदस्यों को प्रभावित करने के प्रयासों को बढ़ाने की सलाह दी गयी थी, ताकि सल्वादोर के प्रति अमरीकी नीति के लिए उनका समर्थन प्राप्त किया जा सके।

एजी के रहस्योद्घाटन की ११ अप्रैल, १९८१ को 'नेशन' में प्रकाशित 'सी० आई० ए० और एल सल्वादोर के बारे में श्वेतपत्र' शीर्षक लेख से पुष्टि होती है। वह लेख सी० आई० ए० सक्रिया निदेशालय में अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म शाखा के भूतपूर्व कर्मचारी राल्फ मैकगेही ने लिखा था, जो सी० आई० ए० के लिए ताइवान, थाइलैंड और वियतनाम में काम कर चुके थे।

राल्फ मैकगेही लिखते हैं:

"संयुक्त राज्य अमरीका इस समय सल्वादोर में जो कर रहा है, वह उसका प्रतिबिंब मात्र है, जो संयुक्त राज्य अमरीका तीसरे विश्व के कितने ही देशों में कर चुका है। अपनी सदाशयता की घोषणा करते हुए और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे की निंदा करते हुए भी अमरीकी नीति-निर्माताओं ने (अन्य देशों में -सं०) अलोकप्रिय शासनों को थोपा



है और उन्हें सेनाओं, पुलिस और हथियारों से सहायता दिया है। अपने लक्ष्यों को अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म से, अथवा, जैसे कि प्रचलित शब्दावली में कहा जाता है, 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद', से लड़ने की मुर्खी के नीचे छिपाते हुए संयुक्त राज्य अमरीका व्यापक जनसाधारण के हितों के विरुद्ध अल्पसंख्यक जमींदाराना स्वेच्छाचारी शासनों और उनके सैनिक अनुचरों का समर्थन करता है।

"संयुक्त राज्य अमरीका स्वेच्छाचारी शासनों को अपने समर्थन का औचित्य-स्थापन इस दावे से करता है कि वे आधुनिकीकरण की सिद्धि के लिए और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म (अथवा 'अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद') के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक है। दावा यह किया जाता है कि दमनकारी स्वेच्छाचारी शासन सिर्फ अस्थायी ही हैं और कुछ समय की कुरबानियों के बाद लोगों की जिंदगी आधुनिकीकरण की बदीलत समृद्ध हो जायेगी। ...सल्वादोर में भूतपूर्व अमरीकी राजदूत रॉबर्ट ह्लाइट ने कहा है कि उन्हें बिदेश सेवा से अलग होने की, उनके ही शब्दों में, राष्ट्रपति रैगन के सल्वादोर में सैनिक हस्तक्षेप के 'तैयारशुदा सिद्धांत' का विरोध करने के कारण मजबूर किया गया था। उन्होंने कहा कि इस देश में सबसे बड़ा खतरा ... अमरीका द्वारा समर्थित सैनिक शासन से संबद्ध दक्षिणपंथी शाक्तियों की तरफ से है। राजदूत ह्लाइट ने सल्वादोरी सरकार को सैनिक सहायता दिये जाने का विरोध किया। उन्होंने कहा

कि संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा दिये जा रहे सैनिक साज-सामान का 'एकदम नियंत्रणहीन ढंग से हत्या करने और मारने के लिए' उपयोग किया जायेगा। सल्वादोरियों के मुख्य हत्यारे सुरक्षा सेनाएं हैं, जो संभवतः चार अमरीकी साधुनियों की हत्या के लिए और कम से कम ५,००० वामपंथियों को और वामपंथी होने के मान संदिग्ध व्यक्तियों को जान से मार डालने के लिए जवाबदेह हैं।

"सी० आई० ए० के सल्वादोर के बारे में सत्य को विकृत करने के पहले प्रयास सल्वादोरी वामपंथियों को सोवियत संघ, क्यूबा, गुल्गारिया, वियतनाम, फिलिस्तीनी मूलित संगठन, इथियोपिया और नीकारागुआ से विचाल मात्राओं में हथियारों के भेजे जाने की रिपोर्टों तक ही सीमित थे।

"कहा जाता था कि वे संयुक्त राज्य अमरीका के विरुद्ध एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र में शामिल हैं। लेकिन—जैसे कि कहा जाता था—षड्यंत्रकारी इसका ध्यान रखते हैं कि वे सिर्फ पश्चिमी देशों में निर्मित हथियार ही मुहैया करें...

"सी० आई० ए० का एक और संभाव्य सत्य-विरूपण प्रयास इस सहायता (अमरीकी सैनिक सहायता—अनु०) का पुनराारंभ कराने, राष्ट्रपति रैगन के सैनिक हस्तक्षेप के 'तैयारशुदा सिद्धांत' के लिए जमीन तैयार करने की ओर लक्षित था। १६ जनवरी, १९८१ को संयुक्त राज्य अमरीका भर में अज्ञातों ने एक सवास्य छापामार दल के, जिसमें १०० से

१,००० तक आदमी थे, हमले के विवरण छापे। कहा गया कि यह हमला सभवतः नीकारागुआ से हुआ था। यद्यपि इन आक्रमणकारी छापामारों और सल्वादोरी सुरक्षा सेनाओं के बीच कथित लड़ाई पूरे दिन चली, फिर भी सरकारी सैनिक न तो किन्हीं छापामारों को मार ही सके, न कैदी बना सके और न कोई हथियार ही बरामद कर सके।

"२२ जनवरी को एक दूसरे समुद्री हमले की खबर छपी, मगर इस बार भी हताहतों या कैदियों के बिना। फिर भी इसे पर्याप्त साक्ष्य मान लिया गया और २४ जनवरी को संयुक्त राज्य अमरीका ने सल्वादोरी सरकार के साथ ६५० लाख डॉलर सहायता के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये। आश्चर्यजनक रूप से, इन दस्तावेजों में इसका काफ़ी प्रमाण दिया गया था कि क्यूबाइयों और रूसियों ने सल्वादोरी बिद्रोहियों को हथियार मुहैया किये थे। यह 'प्रमाण' विदेश विभाग के उस श्वेतपत्र के साक्ष्य का ७०% था, जिसमें सोवियत तथा क्यूबाई सहायता को लेखबद्ध किया गया था।"\*

सल्वादोर में असल में क्या हो रहा है? कौन वहाँ की जनता के विरुद्ध खुला नरमेघ अभियान चला रहा है? किस स्वेच्छाचार के खिलाफ़ फ़ाराबूंदो मार्ती राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के सल्वादोरी देशभक्त लड़ रहे हैं?

रैसन प्रशासन के सल्वादोर के नाटकीय घटनाक्रम के अर्थ को विवृत करने, साम्राज्यवाद समर्थक शासन के अत्याचार के विरुद्ध देशभक्तों के संघर्ष को मास्को द्वारा समर्थित "आतंकवाद" के रूप में चित्रित करने के प्रयासों के बावजूद अमरीकी प्रेस में इस मध्य अमरीकी देश की स्थिति की वस्तुपरक रिपोर्टें जब-तब छप ही जाती हैं।

"वास्तव में सल्वादोर पर शासन हुला का नहीं, बल्कि चरम दक्षिण पक्ष के आतंकवादी संगठनों का है।" 'कॉबर्ट एन्शन इन्फ़ॉर्मेशन बुलेटिन' में 'सल्वादोर में संयुक्त राज्य अमरीका' वीरक एक लंबे लेख में स्ट्यूअर्ट क्लैपर लिखते हैं। "उनकी मृत्युदूत टुकड़ियाँ सेना, नेशनल गार्ड और पुलिस के घनिष्ठ सहयोग से काम करती हैं। ये संगठन ही सल्वादोर में हुई ८०% राजनीतिक हत्याओं के लिए उत्तरदायी हैं। इस तरह की हत्याओं की संख्या अब १७,००० से अधिक हो चुकी है।"

सबसे बड़े आतंकवादी संगठनों में से एक ओर्बेन (जनतांत्रिक राष्ट्रवादी संगठन) है। इसे १९६८ में जनरल होसे मेझानो ने स्थापित किया था, जिसके सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संबंध थे और जो १९७२ के राष्ट्रपति "निर्वाचन" में वाशिंगटन का पसंदीदा उम्मीदवार था। इस संगठन का नाम अब राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोरचा कर दिया गया है। इसकी कारगुजारियों की एक लाखणिक मिसाल ६ जुलाई, १९८० को ला लीबेरताद प्रांत के मोमोतेस

\* The Nation, April 11, 1981, pp. 423-425.

नामक गांव में मोहीका सांतोस के परिवार के ३१ सदस्यों की, जिनमें १० साल से कम आयु के १५ बच्चे भी थे—पाशविक हत्या थी। नेशनल गार्ड के साथ मिलकर ओईन ने हांडूरासी सीमा पर सांपूल नदी के पास ६०० किसानों को मीत के घाट उतारा।

स्ट्यूअर्ट क्लैपर कहते हैं कि एक और राष्ट्रव्यापी संगठन रोबर्टो द'ऑब्यूसोन के नेतृत्व में श्वेत योद्धा संघ है, जो "सभी मृत्यु दलों में संभवतः सर्वाधिक राजनीतिक है। द'ऑब्यूसोन ने वाशिंगटन में अंतर्राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और जनरल रोमेरो के अधीन गुप्तचरों व्यवस्था के उपप्रधान की हैसियत से काम किया था, जहां उसकी निगरानी में यंत्रणाएं दी जाती थीं और कहा जाता है कि उसने खुद दर्जनों लोगों को छुरे से घेरा था।...

"द'ऑब्यूसोन सी० आई० ए० से घनिष्ठ संबंध रखने का दावा करता है और कहता है कि वह पिछली मई (१९८०-सं०) में अतिरिक्ता गुप्तचर्या एजेंसी के भूतपूर्व निदेशक सेप्टीमेंट-जनरल डेनियल ग्रैहम से मिला था...

"कलांगा एक रहस्यमय मृत्यु दल है, जिसमें गुरक्षा सेनाओं के जैसे अवकाशप्राप्त, वैसे ही सक्रिय सदस्य भी शामिल हैं। इसकी गतिविधियों में एक ऐसे सिपाहियों को जान से मारना है, जिन पर जनवादी शक्तियों के हमदर्द होने का शक होता है।..."

क्लैपर आगे कहते हैं कि रैगन प्रशासन के भीतर

इस बारे में मतभेद है कि संयुक्त राज्य अमरीका को सल्वादोर में क्या करना चाहिए। "एक रुझान यह रहा है कि प्रशासन इस क्षेत्र से, मिसाल के लिए स्वाटेमाला ... हांडूरास ... और बिली से, प्रतिनियुक्त सेनाओं को इस्तेमाल और सज्जित करे। फिर इन सेनाओं को अंतःअमरीकी शांतिरक्षक सेना के आवरण में भेजा जा सकता है।...

"पैटागॉन प्रत्यक्ष अमरीकी सहभागिता का आग्रह करता रहा है।...

"काराबुंदो मार्ती राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के प्रवक्ता कहते हैं कि सल्वादोर में अब भी ८०० से अधिक अमरीकी सैनिक मौजूद हैं।... लेकिन रैगन की रणनीति में प्रतिनियुक्त सेनाओं की भी भूमिका हो सकती है। जघन्यतम काम के लिए क्यूबाई उत्प्रासियों और नीकारागुआई नेशनल गार्ड के भूतपूर्व सदस्यों का उपयोग किया जा सकता है...

"रैगन ने अंतःअमरीकी मामलों के विदेश-उपमंत्री के महत्वपूर्ण पद के लिए अपनी पसंद घोषित कर दी है।... इसके लिए टॉमस एंडर्स को चुना गया है और उनका अनुभव कंबूचिया के समय तक का है, जहां वह १९७१ से १९७४ तक अमरीकी मिशन के उपप्रमुख थे।... सल्वादोर में सैनिक सहायता दल के प्रधान कर्नल एल्डन कर्मिंस है, जो जनरल वांग पाओ के मुख्य सैनिक सलाहकार थे।... वांग पाओ सी० आई० ए० की आज तक की सबसे बड़ी अर्द्ध-सैनिक संकिया में उसका शीर्षस्थ व्यक्ति था।...

"रैगन ने घोषित किया कि सल्वादोर में उनके राजदूत डीन हिटन होंगे। हिटन १९६६ से १९७१ तक - अल्पेदे सरकार के खिलाफ सी० आई० ए० के प्रबंध काले प्रचार-कार्य को अवधि भर - सातीआगो, चिली में काम कर चुके हैं।" \*

अपने लेख में क्लैपर इसका प्रमाण उद्धृत करते हैं कि सल्वादोर में अमरीकी आदेशों से किये गये तथाकथित कुषिक सुधार में सी० आई० ए० की प्रत्यक्ष सहभागिता है। यह सुधार अमरीकी स्वतंत्र धर्म विकास संस्थान के निदेशन में किया जा रहा है, जो ए० एफ० एल० - सी० आई० ओ० (अमरीकी धर्म संघ-औद्योगिक संगठन महासंघ) का एक अनुषंगी है और अक्सर सी० आई० ए० के साथ एक ही संगत में पाया जाता है। इस सुधार के प्रणेता वाशिंगटन विश्वविद्यालय के विधि विद्यालय के प्रोफेसर रॉय प्रॉस्टरमैन हैं, जिन्होंने कभी दक्षिण वियतनाम के लिए कुषिक सुधार कार्यक्रम तैयार किया था। यह कार्यक्रम सी० आई० ए० की फ्रीनिक्स संक्रिया का अंग था, जिसके दौरान मुक्ति सेना के हृदय समझे जानेवाले दसियों हजार दक्षिण वियतनामी किसान मारे गये थे।

स्ट्यूअर्ट क्लैपर कहते हैं: "सल्वादोरी मृत्यु दलों ने आबादी को आतंकित करने के एकदम सीधे-सादे तरीके निकाले हैं, जैसे अपने शिकारों को गंडासों

से टुकड़े-टुकड़े कर देना या उनके चेहरों पर तेजाब डालना ...

"पिछले तीन महीनों के भीतर कुषिक सुधार के क्षेत्र में आनेवाले कई हजार किसान मारे गये हैं।" इस बीच "भूमि सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत सिर्फ ८०० पट्टे दिये गये, जबकि देहातों में २० लाख भूमिहीन किसान थे।" \*

सल्वादोर में जो हो रहा है, वह यह है, जहाँ १५ अक्तूबर, १९७६ को प्रतिक्रियावादियों ने संयुक्त राज्य अमरीका के समर्थन से प्रगतिशील शक्तियों को निर्मूल करने के लिए सैनिक तथा नागरिक सदस्यों से निर्मित एक हुता को सत्तारुढ़ कर दिया था। इस देश में संयुक्त राज्य अमरीका ने जो वास्तविक भूमिका अदा की है, उसे खुला अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद ही कहा जा सकता है।

सल्वादोर की समन्वयी क्रांतिकारी समिति के प्रवक्ता फ्रांस्को गार्सीआ, आलबेर्त रोमोस और मारीओ अग्निमादा ने एक वक्तव्य में कहा है: "संयुक्त राज्य अमरीका ने मध्य अमरीका में हमेशा अधिक प्रतिक्रियावादी शासनों का ही समर्थन किया है। हमारा देश कोई अपवाद नहीं है। आज भी संयुक्त राज्य अमरीका प्रतिक्रियावादियों को व्यापक समर्थन प्रदान कर रहा है और हमारे देश के भीतरी मामलों में हस्तक्षेप करता है। इसनतंत्र के कार्यों का निदेशन अमरीकी दूतावास

\* *Ibid.*, pp. 7-8.

से होता है। अमरीकी सैनिक, पुलिस और चरम दक्षिणपन्थीय तूफानी दस्तों को प्रशिक्षित और सज्जित कर रहे हैं। गोलीरोधी बास्कटों से लेकर मोटरगाड़ियों तक हर ही चीज़ उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका देता है।... संयुक्त राज्य अमरीका में प्रशिक्षित अफसरों की संख्या दुगुनी हो गयी है। इसके अलावा अमरीकी बन्धु भागे सामोजाइयों में से भाड़े के सैनिक प्रशिक्षित कर रहे हैं और क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए ग्वाटेमालाई और हांदूरासी सेनाओं का उपयोग करने की योजना बना रहे हैं।”\*

हाल के समय में विश्व प्रेस में सल्वादोर में निरंकुश शासन के विरुद्ध जन-संघर्ष में आमूलतः नये विकासों के समाचार छपे हैं। आज यह बिलकुल स्पष्ट हो गया है कि सैन्यवादी शासक गुट एकदम दिवालिया हो गया है, जो अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए रक्तपात के सभी रेकार्डों को तोड़ रहा है और सल्वादोरी जनता का जनसंहार कर रहा है। सल्वादोर में अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए फ्रांसीसी पत्रकार प्येर ब्लांशे ने 'ली नूवेल ओब्ज़रवातेर' में लिखा है कि “उपस्थित पत्रकारों में से किसीने, विश्व स्वास्थ्य संगठन के किसी भी स्वयंसेवक ने कंप्यूचिबा के बाद से विभीषिका के ऐसे दृश्य नहीं देखे हैं।”\*\*

\* 'लिवेरातूरिया गजेता', २६ मार्च, १९८० (फ़ी में)

\*\* *Le nouvel Observateur*, 18 juillet, 1981, p. 42.

२८ मार्च, १९८२ को सल्वादोर में वंचकों के साथ में “चुनाव” हुए। सल्वादोरी शासक गुट के अमरीकी आका यह सोच रहे थे कि ये चुनाव आतंकवादी हुंता के मुँहों को संबारेगे, उसे “इच्छतदार” बनादेगे और इस प्रकार इस बर्बर शासन को व्यापक सैनिक तथा राजनीतिक समर्थन प्रदान करने के लिए रैगन प्रशासन की देश-विदेश में निंदा को कम करेगे। लेकिन ये सारी योजनाएं मिट्टी में मिल गयीं। आंतरिक प्रतिद्वंद्विताओं के कारण सत्ता-चरम दक्षिणपन्थ के गठ-बन्धन के हाथों में आ गयी, जिसने भूतपूर्व हुंता-प्रमुख होसे नपोलिओन दुआर्ते को “उदार” करार देकर बरसास्त कर दिया (यह “उदार” अपने शासन के डार्क वर्षों में ४०,००० सल्वादोरियों की हत्या के लिए जवाबदेह था)। फ़ाशिस्त मेजर द'ऑब्यूसोन के नेतृत्व में प्रतिक्रियावादी और भी अधिक पाशाविक आतंक, सल्वादोर में खून की असली होली चाहते हैं। “चुनावों” के फ़ौरन ही बाद सान-सल्वादोर में ह्लाइट हाउस के विशेष दूत, अवकाशप्राप्त जनरल वर्नन बाल्टर्स का आगमन हुआ, जिनके सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संपर्क हैं। समाचारपत्रों के अनुसार उनका मिशन सत्ता के लिए संघर्षरत खूरेजों पर ज्यादा दबाव डालना और उनके आंतरिक कलह का अंत करना था।

और इधर फ़ोर्ट ब्रैग और फ़ोर्ट बैनिंग के अमरीकी फ़ौजी अहों में बियतनाम में अनुभवप्राप्त “हरे बेरे” सल्वादोरी सुरक्षा सेनाओं को प्रशिक्षण दिये जा रहे

हैं। अमरीकी हथियार और यौद्धिक साज-सामान जल्दी-जल्दी सान-सत्वादोर पहुँचाये जा रहे हैं। यही नहीं, पैटागॉन सत्वादोर में अमरीकी सैनिक सत्वाहकारों की संख्या को बढ़ाये जा रहा है, जो—जैसे कि ज्ञात है—अब भी बहुत समय से सैनिक कार्रबाइयों में प्रत्यक्ष भाग लेते आ रहे हैं।

छापामारों के साथ संघर्ष में असफलताओं से सार खाकर चरम दक्षिणपंथीय तत्वों से निर्मित सत्वादोरी सैन्य नेता और मृत्युदूत टुकड़ियाँ नागरिक आबादी के खिलाफ दमन-चक्र चला रहे हैं। उदाहरण के लिए, सत्वादोरी कैथोलिक चर्च के एक मानवाधिकार रक्षा दल के वक्तव्य के अनुसार १९८३ के पहले छः महीनों में ही मृत्युदूत टुकड़ियों द्वारा मारे गये लोगों की संख्या २,५२७ थी। और इस बीच वाशिंगटन क्यूबा और नीकारागुआ के विरुद्ध सशस्त्र आक्रमण की, मध्य अमरीका तथा कैरीबियन में सशस्त्र हस्तक्षेप की विस्तृत योजनाएँ तैयार कर रहा है।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में विचार-विमर्श के बाद अंगीकृत इन योजनाओं में आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रचारात्मक उपायों के एक पूरे सिलसिले की कल्पना की गयी है। पश्चिमी समाचारपत्रों की खबरों के अनुसार राष्ट्रपति रैगन और उनके सहकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मध्य अमरीका में अमरीकी सैन्य उपस्थिति में उबरदस्त वृद्धि करना अपरिहार्य है। विशेषकर हाँडूरास में अटलांटिक तट पर एक विशाल अमरीकी फौजी अड्डा बनाने का इरादा किया जा रहा

है, ताकि आवश्यकता पड़ने पर अमरीकी सेनाओं को शीघ्रता से लड़ने के लिए पहुँचाया जा सके। इस नयी रणनीति के अंतर्गत सत्वादोर को एक विशेष राष्ट्रपति-कोष से अतिरिक्त सैनिक सहायता प्राप्त होगी। संयुक्त राज्य अमरीका अन्य सातों अमरीकी देशों को इसके लिए राजी करने की कोशिश कर रहा है कि वे सत्वादोर में "विप्लवनिरोधी" सेनाएं भेजें। ब्रिटेन के 'डेली टेलीग्राफ' अखबार के अनुसार इस उद्देश्य से अमरीकी देशों को सारे पश्चिम गोलार्द्ध में भाड़े के सैनिकों के दस्ते संगठित करने के लिए "प्रोत्साहित" करने की विशेष राशियाँ विनियुक्त की गयी हैं।\*

यह दृष्टव्य है कि ह्वाइट हाउस की योजना में मध्य अमरीका में सी० आई० ए० की अभूतपूर्व सक्रियता का प्रावधान है। इस क्षेत्र के सी० आई० ए० केंद्रों के कर्मियों की संख्या बढ़ा दी गयी है और राजनीतिक तथा "अर्द्ध-सैनिक" ध्वंसात्मक कार्य करने के इरादे से लगातार बढ़ती जा रही है। 'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार सी० आई० ए० ने "नीकारागुआ में सांदिनिस्ता शासन का व्यापक राजनीतिक विरोध पैदा करने के लिए १६० लाख डॉलर लागत की एक गुप्त योजना तैयार की है।" \*\*

हाल में संयुक्त राज्य अमरीका की आक्रामक गतिविधियों का तीव्रीकरण इतना प्रचंड हो गया है

\* The Daily Telegraph, Feb. 16, 1982, p. 5.

\*\* The Washington Post, Feb. 15, 1982, p. A14.



कि इस समय वे नीकारागुआ में प्रत्यक्ष सैनिक हस्तक्षेप के कवर पर पहुंच गयी हैं। मनोवैज्ञानिक दबाव बढ़ाने और खुला सैनिक टकराव भड़काने के इरादे से अमरीकी राष्ट्रपति ने जून, १९८३ में ६,००० नौसैनिकों को लेकर अमरीकी नौसेना के एक विशाल बेड़े को इस छोटे से मध्य अमरीकी देश के तटों की ओर जाने का आदेश दिया। इसी के साथ-साथ वाशिंगटन ने अपनी आक्रामक योजनाओं के कार्यान्वयन में उसका प्रस्थान-स्थल और आज्ञाकारी साधन की हैसियत से उपयोग करने के लिए हांदुरास को भारी सैनिक सहायता और आर्थिक अनुदानों की मंजूरी दी। वाशिंगटन का मुक्त युद्ध अधिकाधिक स्पष्टतापूर्वक बाकायदा खुले युद्ध का स्वरूप ग्रहण करना शुरू कर चुका है।

१९८३ के अंत में वाशिंगटन द्वारा सिखाये और हथियारबंद किये हुए प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों ने नीकारागुआ की नागरिक आबादी के खिलाफ नये जघन्य अपराध किये। हांदुरास से हिनोतेगा डिपार्टमेंट में घुस आये २००० क्रांतियों ने खेतों में काम कर रहे १७ किसानों को मीत के घाट उतार डाला। एक दूसरे गिरोह ने, जो सेलाई डिपार्टमेंट में घुस आया था, कैथोलिक बिशप सैल्वादोर स्लैफर की निर्मम हत्या की (प्रसंगतः स्लैफर अमरीकी नागरिक थे)।

नीकारागुआ के खिलाफ प्रच्छन्न युद्ध के अमरीकी सूत्रधारों ने भाड़े के हत्यारों की कार्रबाइयों को सक्रिय बनाने के लिए यह वक़्त अफ़सोसही नहीं चुना है।

बात यह है कि नवंबर से लेकर फ़रवरी तक हिनोतेगा, मतागाल्प और नूएवा सेगोविया डिपार्टमेंटों में, अर्थात देश के उत्तर-पश्चिमी भाग के बनावझादित पहाड़ी इलाकों में, जहाँ प्रतिक्रांतिकारी गिरोह कहीं ज्यादा आसानी से अपना काम कर सकते हैं, कॉफ़ी की फसल बटोरी जाती है। कॉफ़ी बाग़ानों में किसानों के साथ मजदूर और विश्वार्थी स्वयंसेवकों की टोलियां भी काम कर रही होती हैं। स्थानीय निवासियों और उनकी मदद करने आये हुए स्वयंसेवकों को आतंकित करना और इस तरह देश के लिए कपास जैसी ही महत्वपूर्ण निर्यात की वस्तु तथा विदेशी मुद्रा की कमाई के मुख्य स्रोत कॉफ़ी की फसल के बटोरे जाने में बिघ्न डालना प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों के धारों का परंपरागत लक्ष्य रहा है।

इस बार हिनोतेगा डिपार्टमेंट में घुस आये सामोजादियों की तादाद इतनी बड़ी थी कि स्पष्टतः उनके सामने एक और लक्ष्य भी रखा गया था : किसी बड़े आबादी केंद्र पर कब्ज़ा करके वहाँ "अस्थायी सरकार" की स्थापना की घोषणा कर देना, जो फिर तुरंत ही "सहायता" के लिए संयुक्त राज्य अमरीका से और हांदुरास, सल्वादोर तथा ग्वाटेमाला की अमरीका-समर्थक सरकारों से अपील करती।

सामोजादियों की बड़ी भारी संख्या के बावजूद सीमावर्ती डिपार्टमेंटों में तैनात रिजर्व फ़ौज की बटालियनों और प्रादेशिक जन-मिलिशिया के दस्ते उनका सफलतापूर्वक मुकाबला कर रहे हैं।

प्रतिक्रान्तिकारी सामोबाइयों के रक्तपातपूर्ण अपराध खौफ नहीं, बल्कि नफ़रत के बीज बो रहे हैं। नीकारागुआ की जनता वाशिंगटन के भाड़े के टट्टुओं की तोड़फोड़ की कार्रवाइयों और संयुक्त राज्य अमरीका के सैनिक हस्तक्षेप के सतरे का मुंहतोड़ जवाब दे रही है।

अक्तूबर, १९८२ में ग्रेनाडा पर अमरीकी सैन्य-वाहियों के आपराधिक सशस्त्र आक्रमण से सारे विश्व में सौम की प्रचंड लहर दौड़ गयी। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के इस कृत्य को रोक ठहराने की कोशिश में ह्वाइट हाउस ने घोषणा की कि ग्रेनाडा के खिलाफ सशस्त्र कार्रवाई करने का निर्णय २२ अक्तूबर को पूर्वी कैरीबियन राज्यों के संगठन के पांच देशों से ग्रेनाडा में व्यवस्था तथा जनतंत्र की "बहाली" में मदद करने की "आधिकारिक अपील" पाने के बाद किया गया था।

किंतु अनगिनत तथ्य साक्षी हैं कि वाशिंगटन ने आक्रमण की योजनाएं पहले से बनायी हुई थीं। उदाहरण के लिए, एन० बी० सी० टेलीविजन पर प्रसारित एक भेंटवार्ता में प्रतिरक्षा मंत्री कैस्पेर वाइनबर्गर ने खुलेआम कहा कि अमरीकी त्वरित विनियोजन सेना (रैपिड डिप्लॉयमेंट फ़ोर्स) की ८२ वी पैरा डिविजन की टुकड़ियां २६ अक्तूबर को ग्रेनाडा में "पहले से निर्मित योजना" के अनुसार उतरी थीं। इस "पहले से" मतलब एक हफ्ता या एक महीना ही पहले ही नहीं था।

पैटागॉन के अधिकारियों के अनुसार (इस बारे

में स्पेनी समाचार एजेंसी ए० एफ० ए० ने सूचित किया था) ग्रेनाडा पर आक्रमण की तैयारियों में प्लेटों-रीको ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। वह अमरीकी क्राइजों का सहायक अट्टा और परीक्षण स्थल बना। ग्रेनाडा भेजे जाने से पहले मैरीन सैनिक संयुक्त राज्य अमरीका से प्लेटों-रीको के एक अट्टे पर भेजे गये थे, जहां वे कुछ समय तक रहे। एडोसी बारबैडोस में स्थित तथा-कथित ग्रेनाडाई जनतांत्रिक आंदोलन गरमियों में ही सक्रिय बन गया था। फ्रांसिस अलेक्सिस नामक उसके सरपन्ता ने वाशिंगटन की जी-हूजरी करते हुए तभी घोषित कर दिया था कि वह ग्रेनाडा में जिस "सरकार" की स्थापना का स्वप्न देख रहा है, उसका विदेश नीति के क्षेत्र में पहला काम "सोवियत संघ, क्यूबा और लीबिया के साथ संबंध-विच्छेद करना" होगा। इसके अलावा, आक्रमण से छः हफ्ते पहले भूतपूर्व ग्रेनाडाई तानाशाह गैरी ने भी बारबैडोस की यात्रा की थी और कहा था कि अपने चारवर्षीय "वनवास" के बाद वह अब शीघ्र ही ग्रेनाडा लौटने और सत्ता की बागडोर फिर से सभालनेवाले है।

वाशिंगटन की जेब में कुछ अन्य कठपुतलियां भी थीं, जैसे, मिसाल के लिए, ग्रेनाडा के गवर्नर-जनरल स्कून। उनमें से बहुत से चार साल से, यानी मार्च, १९७६ में जब अमरीका-समर्थक तानाशाह गैरी की सरकार उलट दी गयी थी, तभी से सत्ता की बागडोर फिर से धामने की तैयारियां कर रहे थे।

ग्रेनाडा की क्रांति को अपने पहले दिनों से ही

मॉरिस बिशप की सरकार के अस्थिरकरण और पुराना शासन फिर से कायम करने की निरंतर कोशिशों का सामना करना पड़ रहा था। और ऐसी हर कोशिश के पीछे अनिवार्यतः संयुक्त राज्य अमरीका का हाथ होता था। १९८० के जून महीने में अमरीकी गुप्तचर सेवाओं ने ग्रेनाडा की राजधानी सेंट जॉर्ज्स में एक विशाल सार्वजनिक सभा के दौरान सरकारी मंच के नीचे बम रखवाकर विस्फोट करवाया था। फिर उसी साल के अंत में सी० आई० ए० के दो और षड्यंत्रों का भंडाफोड़ हुआ। जून, १९८१ में ग्रेनाडा की सुरक्षा सेवाओं को पता चला कि २६ आदमियों के एक प्रतिश्रुतिकारी दल ने बारबैडोस में सी० आई० ए० के रेजीडेंट ऐग्रेसिव विल्स के साथ संपर्क कायम किये हुए हैं। यह दल 'ग्रेनैडियन बॉइस' नामक एक गुप्त रूप से प्रकाशित समाचारपत्र के जरिए आतंक तथा हिंसा की कार्रवाइयां करने और बिशप की सरकार को उलटने की अर्पीतें जारी किया करता था। तब से ऐसी और भी अनेक साजिशों का परदाफाश हुआ।

ग्रेनाडा में घरेलू प्रतिक्रियावादी तत्वों की, जो काफ़ी कमजोर थे, सफलता की आशा न होने पर भी संयुक्त राज्य अमरीका ने अंतर्ध्वसात्मक आतंकवादी कार्रवाइयों पर भरोसा करना छोड़ा नहीं और इस नज़्दे से देश के खिलाफ अपना प्रचार-अभियान पूरे जोर-शोर से जारी रखा।

हर महीने प्रेस में सी० आई० ए० के पैसों से लिखे हुए और देश की क्रान्तिकारी प्रक्रिया के सार

को विकृत रूप में पेश करनेवाले १७० तक ग्रेनाडा-विरोधी लेख छपते थे। इस अंतर्ध्वसात्मक प्रचार में सबसे आगे-आगे 'बॉइस ऑफ एमेरीका' था, जो एंडीगुआ द्वीप पर स्थित शक्तिशाली ट्रांसमिटर को इस्तेमाल करता था।

इसी बीच संयुक्त राज्य अमरीका में ग्रेनाडा से भागकर आये हुए प्रतिक्रियावादी भाड़े के सैनिकों की फौज भी बढ़ी करने लगे। इस फौज के लिए सी० आई० ए० ने दो चरणों में संपन्न की जानेवाली एक विशेष कार्रवाई-योजना बनायी: पहले भाड़े के सैनिकों को ध्यान बंटाने के लिए टोमीनीक पर उतरना था और फिर छोटे-छोटे गिरौह करके ग्रेनाडा में घुसना था।

फिर भी ग्रेनाडाविरोधी योजनाओं में वाशिंगटन ने मुख्य स्थान अपनी फौजों को ही दिया हुआ था। ग्रेनाडा के तट के निकट अमरीकी नौसेना नियमित रूप से युद्धाभ्यास करती थी। १९८१ में फ्लेटो-रीको के पास बड़े पैमाने पर उक्सावापूर्ण युद्धाभ्यास किये गये, जो, पर्यवेक्षकों के अनुसार, अमरीकी सैनिक आक्रमण का पूर्ण पूर्वाभ्यास थे। बाद में स्वातंत्र्यामो (क्यूबा) सैनिक अड़े पर भी ग्रेनाडा के समुद्र-तट से मिलती-जुलती जगहों पर मैरीन सैनिक उतारने के अभ्यास किये गये।

ग्रेनाडा पर कब्ज़ा कर लेने के बाद संयुक्त राज्य अमरीका अब वहाँ अरसे तक जमे रहने के अपने इरादे को छिपा नहीं रहा है। द्वीप पर "व्यवस्था

बनाये रखने" के लिए वहाँ कई सौ सैनिकों की एक अमरीकी गैरीज़न रहने दी गयी है। औपचारिकतः वह तथाकथित कैरीबियन शांति-स्थापना सेना का अंग होगी, जिसे वाशिंगटन ने येनाडा पर अपने आक्रमण को "अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई" की शकल देने के लिए कैरीबियन क्षेत्र के अमरीका-समर्थक राज्यों के सैनिकों से बनाया था।

येनाडा की जनता इन कुछ महीनों में ही "अमरीकी नमूने के जनतंत्र" की निर्यात की जानेवाली किस्म के सभी आकर्षणों से बाकिफ्र हो चुकी है: बमबारियाँ, जनसंहार, गैरकानूनी गिरफ्तारियाँ, कंसंट्रेशन कैंप, पूछ-ताछ और यंत्रणाएँ, ऐसे हर किसी की मीत, जो आक्रामक का प्रतिरोध करने का दुस्ताहस करता है...

हाल के समय में लातीनी अमरीका से ऐसे राजनीतिक कार्यकर्ताओं, शासनाध्यक्षों और वीर्यस्थ जनरलों तक के साथ, जिन्हें वाशिंगटन अवाञ्छनीय समझता है, "दुर्घटनाओं" के होने के समाचार समय-समय पर मिलते रहे हैं। आखिर दुर्घटना तो दुर्घटना ही है, जो किसी के साथ भी हो सकती है। राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों, जनरलों और ऐडमिरलों की हवाई जहाज, रेल अथवा कार दुर्घटनाओं में मृत्युएँ पहले भी हो चुकी हैं। फिर भी, पनामाई नेशनल गार्ड के कमांडर ओमार तोरीहोस, एक्बादोर के राष्ट्रपति हाइमे रोल्दोस और पेरू की स्थल सेना के प्रधान सेनापति जनरल रफ़ाएल होयोस रुबियो की मृत्युओं के प्रसंगों में कई तथ्य ऐसे हैं, जिनसे यह संदेह होता है कि ये

दुर्घटनाएँ नहीं थी। सभी मृतक पूरे लातीनी अमरीका में राष्ट्रीय-जनवादी हलकों के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि थे, जो अमरीकी इजारों द्वारा अपने देशों के राष्ट्रीय संसाधनों की लूट का जोरों से विरोध करते थे और संयुक्त राज्य अमरीका से स्वतंत्र विदेश नीति के पक्ष में थे।

तीनों ही मामलों की जांच के लिए स्थापित आधिकारिक आयोग इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि दुर्घटनाओं के कारणों का सटीक निश्चय नहीं किया जा सकता। इधर, पूरे लातीनी अमरीका में यह विदवास बहुत व्यापक है कि ये कोई आकस्मिक घटनाएँ नहीं, बल्कि आतंकवादी कार्रवाइयाँ थीं।

जनरल तोरीहोस की मृत्यु होने के साथ अमरीकी विदेश मंत्रालय ने घोषणा की कि कोई भी अमरीकी अभिकरण उससे संबद्ध नहीं है। यह घोषणा जिस तेजी के साथ की गयी थी, वह संदेह पैदा करती है और इस संदेह की अमरीकी शासक हलकों द्वारा इस "भटके हुए" जनरल को रास्ते से हटाने के प्रयासों से पुष्टि होती है, जिसने पनामा नहर और नहर क्षेत्र की पनामाई जनता को वापसी के लिए, जो एक पूरी तरह से जायज मांग थी, जोरों से आंदोलन किया था।

निकारागुआई समाचारपत्र 'ला प्रेन्सा' के अनुसार १९७३ में ही सी० आई० ए० ने कोबीनोस की साड़ी के विप्लव हमले के एक मयुबार्द प्रशिक्षांतिकारी नेता को जनरल तोरीहोस की हत्या के लिए विशेष टोली बनाने

का आदेश दे दिया था। हत्यारों को लैंग्ली से आदेश हॉवर्ड ई० हंट के जरिए मिलते थे—यह वही आदमी है, जो वाटरगेट कांड से प्रत्यक्षतः संबद्ध था।

अमरीकी प्रेस में इस आशय की खबरें छपी हैं कि वाटरगेट कांड की जांच के दौरान जनरल तोरीहोस की हत्या करने की एक योजना का भी पता चला था।

अमरीकी हुक्मरान पिछले कुछ समय से जनरल तोरीहोस द्वारा मध्य अमरीकी देशों, सर्वोपरि नीकारागुआ और सल्वादोर, के जनगण के न्यायसंगत संघर्ष को प्रदत्त समर्थन से खासकर बहुत नाराज थे। कई जानकार अमरीकी अधिकारी जनरल की मृत्यु में सी० आई० ए० का हाथ होने के बारे में खुलेआम इशारा करते हैं। मिसाल के लिए, भूतपूर्व अमरीकी ऐटोर्नी जनरल रैमंडो क्लार्क ने मेक्सिको की राजधानी में वहाँ के वकीलों की एक सभा में भाषण देते हुए कहा कि इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि जनरल तोरीहोस जिस पनामाई हवाई जहाज में सफ़र कर रहे थे, उसके साथ हुए हादसे के पीछे सी० आई० ए० का हाथ था।

वह विमान-दुर्घटना भी रहस्य बनी हुई है, जिसमें एक्वादोर के राष्ट्रपति हाइमे रोल्दोस मारे गये थे। इस दुर्घटना की जांच के दौरान एक्वादोरी प्रतिरक्षा मंत्रालय ने एक विशेष दस्तावेज तैयार की, जिसमें राष्ट्रपति रोल्दोस के प्रति अमरीकी शासक हलकों और तेल इजारों के अत्यधिक नकारात्मक रवैये

का उल्लेख किया गया है। ह्याइट हाउस राष्ट्रपति रोल्दोस के एक्वादोरी राजकीय पेट्रोलियम निगम को बनाये रखने और मजबूत करने के प्रयासों से विशेषकर चिढ़ा हुआ था। अमरीकी प्रशासन एक्वादोर की राजधानी कीतो में तातीनी अमरीकी मानवाधिकार संघ के मुख्यालय की स्थापना, रोल्दोस द्वारा नीकारागुआ तथा सल्वादोर में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के समर्थन और संयुक्त राज्य अमरीका की अपनी पिछली पावा के समय अवज्ञापूर्ण रवैये से भी नाराज था। प्रतिरक्षा मंत्रालय की दस्तावेज स्पष्टतया कहती है कि क्यूबा में एक्वादोरी दूतावास पर असामाजिक तत्वों के आक्रमण को, जो अमरीकी गुप्तचर सेवाओं द्वारा संगठित किया गया था, और संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा तेल निक्षेपों से संबंधित पेरू-एक्वादोर सीमांत विवाद को प्रच्छन्न प्रोत्साहन दिये जाने को वाशिंगटन के रोल्दोस पर दबाव डालने के प्रयास मानना चाहिए।

सापोतीलो प्रदेश, जहाँ जहाज गिरा था, के एक गादरी द्वारा प्रदत्त साक्ष्य यही दिखलाता है कि राष्ट्रपति रोल्दोस जिस बीचकाष्ट हवाई जहाज पर सवार थे, वह बहुत करके किसी शक्तिशाली विस्फोट के परिणामस्वरूप दुर्घटनाग्रस्त होकर गिरा था। एक्वादोरी समाचारपत्र 'एल ऊनीवर्सो' में प्रकाशित यह साक्ष्य दिखलाता है कि पहाड़ पर गिरने के पहले जहाज बीच हवा में ही विस्फोटित हो गया था। दुर्घटना के दो और प्रत्यक्षदर्शी अचानक "सायब" हो गये।

एक और अप्रत्यक्ष प्रमाण भी इस तथ्य की ओर

इंगित करता है कि राष्ट्रपति के विमान की दुर्घटना बहुत करके एक पूर्वनियोजित आतंकवादी कार्रवाई थी। दुर्घटना के ठीक पहले एक्वाडोर में चिलीआई राजदूत ने एक स्वागत समारोह में संयोग से कहा था कि शीघ्र ही “कोई असाधारण बात” होनेवाली है। यह भविष्यवाणी अगले ही दिन सच्ची हो गयी।

अमरीकी तेल इजारे पेरू की स्थल सेना के प्रधान सेनापति जनरल रफाएल होयोस रुबिओ से भी इतने ही अप्रसन्न थे। वह उन राष्ट्रवादी सेनाधिकारियों में थे, जो अक्टूबर, १९६८ में सत्ता में आये थे और जिन्होंने अमरीकी इजारे इंटरनेशनल पेट्रोलियम कंपनी की पेरुआई सहायक कंपनी को राष्ट्रीकृत करके राष्ट्रीय तेल कंपनी पेरो पेरू की स्थापना की थी तथा अमेज़ोन नदी की घाटी में तेल पूर्वक्षेपण संगठित करने और पेरू के सामाजिक-आर्थिक विकास के हितों में तेल के निष्कर्षण और सुक्तियुक्त उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए काफी कुछ किया था।

जनरल रुबिओ की मृत्यु की जांच करने के लिए स्थापित सरकारी आयोग इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जनरल रुबिओ जिस हेलीकॉप्टर में सफ़र कर रहे थे, उसके चालक को इस मोडेल के यान को उड़ाने का कोई अनुभव न था। यह भी पता चला कि हेलीकॉप्टर सुरक्षा नियमों के विरुद्ध कहीं अधिक ईंधन लिये हुए था। यह सर्वथा संभव है कि ऐसी “असावधानी” सांयोगिक नहीं थी।

इन तीनों दुर्घटनाओं से संबद्ध बहुत से तथ्य अब

भी अस्पष्ट हैं। लेकिन लातीनी अमरीकी देशों में प्रगतिशील जनमत के पास यह विश्वास करने के ठोस आधार है कि इनमें बहुत करके सी० आई० ए० का हाथ था। लातीनी अमरीका के निवासी सी० आई० ए० के तौर-तरीकों से सुपरिचित हैं।



## घड़्यंत्रों का पुंजोत्पादन

"संयुक्त राज्य अमरीका सामान्यतः अन्य राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता, न वह अतिशय दबाव या धमकियों का ही प्रयोग करता है।... हो सकता है कि बहुत ही विशेष अवस्थाओं में संयुक्त राज्य अमरीका ने गुप्त विधियों का उपयोग किया हो; और अगर उसने ऐसा किया है, तो उसके उदाहरण बहुत ही विरल हैं। सौविधों के विपरीत, संयुक्त राज्य अमरीका ऐसे गुप्त हस्तक्षेपों का वैदेशिक संबंधों में अपने सामान्य व्यवहार के अंगस्वरूप प्रयोग नहीं करता।"\*

ये शब्द रॉबर्ट कुवाल के हैं, जो एक प्रमुख अमरीकी सैनिक तथा राजनीतिक योजनाविशेषज्ञ हैं। इतिहास की रचना भी जानकारी रखनेवालों को ये शब्द अनर्गल प्रतीत होंगे। इसके बावजूद इस तरह के कथन हाल के समय में अमरीकी प्रेस में अधिकाधिक प्रायिकता के साथ प्रकट हो रहे हैं। तत्कालीन अंत-

राष्ट्रीय आतंकवादविरोधी संघर्ष में थूँक अब अमरीकी विदेश नीति में प्रमुख स्थान ले लिया है, इसलिए वाशिंगटन इसके लिए एडी-चोटी का जोर लगा रहा है कि लोग सी० आई० ए० के पिछले कारनामों को भूल जायें और हाल के इतिहास को ह्वाइट हाउस की मौजूदा मुहिमबाजी के अनुकूल रोशनी में देखें।

लेकिन क़ैसन की ही तरह राजनीति में भी नया सुविस्मृत पुरातन ही होता है और इसके लिए सिर्फ़ बीते कल की तरफ़ ज़रा ध्यान से ही देखना होता है कि तत्क्षण इसका पता लग जाता है कि आज जो हो रहा है, उसका कल की घटनाओं से क्या संबंध है।

आइये, तथ्यों की तरफ़ मुड़े और उस समय पर वापस आयें कि जब सी० आई० ए० ने मध्य-पूर्व में "कूटराजनय" (अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद को लेगली द्वारा दिया गया नाम) में पहले डग भरने शुरू किये थे।

तेल-संपदा से परिपूर्ण और सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण पश्चिम एशिया और मध्य-पूर्व १९४७ में संयुक्त राज्य अमरीका के केंद्रीय गुप्तचर अभिकरण-सी० आई० ए०-की स्थापना के समय से ही उसके ध्यान का केंद्रबिंदु रहा है। चालीस के दशक के अंत में इराक़ में अमरीका की स्थिति का सुदृढ़ीकरण वाशिंगटन के लिए विशेष महत्व का विषय बन गया था, जिस पर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से अमरीकी तेल द्वारे अपनी विद्रुष्टि लगाये हुए थे। एक्समोन कंपनी के प्रतिनिधि हॉवर्ड पेज इन

\* *Conflict and Cooperation in the Persian Gulf*, Ed. by Mohammed Mughisuddin, Praeger Publishers, New York and London, 1977, p. 171.

दिनों बसादाद के अकसर चक्कर लगाया करते थे, जो अमरीकी विदेश विभाग के लिए फ़ारस की खाड़ी के देशों में आंतरिक स्थिति के बारे में सूचना के मुख्य स्रोत थे। सी० आई० ए० केंद्र अमरीकी मिशन का ही एक हिस्सा था और उसमें बहुत थोड़े ही लोग काम करते थे—उसने इराक़ में अपना काम अभी शुरू ही किया था। वह स्थानीय एजेंटों को भरती कर रहा था और देश के आर्थिक, सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपने लोगों की घुसपैठ करवा रहा था।

“इराक़ में सी० आई० ए० केंद्र के उस हिस्से में, जो राजनयिक आवरण के नीचे काम करता था, “अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी विल्बर केन ईवर्लेड पुनः स्मरण करते हैं, “इतने कम कर्मों थे कि उसके दोनों सचिवों तक को सूचना आदान-प्रदान और एजेंटों के साथ निरापद जगहों में मुलाकातों की व्यवस्था करनी पड़ती थी।” \*

लेकिन यह तो विलकुल आरंभ की बात है। अपनी पुस्तक ‘रेत की रस्सियाँ। मध्य-पूर्व में अमरीका की विफलता’ में ईवर्लेड सी० आई० ए०-कर्मियों की गतिविधियों की व्यापक भांकी प्रस्तुत करते हैं, जो राजनयज्ञ, कॉलेज अध्यापक और पुरातत्वज्ञ होने का दिखावा करते थे और मध्य-पूर्व के अमरीकी मित्र \*\*

\* Wilbur Crane Eveland, *Ropes of Sand, America's Failure in the Middle East*, W. W. Norton & Co., London 1980, p. 46.

\*\* मध्य-पूर्व के अमरीकी मित्र संगठन की स्थापना १९११ में हुई थी। मित्र, शाम, मोरक्को, ट्यूनीसिया, लीबिया और जॉर्डन

नामक “नागरिक” संगठन के आवरण का भी उपयोग करते थे। इराक़ में सी० आई० ए० सरकारविरोधी व्यवस्थाभंजक कार्यों में सक्रिय थी। इराक़ में सी० आई० ए० केंद्र-प्रमुख डिक केरिन इराकी सैनिक अफ़सरों की—उन्हें बाद में अपने कामों के लिए भरती करने के इरादे से—व्यक्तिगत फ़ाइलें रखा करते थे और बुद्धिजीवियों तथा छात्रों में विरोधपक्षीय हलचलों का ध्यानपूर्वक अनुसरण करते थे।

सी० आई० ए० के धीरे-धीरे, किंतु सुस्थिरतापूर्वक, एक सरकारी गुप्तचर्या अभिकरण से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के एक कारगर उपकरण में उद्विकसित होते जाने के साथ-साथ अमरीकी “शक्ति-राजनय” के केंद्रबिंदु लैंगनी की एक ऐसे “मजबूत आदमी”—नेता—की खोज भी अधिकाधिक बढ़ती गयी, जो न केवल बड़े पैमाने पर ध्वंसकार्य को आवश्यक और औचित्यपूर्ण बनाने का संकल्पनात्मक आधार ही निरूपित कर सकता हो, बल्कि जिसे सत्ता के उच्चतर सौपानों में इतनी प्रभुत्वपूर्ण स्थिति भी प्राप्त हो कि वह ध्वंसकार्यों को एक सिलसिलेवार काम में बदल सके।

ऐसे आदमी की ज़रूरत को “महाजासूस” और “कूटराजनय के राजा” एलेन डलेस ने पूरा किया, जो १९४१-५३ में सी० आई० ए० के उपनिदेशक के में इसकी शाखाएं थी। संयुक्त राज्य अमरीका तथा अरब विश्व के बीच सांस्कृतिक-नीतिक घुंघरी को सुड़क करने के आवरण के पीछे इस संगठन के कलंककारी ध्वंसकार्य और जासूसी करते थे। सी० आई० ए० के कैमिट (किम) कज़बेल्ड इस संगठन के प्रधान थे।

पद पर रहे थे और १९५३ में उसके निदेशक बने। उनकी पदोन्नति जनवरी, १९५३ में उनके अग्रज जॉन फ्रॉस्टर डलेस के संयुक्त राज्य अमरीका के विदेश मंत्री पद पर नियुक्ति के साथ घनिष्ठतः संबद्ध थी। इस प्रकार विदेश विभाग और सी० आई० ए० का नेतृत्व अब एक ही कुन्वे का कारबार बन गया। हिंसा और आतंकवाद के उत्कट समर्थक इन दोनों भाइयों ने कुछ ही समय के भीतर व्यवस्थाभंगन, अंतर्ध्वंस और राजनीतिक हत्याओं के आपराधिक सिंडीकेट को पूरी तरह से क्रियाशील कर दिया।

व्याधिकीय कम्युनिज्मविरोध डलेस बंधुओं की एक और सामान्य सहज प्रवृत्ति थी, जो, स्वाभाविकतया, उनके विदेशनीतिक कार्यक्रमों की आधारशिला बन गयी। डलेस बंधुओं की भू-राजनीति में पश्चिम एशिया और मध्य-पूर्व का बिलकुल आरंभ से ही बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा।

मई, १९५३ में जॉन फ्रॉस्टर डलेस ने मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया का दौरा किया। दौरे का औपचारिक लक्ष्य अमरीकी सहायता के बारे में विचार-विमर्श करना था, पर वास्तव में वह दीर्घकालीन अमरीकी रणनीति को निरूपित करने के प्रयोजन से इन देशों में स्थिति का जायजा लेना चाहते थे। जॉन फ्रॉस्टर डलेस की अपेक्षानुसार इसका आधार सोवियत संघ के विरुद्ध निदेशित आक्रामक सैन्य गुट होना चाहिए था। विल्बर ईवलेड ने लिखा है: "उनका दूसरा प्राथमिक ध्येय मध्य-पूर्वी राज्यों की 'उत्तरी

पांत' के जनगण की कम्युनिज्म से रक्षा करने में सहायता करना था।" \* तुर्की, ईरान और पाकिस्तान को अमरीकी सहायता की पेशकश करके डलेस ने इंगित किया कि इस सहायता का लक्ष्य "स्वतंत्र विश्व" के लिए सतारा पेश करनेवाली शक्तियों का विरोध करने के लिए उनकी पारस्परिक प्रतिरक्षा को मजबूत करना है।

विदेश मंत्री के कार्यक्रम को कार्यरूप देने के लिए उनके भाई एलैन डलेस औरन ही आगे आ गये, जिन्हें मध्य-पूर्वी मामलों का लंबा अनुभव था। एक पेशेवर राजनीतिज्ञ परिवार के सदस्य एलैन डलेस पहले विश्वयुद्ध के बाद बर्लिन और कुस्तुतुनिया में अमरीकी दूतावासों में काम कर चुके थे और बाद में अमरीकी विदेश मंत्रालय की मध्य-पूर्व शाखा के प्रमुख रहे थे। सी० आई० ए० के निदेशक बनते ही उन्होंने सबसे पहले अपने ऐसे सभी पुराने संपर्कों-संबंधों को फिर से स्थापित किया, जो मध्य-पूर्व के सी० आई० ए० की योजनाओं में एक सर्वप्रमुख स्थान ग्रहण लेने के बाद अब इतने उपयोगी सिद्ध हो सकते थे।

उत्तरकालीन लॉरेंस ऑफ़ अरेबिया \*\* की भूमिका अदा करने के लिए डलेस के दाहिने हाथ कैमिंट (किम)

\* Wilbur Crane Eveland, *op. cit.*, p. 65.

\*\* ब्रिटिश गुप्तचर सेवा के विख्यात एजेंट जर्नेल टोमस एडवर्ड लॉरेंस (१८८८-१९३५), जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के बाद तुर्क साम्राज्य के विघटन और ज़रब देशों को ब्रिटिश प्रभाव-क्षेत्र में लाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की थी। -सं०

रूजवेल्ट को चुना गया, जिनका अमरीकी गुप्तचर्या द्वारा मध्य-पूर्व में किये गये कितने ही कुकृत्यों से सीधा संबंध रहा था। किम रूजवेल्ट संयुक्त राज्य अमरीका के १९०१ से १९०६ तक राष्ट्रपति और अपने द्वारा १९०३ में उद्घोषित "महादंड नीति" अथवा "शक्ति प्रदर्शन नीति" के प्रणेता थिओडोर रूजवेल्ट के पोते थे। अरब विश्व की रंग-रंग से परिचित प्राच्यविद् किम रूजवेल्ट को विभिन्न सांस्कृतिक मिशनों का आवरण की तरह से उपयोग करने का शौक था। ध्वंसकार्यों के निरूपण और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भाग लेते हुए किम रूजवेल्ट ने जल्दी ही सी० आई० ए० के समस्त मध्य-पूर्वी मामलों को अपने हाथों में ले लिया। वैसे तो ध्वंसकार्य बहुत से, पर इनमें से सबसे गहिँत यह था, जिसने किम रूजवेल्ट के शानदार कैरियर को बनाया, और यह था - ऑपरेशन एजेक्स - ईरान की विधिसम्मत सरकार का उलटा जाना।

पचास के दशक के आरंभ में ईरान में स्थिति बहुत ही संगीन थी। राजनीतिक रंगभूमि में राष्ट्रीय मोरचा सबसे आगे आ गया था, जिसके नेता कूर्जुआ-उदार राष्ट्रवादी डॉक्टर मोहम्मद मुसद्दिक थे। मोरचे में राष्ट्रवादी कूर्जुआ और भूस्वामी गुट शामिल थे, जो अपने देश में ब्रिटेन के बोलबाले का विरोध करते थे। ईरान को ब्रिटिश एकाधिकारी प्रभुत्व से मुक्त करवाने के प्रयास में मार्च, १९५३ में मुसद्दिक ने मजलिस (संसद) से आंग्ल-ईरानी तेल कंपनी को

राष्ट्रीयकृत करने के विधेयक का अनुमोदन प्राप्त कर लिया। लोकप्रिय ईरानी प्रधान मंत्री की ब्रिटिश उपनिवेशवाद के बर्खस को चोट पहुंचानेवाली देशानुरागी नीति को वांशिंगटन में ईरान में बढ़ते अमरीकी प्रभाव के लिए सतरा माना गया। ईरानी प्रतिक्रियावादियों को अपने साथ मिलाकर सी० आई० ए० और ब्रिटिश गुप्तचर्या ने बलात सत्ता-परिवर्तन की योजना तैयार की। पहला प्रयास असफल रहा और शाह रजा मोहम्मद पहलवी को कुछ समय के लिए देश से पलायन करना पड़ा। वह भागकर पहले बगदाद गये और फिर रोम पहुंचे, जहां वह एक्सेलसिअर होटल में आराम से ठहर गये और अपनी बेगम सुरैया के लिए मूल्यवान उपहार खरीदने में अपना समय बिताने लगे। उनके ही कथन के अनुसार, वह इस इंतजार में थे कि लोग अपना चयन कर लें।

लेकिन चयन जनता ने नहीं, बल्कि ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका के तेल एकाधिकारियों ने किया - और वह मार्च के राष्ट्रीयकरण अधिनियम के बाद नहीं, बल्कि उसके तनिक पहले, जब तेल सम्राटों ने समझ लिया कि मुसद्दिक के साथ उनका खेल नहीं बैठ पायेगा।

बात के जरा विस्तार में चलें।

संयुक्त राज्य अमरीका में १९५२ के राष्ट्रपति चुनाव के कुछ ही पहले किम रूजवेल्ट को लंदन आमंत्रित किया गया, जहां उन्होंने ब्रिटिश गुप्तचर्या प्रमुखों के साथ मुसद्दिक सरकार को उलटने की उस योजना के

व्यौरों पर विचार किया, जिसका उन्हें निदेशन करना था। कुछ दिन बाद वह एलैन डलेस से बदस्तूर टेनिस कोर्ट पर मिले और उन्हें बताया कि तैयारियाँ पूरी जोरों के साथ चल रही हैं। लेकिन डलेस ने, जो उस समय सी० आई० ए० के उपनिदेशक ही थे, उन्हें राष्ट्रपति आइज़नहावर के सत्ता ग्रहण करने तक ठहरने की सलाह दी, जिनके प्रशासन में वह मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० के प्रच्छन्न युद्ध में एकदम तेजी लाने की सोच रहे थे।

डलेस का सोचना सही निकला। ३ फरवरी, १९५३ को ब्रिटिश गुप्तचर्या के प्रतिनिधि विदेश मंत्री जॉन क्रॉस्टर डलेस, उनके भाई और अब सी० आई० ए० निदेशक एलैन और भूतपूर्व सी० आई० ए० निदेशक जनरल वाल्टर बेटेल स्मिथ जैसे उच्चस्तरीय अमरीकी अधिकारियों के साथ एक गुप्त बैठक में भाग लेने के लिए वाशिंगटन पहुंचे। बैठक में किम रूजवेल्ट को ऑपरेशन एबैक्स का मुख्य संचालक बनाने के विचार का अनुमोदन किया गया और स्थिति का अध्ययन करने के लिए उन्हें तुरंत ईरान भेजने का फैसला किया गया।

थोड़े ही दिन बाद किम रूजवेल्ट तेहरान पहुंच गये। वहां उनका फौरन दो ईरानियों के साथ संपर्क हुआ, जिन्हें गुप्तचर्या कार्य का अनुभव था और उन्हें उन्होंने भूट का पता चलानेवाली मशीन पर परीक्षण से गुजरने और प्रस्तावित षड्यंत्र में प्रशिक्षण पाने के लिए अमरीका भेज दिया। उस समय ईरान में अमरीकी

राजदूत लॉय हैडरसन तथाकथित "सोवियत खतरे" का तुमार खड़ा कर रहे थे। उन्होंने वाशिंगटन को रिपोर्ट भेजी कि "सोवियत संघ और अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म से हमदर्दी रखनेवाले ही उससे खुश हो सकते हैं, जो ईरान में इस समय हो रहा है।"\*

मार्च में पारित आंग्ल-ईरानी तेल कंपनी को राष्ट्रीयकृत करने के अधिनियम और अमरीकी राजदूत की दूरी प्रकार की भड़कानेवाली रिपोर्टों के फलस्वरूप त्रासद परिणति निकट आती गयी।

अमरीकी इतिहासकार बैरी रूबिन लिखते हैं: "इस परिस्थिति और प्रच्छन्न कार्रवाई के लिए ईडन और चर्चिल के सशक्त व्यक्तिगत समर्थन को देखते हुए अमरीकी सरकार ने अपना निर्णय ले लिया।..."\*\*

ऑपरेशन एबैक्स के लिए "लाइन क्लियर" २९ जून, १९५३ को जॉन क्रॉस्टर डलेस के कार्यालय में हुए एक गुप्त सम्मेलन में दिया गया। इस सम्मेलन में एलैन डलेस, किम रूजवेल्ट, तेहरान से इसके लिए विशेषकर बुलाये गये राजदूत हैडरसन, प्रतिरक्षा मंत्री चार्ल्स विल्सन और विदेश विभाग के कई उच्चाधिकारियों ने भाग लिया था।

सत्ता पर्युत्प्रेषण की आखिरी तैयारियाँ पूरी करने के बाद किम रूजवेल्ट जुलाई के मध्य में तेहरान लौट गये, जहां पांच एजेंटों की एक विशेष टोली उनकी

\* Bary Rubin, *Paved with Good Intentions, The American Experience and Iran*, Oxford University Press, New York-Oxford, 1980, p. 80.

\*\* *Ibid.*, p. 81.



प्रतीक्षा कर रही थी। इन लोगों को सी० आई० ए० की योजना को कार्यक्रम में परिणत करना था। किम रुजवेल्ट को इसके लिए ईरानी मुद्रा में दस लाख डॉलर दिये गये थे। उस समय सबसे बड़ा ईरानी नोट ५०० रियाल ( ७.५० डॉलर के बराबर ) का था। इस प्रकार यह मुसद्दिक का तख्ता उलटने के लिए दिया गया खर्च घन का सम्बन्ध अंवार था।

लेकिन असल में इसका सिर्फ १० प्रतिशत ही खर्च हुआ। किम रुजवेल्ट के ईरानी एजेंट १ लाख डॉलर नकद लेकर तेहरान के दक्षिणी भाग में स्थित गंदी बस्तियों में गुंटे और लून्चे-लफ्फे दंगाइयों को भरती करने गये। किम रुजवेल्ट की योजना के अनुसार इन लोगों की भीड़ों को सामूहिक अशांति फैलाने और शाह की हुकूमत के लिए "जन समर्थन" का दिखावा करने के लिए सही घड़ी में सड़कों पर निकल आना था। ऑपरेशन एजैक्स में यह कल्पना की गयी थी कि स्वयं शाह दूर कास्पियन तट पर चले जायेंगे और षड्यन्त्रकारियों को दो हस्ताक्षरित फरमान दे जायेंगे— एक मुसद्दिक को बरखास्त करने का, और दूसरा जनरल फज़लुल्लाह ज़हदी को प्रधान मंत्री नियुक्त करने का। जनरल ज़हदी, जिनके द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तात्सी गुप्तचर्या के साथ घनिष्ठ संपर्क रहे थे, अब ईरानी देशभक्त शक्तियों के विरुद्ध अपनी गुप्त लड़ाई में सी० आई० ए० के लिए तुरूप के इस्तेमाल थे। शाह की अंगरक्षक सेना के कुछ प्रतिक्रियावादी अफसर भी षड्यन्त्र में शामिल थे।

आगे की घटनाएँ बिलकुल जासूसी उपन्यासों की तरह थीं। पहली अगस्त को आधी रात के समय किम रुजवेल्ट अपने प्रच्छन्न आवास से निकले और तेज़ चाल से वहाँ खड़ी एक कार की तरफ बढ़े। उन्होंने आसपास नज़र दौड़ाई और कूदकर कार में घुस गये और अपने को कंवल में पूरी तरह से छिपाकर पिछली सीट पर लेट गये। रात के सत्राटे में पूरी चाल से भागती भारी कार सीधे शाह के महल के फाटक पर जाकर रुकी। सुरक्षा अधिकारी ने ट्राइबर के दिखाये हुए पास को जाँचा। शाह के दस्तखत स्पष्टतः पहचाने जा सकते थे—फाटक खुल गया।

कोई १ बजे रात को शाह महल के पार्श्व भाग के एक दरवाजे से निकले। वह पिछली सीट पर बैठ गये और किम रुजवेल्ट से उन्होंने हाथ मिलाये। शाह का हाथ कांप रहा था।

संक्षिप्त और सटीक शब्दों में अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी ने शाह को तेहरान में अपने मिशन की जानकारी दी और साथ ही यह आश्वासन भी दिया कि प्रस्तावित योजना को राष्ट्रपति आइज़नहावर और प्रधान मंत्री चर्चिल का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है।

शाह ने रुजवेल्ट की पूरी बात सुनी और कहा कि वह सत्ता-परिवर्तन में भाग लेने के लिए तैयार हैं और जल्दी से उनसे विदाई लेकर महल में वापस जा घुसे।

सत्ता-परिवर्तन का १६ अगस्त, १९५३ की रात को पहला प्रयास असफल रहा। सी० आई० ए० के मोहरे जनरल ज़हदी षड्यन्त्र का संचालन करने का



जिम्मा शाह की अंगरक्षक सेना के कर्नल नेमतुल्लाह नसीरी को सौंपकर खुद अपनी एक लानदानी जागीर में जा छिपे थे। लेकिन आखिरी घड़ी में एक अफसर ने पड़मंत्र की योजना का भेद पुलिस को दे दिया और पुलिस ने, जो मुसद्दिक की बफ़ादार थी, कर्नल नसीरी को रंगे हाथ पकड़ लिया और दोनों फ़रमानों को अपने कब्ज़े में ले लिया। कर्नल नसीरी कुछ भी नहीं कर पाये। बेग़क, कर्नल ने बाद में अपनी पहली असफलता की कसर पूरी कर ली—सत्तर के दशक में वह जनरल की हैसियत से शाह की खुफ़िया पुलिस सबाक और शाह के दमनतंत्र के प्रधान बने। उनकी उन्नति के सिलसिले का अंत १९७९ में हुआ, जब ईरानी क्रांति की विजय के बाद उन्हें जनता के विरुद्ध अपने अपराधों की जबाबदेही करनी पड़ी और मृत्युदंड का भागी होना पड़ा।

पहले प्रयास की विफलता ने किम रुजवेल्ड को हतोत्साह नहीं किया। अपने एक ईरानी एजेंट के घर बैठे-बैठे वह घटनाचक्र पर निगाह रखे हुए थे। वह बिभक्तुल निश्चित थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनके “भारी सौपखाने”—रिश्तत से खरीदी भीड़—को मैदान में उतारना तो अभी बाकी ही है।

उधर जनरल ज़हदी अपने अमरीकी मित्रों के निर्देशों पर चल रहे थे ( उनके पुत्र अर्दशेर ज़हदी, जो बाद में शाह के अमरीका में राजदूत बने, सी० आई० ए० के साथ उनके संपर्क-सूत्र थे ) और जबकाशप्राप्त सेनाधिकारी संघ के जरिए, जिसके

वह प्रधान थे, सेना के शीर्षस्थ अधिकारियों के साथ तेजी से संपर्क कर रहे थे, ताकि सेना का समर्थन मुनिश्चित कर सकें।

सड़कों पर विशाल जनसमूह शाह और संयुक्त राज्य अमरीका के खिलाफ़ नारे लगा रहे थे, उधर किम रुजवेल्ड की “गुप्त सेना” के दलाल दक्षिणी तेहरान की निर्धन आबादियों में नोटों की गड़ियों को लोभपूर्वक सहेला रहे थे।

१८ अगस्त को सेना की इकाइयाँ, जिनमें रुजवेल्ड के ईरानी एजेंटों की घुसपैठ थी, “शाह जिंदाबाद ! ” और “मुसद्दिक को फांसी दो ! ” के नारों के साथ सड़कों पर निकल आयीं। अगली सुबह सी० आई० ए० के पैसों से खरीदी भीड़ सहर के दक्षिणी हिस्सों में जमा हो गयी और रास्ते में लगातार बढ़ती नगर के केंद्र की तरफ़ चल पड़ी।

सड़कों पर अफ़रा-तफ़री मची हुई थी। अदृश्य सूत्रधारों के इशारे पर दूकानों की खिड़कियों को पत्थरों की बीछार ने चूर-चूर कर दिया, ज़ेलखानों से छोड़े गये मुजरिमों के गिरोहों ने प्रगतिशील संगठनों के मुख्यालयों और अखबारों के संपादकीय कार्यालयों पर हमला बोल दिया। दोपहर तक सी० आई० ए० द्वारा संगठित गुंडा दल विदेश मंत्रालय और कितने ही अन्य सरकारी कार्यालयों को अपने नियंत्रण में ले चुके थे।

तेहरान की सड़कों पर कीलेदार दस्तानों, जंजीरों और छुरों से लैस भड़ैतिया गुंडों के गिरोह घूम रहे थे। वे लोगों को शाह के समर्थन में नारे लगाने को

मजबूर कर रहे थे—इन्कार करनेवालों को बे मार-मारकर अन्नमरा कर रहे थे। कारों को रोककर डाइबरो को सामने के सीधों पर शाह के रंगीन चित्र लगाने को बिबश किया जा रहा था। इसके लिए पहले ही बड़ी संख्या में चित्र छाप लिये गये थे—इसके लिए किम रुजवेल्ट ने सी० आई० ए० का पैसा दिया था। जब चित्र सत्तम हो गये, तो उनकी जगह एक रिवाल के नोट चिपकाये जाने लगे, जिन पर शाह का चित्र था।

यह देखकर कि निर्णायक घड़ी आ गयी है, रुजवेल्ट अपने शरणस्थल से निकले और उस मसजिद की कोठरी में पहुँचे, जहाँ जहदी छिपे हुए थे। उन्होंने सरकार के नये अध्यक्ष को विजय के लिए बधाई दी। लगभग उसी समय जहदी के सहयोगी अप्रसुरों का एक दल भी वहाँ आ पहुँचा। जहदी को अपने कंधों पर उठाये वे वहाँ इंतजार में खड़े एक टैंक तक ले गये, जो उन्हें लेकर संघर गति में जनरल स्टाफ-भवन की तरफ चल दिया। उधर एक और टैंक, जिसे एक अमरीकी सैनिक सलाहकार चला रहा था ( ईरान में उस समय कोई ३,००० अमरीकी सैनिक सलाहकार थे ), प्रधान मंत्री-निवास पहुँचा और गोले दागने लगा। अपनी जान बचाने के लिए मुसद्दिक छिड़की से कूदकर भागे, मगर उन्हें वही दबोच लिया गया।

अमरीकी दूतावास ने विजय के हर्षातिरेकपूर्ण संदेश वासिंगटन भेजे। उसी दिन शाम को नये प्रधान मंत्री के पुत्र अर्दशेर जहदी दूतावास पहुँचे। उन्होंने

इस बात को छिपाया नहीं कि वह अपने पिता की तरफ से आदेश लेने के लिए आये हैं।

इस प्रकार १९ अगस्त, १९५३ को ईरान के इतिहास के अघ्रतम युगों में से एक का समारंभ हुआ। मुसद्दिक और उनके समर्थकों से निवट लेने के बाद शाह ने लेश मात्र असहमति भी प्रकट करनेवालों के विरुद्ध निर्मम पुलिस दमनचक्र चला दिया। सबसे पहला और सबसे कड़ा प्रहार स्वाभाविकतया तुदेह ( अवामी ) पार्टी और समूने तीर पर वामपक्ष पर किया गया। विरोधपक्ष के भौतिक उन्मूलन के अभियान में शाह के निजाम का सबसे बड़ा हथियार सवाक था।

सवाक की स्थापना असल में सी० आई० ए० और इसराएली गुप्तचर्या अभिकरण मोस्साद, जिस पर शाह का विशेष विश्वास था, की प्रत्यक्ष सहभागिता से १९५७ में हुई थी। ( आगे चलकर इसराएली गुप्तचर्या ने तेहरान की पश्चिम तथा मध्य-पूर्व में अपने प्रमुख केंद्र में परिणत कर दिया )। सी० आई० ए० के आग्रह पर सवाक की स्थापना के औपचारिक आदेश को शाह द्वारा १९५८ में हस्ताक्षरित किया गया—अर्थात् ईरान और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच तयान्वित पारस्परिक प्रतिरक्षा संधि के संपन्न किये जाने के एक साल पहले, जिसने ईरान को अपने समुद्र-पार स्वामियों का कठपुतला बना दिया।

अपने ३०,००० से अधिक कर्मियों और कम से कम ३० लाख वैतनिक मुखबिरों के साथ सवाक

ने एक विराट अष्टपाद की तरह से ईरानी समाज को लगभग हर ही क्षेत्र को अपने शिकंजे में जकड़ लिया। ईरान में विशेष रूप से आये सी० आई० ए० विशेषज्ञों ने सबाक अधिकारियों को नासियों से सीखी गयी "गहन पूछ-ताछ" प्रविधियों का प्रशिक्षण दिया।

तत्त्वतः सबाक राज्य के भीतर राज्य था। शाह के संरक्षण ने उसे कानून अथवा नैतिकता के ऊपर कर दिया और किसी भी अपराध के लिए उत्तरदायित्व से मुक्त कर दिया था। सबाक के एजेंटों को तनिक से भी शुद्धे पर किसी को भी गिरफ्तार करने और वारंट के बिना तलाशियाँ लेने का अधिकार था। सबाक के पर्जों में पहुँचे लोग हमेशा-हमेशा के लिए शायब हो जाते थे—मुकदमे की सुनवाई के पहले हिरासत में रखने की अवधि अथवा कौजी अदालतों द्वारा बंद दरवाजों के पीछे सुनायी सजाओं पर किसी तरह की कोई सीमा न थी।

सी० आई० ए० प्रशिक्षक अपने शिष्यों पर नाज कर सकते थे—सबाक के लोगों ने बाहें मरोड़-मरोड़कर जोड़ों से अलग कर देने, नासून और दांत उखाड़ने, अंगुलियाँ तोड़ने, चेहरों पर उबलता पानी उड़ेलने और आँखें निकाल लेने की कला को बहुत जल्दी ही सीख लिया। ये हत्यारे अपने को "काले हकीम" कहते थे और अपने शिकारों को कोमिले कैदखाने की तीसरी मंजिल पर यंत्रणाएँ दिया करते थे। दिन के समय कैदियों की चौत्कारें सड़क के शोर से दब जाया करती थी, पर रात को वे बंद बिड़कियों

के पीछे से भी सुनायी दे जाती थीं और उधर से गुजरनेवाले राहगीर इस इमारत से बचकर निकल जाना ही बेहतर समझते थे।

अब, जब शाह के शासन की कितनी ही गुप्त दस्तावेजें प्रकाशित कर दी गयी हैं, पता चलता है कि दो दशकों की अवधि में ३,६०,००० राजनीतिक बंदी—ईरानी जनता के खेष्टतम बेटे-बेटियाँ—सबाक द्वारा मौत के घाट उतारे गये हैं या सता-सताकर मार डाले गये हैं।

और सी० आई० ए० इन जघन्य अपराधों के किये जाने में सहभागिनी थी।

लेकिन जलिये, छठे दशक की तरफ़ वापस लौटें, जब मध्य-पूर्व के खिलाफ़ सी० आई० ए० के गुप्त युद्ध ने जोर पकड़ना शुरू ही किया था। उस समय तक लेन्की सी० आई० ए० का मुख्यालय नहीं बना था, जो अब अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का प्रतीक है। घलसकायों की योजना बनाने और संचालन करनेवाले विभाग अभी वाशिंगटन में १७वीं सड़क पर द्वितीय विश्व युद्ध के समय निर्मित लकड़ी की सादीसी इमारतों में स्थित थे। दुनिया भर में बिखरे एजेंटों की सबसे गुप्त फाइलें यहीं रखी जाती थीं। एजेंटों के कूटनामों का चयन भी यहीं किया जाता था और बहुत ही दिलचस्प तरीके से—एक पुरानी आस्ट्रेलियाई टेलीफोन डायरेक्टरी को यों ही खोल लिया जाता था और किसी से आँखें मीचकर उसपर कहीं उंगली रखबा ली जाती थी। इसी इमारत के ब्लॉक में निकट-पूर्वी, दक्षिण

एशियाई तथा अफ्रीकी कार्य विभाग का मुख्यालय था, जिसके प्रधान ईरान में गुप्त कार्यों के अनुमती, फ्रांस में जन्मे गुप्तचर्या अधिकारी रोबे ग्वारा और गेल विश्वविद्यालय के विधि स्नातक नार्मन पॉल थे। किम हज्वेल्ट के चचेरे भाई आर्चीबाल्ड हज्वेल्ट विभागाध्यक्ष के प्रथम सहायक थे। ज़ाहिरा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व व्याख्याता चार्ल्स क्रमिस सी० आई० ए० के लिए मध्य-पूर्व के मुख्य विश्लेषणकर्ता थे।

प्रसंगतः, पचास के दशक के आरंभ में मध्य-पूर्व की स्थिति का विश्लेषण सी० आई० ए० के विशेषज्ञों को शायद ही संतोष दे सकता था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पुंजीवाद के आम संकट के गहराने और समाजवादी विरादरी के उदय के साथ-साथ इस क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना तेजी से विकसित होती गयी और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन जोर पकड़ता गया। मध्य-पूर्वी राष्ट्रों का तेल के इजारों के प्रभुत्व के विरुद्ध और तेल के राष्ट्रीयकरण तथा अपने राष्ट्रीय तेल उद्योगों के लिए संघर्ष इस आंदोलन का एक प्रमुख लक्षण था।

इस बात के बावजूद कि ईरान में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को कुचल दिया गया था, उसने अपने पड़ोसी देशों पर स्पष्टतः क्रान्तिकारी प्रभाव डाला था और सी० आई० ए० को प्रत्यक्षतः वहां साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यवाहियों के फिर से फूट पड़ने की आशंका थी। मिस्र में राष्ट्रपति नासिर को एकदम स्वतंत्र नीतियों पर चलते और सीरिया में वामपक्षीय

गतिविधियों का जोर पकड़ते देखना भी कम चिंताजनक न था।

आज ऐसे कितने ही तथ्य उजागर हो गये हैं, जो यह इंगित करते हैं कि छठे दशक में सी० आई० ए० राष्ट्रपति नासिर का अंत करने की योजनाओं पर गंभीरतापूर्वक विचार कर रही थी।

यह अमरीकी गुप्तचर्या का "निजी" उपक्रम था अथवा यह अमरीकी विदेश विभाग की जानकारी में, बल्कि उसके आदेशों तक पर, किया जानेवाला काम था?

इस सवाल का जवाब देने के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण कारक को ध्यान में रखना आवश्यक है, जो संयुक्त राज्य अमरीका की मध्य-पूर्व नीति के द्वैध स्वरूप को स्पष्ट करता है। बात यह है कि वाशिंगटन इस क्षेत्र में निरंतर दो सर्वथा भिन्न लक्ष्यों का अनुसरण कर रहा था—एक ओर, अरब देशों को सोवियतविरोधी दायरे के भीतर रखना और उन्हें अमरीकी तत्वावधान में, आक्रामक गुट में ऐक्यबद्ध करने का यत्न करना, और, दूसरी ओर, इसराएल के साथ सर्वतोमुखी संबंध विकसित करते रहना, उसकी सैन्य शक्ति का निर्माण करने में सहायता देना, जिससे उसके अरब पड़ोसियों में झुदरती तीर पर असंतोष और सदेह पैदा होता था। इस दुविधा को सिर्फ एक ही तरीके से दूर किया जा सकता था और वह था मध्य-पूर्व में एक साथ दो भिन्न विदेश नीतियों पर चलना। और आइज़नहावर प्रशासन ने यही किया—खुला,

पारंपरिक राजनय, जो विदेश विभाग के कार्यक्षेत्र में आता था, और वाशिंगटन के वास्तविक, अधोक्षित लक्ष्यों की सिद्धि की ओर लक्षित गुप्त राजनय, जो सी० आई० ए० के कार्यक्षेत्र में था।

इस प्रसंग में 'एट डेब' पत्रिका ने लिखा है: "जहाँ विदेश विभाग के विश्लेषक अक्सर दीर्घकालिक दृष्टिकोण लेते हुए इस क्षेत्र के मूलभूत प्रश्नों से जूझते थे और अमरीकी नीति में कुछ सुसंगति बनाने रखने का यत्न करते थे, वहाँ सी० आई० ए० कर्मियों, जिनके पास साधनों की कोई कमी न थी, दीर्घकालिक अथवा मध्यमकालिक परिप्रेक्ष्य की तनिक भी चिंता किये बिना नाटकीय कार्रवाइयों और अल्पकालिक समाधानों में प्रवृत्त होते थे।"

इन नाटकीय कार्रवाइयों में से एक एलैन डवेलस की सीरिया में सत्ता-परिवर्तन की योजना थी, जहाँ १९५४ में अदीब शीशेक्ली की तानाशाही के उलटे जाने के परिणामस्वरूप सत्ता जनवादी हलकों के हाथों में आ गयी थी।

१९५६ की गरमियों में एजेंट विल्बर ईवर्लेड को, जो अरबविद्या का विशेष पाठ्यक्रम पूरा कर चुके थे, सी० आई० ए० मुख्यालय में बुलाया गया और एक गुप्त मिशन पर सीरिया जाने का आदेश दिया गया। उनका औपचारिक कार्य "राजदूत की अलेप्पो, सीरिया में नये कामुलेट की स्थापना में सहायता करना और दमिश्क में राजदूतावास के प्रशासनिक संगठन में वृतावास-अधिकारियों को सहायता देना" था।

अनीपचारिक रूप से, उन्हें उच्चस्तरीय सीरियाई अधिकारियों से संपर्क करना था और हाथ खोलकर रिश्तों देते हुए (सी० आई० ए० ने इसके लिए भारी रकम दी थी) सर्वोच्च सेनाधिकारियों की सहभागिता से सत्ता-परिवर्तन का संगठन करना था।

इसके लिए अमरीकी विदेश विभाग के मध्य-पूर्व नीति नियोजन प्रभाग ने अनुभवी राजनयज्ञ और सऊदी अरब तथा लेबनान में भूतपूर्व अमरीकी राजदूत रेमंड हेजर के अधीन ओमेगा कूटनाम के अंतर्गत एक विशेष दल की स्थापना की। जेवरे भाई किम और आर्चीबाल्ड हजवेल्ट, जो ईरानी सक्रियता में पहले ही "दीक्षित" हो चुके थे, बिल्कुल आरंभ से ही ओमेगा दल में थे।

ईवर्लेड ने लिखा है: "पैटागॉन के योजनाकारों के लिए स्थिर सीरिया का मतलब था तेलक्षेत्रों और रुस के सीमांतों तक सुरक्षित संचार मार्ग और इसलिए शीर्षस्थ सेनाधिकारियों से उस समय तक कुछ भी करने की आशा नहीं की जा सकती थी कि जब तक ये रास्ते हमारे लिए बंद न हो जाते।"\*

इस प्रकार विधिसम्मत सीरियाई सरकार को उलटने का विचार (जिसे खुले अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के मामले के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता) कोई सी० आई० ए० के चरमपंथियों की कल्पना की उपज नहीं था, जैसे कि अमरीकी प्रचार ने बाद में

\* Wilbur Crane Eveland, *op. cit.*, p. 123.

बारबार दिखलाने का यत्न किया है, वरन प्रशासन के तत्त्वतः साम्राज्यवादी ढंग से सोचने का तर्कसंगत नतीजा था, जिसे विदेश विभाग तथा पैटागॉन का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। कितने ही प्रचारात्मक शायों के बावजूद सी० आई० ए० की हैसियत कभी भी राज्य के भीतर राज्य की नहीं रही है। अमरीकी शासक हलकों के आदेशों की निश्चित पूर्ति करते हुए सी० आई० ए० हमेशा ही उनकी आक्रामक प्रसारवादी आकांक्षाओं का गुप्त उपकरण ही रही है।

पचास के दशक में मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० की सरगर्मियों के वर्णन में यह दृष्टव्य है कि उसका ब्रिटिश गुप्तचर्या सेवा के साथ घनिष्ठ सहयोग था। इस परंपरा का प्रारंभ इराक में हुआ था और ईरान में मुसद्दिक के हटाये जाने की तैयारियों के दौरान यह मजबूत हुई। उस समय जान सिन्क्लेयर गुप्तचर्या सेवा के प्रधान थे और उनके सहकारी जामूसी के बारे में सनसनी मचाने के लौकीन जार्ज कैनेडी यंग थे, जिन्होंने १९७६ में यह ऐलान किया था कि के० जी० बी० के एजेंट और तो और, एडवर्ड हीथ की अनुदारदली सरकार तक में घुस गये हैं।

१९५६ के वसंत में डलेस ने ईवलेड और काहिरा में सी० आई० ए० केंद्र के जेम्स आइकैलबर्ग को लंदन भेजा, जहाँ उन्होंने यंग के साथ गुप्त बातचीत की। यंग ने उनसे कहा कि मिश्र, सीरिया और सऊदी अरब ब्रिटेन के मार्मिक हितों के लिए गंभीर खतरा पेश कर रहे हैं और इसलिए उनकी सरकारों को किसी भी

कीमत पर उलट दिया जाना चाहिए। यंग के विचार में सी० आई० ए० के साथ सहयोग का मतलब था फौलादी हाथों से सीरिया में "व्यवस्था लाना", शाह सऊद को गद्दी से उतारना और नासिर की हत्या करना।

"मुझे लगा कि जैसे मैं किसी पागलखाने में पहुंच गया हूँ," ईवलेड ने इस बैठक को फिर से याद करते हुए बाद में कहा था। लेकिन यह कथन बिल्कुल खोबला लगता है—सीरियाई सरकार का उलटा जाना बहुत लंबे समय से सी० आई० ए० की कार्यसूची पर था और उच्चतम स्तर पर अनुमोदित नासिर की हत्या करने की योजना भी ईवलेड के लिए कोई रहस्य नहीं थी।

१९५६ में जून के मध्य में सीरिया में एक राष्ट्रीय एकता सरकार कायम की गयी, जिसमें बंधाय पार्टी सहित प्रगतिशील तथा वामपंथीय पार्टियों और दलों के प्रतिनिधि शामिल थे। सी० आई० ए० ने तुरंत ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की—१ जुलाई को रूजवेल्ट बंधु दमिश्क पहुंच गये। उन्हें ओमेगा दल की बैठक की पूर्ववेला में स्थिति का अध्ययन और आकलन करना था।

एक गुप्त दस्तावेज में आगामी संक्रिया के लक्ष्यों को इस प्रकार निरूपित किया गया:

"सीरिया में एक ऐसी राष्ट्रवादी सरकार की स्थापना, जिस पर पश्चिम की कठपुतली होने का आरोप न लगाया जा सके, मगर जो फिर भी संयत



पश्चिम-समर्थक और कम्युनिस्टविरोधी नीति पर चलने को तैयार हो।”\*

सीरिया में लगायी गयी मुरंग तैयार थी, बस एलिते को आग दिखाना ही बाकी था। इस कार्य के लिए सी० आई० ए० जिस वारुड का इस्तेमाल करने की सोच रही थी, वह ईरान की ही भाँति पैसा था। इस पैसे को ईवलींड ने चोरी से सीरिया पहुँचाया और अपने एक स्थानीय एजेंट को सौंपा था।

सी० आई० ए० से यह आर्थिक सहायता प्राप्त करके शीर्षस्थ सेनाधिकारियों के बीच विद्यमान षड्यंत्रकारियों ने दमिश्क, अलेप्पो, होम्स और सामा को काबू में लेने की विस्तृत योजना तैयार की। उनकी योजना के अनुसार सभी सीमांत चौकियों को नाकाबंद कर दिया जाना था और रेडियो स्टेशन को क्रूजे में लेकर यह ऐलान किया जाना था कि देश में सत्ता कर्नल कब्बानी के नेतृत्व में नयी सरकार ने संभाल ली है।

बाद में योजना में कुछ तबदीलियाँ की गयीं। वाशिंगटन ने खासकर यह प्रस्ताव किया कि नयी सरकार भूतपूर्व सीरियाई तानाशाह अदीब शीशेक्ली के नेतृत्व में होनी चाहिए, जिन्हें फरवरी, १९५४ में जनशायी सैनिक अफसरों ने सत्ताच्युत कर दिया था। सी० आई० ए० एजेंट जाली पासपोर्ट पर कर्नल इब्राहीम हुसैनी को बेरुत ले आये, जो शीशेक्ली के

शासन में मुराजा सेवा के प्रधान थे और अब रोम में सीरिया के सैनिक अताशे थे। आर्थर क्लोज का इरादा हुसैनी को अपनी कार के ट्रंक में छिपाकर चोरी से लेबनान-सीरिया सीमांत के पार ले जाने का था, ताकि भूतपूर्व प्रतिगुप्तचर्या अधिकारी की स्थानीय एजेंटों से खुद मुलाकात हो सके और वह उनके साथ शीशेक्ली को पुनः सत्तारूढ़ करने की योजना पर बिचार कर सकें।

लेकिन भूतपूर्व तानाशाह को फिर से प्रधानमंत्री बनने की आशाओं को तजना पड़ा। देशानुरागी सीरियाई सैनिक अफसरों की सत्कर्ता के परिणामस्वरूप यह शासकी न हो सकी। ६ नवंबर, १९५६ को सीरियाई मुरजा अधिकारियों ने प्रतिक्रियावादी निम्न-बुर्जुआ तत्वों और ब'आथ पार्टी के दक्षिण पक्ष की सरकारविरोधी साजिश का परदाफाश कर दिया। प्रधान षड्यंत्रकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और अन्यो को राजनीतिक पदों से बरखास्त कर दिया गया। सीरिया में एक नयी सरकार की स्थापना की गयी, जिससे ब'आथ पार्टी के उन सभी सदस्यों को निकाल दिया गया था, जिनका षड्यंत्र से संबंध था।

इस प्रकार सी० आई० ए० की सीरियाविरोधी योजनाएं पूर्णतः ध्वस्त हो गयीं। लेकिन जैसा कि बाद के घटनाचक्र ने सिद्ध किया, संयुक्त राज्य अमरीका के शासक हलकों ने मध्य-पूर्वी जनगण के विरुद्ध अपने गुप्त युद्ध का अंत करने की बात सोची भी नहीं।

... शहीद चौक में ताड़ों की फुगियों को तोपों

\* Wilbur Crane Eveland, *op. cit.*, p. 193.

के गोलों के टुकड़ों ने उड़ा दिया था। चौक के किनारों पर स्थित मकान लोगों की गोलाबारी से विकृति होकर खीरान पड़े थे। वे सभी म्लानकारी रूप से एक जैसे लग रहे थे—जले हुए और कालिख से ढंके हुए। टूटी हुई दीवारों से लोहे के टांचे के उखड़े हुए सिरे मरोड़ी हुई उंगलियों की तरह से निकले हुए थे और हवा के झोंके टूटी हुई सीड़ियों से सीमेंट की धूल को बहाकर ला रहे थे...

१९७५ के वसंत में, जब देश में प्रचंड गृहयुद्ध छिड़ उठा था, विल्बर ईवलैंड ने लेबनान की राजधानी में जो देखा, वह यही था। जहाँ उन्होंने अपने "गुप्त राजनय" के कैरियर का समापन किया था, उस शहर की यह दर्दनाक हालत देखकर उन्हें अपनी अंतरात्मा कुछ कपोटनी-सी लगी।

"अपने नीचे मैं जिस बंदरगाह को जलते देख रहा था, वह पचीस साल पहले जब मैं वहाँ पहली बार आया था, एक शांत बंदरगाह हुआ करता था," ईवलैंड को याद आया। "विगत में मैं लेबनान के आंतरिक मामलों में अमरीका के प्रच्छन्न हस्तक्षेप में एक सहभागी रहा था। लेबनान का विनाश, जो अब अनिवार्य प्रतीत होता था, कम से कम कुछ हद तक हमारी दस्तदाजी का नतीजा था।" \*

'एट डेज' पत्रिका ने सीधे-सीधे कहा: "सी० आई० ए० ने ही लेबनानी गणराज्य की एकता और

संसदीय व्यवस्था के ध्वंस के बीज बोये थे।" \*

लेबनान के विरुद्ध सी० आई० ए० का षड्यंत्र अमरीकी कांग्रेस द्वारा मार्च, १९५७ में अनुमोदित आइज़नहावर सिद्धांत से घनिष्ठतः जुड़ा हुआ था। यह पहला मौका था कि जब संयुक्त राज्य अमरीका ने "कम्युनिस्ट आक्रमण" से मध्य-पूर्व की रक्षा करने के लिए सशस्त्र सेनाओं का उपयोग करने की अपनी उद्यतता की खुले तौर पर घोषणा की थी और राजनीतिक व्यवहार में "बुनियादी अमरीकी हितों" की स्थापना को प्रस्तुत किया था। मध्य-पूर्व में अमरीकी नीति के बारे में एक विशेष संदेश में राष्ट्रपति आइज़नहावर ने संयुक्त राज्य अमरीका की इस क्षेत्र में अपनी सेनाओं का उपयोग कर सकने की आवश्यकता पर जोर दिया और कांग्रेस से तथाकथित सैनिक सहायता तथा सहयोग कार्यक्रम के लिए २० करोड़ डॉलर की मांग की।

लेबनान के पश्चिम समर्थक नेताओं—राष्ट्रपति कामिल शामू और विदेश मंत्री चार्ल्स मलिक—ने आइज़नहावर सिद्धांत के लिए अपने पूर्ण समर्थन को तुरंत घोषित कर दिया। शामू की मध्य-पूर्व में अमरीकी रणनीति पर चलने की उद्यतता ने उनके लिए अमरीकी समर्थन को सुनिश्चित कर दिया। जून, १९५७ में होनेवाले संसदीय चुनावों की पूर्ववेली में उनके लिए यह समर्थन कोई कम महत्व का नहीं था।

\* Wilbur Crane Eveland, *op. cit.*, p. 15.

\* 8 Days, Vol. 3, No 25, 1981, p. 10.

"इलेस चाहते थे कि वह (शामू - सं) अपने पद पर बने रहें; अरब जगत में और कोई नेता ऐसा न था, जो अमरीकी आकांक्षाओं के इतने अधीन हो," इस प्रसंग में अमरीकी अनुसंधानकर्मी यूजेन एम० फिशर तथा एम० सैरिफ बैस्युनी ने लिखा है।\*

लेकिन सिर्फ इच्छा ही काफी नहीं थी - शामू को पदासीन रखने के लिए कुछ न कुछ किया जाना जरूरी था। इसलिए १९५७ से ब्रेकूत मध्य-पूर्व में सी० आई० ए० के समस्त ध्वंसकार्य का केंद्र बन गया। लेबनान में अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या एजेंटों को सी० आई० ए० के ब्रेकूत केंद्र के प्रमुख गोसिन जोग्बी के अधीन कर दिया गया। एलैन इलेस ने लेबनानी संक्रिया की सफलता के लिए किम रूजवेल्ट को व्यक्तिगत रूप में उत्तरदायी बना दिया। इस संक्रिया का लक्ष्य था रिश्कत, विरोधपक्ष की बदनामी, ब्लैकमेल, आदि हर उपलब्ध साधन का उपयोग करते हुए चुनावों में शामू और मलिक को जिताना। इस कार्यक्रम के लिए पैसा जरूरी था और सी० आई० ए० ने अपने कठपुतलों के चुनाव-कोष में मुक्त हस्त पैसा दिया।

ईवलैंड लिखते हैं: "चुनाव के दौर भर में नियमित रूप से लेबनानी पाउंडों से भरे थैले को लेकर राष्ट्रपति प्रसाद जाया करता था और फिर देर गये रात को मैं उसे हावी आर्माडो के सी० आई० ए० वित्त-कार्यालय

के लोगों द्वारा फिर से भरे जाने के लिए दूतावास लौटा करता था। जल्दी ही मेरी एकदम सफेद छतवाली हिसोटो कार राष्ट्रपति प्रसाद के बाहर देखी जानेवाली एक आम चीज बन गयी..."\*

सी० आई० ए० के पैसे ने अपनी अनिष्टकारी भूमिका अदा की। अमरीकी कठपुतलों द्वारा हाथ खोलकर दी गयी रिश्कतों की बदौलत उन्हें खासा बहुमत प्राप्त हो गया। लेबनानी संसदीय प्रणाली में एक गहरी दरार पैदा हो गयी। जल्दी ही देश भर में असंतोष की लहर दौड़ गयी और १९५८ के वसंत में शामू शासन के विरुद्ध त्रिपोली में विद्रोह फूट पड़ा, जो गृहयुद्ध में परिणत हो गया।

'एट रेज' पत्रिका ने सही ही टीका की है: "इसे १७ साल बाद कहीं अधिक लंबे और रक्तरेजित गृह कलह का पूर्वगामी सिद्ध होना था।" \*\*

लेबनानी इतिहास के इन दोनों त्रासद घटनाक्रमों के बीच संबंध प्रत्यक्ष है, जैसे १९७५-७६ में लेबनान में दूसरे गृहयुद्ध के भड़काने में सी० आई० ए० की प्रच्छन्न सहभागिता भी छिपी हुई नहीं है।

"लेबनान के सूनी गृहयुद्ध में सर्क हो जाने के साथ कुछ अधिकारियों ने सी० आई० ए० पर लड़ाई का प्रच्छन्न रूप से समर्थन करने का आरोप लगाया," राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में हेनरी किसिंजर के भूतपूर्व

\* Eugene M. Fisher and M. Cherif Bassioni, *Storm Over the Arab World*, Follet Publishing Co., Chicago, 1972, p. 132.

\* Wilbur Crane Eveland, *op. cit.*, p. 252.

\*\* 8 Days, Vol. 3, No 25, 1981, p. 11.

सहायक रॉजर मॉरिस ने लिखा है।\*

इस तरह के आरोप निराधार नहीं थे। आज यह प्रकट हो गया है कि इसराएल में सी० आई० ए० की एक विशेष शाखा लेबनानी संकट को गहराने की कार्रवाइयों में सक्रिय भाग ले रही थी। सैग्ली की एजेंस में स्थित एक और शाखा दक्षिणपंथी ईसाई दलों को पैसा दे रही थी और प्रशिक्षित कर रही थी।

सी० आई० ए० ने लेबनान के फ़लांजी नेताओं के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों को गृहयुद्ध के बाद, कार्टर प्रशासन के अधीन भी बनाये रखा। १९८१ में राष्ट्रपति रैगन के सत्ता ग्रहण के बाद ये संबंध और भी बढ़े।

“नवंबर, १९८० में अमरीकी मतदाताओं के रॉनल्ड रैगन को निर्वाचित करने के निर्णय के बाद, जिन्होंने फ़िलिस्तीनी मुक्ति संगठन को बारम्बार ‘आतंकवादी संगठन’ की सजा दी थी, सी० आई० ए० ने फ़लांजियों को लेबनान को सौरियाई शांतिरक्षक सेना (लेबनान में अरब देशों की शांतिरक्षक सेनाओं का अंग - सं०) और फ़िलिस्तीनी कुमाड़ी दलों से ‘मुक्त’ करवाने की एक योजना सुझायी, जिसे इसराएल के सहयोग से कार्यरूप दिया जाना था।”\*\*

सैग्ली में तैयार की गयी गुप्त योजना में फ़िलिस्तीनियों को पश्चिमी बेरुत से खदेड़ बाहर करने के लिए गृहयुद्ध के पुनरारंभ की कल्पना की गयी थी,

जब कि इसराएल को, सशस्त्र पार्यायवादी दलों के साथ सहयोग करते हुए बेकाजा घाटी में तैनात सीरियाई सेनाओं पर प्रहार करना था।

फरवरी, १९८१ में ‘मिडिल ईस्ट’ पत्रिका ने सैडविच संक्रिया के विवरण प्रकाशित करके लेबनान में सी० आई० ए० की प्रचलित गतिविधियों का एक नया भंडाफोड़ किया। सी० आई० ए० की इस योजना के अनुसार इसराएल को लेबनान के दक्षिण में सीरियाई क्रांजों को लड़ाई में उलझाना था और फिर दक्षिणपंथी ईसाइयों के हमले को, जिसे बेरुत के आस-पास फ़िलिस्तीनी शरणार्थी शिविरों को नष्ट करना था, समर्थन प्रदान करने के लिए उत्तर की तरफ़ प्रहार करना था। सी० आई० ए० की मान्यता थी कि इससे सारा ही लेबनान दक्षिणपक्ष के हाथों में आ जायेगा और फ़िलिस्तीनी मुक्ति संगठन को नष्ट करके यह योजना फ़िलिस्तीनी समस्या को “हल” कर देगी। सैग्ली का विश्वास था कि इससे जॉर्डन को कैप डेविड समझौतों में शामिल होने और तथाकथित फ़िलिस्तीनी स्वायत्तता के बारे में, जिसे फ़िलिस्तीनी की अरब जनता ने निश्चयात्मक रूप से अस्वीकार कर दिया था, बातों में भाग लेने को मजबूर किया जा सकेगा।

१९८२ की गरमियों में मध्य-पूर्व की स्थिति ने एक और खतरनाक मोड़ लिया। ह्वाइट हाउस की पूरी मिलीभगत से इसराएली सैन्यतंत्र ने लेबनान के खिलाफ़ एक नया व्यापकस्तरीय हमला शुरू किया और फ़िलिस्तीनियों तथा लेबनानियों के खिलाफ़ अवि-

\* Ibid., p. 10.

\*\* 8 Days, p. 11.

राम और खुलकर जनसंहार की नीति बरतते हुए देश के एक बड़े भाग को अपने कब्जे में ले लिया। इसराएली फौज ने बर्बरतामय अस्त्रों—कलस्टर बम, फैलेट बम, फास्फोरस बम, नेपाम का प्रयोग किया, साइदा (सीडोन), नबातिया और एस्मूर (टायर) के लुण्ठाल सहरों को भूमिसात कर दिया और लेबनानी प्रदेश में फिलिस्तीनी शिविरों को जलाकर खाक कर दिया। आक्रमणकारियों ने लेबनानी राष्ट्रवादी-देशभक्त शक्तियों और फिलिस्तीनी प्रतिरोध आंदोलन के अंतिम गढ़ पश्चिमी बेरुत के रिहायशी इलाकों को घेरकर बंदहूनों में बदल दिया।

विश्व प्रेस ने ठीक ही कहा है कि सीयोनवादी फिलिस्तीनी समस्या को "हल" करने के लिए जिन तरीकों को इस्तेमाल कर रहे हैं, उनकी सिर्फ़ द्वितीय विश्वयुद्ध के समय नात्सियों के "यहूदी समस्या के हल" से ही तुलना की जा सकती है।

लेकिन ऐसा नहीं लगता कि जघन्य ऐतिहासिक साक्ष्यों से आक्रमणकारी के समुद्रपार संरक्षक तनिक भी संकोच का अनुभव करते हों—वे प्रत्यक्षतः यही मानते हैं कि मध्य-पूर्व में संयुक्त राज्य अमरीका की साम्राज्यवादी रणनीति को कार्यरूप देने के मामले में साध्य किसी भी साधन को उचित बना देते हैं।

१९८२ के ग्रीष्म में लेबनान पर इसराएल के आक्रमण ने इस भूमध्यसागरीय देश में अमरीकी सैनिक घुसपैठ के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। शीघ्र ही लेबनान में (३० वर्षों में दूसरी बार) अमरीकी मैरीन सैनिकों

की उपस्थिति, जिन्हें अमरीकी प्रशासन इस देश में स्थिति को सामान्य बनाने में सहायक "शांति-स्थापक" सेना के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहा था, काफ़ी-कुछ सैनिक कब्जे की याद दिलाने लगी। यह बात लेबनानी-इसराएली शांति समझौते पर हस्ताक्षर के बाद, जो वास्तव में लेबनान पर इसराएली, अमरीकी हुकूमशाही की स्थापना का परिचायक था, विशेषतः उभरकर सामने आयी।

ग्रीष्म, १९८३ के अंत तक स्पष्ट हो गया कि लेबनान में राष्ट्रीय मतैक्य की स्थापना में हर तरह से रोड़े अटकाकर और इसराएल तथा लेबनानी प्रतिक्रिया को नये कुकृत्यों के लिए उकसाकर रैशन प्रशासन अपने लिए एक सामरिक सेतुशीर्ष बनाना और लेबनान को अरब राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन तथा स्वतंत्र राज्यों, विशेषतः सीरिया के विरुद्ध संघर्ष के लिए अड़ों में परिवर्तित करना चाहता है।

लेबनान की घटनाओं ने तब और भी अनर्थसूचक मोड़ ले लिया, जब अगस्त के अंत में तथाकथित "बहुराष्ट्रीय सेनाओं" में शामिल अमरीकी मैरीन दस्तों ने राष्ट्रीय देवाभक्त शक्तियों के दमन में दक्षिण-पंथी ईसाई सैन्य दस्तों की सहायता करते हुए सामरिक कार्रवाइयों में प्रत्यक्ष भाग लेना शुरू कर दिया।

२० सितंबर, १९८३ को लेबनान के गृहयुद्ध में अमरीकी शिरकत सहसा बढ़ गयी। उस दिन अमरीकी युद्धपोतों ने बेरुत के निकटवर्ती पहाड़ी इलाकों पर जबरदस्त गोलाबारी की। गोलाबारी का आदेश लेबनानी

सेना की मदद करने के उद्देश्य से दिया गया था। यह वियतनाम युद्ध के बाद से अमरीकी नीतिना की सबसे बड़ी सामरिक कार्रवाई थी। लेबनान के तटवर्ती समुद्र में गश्त लगाते हुए अमरीकी नौसेना के दो युद्धपोतों ने मुसलमानों की पोखीशनों पर सैकड़ों गोले बरसाये। इस तरह से संयुक्त राज्य अमरीका ने बेरुत के गिर्द की पहाड़ियों में लेबनानी सेना की अपनी महत्वपूर्ण पोखीशनें हाथ से न जाने देने में मदद करने के लिए सामरिक कार्रवाइयों में अपनी शिरकत बढ़ा दी। पैदागान के प्रवक्ताओं ने बताया कि अमरीकी युद्धपोतों ने एक दिन के भीतर अपनी ५ इंची तोपों से ३०० से अधिक गोले बरसाये थे।

अरब देशों के सारे प्रगतिशील जनमत की राय है कि लेबनान के विवाद में अमरीका का प्रत्यक्ष सैनिक हस्तक्षेप नग्न अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की मिसाल है, जिसका सहारा वाशिंगटन इसलिए ले रहा है कि इस छोटे से भूमध्यसागरीय देश पर अपनी हुकम-शाही कायम कर सके।

.... हाल के समय में अफ़ग़ानिस्तान एशिया में सी० आई० ए० का एक मुख्य लक्ष्य बन गया है। १९७८ के वसंत में अफ़ग़ानिस्तान, जिसे संसार के सबसे पिछड़े हुए देशों में गिना जाता था, मध्य-युग से छलांग लगाकर बीसवीं सदी में आ गया। अप्रैल क्रांति ने अफ़ग़ान जनता के लिए सामंती उत्पीड़न और साम्राज्यवादी निर्भरता से मुक्त होने और जनवादी विकास तथा प्रगति के पथ को उन्मुक्त कर दिया।

युगों पुराने पिछड़ेपन और सामंती पूर्वग्रह पर पार पाना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है, लेकिन अबामी सरकार की पहली ही आज्ञितियों ने दूरगामी सामा-जिक-आर्थिक रूपांतरणों की बुनियाद रख दी।

जमींदारों और सूदखोरों के कजों की मसूखी, स्त्रियों की मुक्ति, नया विवाह क़ानून और भूमि सुधार के बारे में प्रसिद्ध आज्ञिति सं० ८—सभी ऐसे क़दम थे कि जिन्हें अभी हाल तक अकल्पनीय समझा जाता था और वे लाखों उत्पीड़ितों को सचेतन कार्रवाइयों के लिए जागृत करने लगे।

क्रांति के प्रारंभिक दिनों में ही अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व शासक पूरब की तरफ़, इयूरंड रेखा के उस पार पाकिस्तानी प्रदेश में भागकर चले गये, जहाँ वे पठान कबीले रहते हैं, जिन्हें अंग्रेजों ने पिछली सदी में अपने बतन से काटकर अलग कर दिया था। प्रतिक्रांतिकारियों ने "इस्लाम के रक्षार्थ जिहाद" के नारे लगाकर अफ़ग़ानिस्तान में छोटे-छोटे गिरोहों को भेजना शुरू कर दिया, जो वहाँ अलग-थलग गांवों पर हमले करते और अफ़ग़ानिस्तानी अबामी जमहूरी पार्टी के सदस्यों, ग्रामीण अध्यापकों, सहकारी आंदोलन के कार्यकर्ताओं और नयी सरकार के सभी समर्थकों की निर्ममतापूर्वक हत्याएं करते थे।

यद्यपि तोड़फोड़ और आतंकवादी कार्रवाइयों ने आंतरिक स्थिति में अस्थिरता उत्पन्न की, पर दस्युगणों ने समझ लिया कि सुसज्जित शिविरों और अड़ों के बिना, बाहर से वित्तीय सहायता और हथियारों और



निदेशकों के बिना उनके प्रयासों का विफल होना अवश्यभावी है।

इस बात को साम्राज्यवादियों ने भी समझ लिया और उन्होंने क्रांति के फौरन ही बाद स्थानीय प्रतिक्रियावादियों को अपने मुख्य हथियार की तरह से इस्तेमाल करते हुए नयी व्यवस्था के विरुद्ध अप्रतिष्ठित युद्ध छेड़ दिया। मिसाल के लिए, ठेठ अप्रैल, १९७८ में ही पश्चिमी प्रचार ने विभिन्न सामंती कुलों द्वारा जुटाये हथियारबंद गिरौहों को "राजनीतिक संगठन" घोषित कर दिया था।

जनवरी, १९८० में पाकिस्तान में हुई इस्लामी सम्मेलन संगठन की बैठक में अफ़ग़ान प्रतिक्रियावादियों का प्रतिनिधित्व पाकिस्तान में आधारित छः पार्टियों और गुटों ने किया। ये सभी चरम दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी संगठन हैं और उनका "जिहाद" का नारा अफ़ग़ानिस्तान के बड़े बर्ज़ुआजी और सामंती भूस्वामियों के पुरानी व्यवस्था को बहाल करने और अपने खोये हुए प्रभुत्व को पुनः प्राप्त करने के प्रयासों के लिए एक आवरण मात्र है। हिप्वे इस्लामी, जो अफ़ग़ान प्रतिक्रांतिकारी संगठनों में सबसे बड़ा और सर्वाधिक संगठित है, के नेता गुलबुद्दीन हिकमतयार हैं, जो क्रांति के पहले कुंजूल सूबे में एक बड़े जमींदार थे। हिप्वे इस्लामी का राजनीतिक कार्यक्रम अफ़ग़ानिस्तान के जनवादी प्रगतिशील शासन को उलटना है। इसे डेरों रूढ़िवादी मांगों की आड़ में छिपाया जाता है, जैसे औरतों के लिए बुरका

ओढ़ने की अनिवार्यता, बाइक-बालिकाओं की अलग शिक्षा, सरकारी कर्मचारियों के लिए पश्चिमी पहनावे के बजाय "राष्ट्रीय पोशाक" और शराब तथा जुए पर पाबंदी। तिस पर भी "पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध संघर्ष" हिकमतयार को सी० आई० ए० और इसराएल के मोस्साद के साथ घनिष्ठ सहयोग करने से नहीं रोकता।

अफ़ग़ानिस्तानी क़ौमी इस्लामी मुहाज्ज के नेता सैयद अहमद जिलानी और एक अन्य प्रतिक्रांतिकारी मोरचे के नेता मुजादीदी सिबगतउल्लाह खानदानी पीर हैं, जो हिकमतयार की ही तरह मजहबूबी लफ़्काजी का इस्तेमाल अपने प्रतिक्रांतिकारी कार्यक्रम पर परदा डालने के लिए करते हैं। दोनों ही उन सामंत कुलों के हैं, जिनकी अफ़ग़ानिस्तान के विभिन्न इलाकों में बड़ी-बड़ी जमींदारियां थीं। अफ़ग़ानिस्तान की जमात-ए-इस्लामी के नेता बुरहानुद्दीन रब्बानी भी सामंत कुल के ही हैं। क्रांति के पहले उनकी काबुल और बदनशां सूबों में विशाल जमींदारियां थीं और वह ब्रिटेन और अमरीका को कराकुल (पोस्तोन) की थोक फ़रोलत किया करते थे। हिकमतयार की ही तरह रब्बानी के भी सी० आई० ए० के साथ घनिष्ठ संपर्क है और उससे वह पैसों और निर्देश प्राप्त करते हैं।

अप्रैल क्रांति के फौरन ही बाद प्रसिद्ध अफ़ग़ानिस्तान-विशेषज्ञ, सी० आई० ए० एजेंट लुई बूरे काबुल पहुंचे, ताकि अफ़ग़ान प्रतिक्रांतिकारियों से संपर्क स्थापित कर सकें। अपने कार्यभार में वह असफल रहे

और नवंबर, १९७८ में अफ़ग़ानिस्तान से निष्कासित कर दिये जाने पर वह पाकिस्तान चले गये और वहाँ सी० आई० ए० एजेंटों की एक टोली का संचालन करने लगे। उनकी टोली सशस्त्र प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों का समन्वयन केंद्र बन गयी। लगता है कि पाक-अफ़ग़ान सीमांत पर अन्य अमरीकी गुप्तचर्या एजेंट भी मादक द्रव्य निरोध प्रशासन और एशिया फ़ाउंडेशन के आवरण में इसी तरह के कार्यों का निर्वहन करते हैं।

१९७७ में इस्लामाबाद में सी० आई० ए० केंद्र के प्रमुख जॉन रैगन थे। उनके सहकारी रॉबर्ट लैसर्ट नामक अमरीकी "राजनयज्ञ" थे, जिन्हें १९७४ में ही अबांछनीय व्यक्ति घोषित करके अफ़ग़ानिस्तान से निकाल दिया गया था। अप्रैल क्रांति के बाद उनकी सहायता के लिए सत्ता-परिवर्तन और अंतर्ध्वंस कार्यों के विशेषज्ञ बी रॉबेन्सन, रॉजर्स ब्रॉक और वान डेविड सऊदी अरब से इस्लामाबाद पहुंच गये। ये "सामोश अमरीकी" अपनी गतिविधियों का पाकिस्तानी राष्ट्रपति के वैदेशिक मामलों के सलाहकार आगा शाही और पाकिस्तानी विदेश सचिव नवाज शाही के साथ समन्वय करते थे। आगा शाही का अपने भाई, संयुक्त राज्य अमरीका में पाकिस्तानी राजदूत आगा सलील के जरिए सी० आई० ए० के साथ अरबों से संबंध था, जब कि नवाज शाही की अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व शाही खानदान के साथ रिस्तेदारी थी।

अमरीकी तथा विश्व जनमत के आगे अफ़ग़ान प्रतिक्रांतिकारियों की वित्तीय सहायता देने और उन्हें

प्रशिक्षण तथा हथियार भेजने का औचित्य-स्थापन करने के लिए वाशिंगटन अफ़ग़ानिस्तान के क्रांतिकारी नेताओं पर संयुक्त राज्य अमरीका के प्रति शत्रुतापूर्ण कार्यों का आरोप मढ़ने का कोई बहाना खोज रहा था। इस तरह का बहाना १४ फ़रवरी, १९७९ को काबुल में अमरीकी राजदूत एडोल्फ डब्स की हत्या से बना। डब्स सी० आई० ए० की वाशिंगटन और काबुल के बीच पूर्ण विच्छेद करवाने की जिद के शिकार हुए। बंबई के साप्ताहिक 'जिन्द' के अनुसार "अमरीकी सरकार ने डब्स की हत्या का अफ़ग़ानिस्तान के साथ संबंध-विच्छेद करने के बहाने की तरह उपयोग किया। आर्थिक सहायता संबंधी सभी समझौतों और ऋणों को मंजूर कर दिया गया। डब्स के बदले किसी नये उत्तराधिकारी की नामजदगी नहीं हुई और एकदम काबुल पर मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोप लगाये जाने लगे।"

नूर मुहम्मद तरक़ती की हत्या और हाफ़िज़ उल्लाह अमीन द्वारा सत्ता के हथियाये जाने की पूर्वविला में सी० आई० ए० ने अफ़ग़ानिस्तान के विरुद्ध अपने ध्वंसकार्य को विशेषकर तेज़ कर दिया। अगस्त, १९७९ में जॉन रैगन पाकिस्तानी सुरक्षा के प्रधान अधिकारियों—रादौर और आलम—से मिले और उनमें अफ़ग़ानिस्तान में आगामी परिवर्तनों के सिलसिले में सहयोग के बारे में सहमति हो गयी। प्रत्यक्ष है कि रैगन को इन परिवर्तनों की पहले ही सूचना मिल चुकी थी। इस बैठक में सी० आई० ए० तथा पाकिस्तानी

मुत्तर्क्या द्वारा जनवादी अफ़ग़ानिस्तान के खिलाफ़ कार्रवाई का एक संयुक्त कार्यक्रम स्वीकार किया गया।

सी० आई० ए० प्रमुखों द्वारा इस कार्यक्रम के अनुमोदित किये जाने के बाद जॉन रैगन उन पाकिस्तानी जनरलों से मिले, जिन्हें कुछ ही बाद अफ़ग़ानिस्तान से लगे इलाक़ों के कमांडर नियुक्त किया गया। रैगन और लैसर्ड ने पाकिस्तानी सूचना मंत्री हाशिम हुमीद से भी भेंट की। उनके साथ उन्होंने अफ़ग़ानिस्तानविरोधी प्रचार अभियान के बारे में विस्तार से विचार किया।

आगे चलकर लैसर्ड ने शीर्षस्थ पाकिस्तानी सेना-धिकारियों के साथ मिलकर बुरहानुद्दीन रब्बानी के नेतृत्व में तथाकथित इस्लामी अजुमन-ए-निजात-ए-अफ़ग़ानिस्तान की स्थापना करनी शुरू की।

तथ्य ये हैं। मगर ह्वाइट हाउस उनकी उपेक्षा करना ही श्रेयस्कर समझता है और अमरीकी प्रचारतंत्र सारा जोर लगाकर सी० आई० ए० द्वारा पोषित दस्यू-ओ और प्रोलेजकों को "स्वाधीनता संग्रामियों" की तरह पेश करता है।

लजता है कि अमरीकी शासक हलके ईरानी उत्प्र-वासी राजतंत्रवादी गुटों के शासनविरोधी ध्वंसकार्य को भी "स्वतंत्रता संघर्ष" का अंग ही समझते हैं। विश्व प्रेस में प्रकाशित ईरान में सैनिक सत्ता-परिवर्तन की बड़े पैमाने की तैयारियों में सी० आई० ए० की सक्रिय सहभागिता के अनेक समाचार क्या सांयोगिक ही थे?

१९८१ की गरमियों में वाशिंगटन में हुए एक पत्रकार सम्मेलन में अमरीकी पत्रकार क्लार्क किसिजर ने ईरानी उत्प्रवासियों की कुछ गुप्त दस्तावेजों को उद्धृत किया, जो ईरान में सैनिक सत्ता-परिवर्तन के लिए पश्चिम की तैयारियों और अमरीकी निदेशन को प्रमाणित करती थीं।

इन दस्तावेजों से यह पता चलता था कि ईरानी क्रांति के विरुद्ध षड्यंत्र में शाह की अंगरक्षक सेना और सुरक्षा पुलिस के भूतपूर्व प्रमुख तथा राजतंत्र के अन्य समर्थक ऐक्यबद्ध थे। उनका लक्ष्य ईरानी सरकार को उलटना और देश में अमरीका-समर्थक सरकार की स्थापना करना था। षड्यंत्रकारियों का मुख्यालय वाशिंगटन में, ह्वाइट हाउस से कुछ ही कदमों के फ़ासले पर, स्थित था और उन्होंने ल्युइस क्रीपटन एसो-शिएट्स नाम की प्राइवेट कंपनी को अपना आवरण बना रखा था। षड्यंत्र में केंद्रीय व्यक्ति थे ईरानी नागरिक, वाशिंगटन में शाह के दूतावास में भूतपूर्व परामर्शदाता असद जोमायूँ और अमरीकी नागरिक, संयुक्त राज्य अमरीका की वैस्ट पॉइंट सैनिक अकादमी के स्नातक जॉन मैमफर्ड।

पत्रकार सम्मेलन में प्रकट हुआ कि षड्यंत्रकारियों ने ईरान की इस आगामी अमरीका-समर्थक "सरकार" में प्रधान मंत्री पद के लिए उम्मीदवार का चयन भी कर लिया था। यह पद जनरल बहराम आरियाना को मिलना था, जो इस समय पेरिस में रह रहे हैं।

सत्ता-परिवर्तन के संगठनकर्त्ताओं के पास बहुत

बड़ी घन-राशि उपलब्ध थी। एक निर्देश के अनुसार केवल पश्चिमी देशों के जनमत को प्रभावित करने के लिए प्रति मास ५ लाख डॉलर खर्च किये जाने थे।

१९८२ के वसंत में तेहरान में भूतपूर्व ईरानी विदेश मंत्री सादिक कुतुबजादे द्वारा रचे गये आयातुल्लाह खुमैनी की हत्या के घट्यंत्र का भंडाफोड़ करने का ऐलान किया गया। इस घट्यंत्र के काफ़ी व्यूरे अभी प्रकट नहीं किये गये हैं, मगर कुछ प्रेक्षकों का विश्वास है कि इस बार भी घट्यंत्र के सूत्र अंततः सैम्ली ही पहुंचेंगे।

स्वतंत्र देशों के विरुद्ध सी० आई० ए० की ध्वंसात्मक कार्रवाइयों के बारे में दुनिया को आये दिन नयी-नयी खबरें सुनने को मिलती हैं। ऐसी ही सबसे ताजा खबरों में से एक यमनी लोक गणराज्य से आयी है, जहां मार्च, १९८२ में सुरक्षा सेवा ने सी० आई० ए० द्वारा प्रशिक्षित एक आतंकवादी गुट का पता लगाया, जो बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ और राजनीतिक हत्याएं करने के लिए देश में चोरी से घुस आया था। अदन में खुले मुकदमे के दौरान यह प्रकट हुआ कि इन दक्षिण यमनी उत्प्रवासियों को अमरीकी और ब्रिटिश प्रशिक्षकों ने भरती और प्रशिक्षित किया था। घट्यंत्र में दो चरण थे—तेल भंडारों, बिजलीघरों तथा अन्य औद्योगिक उद्यमों को विस्फोटों द्वारा ध्वंस करना, जिससे देश में दहशत मच जाये और फिर देश के नेताओं और यमनी समाजवादी पार्टी के सदस्यों की हत्याओं का सिलसिला।

घट्यंत्र असफल रहा—जैसे सैम्ली को ऐसी कितनी ही और ही योजनाएं भी विफल रही हैं। लेकिन फिर भी यह बात नहीं भुलायी जानी चाहिए कि अभाग्यवश अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उपकरण हमेशा ही निशाना नहीं चूकते। आज जब संयुक्त राज्य अमरीका ने लगभग सारे ही विश्व को अपने “बुनियादी हितों” का क्षेत्र घोषित कर दिया है, संसार के पारंपरिक रूप से विशेषकर विस्फोटक माने जानेवाले इलाकों में तनाव अपने क्रांतिक बिंदु पर पहुंच गये हैं। संभवतः सर्वोपरि यह बात मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया पर लागू होती है। इस प्रदेश की बारूदभरे एक विशाल पीपे से तुलना की जा सकती है, जिसमें वाशिंगटन अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के आपराधिक आचरणों को खुले तौर पर प्रोत्साहन देकर पत्तीता लगाने की कोशिश कर रहा है।

## अफ्रीका में नये-नये राज खुलते हैं

"वह तुझसे प्यार करने का दम भरता है। जरा यह तो देख कि वह तेरे लिए क्या करता है!" जब भी कोई नया अमरीकी राष्ट्रपति अपने पद की शपथ ग्रहण करते समय अपने उद्घाटन भाषण में यह वचन देता है कि संयुक्त राज्य अमरीका उत्पीड़ित देशों के न्याय्य संघर्ष का समर्थन करेगा, जनतंत्र को सुदृढ़ करने के लिए काम करेगा और नस्लवाद, रंगभेद और भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष करेगा, तो यह सेनेगाली कहावत हमेशा ही याद आ जाती है।

१९८१ में पदारूढ़ होने पर राष्ट्रपति रैगन ने इस परंपरा में कुछ परिवर्तन करने का निश्चय किया। अपने चुनाव अभियान के दौरान ही उन्होंने कड़ा रास्ता अपनाने का और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य तथा उन देशों के भी संदर्भ में, जिन्होंने साम्राज्यवादी हुकमशाही को अस्वीकार कर दिया था और प्रगतिशील सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण करना शुरू कर दिया था, संयुक्त राज्य अमरीका की नीति को बदलने का प्रण किया था। रॉनल्ड रैगन ने वाशिंगटन की राजनीतिक शब्दावली में एक नयी परिपाटी का प्रचलन किया है—

२५८

आज ह्वाइट हाउस नस्लवाद और रंगभेद के खिलाफ लड़नेवाले दक्षिण-पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन (स्वापो) और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस सहित सभी अफ्रीकी मुक्ति आंदोलनों को "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद" का समानार्थक मानता है। इसके बाद अगर अमरीकी राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को आधिकारिक रूप से संयुक्त राज्य अमरीका का "मित्र" होने की संज्ञा देते हैं, तो इससे किसी को भी अचरज नहीं होगा।

राष्ट्रपति रैगन की इस खुली स्वीकारोक्ति ने बस अफ्रीका में अमरीकी नीति के वास्तविक लक्ष्यों को एक बार फिर जाहिर ही किया है और ये लक्ष्य हैं राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का तलोच्छेदन करना, प्रगतिशील देशों में अस्थिरता उत्पन्न करना, आतंकवादी और प्रतिक्रियावादी शासनों को सर्वतोमुखी समर्थन देना, और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अफ्रीकी इलाकों में अमरीकी सैनिक-राजनीतिक उपस्थिति कायम करना।

अफ्रीका के लिए संयुक्त राज्य अमरीका की प्रसारवादी योजनाओं में सी० आई० ए० की एक विशेष भूमिका है। अगस्त, १९८१ में अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधि सदन की एक विशेष समिति ने निर्णय किया कि अफ्रीका में सी० आई० ए० की प्रच्छन्न कार्यवाहियों में पैसा लगाना अत्यावश्यक है। प्रेस रिपोर्टों के अनुसार रैगन प्रशासन ने सी० आई० ए० को अफ्रीका में कोरा परवाना दे दिया है और उसके सारे गहित कार्यों की पूर्ण गोपनीयता को प्रत्याभूत किया है। सी० आई० ए०

के मुख्य लक्ष्यों में इथियोपिया, अंगोला, मोजाम्बिक, जिंबाब्वे, तंज़ानिया, ज़ाम्बिया, कांगो लोक गणराज्य, बेनिन, नीजीरिया, मारीशस, मदागास्कर, गिनी-बिसाऊ, गिनी, ज़ाइर और कीनिया शामिल हैं। स्वाभाविकतया, हर देश के लिए अलग विशिष्ट लक्ष्य है। सी० आई० ए० का मिशन उन शासनों को मजबूत करने के अपने प्रयासों को बढ़ाता है, जो नवउपनिवेशवादियों के साथ सहयोग करने को और ऐसे मूलगामी सामाजिक-आर्थिक रूपांतरणों को कार्यरूप देने से बाध आने को तैयार हैं, जो अमरीकी इजारों के हितों का अतिक्रमण कर सकते हैं। दूसरी ओर, चूंकि अफ्रीका को "बुनियादी अमरीकी हितों" का क्षेत्र घोषित कर दिया गया है, इसलिए सी० आई० ए० को उन सभी के खिलाफ किसी भी साधन का उपयोग करने की खुली छूट दे दी गयी है, जो वाशिंगटन की नीति में आड़े आने की जुरत करते हैं।

अफ्रीका में सी० आई० ए० की कार्रवाइयों का इतिहास अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्रामियों के विरुद्ध पाश्चातिक अत्याचारों से परिपूर्ण है।

भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट जॉन स्टॉकवैल ने 'दुश्मनों की तलाश में' शीर्षक अपनी पुस्तक में लिखा है कि सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी की ध्वंसात्मक गति-विधियां लगभग सारे ही अफ्रीकी देशों में फैली हुई हैं। सी० आई० ए० के अधिक जगविदित कार्यों में पश्चीस लुमुबा की हत्या, क्वामे एन्क्रूमा का सत्ता से हटाया जाना, अंगोला में साबिंबी के गिरावों को

सहायता और बेनिन में सत्ता-परिवर्तन का प्रयास आते हैं।

राजनीतिक हत्या अफ्रीका में सी० आई० ए० का एक प्रिय हथकंडा है। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को कमजोर करने और समाजवाद की ओर अभिमुख देशों को डराने के प्रयास में जैंगली के विशेषज्ञ लोक-प्रिय अफ्रीकी नेताओं को "दूर" कर देते हैं और वाशिंगटन के आगे झुकने से इन्कार करनेवाली विधि-सम्मत सरकारों को उलट देते हैं। यह कहना ही काफी होगा कि पिछले दो दशकों में अफ्रीका में जो ४० से अधिक सत्ता-परिवर्तन हुए हैं, उनमें से अधिकांश सी० आई० ए० द्वारा ही रचे और फियान्वित किये गये थे।

\* \* \*

संयुक्त राज्य अमरीका के सहायक विदेश मंत्री (अफ्रीकी मामले) चैस्टर ए० कॉकर ने जून, १९८१ में कहा था: "दक्षिणी अफ्रीका—ज़ाइर से लेकर कैप (आशा अंतरीप—सं) तक—में हमारी दिलचस्पी हमारे द्वारा इस क्षेत्र के संयुक्त राज्य अमरीका तथा पश्चिमी विश्व के लिए सामरिक, राजनीतिक तथा आर्थिक महत्व की मान्यता से उत्पन्न होती है... दांव इतने ऊंचे हैं, हमारे पार-स्परिक हितों को खतरे इतने ज्यादा हैं, और, सर्वोपरि, दक्षिणी अफ्रीका के जनगण के लिए कीमत इतनी भारी है कि हम इस प्रदेश की चुनौतियों से मुंह मोड़ नहीं



सकते।" \* सचमुच, दक्षिणी अफ्रीका की "बुनौतियों का सामना करने" के लिए अमरीका द्वारा उठाये जानेवाले कदम हाल के समय में बहुत स्पष्ट हो गये हैं, खासकर जहाँ तक कि ये सीमांतक राज्यों से और नसलवादी दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध संघर्षरत अफ्रीकी मुक्ति पार्टियों से संबंध रखते हैं।

सी० आई० ए० ने अफ्रीकी देशों में प्रगतिशील प्रवृत्तियों को कमजोर करने और नसलवादी तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों की स्थिति को मजबूत करने के लिए बीसियों कार्रवाइयों की हैं। इनमें से कितनी ही कार्रवाइयों का परदाफास हो गया है।

१९७५ में सी० आई० ए० ने अंगोला में—अगर वियतनाम में अमरीकी आक्रमण को अलग रहने दिया जाये, तो—अपनी पुढोत्तर वर्षों की सबसे बड़ी कार्रवाई शुरू की।

अंगोली जनता ने अंगोली स्वतंत्रता जन-आंदोलन (एम० पी० एल० ए०) पार्टी के नेतृत्व में वर्षों के प्रखर संघर्ष के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की। ११ नवंबर, १९७५ को अंगोला लोक गणराज्य की उद्घोषणा की गयी और संसार के अधिकांश राज्यों ने उसे मान्यता प्रदान कर दी। लेकिन उपनिवेशवाद के अवशेषों, दक्षिण अफ्रीकी नसलवाद और साम्राज्यवादी साजिशों के विरुद्ध संघर्ष को समर्पित प्रगतिशील शक्तियों की

इस विजय को प्रिदोरिया में और विशेषकर वाशिंगटन में पसंद नहीं किया गया।

अमरीकी प्रशासन ने तत्काल नयी लोकप्रिय सरकार के विरुद्ध बुने तौर पर शत्रुतापूर्ण रवैया अपना लिया और अपनी कार्रवाइयों को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ समन्वित करते हुए उसे बलपूर्वक उलटने की कोशिश की। सी० आई० ए० को अंगोला की पूर्ण स्वतंत्रता के राष्ट्रीय संघ (यूनीटा) और अंगोला की स्वतंत्रता के राष्ट्रीय मोरचे (एफ० एन० एल० ए०) की सहायता के लिए कोई १० करोड़ डॉलर दिये गये। ये प्रतिक्रांतिकारी गुट हैं, जिनके नेता सी० आई० ए० के कठपुतले भोनास साविंबी और होल्डेन रोबेर्तो हैं। अमरीकी वायु सेना के परिवहन विमानों ने ज़ाइर में स्थित यूनीटा और एफ० एन० एल० ए० के अड्डों को हथियार और गोलाबारूद पहुंचाये। प्रतिक्रांतिकारी गिरोहों के पास अमरीकी सैनिक सलाहकार और प्रशिक्षक पहुंच गये। अमरीकी भाड़े के सैनिकों ने अंगोला के खिलाफ सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया।

१९८१ में दक्षिण अफ्रीकी राजकीय सुरक्षा ब्यूरो (बॉस) के एक भूतपूर्व एजेंट गॉर्डन विंटर ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें अंगोला में सी० आई० ए० तथा बॉस के बीच सहयोग का विस्तृत वर्णन दिया गया था। खास तौर से विंटर ने बताया कि सी० आई० ए० तथा बॉस एम० पी० एल० ए० की सरकार को उलटने के अपने सभी प्रयासों में पूर्ण ताल-मेल

\* *Africa Report*, September-October, Vol. 26, No 5, 1981, p. 7.

बनाये रखते थे। अंगोला में अमरीकी-दक्षिण अफ्रीकी हस्तक्षेप के दौरान उनके प्रतिनिधियों की जाइर में नियमित बैठकें होती थीं और बॉस्स के निदेशक ने सी० आई० ए० के शीर्षस्थ अधिकारियों से परामर्श के लिए दो बार वाशिंगटन की यात्रा की।

इन ध्वंसकारी गिरावों—यूनीटा और एफ० एन० एल० ए०—के नेताओं, साबिबी और रोबेर्तो, को सी० आई० ए० का पूर्णतम समर्थन प्राप्त था। जैसा कि पता चला, रोबेर्तो को अपने अमरीकी मानिकों से १०,००० डॉलर सालाना मिला करते थे।

लेकिन, संयुक्त राज्य अमरीका के इस सारे समर्थन के बावजूद, यूनीटा और एफ० एन० एल० ए० की सैनिक स्थिति तेजी से बिगड़ती गयी और इसलिए दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की नियमित सेनाओं को भी अंगोला के विरुद्ध लड़ाई में उतर आना पड़ा।

नवोत्पन्न गणराज्य ने, जिसके पास न अभी अपनी कोई सेना ही थी और न दक्षिण अफ्रीकी आक्रमण तथा आंतरिक प्रतिक्रांतिकारियों द्वारा किये जा रहे ध्वंसकार्य का निरोध करने के पर्याप्त साधन ही थे, सहायता के लिए समाजवादी देशों की ओर मुंह किया। अपने अंतर्राष्ट्रियतावादी कर्तव्य के प्रति निष्ठावान समाजवादी देशों ने अंगोला को हथियार, गोलाबारूद, चिकित्सीय सामान और खाद्य-पदार्थ भेजे। इसके अलावा क्यूबाई सैनिक टुकड़िया भी सहायता के लिए अंगोला पहुंचीं। इस सहायता ने अंगोला के लिए जनता की सरकार पर आये खतरे को दूर करना और शांति

के साथ अपने देश के निर्माण में लगना संभव कर दिया। अलबत्ता अंगोला की सरकार ने क्यूबा से जब तक दक्षिण अफ्रीकी आक्रमण का खतरा बना रहता है, तब तक अपने सैनिक वहीं रहने देने का अनुरोध किया। यह एक पूर्णतः विधिसम्मत अनुरोध था—संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणापत्र एक प्रभुतासंपन्न राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र से सहायता का अनुरोध किये जाने के अधिकार को मान्यता देता है।

“क्यूबाई सैनिक अंगोला सरकार के अनुरोध पर अंगोला आये थे, क्योंकि देश हस्तक्षेप का, सर्वोपरि नसलवादी दक्षिण अफ्रीकी सेना के हस्तक्षेप का शिकार हो गया था,” एम० पी० एल० ए० श्रमिक पार्टी के राजनीतिक भ्यूरो के सदस्य तथा सचिव लूसीओ लारा ने जनवरी, १९८२ में कहा। “यह अनुरोध संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र में सन्निहित विधिसम्मत प्रतिरक्षा के अधिकार पर आधारित था।”

अंगोला में सी० आई० ए० की कार्रवाई ने सारी दुनिया में विरोध की लहर पैदा कर दी। अमरीकी जनमत ने, जहाँ वियतनामी मुहिमबाजी की खाद अभी ताजा ही थी, अफ्रीका में वाशिंगटन के गुप्त युद्ध का अंत किये जाने की मांग की। १९७६ में जनमत के दबाव ने अमरीकी कांग्रेस को यूनीटा तथा एफ० एन० एल० ए० को प्रच्छन्न अथवा प्रत्यक्ष सहायता निषिद्ध करने का कानून बनाने के लिए मजबूर कर दिया। अपने प्रस्तावक के नाम पर यह कानून क्लार्क संशोधन के नाम से विज्ञात है।

लेकिन क्लार्क संशोधन अंगोला में अमरीकी साम्राज्यवादी साजिशों का अंत न कर सका। संयुक्त राज्य अमरीका के अंगोली प्रतिक्रांतिकारियों के साथ संपर्क बने रहे। ह्वाइट हाउस नसलवादी दक्षिण अफ्रीकी शासन की सहायता से अंगोला में अस्थिरता उत्पन्न करने के अपने प्रयासों से बाज नहीं आया।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि १९७६ में सी० आई० ए० ने यूनीटा के नेता साविंबी को चोरी से वाशिंगटन पहुंचाया था, जहां साविंबी ने अनेक उच्च अमरीकी अधिकारियों से भेंट की, जिनमें अमरीकी राष्ट्रपति के भूतपूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक हेनरी किसिंजर भी थे।

जहां तक रॉनल्ड रैगन की बात है, उन्होंने तो अपने चुनाव अभियान में यह कहते हुए यूनीटा का खुलकर समर्थन किया था कि "साविंबी का आघे से अधिक अंगोला पर नियंत्रण है।... मैं नहीं समझता कि क्यों हमें उन्हें हथियार नहीं देने चाहिए।"\*

रॉनल्ड रैगन के शपथ ग्रहण करने के ठीक पहले विलियम केसी, जिन्हें जल्दी ही सी० आई० ए० का निदेशक बनना था, और रिचर्ड एलेन, जो बाद में राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक बने, ने यूनीटा के प्रतिनिधियों से भेंट की और उन्हें अमरीकी समर्थन का आश्वासन दिया। पद ग्रहण करने के बाद राष्ट्रपति

रैगन ने कांग्रेस द्वारा क्लार्क संशोधन के निरस्त किये जाने की ज़ोरदार मांग की।

मार्च, १९८१ में साविंबी को वाशिंगटन आने का आधिकारिक निमंत्रण दिया गया। उसी महीने अमरीकी विदेश मंत्री अलैक्सेंडर हेग ने संदन में यूनीटा के प्रतिनिधियों के साथ इस संघटन को सहायता के बारे में बातचीत की। दिसंबर, १९८१ में साविंबी को विदेश विभाग में मिलने के लिए बुलाया गया और अमरीकी अधिकारियों ने उन्हें प्रत्यक्षतः उकसावे के उद्देश्य से "राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का नेता" कहा।

यह शायद ही सांयोगिक है कि साविंबी की संयुक्त राज्य अमरीका यात्रा के दौरान ही लुआंडा में अंगोला के सबसे बड़े तेल शोधन कारखाने में जबरदस्त विस्फोट हुआ। जांच-पड़ताल से यह सिद्ध हुआ कि तोड़फोड़ की इस कार्रवाई की योजना संयुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण अफ्रीकी मणराज्य में बनायी गयी थी और उस यूनीटा के दस्त्रुओं ने कार्यरूप दिया था।

नवंबर, १९८१ में पश्चिमी जर्मन पत्रिका 'वेल्टर फ्यूर दॉशे उंड इंटरनासीओनाले पोलिटिक' ने लिखा था कि अंगोला के लिए खतरा बढ़ रहा है। यह खतरा कितना गंभीर था, यह अंगोला पर १९८१ और १९८२ के प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका के जबरदस्त हमलों ने दिखलाया। नसलवादियों ने कुनेने नदी के दक्षिण में लगभग ५०,००० वर्ग किलोमीटर अंगोली भूभाग को कब्जे में ले लिया। दक्षिण अफ्रीका की आक्रामक

\* *Africa Report* (Washington), July-August, 1980, Vol. 25, No 4, p. 6.

कार्रवाई के परिणामस्वरूप अंगोला को सात अरब डॉलर की आर्थिक क्षति उठानी पड़ी।

अमरीकी शासकों ने अंगोला में दक्षिण अफ्रीकी सैनिक घुसपैठों पर अपने हर्ष को छिपाया नहीं। इन घुसपैठों के दौरान बीसियों गांवों को मिट्टी में मिला दिया गया था और हजारों निरीह लोगों की जानें गयी थीं। सितंबर, १९८१ में संयुक्त राज्य अमरीका ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दक्षिण अफ्रीका की भर्त्सना और उसकी सेनाओं की अंगोला से तत्काल वापसी की मांग करने के प्रस्ताव पर एक बार फिर अपने निषेधाधिकार का प्रयोग किया।

आज यह स्पष्ट हो गया है कि दक्षिणी अफ्रीका में अंगोला तथा अन्य स्वतंत्र अफ्रीकी राज्यों के विरुद्ध दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के सशस्त्र हस्तक्षेप से जनित विस्फोटक स्थिति वर्तमान अमरीकी प्रशासन द्वारा अनुमृत "नयी" अफ्रीका नीति का ही प्रत्यक्ष परिणाम है।

अपने अपराधों का औचित्य-स्थापन करने के प्रयास में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य यह दावा करता है कि अंगोला नमीबियाई देशभक्तों की सहायता करता है, जिनकी गणना प्रिटोरिया और वाशिंगटन "आतंकवादी आंदोलनों" में करते हैं। सचमुच, अंगोली सरकार ने नमीबियाई शरणार्थियों के लिए, जिनकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रहा है, वस्तियों, अस्पतालों और स्कूलों की स्थापना की है। अंगोली सरकार संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णयों से, जो स्वापो

को नमीबियाई जनगण का एकमात्र वैध प्रतिनिधि मानता है, और नमीबियाई जनता के न्याय्य हेतु के समर्थन में अफ्रीकी एकता संगठन के प्रस्तावों से मार्गदर्शन लेते हुए स्वापो को सर्वतोमुखी सहायता प्रदान करती है। और अंतिम बात यह है कि अंगोला नमीबिया पर नसलवादी कब्जे के खिलाफ स्वापो के संघर्ष का इसलिए समर्थन करता है कि वह उसे अफ्रीका में उपनिवेशवाद तथा नसलवाद के अवशेषों के विरुद्ध स्वयं अपने संघर्ष का अभिन्न अंग समझता है।

पश्चिम में जब नमीबिया समस्या की बात की जाती है, तो उसमें सामान्यतया पांच देशों—संयुक्त राज्य अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा और पश्चिमी जर्मनी—के तथाकथित संपर्क दल के कार्यकलाप को अवश्य ध्यान में रखा जाता है। इस दल ने १९७८ में नमीबियाई स्वतंत्रता की एक योजना प्रस्तुत की थी, जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव सं० ४३५ में सूचित है, और कहा था कि वह इस योजना के लिए दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की सहमति प्राप्त करने के लिए काम करेगा। लेकिन, वास्तव में संपर्क दल दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ मिलकर और नमीबियाई जनता की पीठ पीछे नमीबिया में पश्चिम की आर्थिक तथा रणनीतिक स्थितियों को बरकरार रखने की योजनाएं तैयार करने में ही लगा हुआ है।

संपर्क दल का प्रत्येक सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ के नानासंघ्य प्रस्तावों का उत्प्रेषण करते हुए नमीबिया के राष्ट्रीय संसाधनों की छुली लूट में लगा हुआ है।

नमीबिया में कार्यरत ८८ बहुराष्ट्रीय निगमों में से २५ के मुख्यालय जिटेन में, १५ के संयुक्त राज्य अमरीका में, ८ के पश्चिमी जर्मनी में, ३ के फ्रांस में और २ के कनाडा में हैं।

नमीबिया के राष्ट्रीय संसाधनों की लूट को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की विदेशी कंपनियों को खनिजों का अप्रतिबंधित दोहन करने देने, करों की दरें नीची (स्वयं दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य से भी नीची) रखने और खनन कंपनियों से यह मांग न करने की नीति सुगमतर बना देती है कि वे अयस्कों का निष्कर्षण की जगह पर ही परिष्करण करें और अपने लाभों के एक हिस्से को अर्धव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों में निवेशित करें। सेवा के बदले सेवा—पश्चिम रंगभेद प्रथा से अपने को प्राप्त सुविधाओं के बदले दक्षिण अफ्रीका के नमीबिया पर सैरक्रान्तूनी अधिकार का समर्थन करता है।

यूरेनियम के विराट निक्षेपों के खोजे जाने के बाद से नमीबिया पश्चिमी कंपनियों के लिए विशेषकर आकर्षक हो गया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस सदी के अंत तक वहां इस रणनीतिक सामग्री का लगभग १५,००० टन प्रतिवर्ष की दर से उत्पादन संभव हो सकता है। इससे आस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा के बाद नमीबिया पश्चिमी जगत में यूरेनियम का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक बन जायेगा। इस प्रकार से नमीबिया पर अवैध अधिकार नसलवादियों और उनके पश्चिमी संरक्षकों को विश्व यूरेनियम भंडारों के एक बड़े भाग को अपने नियंत्रण में रखने,

उसके बाजार में आने के परिमाण और समय में हेरफेर करने और दाम निर्धारित करने में समर्थ बनाता है। इस सबसे उन्हें भारी मुनाफे प्राप्त होते हैं।

नमीबिया में पश्चिमी हितों के सुरक्षण के प्रयासों की कारगरता सीधे-सीधे रंगभेद नीति के किसी भी तरह के प्रतिरोध को कुचलने की प्रिटोरिया की क्षमता पर निर्भर करती है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों वाशिंगटन स्वापो के सशस्त्र संघर्ष को दक्षिणी अफ्रीका में साम्राज्यवाद की आर्थिक स्थितियों के लिए मुख्य खतरा समझता है। संयुक्त राज्य अमरीका और संपर्क दल के अन्य सदस्य राज्य इस खतरे को दूर करने के लिए किसी भी साधन अथवा प्रयास से परहेज नहीं करते। वहाँ से वे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के ४ नवंबर, १९७७ के प्रस्ताव सं० ४१८ द्वारा लगाये गये दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को हथियारों की बिक्री पर प्रतिषेध का नियमित रूप से उल्लंघन करते आये हैं।

इस प्रतिषेध की लगातार अवज्ञा करनेवालों की सूची में संयुक्त राज्य अमरीका सबसे ऊपर है। स्पेस रिसर्च कॉरपोरेशन द्वारा दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को मुधरे हुए १५५ मि० मी० तोप के गोलों का बेचा जाना इसका सबसे खुला उल्लंघन था। इस सौदे की बढौलत प्रिटोरिया के लिए २ से ३ किलोटन क्षमता तक के परमाणविक गोले छोड़ने में सक्षम तोपखाना खड़ा करना संभव हो गया है।

हथियारों के अलावा संयुक्त राज्य अमरीका तथा

अन्य पश्चिमी देश दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को "नागरिक" साज-सामान भी दिल खोलकर मुहैया करते हैं, जिसका सैन्य प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह बात हलके वाणिज्यिक तथा परिवहन विमानों, इलेक्ट्रानो उपकरणों और विभिन्न इंजनों पर विशेषकर लागू होती है।

बेशक, एक भी पश्चिमी राजनीतिज्ञ खुलकर यह स्वीकार करने का साहस न करेगा कि नसलवादियों को दी जानेवाली सहायता सर्वोपरि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और प्रगतिशील अफ्रीकी शासनों के विरुद्ध लक्षित है। लेकिन तथ्य बहुत अडिग होते हैं और यह तथ्य है कि नमीबिया, दक्षिण अफ्रीका, मोजाबीक, अंगोला तथा अन्य देशों में शांत नागरिक उन हथियारों से भारे जा रहे हैं, जो पश्चिम में बनते हैं और पश्चिमी सरकारों की सहमति से ही दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को पहुंचाये जाते हैं।

प्रिटोरिया की आतंकवादी नीतियों के अपने मीन अनुमोदन से वाशिंगटन अब इन्कार भी नहीं करता। अप्रैल, १९८१ में अमरीकी असबाब 'नेशनल रिव्यू' में अमरीकी ड्रग स्थिति अनुसंधान संस्थान, जो सी० आई० ए० के साथ अपने संबंधों के लिए विज्ञात है, के निदेशक की यह स्वीकारोक्ति छपी थी कि सबसे पहला कार्यभार यह है कि स्वाधो को नमीबिया में सत्ता में न आने दिया जाये, क्योंकि अगर उसे ऐसा करने में सफलता मिल जाती है, तो दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य बिल्कुल अकेला पड़ जायेगा और दक्षिण

अफ्रीका के उपयोगी खनिजों के बिना पश्चिम का अस्तित्व असंभव है।"\*

उसी साल मई-जून के महीनों में 'वाशिंगटन पोस्ट' और 'न्यूयॉर्क टाइम्स' सहित कितने ही अमरीकी असबाबों ने अमरीकी तथा दक्षिण अफ्रीकी अधिकारियों के बीच हुई वार्ताओं के बारे में विदेश विभाग के गुप्त कागजात प्रकाशित किये। सहायक विदेश मंत्री चैस्टर फ्रॉकर की दक्षिण अफ्रीकी विदेश मंत्री रॉएल्फो बोता तथा प्रतिरक्षा मंत्री मैग्नस मेलन के साथ बातचीत का विवरण तो बम का धमाका साबित हुआ। विदेश विभाग के गोपनीय विचारों का मानव-अधिकारों के समर्थन और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नसलवाद और रंगभेद के विरुद्ध आधिकारिक वक्तव्यों से ऐसा घोर विरोधाभास या कि दक्षिणपंथी प्रेस तक ने अमरीकी प्रशासन पर पाखंड का आरोप लगाया।

बातचीत का विवरण दिखालाता है कि दक्षिणी अफ्रीका में राजनीतिक स्थिति के अपने आकलन में और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के संदर्भ में अपने लक्ष्यों में दोनों पक्षों ने अद्भूत मतैक्य का प्रदर्शन किया।

सीजिये, जरा चैस्टर फ्रॉकर के शब्दों पर गौर कीजिये: "संयुक्त राज्य अमरीका तथा दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के बीच राजनीतिक संबंध इस समय अत्यधिक महत्व, कहना चाहिए कि ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के प्रति संयुक्त

\*National Review, 1981, April, 17.



राज्य अमरीका की पूरी तरह से बढ़ती उदासीनता और दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की तरफ से अनम्यता के बीच साल के बाद दोनों देशों के बीच दक्षिणी अफ्रीका में सामरिक हितों के आधार पर अधिक सकारात्मक तथा समानार्थक संबंध बनने की संभावना उत्पन्न हुई है... लेकिन नमीबिया की समस्या, जो हमारे यूरोपीय मित्र देशों के साथ और काले अफ्रीकी देशों के साथ संबंधों में पैचीदसी पैदा करती है, दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के साथ नये पारस्परिक संबंधों के विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए हमें नमीबियाई समस्या के ऐसे समाधान की अंतर्राष्ट्रीय योजना को स्वीकार्य बनाने के लिए प्रिटोरिया की सहायता की आवश्यकता है, जो उसके साथ-साथ संयुक्त राज्य अमरीका तथा दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के जीवनवश्यक हितों की निरापदता को सुनिश्चित करे।"

वार्ता के सुरु की दक्षिण अफ्रीकी प्रतिरक्षा मंत्री ने साधा, जिन्होंने स्वापो के साथ समझौते की किसी भी संभावना को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि संयुक्त राज्य अमरीका दक्षिण अफ्रीका के कठपुतली संगठन युनीटा का समर्थन करे, जो दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की सहायता से अंगोला की बिधि-सम्मत सरकार के खिलाफ लड़ रहा है।

दक्षिण अफ्रीकी विदेश मंत्री रॉएलोफ बोत्ता ने काँकर से कहा कि "आंतरिक पार्टियाँ (अर्थात् नमीबिया में प्रिटोरिया के कठपुतले - ले०) तब तक हमें वहाँ से नहीं जाने देना चाहती कि जब तक वे इतनी

शक्ति नहीं प्राप्त कर लेती कि स्थिति को नियंत्रित कर सकें। हम वहाँ सोवियतविरोधी काली सरकार (अर्थात् दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त राज्य की आज्ञा पर चलनेवाली और अफ्रीकी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का विरोध करनेवाली सरकार-ले०) चाहते हैं।"

चैस्टर काँकर ने फ्रियाद की कि "हम (संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव-सं०) ४३५ को बड़ी मुश्किल से ही रद्दी की डेरी में डाल सकते हैं। हम उसे तब के बजाय उसकी अनुपूर्ति करना चाहते हैं।"

प्रिटोरिया में काँकर की बातोंओं के कुछ ही महीने बाद संयुक्त राज्य अमरीका ने दक्षिण अटलांटिक में नौसैनिक युद्धाम्यास किये। उनके तीन हफ्ते बाद दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की सेनाओं ने हज़ारों की संख्या में अंगोला पर आक्रमण कर दिया। इस सेनाओं में दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी गुप्तचर सेवाओं द्वारा अंगोला में आतंकवादी कारबाइयाँ करने के लिए स्थापित भाड़े की इकाइयाँ-३२वीं बुफ़ैलो बटालियन और विशेष कांवेट टुकड़ी-भी शामिल थी।

लंदन से प्रकाशित 'एफ्रीका कॉन्फ़िडेंशियल' पत्रिका के अनुसार दक्षिणी अफ्रीकी और अमरीकी गुप्तचर सेवाओं ने ठेठ १६७६ में ही स्वापो का समर्थन करनेवाले अफ्रीकी देशों और सर्वोपरि अंगोला पर दबाव डालने का एक कार्यक्रम तैयार कर लिया था। इसके अनुसार सी० आई० ए० को स्वापो में फूट पैदा करना, उसके मुख्य नेताओं को बदनाम करना और नमीबिया में पश्चिम-समर्थक शासन स्थापित करने में सहायता देना

था। इसके अलावा अंगोला में आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता पैदा करना एक और लक्ष्य था। १९७६ में 'काउंटरस्पार्ड' पत्रिका ने अपने ३१ जनवरी के अंक में 'नमीबिया के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रशङ्कित कार्रवाई' शीर्षक लेख प्रकाशित किया, जिसमें वाशिंगटन द्वारा प्रिटोरिया के सहयोग से "स्वापो को अलग छोड़ने और यह सुनिश्चित करने कि सत्ता उन्हीं के हाथों में जाये, जिन्हें नियंत्रण में रखा जा सकता है" के लक्ष्य से निरूपित गुप्त योजना के उद्घरण दिये गये थे। इस योजना के रचनाकारों ने तो कठपुतली सरकार का वित्त-पोषण करने और उसकी "अंतर्राष्ट्रीय मान्यता" सुनिश्चित करवाने का कार्यक्रम तक तैयार किया था। लेकिन मुख्य लक्ष्य स्वापो तथा अंगोला पर सैनिक दबाव बढ़ाना था, जिससे नमीबियाई छापामारों को यथासंभव कमजोर किया जा सके, उन्हें दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य और संयुक्त राज्य अमरीका के अनुकूल समझौते को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा सके, अथवा - संभव हो, तो - समझौते से बिलकुल ही बाहर रखा जा सके।

रैगन प्रशासन की नीति पर टीका करते हुए स्वापो के अध्यक्ष सैम न्यूमोमा ने कहा था : "दक्षिणी अफ्रीका के प्रति श्री रैगन की नीति से हमें अचरज नहीं होता। राष्ट्रपति चुने जाने से पहले ही रॉनल्ड रैगन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अफ्रीका में उनका लक्ष्य नसलवादी तथा प्रतिक्रियावादी शासनों की मुक्ति आंदोलन के खिलाफ लड़ने में सहायता करना होगा।

राष्ट्रपति बन जाने पर उन्होंने इस नीति को कार्यरूप देना शुरू कर दिया। श्री रैगन ने चुनाव के पहले कहा था कि वह दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य को अमरीका का मित्र-देश समझते हैं और अब वह संयुक्त राज्य अमरीका के प्रिटोरिया के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए सभी कुछ कर रहे हैं। उन्होंने चुनाव के पहले कहा था कि भोनास साविबी की मदद की जानी चाहिए, क्योंकि यूनैटा एक ऐसी शक्ति है, जिस पर संयुक्त राज्य अमरीका भरोसा कर सकता है, और अब अमरीकी राष्ट्रपति प्रतिश्रुतिकारी साविबी को वाशिंगटन आमंत्रित कर रहे हैं और उन्हें पैसा और हथियार दे रहे हैं, ताकि वह अंगोला के लोगों को जान से मार और लूट सके और तनाव वहां स्थायी बना रहे।

"लेकिन साम्राज्यवाद की ऐसी हरकतें कोई नयी नहीं हैं। हम जानते हैं कि हमारा दुश्मन कौन है और हम साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ लड़ना बंद नहीं करेंगे। अगर जरूरी हुआ, तो नमीबियाई जन अपने सशस्त्र संघर्ष को तेज कर देंगे, क्योंकि आजादी उनके लिए जिंदगी या मौत का सवाल है। हमें कभी का विश्वास हो चुका है कि साम्राज्यवादी और नसलवादी किसी भी जीर भाषा को नहीं समझते।... वे दिन बीत चुके हैं कि जब नमीबिया के दुश्मन चेन्नई अपराध करते रह सकते थे। वस्तु वाशिंगटन के खिलाफ काम कर रहा है।"

सी० आर्द० ए० के स्वापो में फूट पैदा करने और

नमीबिया में कठपुतली शासन स्थापित करने के प्रयासों की बात करते हुए इसकी याद दिलायी जा सकती है कि जिंबाब्वे में संयुक्त राज्य अमरीका ने अफ्रीकी देशभक्तों के स्वाधीनता संग्राम के दौरान कैसी भयानक भूमिका अदा की थी।

नसलवादी रोडेशिया के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका की नीति असाधारणतः नरम रही थी। अमरीकी कंपनियां संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अवैध शासन के विरुद्ध लगायी अनुशास्तियों का उल्लंघन करते हुए सामरिक छतिजों से संपन्न इस देश के साथ व्यापार करती थीं। संयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य पश्चिमी देश स्मिथ सरकार को तेल और अस्त्र-शस्त्र सहित उसकी जरूरत की लगभग सभी चीजों का प्रदाय करते थे। सी० आई० ए० का रोडेशियाई केंद्रीय गुप्तचर्या संगठन के साथ सक्रिय सहयोग था। सी० आई० ए० के भूतपूर्व निदेशक रिचर्ड हेल्म ने स्वीकार किया है कि उनकी एजेंसी अमरीकी कांसुलेट के अधिकारियों के जरिए सालाबरी में अपने समबर्ती संगठन के साथ धनिष्ठ संपर्क रखती थी। यही कारण है कि सी० आई० ए० ने कांसुलेट को बंद करने पर अमल न होने देने के लिए जो कुछ हो सकता था, किया।

ठीक है कि संयुक्त राज्य अमरीका को इसके बावजूद बिस्व जनमत के दबाव के कारण जासूसी के इस केंद्र को बंद करना पड़ा। लेकिन सी० आई० ए० ने अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्रामियों के खिलाफ अपनी कार्रवाइयां जारी रखने का धीम्र ही एक और तरीका

निकाल लिया और वह था भाड़े के लोगों का उपयोग।

रोडेशियाई सेना में संयुक्त राज्य अमरीका, ग्रेट ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फ्रांस के कम से कम २,००० भाड़े के सैनिक थे। इनमें सी० आई० ए० के एजेंट भी थे, जो रोडेशिया की स्थिति के बारे में सूचना एकत्र करते थे, अफ्रीकी मुक्ति संगठनों में अपने दलाल भरती करते थे और प्रगतिशील नेताओं की हत्याएं करते थे। अमरीकी भाड़े के सैनिक रोडेशियाई सेना द्वारा जिंबाब्वे-इयो और पड़ोसी मोजांबीक, जाम्बिया तथा बोत्सवाना के निवासियों के विरुद्ध निर्भम लाठीचार्ज अभियानों में प्रत्यक्ष भाग लेते थे। इनमें से कुछ सैनिक मोजांबीक में जिंबाब्वेई शरणार्थी शिविरों पर बमबारी करनेवाले विमानों के चालक थे।

'न्यू एफ्रिकन' पत्रिका के अनुसार रोडेशिया को सी० आई० ए० से मिली सहायता में हवाई जहाजों और हेलीकॉप्टरों जैसे परिष्कृत हथियार भी शामिल थे, जिन्हें जाम्बिया और मोजांबीक पर हमलों में प्रयुक्त किया गया।

जब पश्चिम ने समझ लिया कि रोडेशियाई नसलवादियों को सत्ता अफ्रीकी बहुमत को सौंपनी ही होगी, तो सी० आई० ए० को नया कार्यभार दिया गया और यह था जिंबाब्वे के देशभक्त मोरचे के नेतृत्व में प्रगतिशील शक्तियों को सत्ता में न आने देना। संयुक्त राज्य अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन पुरे विश्वास के साथ अपने पिट्टर पादरी एबल मुजोरेबा के जिंबाब्वे में पहले

सार्विक चुनाव में विजयी होने और प्रधान मंत्री बनने की आशा कर रहे थे। मुजोरेवा के चुनाव अभियान पर उनके संरक्षकों ने लाखों डॉलर खर्च किये। पश्चिमी, और विशेषकर अमरीकी, प्रेस ने देशभक्त मोरवे के उम्मीदवारों के खिलाफ प्रचंड अभियान छेड़ दिया। मोरवे के नेताओं और समर्थकों की हत्याएं करने की कोशिशें की गयीं। वाशिंगटन और लंदन को अपने गुरुरे की सफलता में इतना विश्वास था कि उन्होंने बड़ी जल्दी में "स्वतंत्र" जिंबाब्वे को विशाल वित्तीय सहायता देने का वचन दे दिया। ग्रेट ब्रिटेन के डेविड मार्टिन और कनाडा के फ्रिलिस जॉनसन नामक पत्रकारों ने अपनी पुस्तक 'जिंबाब्वे के लिए संघर्ष' में लिखा है कि अमरीकी विदेश मंत्रालय, सी० आई० ए० और पैटागॉन ने १९७६ में "स्वतंत्र जिंबाब्वे को कीनिया के नमूने पर 'नरम' रास्ते पर ले जाने" के लिए एक "जिंबाब्वे निधि" स्थापित करने की सोची थी।\*

लेकिन साम्राज्यवादियों की योजनाएं धरी की धरी रह गयीं। अफ्रीकियों के अत्यधिक भारी बहुलांश ने जिंबाब्वे की देशभक्त शक्तियों के पक्ष में मत दिये। और बेचारे मुजोरेवा को संसद में सिर्फ तीन स्थान ही प्राप्त हुए—उनके पास जितने हैलीकॉप्टर थे, उनसे भी कम।

पश्चिम को ताबडतोड़ अपनी कार्यनीति बदलनी पड़ी—देशभक्त मोरवे के नेताओं के प्रति दर्प और

अपमान से भरपूर व्यवहार की जगह चापलूसी ने ले ली। यह तबदीली कोई आश्चर्यजनक नहीं थी—नसलवादियों के भूतपूर्व संगी-साथी जितना हो सके, उतना बचाने की कोशिश कर रहे थे और, जैसे कि साल्सबरी में एक पश्चिमी राजनयज्ञ ने कहा, जिंबाब्वे को एक और अंगोला या इथियोपिया में बनने से रोक रहे थे।

फिर वित्तीय सहायता के वचनों को पूरा करने की बात आयी, लेकिन इसमें पश्चिम ने जल्दी नहीं की—जिंबाब्वे को विकास-सहायता कहीं मार्च, १९८१ में जाकर ही मिली और सो भी इस चेतावनी के साथ कि पश्चिम को आशा है कि जिंबाब्वे के नेता अपनी आंतरिक और, विशेषकर, विदेश नीति में "व्यावहारिक" रहेंगे।

लेकिन जिंबाब्वेइयों ने किसी भी तरह की राजनीतिक शर्तों को स्वीकार करने से सख्ती से इन्कार कर दिया। प्रधान-मंत्री रॉबर्ट मुगाबे ने कहा कि "ये शर्तें देश के हाथों को राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से बांध देंगी और स्वयं उसकी स्वतंत्रता का ही तलछेद बन करंगी।..."

और यह भय निराधार नहीं है। आखिर यही तो अमरीकी साम्राज्यवाद का लक्ष्य है, जो यही चाहता है कि अफ्रीकी महाद्वीप पर सभी प्रगतिशील शासन खत्म हो जायें।

वाशिंगटन दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की रंगभेद व्यवस्था का विरोध करने की आवश्यकता की चाहे कितनी ही दिखावटी बातें क्यों न करता हो, संयुक्त

\* David Martin, Phyllis Johnson, *The Struggle for Zimbabwe*, Faber and Faber, London-Boston, 1981, p. 255.

राज्य अमरीका का आपराधिक नसलवादी शासन के साथ सहयोग वर्ष प्रति वर्ष बढ़ता ही जा रहा है। ६०० से अधिक अमरीकी कंपनियाँ इस देश की आबादी का शोषण कर रही हैं। १९८० में दक्षिण अफ्रीका के रणनीतिक उद्योगों में अमरीकी निवेश २ अरब डॉलर तक पहुंच चुके थे और १९७६ की तुलना में व्यापार का परिमाण २४ प्रतिशत बढ़कर ४.२ अरब डॉलर हो गया था। सिर्फ संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं, बल्कि अमरीकी सरकार के भी निर्णयों की अवहेलना करते हुए अमरीकी कंपनियाँ नसलवादियों को सैनिक साहज-सामान और तेल का प्रदाय किये जा रही हैं और परमाणविक अस्त्रों के निर्माण में उनकी सहायता कर रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के आर्थिक तथा व्यापारिक बहिष्कार का सवाल बार-बार उठाया गया है, जो निरंतर बुनियादी मानव-अधिकारों तथा अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन किये जा रहा है और अपने पड़ोसियों के प्रति झुले तौर पर आतंकवादी नीति पर चल रहा है। लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका और उसके नाटो के मित्र-देशों ने हर बार इसके लिए सभी कुछ किया है कि ऐसे प्रस्ताव अकारण जायें।

वाशिंगटन यह दावा करके नसलवादियों के खिलाफ कुछ करने की अपनी अनिच्छा का औचित्य-स्थापन करता है कि उसे दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य के भीतरी मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई नैतिक अधिकार

नहीं है, लेकिन जैसे ही अंगोला, मोझांबिक, जाम्बिया, जाइर अथवा किसी भी अन्य अफ्रीकी देश के विरुद्ध प्रच्छन्न कार्रवाइयाँ शुरू करने की बात उठती है कि तैसे ही इस "नैतिक अधिकार" की दुहाइयाँ दी जाने लगती हैं।

इसलिए अमरीकी और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या में घनिष्ठ सहयोग कोई आश्चर्य नहीं पैदा करता। अमरीकी पत्रिका 'एफ्रीका रिपोर्ट' के अनुसार यह सहयोग सभी अमरीकी प्रशासनों में बना रहा है। अपनी स्थापना के समय से ही दक्षिण अफ्रीकी राजकीय सुरक्षा ब्यूरो (बॉस), जिसे बाद में राष्ट्रीय गुप्तचर्या सेवा का नाम दिया गया, सी० आई० ए० के साथ लगातार सूचना का विनिमय करता रहा है। "दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य में सी० आई० ए० के लक्ष्यों में से एक अफ्रीकी राष्ट्रवादी संगठनों में प्रवेश पाना और उनमें अपने एजेंट भरती करना भी था, जो दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत बहुमत की सरकार के पैदा होने की हालत में वाशिंगटन के आदेशों पर चलें।" भूतपूर्व बॉस-एजेंट गॉर्डन विंटर के अनुसार सी० आई० ए० ने १९५६ में अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस में फूट डलवायी, जिससे सर्व-अफ्रीकी कांग्रेस का जन्म हुआ। विंटर अपने प्रमुख, जनरल एच० जे० बान डेने वर्ग के इन शब्दों को उद्धृत करते हैं कि उनके पास "गुप्त टेपों के रूप में इसका प्रमाण है, जो यह दिखाता है कि सर्व-अफ्रीकी कांग्रेस की स्थापना का विचार जोहानेसबर्ग में सी० आई० ए० कर्मियों और

अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन भूतपूर्व सदस्यों के बीच एक बैठक में पैदा हुआ था, जिनमें से एक पोटलाको लेबालो थे, जो अमरीकी सूचना सेवा के कार्यालय में एक समय काम करते थे।"

गॉर्डन विंटर के अनुसार वस्तुतः लोकप्रिय अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभाव का, जिसे आवादी के सभी समूहों का समर्थन प्राप्त है, प्रतिकार करने के प्रयास में सी० आई० ए० दक्षिण अफ्रीका में कई अफ्रीकी संगठनों को पैसा देती है। विंटर आगे कहते हैं कि अमरीकी गुप्तचर्या दक्षिण अफ्रीका में पैसा पहुंचाने के प्रयोजन से संयुक्त राज्य अमरीका के अनेक संगठनों का उपयोग करती है, जिनमें एक विध्वानुसार नागरिक अधिकार रक्षार्थ अमरीकी वकील समिति भी है। १९७७ में इस समिति के जरिए कोई १० लाख डॉलर की रकम भेजी गयी थी। जनरल बान डेन बर्ग ने विंटर को बतलाया था कि सी० आई० ए० जोरों से तय एजेंटों की तलाश कर रही है। बान डेन बर्ग ने जोर देकर कहा कि "सी० आई० ए० इस दौड़ में सभी अज्ञात घोड़ों का समर्थन करती है, ताकि चाहे जो भी घोड़ा जीते, अमरीका का इनाम की रकम में हिस्सा रहेगा। और इनाम है हमारे रणनीतिक खनिज निक्षेप और संभवतः इतने ही महत्व की हमारी विराट और सस्ती कार्बो श्रम शक्ति।"

राष्ट्रपति रैगन के प्रशासन में दक्षिण अफ्रीकी सुरक्षा सेवा के साथ सी० आई० ए० के सहयोग ने और भी बड़ा आकार ग्रहण कर लिया। संयुक्त राज्य

अमरीका में तथा अन्यत्र विरोध-प्रदर्शनों के बावजूद मार्च, १९८१ में दक्षिण अफ्रीकी सैनिक गुप्तचर्या के पांच उच्चाधिकारी वाशिंगटन आये और उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद तथा अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या के अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया। संयुक्त राष्ट्र संघ में संयुक्त राज्य अमरीका की प्रतिनिधि ऑन कर्कपेट्रिक ने दक्षिण अफ्रीकी सैनिक गुप्तचर्या के प्रधान, जनरल पी० डब्ल्यू० बान डेर बैस्टहूजेन से न्यूयार्क में अपने यहां भेंट की। ह्यूइट हाउस ने पांच-उ-पूर्वक कहा कि उसे "मालूम नहीं था" कि दक्षिण अफ्रीकी आगतुक गुप्तचर्या अधिकारी हैं, और यही नहीं, उसने उनसे संयुक्त राज्य अमरीका से चले जाने को भी कह दिया—अलवता, बातचीत के बाद।

मोजांबीक में प्रतिजातिकारी भूमिगत आंदोलन के संगठन में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य की भूमिका सर्वज्ञात है। और इसमें इन दोनों गुप्तचर्या सेवाओं—सी० आई० ए० और राष्ट्रीय गुप्तचर्या सेवा—का सहयोग प्रत्यक्ष है।

सी० आई० ए० ने मोजांबिक में अपने जासूसों को देश के स्वतंत्रता प्राप्त करने के बहुत पहले ही भेजना शुरू कर दिया था। इस पुर्तगाली उपनिवेश में व्यवसायियों, पत्रकारों, वैज्ञानिकों अथवा राजनयजों के रूप में आनेवाले अमरीकी एजेंट ऐसी हर सूचना एकत्र किया करते थे, जो पुर्तगाली औपनिवेशिक साम्राज्य के ढहने की सूरत में उपयोगी सिद्ध हो सकती थी।



फेलीमो (मोजाबीक मुक्ति मोरचा) की विजय और स्वतंत्रता की उद्घोषणा के बाद सी० आई० ए० ने मोजाबीक में प्रतिशाल शासन को अस्थिर करने और रोडेशिया तथा दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की जड़ें काटने के लिए रोडेशियाई और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर सेवाओं के साथ अपने सहयोग को और बढ़ाया। उदाहरण के लिए, सी० आई० ए० एजेंटों ने इयान स्मिथ की गुप्तचर सेवाओं को मोजाबीक में जिंबाब्वेई शरणार्थी शिविरों की अवस्थिति के बारे में सूचना प्रदान की। इस जानकारी का उपयोग करते हुए रोडेशियाई सेना ने मोजाबीक में पूरे के पूरे गांवों को मिट्टी में मिलाया और उनके शांतिप्रिय निवासियों को बेरहमी के साथ मौत के घाट उतारा।

वाशिंगटन द्वारा दक्षिणी अफ्रीका में मुक्ति आंदोलनों को "आतंकवादी" घोषित किये जाने ने दक्षिण अफ्रीकी नसलवादियों की हिंमत को बढ़ाया और स्वतंत्र अफ्रीकी देशों के विरुद्ध उनकी भड़कावे की कार्यवाहियों को और भी उद्बुतापूर्ण बनाया। ३० जनवरी, १९८१ को दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य ने कहने को तो अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के एक अंग्रेज को नष्ट करने के उद्देश्य से, पर असल में स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों सहित दक्षिण अफ्रीकी शरणार्थियों के खिलाफ ताजीरी कार्यवाई करने के लिए मोजाबीक की राजधानी मापूतो के निकट अपने छतरी सैनिक उतारे।

बाद में पता चला कि नसलवादियों ने अपनी कार्यवाई को सी० आई० ए० के साथ समन्वित किया था,

जिसके मापूतो केंद्र ने प्रिटोरिया को आवश्यक सूचना प्रदान की थी। इस हमले के दो महीने बाद मोजाबीकी सरकार ने मोजाबीकी सशस्त्र सेनाओं और राजकीय तंत्र में अमरीकी एजेंटों के व्यापक जाल का पता चलने की घोषणा की। समाचारपत्रों में अमरीकी एजेंटों के नाम प्रकाशित हुए, जो देश में राजनयिक आवरण के पीछे काम कर रहे थे। सरकार ने एक आधिकारिक वक्तव्य में यह आरोप लगाया कि सी० आई० ए० और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर सेवाओं के एजेंट मोजाबीक तथा अन्य सीमांतक राज्यों के विरुद्ध ध्वसात्मक कार्यवाहियों (राष्ट्रपति सामोरा माशेल की हत्या सहित) के एक पूरे सिलसिले की तैयारी कर रहे हैं।

मोजाबीकी प्रेस ने सी० आई० ए० के ध्वंसकार्य का परदाफाश करनेवाली कई दस्तावेजें प्रकाशित की। 'नोतिशियास' समाचारपत्र के अनुसार सी० आई० ए० की देश की परिवहन सेवाओं और मुख्यतः विमान सेवा में खास दिलचस्पी थी। 'नोतिशियास' ने लिखा कि अमरीकी जासूस हवाई अड्डों की सुरक्षा व्यवस्था और राष्ट्रपति माशेल के निजी विमान के चालकों के बारे में सूचना प्राप्त करने के लिए सभी कुछ करते हैं।

जासूसों ने मोजाबीक में अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के मिशन में घुसपैठ करने की कोशिश की। सी० आई० ए० दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचरों को दक्षिण अफ्रीकी देश-भक्तों की गतिविधियों के बारे में सूचित करती थी

और प्रिटोरिया द्वारा इस सूचना का अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के खिलाफ सशस्त्र छेड़छाड़ की योजनाएं बनाने में उपयोग किया जाता था।

जामुसों को एक पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों के सामने पेश किया गया। सी० आई० ए० का एक एजेंट मोजाबीकी विदेश मंत्रालय का उच्चाधिकारी होसे शीनाल मास्सींगा था। सी० आई० ए० ने उसके साथ पहले-पहल संपर्क १९६६ में, जब वह संयुक्त राज्य अमरीका में अध्ययन कर रहा था, अपने एक कर्मि के जरिए स्थापित किया था, जिसने अपने को बिली कहकर परिचित करवाया था। नौ साल बाद जब मास्सींगा संयुक्त राष्ट्र महासभा में मोजाबीकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य की हैसियत से आया, तो बिली ने उससे फिर संपर्क स्थापित किया, उसे पैसा देने की पेशकश की और मास्सींगा सहयोग करने को तैयार हो गया। मास्सींगा ने स्वीकार किया कि वह मापूतो में सी० आई० ए०-कर्मियों को नियमित रूप से गुप्त सूचनाएं दिया करता था।

अल्सीडू चिबीते एक और सी० आई० ए० एजेंट था, जो मोजाबीकी जनरल स्टाफ के सैनिक रसद विभाग का प्रधान था। उसे १९७५ में भरती किया गया था और मोजाबीकी सेना द्वारा प्रयुक्त हथियारों की क्रिसमों की पूरी सूची तैयार करने और सैनिक इकाइयों की संख्या, प्रशिक्षण तथा अवस्थिति के बारे में और मोजाबीक में स्थित जिंबाब्वेई तथा दक्षिण अफ्रीकी मुक्ति आंदोलन के सशस्त्र दस्तों की गतिविधियों के

बारे में सूचना एकत्र करने का काम सौंपा गया था।

मोजाबीक में राजनयिक आवरण के पीछे काम करनेवाले अमरीकी गुप्तचर्या अधिकारी से अमरीकी दूतावास के सचिव एफ० लुंडल, सचिव एल० ऑलिवर, और दूतावास के कर्मचारी ए० रसेल तथा पी० रसेल।

१६ मार्च, १९८१ को आयोजित एक पत्रकार-सम्मेलन में मोजाबीक के सूचना-मंत्री होसे वूदश क्वासी ने पत्रकारों के सामने कप्तान भोआओ कार्नेइरो गोंसालवेश को पेश किया, जो मोजाबीकी सुरक्षा अधिकारियों के आदेश पर मापूतो में अमरीकी दूतावास के सी० आई० ए० कर्मियों के साथ तीन साल से सहयोग कर रहा था। गोंसालवेश ने बताया कि उनमें से एक ने कहा था कि "सी० आई० ए० दक्षिण अफ्रीका की सहायता से मोजाबीक में सत्ता-परिवर्तन करवा सकती है।"

अमरीकी और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर सेवाएं मोजाबीक में प्रतिक्रांतिकारी भूमिगत आंदोलन, तथा-कथित मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध, की सहायता कर रही है। जैसे कि राष्ट्रपति सामोरा मासेल ने अनेक बार कहा है, मोजाबीकी सरकार के पास इसका ठोस प्रमाण है कि यह "आंदोलन" दक्षिण अफ्रीकी नसलवादी शासन और सी० आई० ए० से संबद्ध है। मोजाबीक के सूचना-मंत्री के अनुसार गद्दारों और विदेशी भाड़े के सैनिकों से निर्मित "मोजाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध" व्यवहार में "दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या की एक कार्रवाई आतंकवादी शाखा ही है"।

मोज़ाबीक की जनवादी सरकार के विरोधियों के सशस्त्र गिरोह पहले अपनी कारवाइयाँ रोडेशियाई प्रदेश से किया करते थे, मगर देशभक्त शक्तियों की विजय के बाद उन्हें जिंबाब्वे से भागना पड़ा। अंदन की 'न्यू एफ्रिकन' पत्रिका के अनुसार उन्हें पूर्वी ट्रान्सवाल (दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य) में शरण मिली। दक्षिण अफ्रीकी सेना और भूतपूर्व रोडेशियाई सेना के प्रशिक्षक आतंकवादियों को विशेष शिविरों में प्रशिक्षण देते हैं।

सी० आई० ए० की योजनाओं में मोज़ाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध के दस्यु-दलों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि ये मोज़ाबीक में अमरीकी ध्वंसकार्य को सुगम बनाते हैं। इसके अलावा, सी० आई० ए० प्रतिक्रांतिकारी भूमिगत आंदोलन के पुर्तगाली प्रतिक्रियावादियों के साथ, जो मोज़ाबीक में पुरानी व्यवस्था को फिर से स्थापित करना चाहते हैं, संपर्कों को भी समन्वित करती है। सी० आई० ए० के साथ अपने संपर्कों के लिए मशहूर और मोज़ाबीक में पुर्तगाली अभियान सेना के भूतपूर्व कमांडर जनरल दी अरिशावा १९८० में प्रतिक्रांतिकारियों से मिलने के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे। उल्लेखनीय है कि इसके बाद मोज़ाबीकी सरकार के खिलाफ मोज़ाबीक राष्ट्रीय प्रतिरोध की छेड़छाड़ की कारवाइयाँ सहसा बहुत बढ़ गयीं।

सी० आई० ए० के जामूसी जाल के रहस्योद्घाटन के खिलखिले में मोज़ाबीकी सुरक्षा मंत्रालय द्वारा जारी

किये गये एक वक्तव्य में कहा गया है कि "सी० आई० ए० स्वतंत्र अफ्रीकी देशों में अस्थिरता लाने के उद्देश्य से दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य का प्रतिक्रांतिकारियों और दस्यु-दलों के मुख्य अड्डे की तरह उपयोग करती है। यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि दक्षिणी अफ्रीका में दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य साम्राज्यवाद की ध्वंसात्मक रणनीति का मुख्य उपकरण बन गया है।"

मोज़ाबीक में सी० आई० ए० के जामूसी जाल के रहस्योद्घाटन ने वाशिंगटन को नाराज कर दिया। अमरीकी प्रशासन ने जामूसी के आरोपों को एकदम अस्वीकार करते हुए और मोज़ाबीक को सजा देने के उद्देश्य से उसे खाद्य पदार्थों की पूर्ति सहित सभी तरह की सहायता के निलंबन की घोषणा कर दी।

मोज़ाबीक के विदेश मंत्री भोआकीम चिस्सानो ने इस अमरीकी निर्णय को स्वतंत्र अफ्रीका के विघटन आर्थिक युद्ध का अभिन्न अंग बताया। रेगन प्रशासन ने मोज़ाबीक लोक गणराज्य के खिलाफ, जिसने सी० आई० ए० पर हाथ उठाने की जुर्रत की थी, ये प्रतिपेक्ष लाने का निर्णय कितनी आसानी और जल्दी से ले लिया! ये निच कदम उठाने में अमरीकी सरकार को सिर्फ कुछ ही दिन लगे। दूसरी तरफ, नसलवादी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आर्थिक प्रतिपेक्षों का लगाया जाना रोकने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका ने भरसक सभी कुछ किया है और किये जा रहा है।

मोज़ाबीक में सी० आई० ए० का मंदाफोड़ हुए अभी कुछ ही महीने हुए थे कि उसका एक नया कार-

मामा सामने आया। जून, १९८१ में जाबियार्द सरकार ने जामूसी के आरोप पर दो अमरीकी राजनयकों को देश से निकाल दिया तथा चार और अमरीकियों को अबाधित व्यक्ति घोषित कर दिया।

जाबियार्द समाचारपत्रों के अनुसार देश के सुरक्षा अभिकरणों ने केनैथ कौडा सरकार को उलटने के एक षड्यंत्र का पता चलाया था। इसकी योजना सी० आई० ए० द्वारा दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या के सहयोग से तैयार की गयी थी। साजिश को कार्यक्रम दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य में भरती किये गये भाड़े के सैनिकों द्वारा दिया जाना था। उन्हें राष्ट्रपति कौडा तथा देश के अन्य नेताओं की हत्या करनी थी। षड्यंत्र के एक अन्य रूपांतर के अनुसार सत्ता-परिवर्तन केनैथ कौडा की अफ्रीकी एकता संगठन की २८वीं महासभा के दूसरे अधिवेशन में भाग लेने के लिए नैरोबी यात्रा के समय किया जाना था। षड्यंत्र के सफल हो जाने की सुरत में सी० आई० ए० सत्ता की बागडोर सेना तथा राजकीय तंत्र में भरती किये गये सी० आई० ए० एजेंटों से निर्मित कठपुतली सरकार को सौंप देती।

अगस्त, १९८१ में अमरीकी अखबार 'बॉल स्ट्रीट जरनल' ने खबर दी कि सी० आई० ए० ने मॉरीशस जुभाफ आंदोलन (एम० एम० एम०) के महासचिव पोल बेराभे की हत्या की योजना तैयार की थी।

भला पोल बेराभे ने सी० आई० ए० का गुस्सा मोल लेने के लिए क्या किया था?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए 'अफ्रीक-आओ'

पत्रिका लिखती है कि रैशन प्रशासन और प्रिडोरिया क़तई बरदास्त नहीं करेंगे कि मॉरीशस समाजवादी पक्ष को अंगीकार करे और गुटनिरपेक्षता की नीति पर चले। बात यह है कि हिंद महासागर में स्थित अमरीकी सैनिक अट्टा दीएगो गार्सीआ द्वीप मॉरीशस की भूमि है और मॉरीशस की प्रगतिशील शक्तियाँ इस टापू पर अमरीकी सेना के सैरजानूनी कब्जे का अंत किये जाने की अधिकाधिक मांग कर रही हैं।

दीएगो गार्सीआ का पैटागॉन के लिए क्या महत्व है, यह समझने के लिए जरा कुछ तथ्यों पर नज़र डालिये। १९७५ में ग्रेट ब्रिटेन द्वारा यह टापू संयुक्त राज्य अमरीका को "पट्टे पर" दिये जाने के बाद वाशिंगटन ने बड़ा सैनिक अट्टे के निर्माण में ३२० लाख डॉलर लगाये। १९८१ के आरंभ में पैटागॉन ने कांग्रेस से उसके "आधुनिकीकरण" के लिए १५८६ लाख डॉलर की मांग की। दीएगो गार्सीआ को पश्चिमी प्रशांत, दक्षिण एशिया, फ़ारस की खाड़ी तथा पूर्वी अफ्रीका से लेकर दक्षिण अटलांटिक तक के विराट नौक्षेत्र में समस्त "द्रुत विनियोजन शक्तियों" की सक्षमताओं का समायोजन करने का मुख्य नौसैनिक अट्टा माना जाता है। दीएगो गार्सीआ आधुनिकतम, नाभिकीय रॉकेटों से लैस पनडुब्बियों सहित परमाणवीय पनडुब्बियों के अट्टे का काम दे सकता है।

यही कारण है कि पैटागॉन मॉरीशस की जनता द्वारा दीएगो गार्सीआ के वापस किये जाने की हर

मॉग को "संयुक्त राज्य अमरीका की राष्ट्रीय सुरक्षा" के लिए खतरे की तरह समझता है।

यही कारण है कि पोल बेरोम्बे सी० आई० ए० की गुप्त फाइलों में "पहले नंबर के शत्रु" की हैसियत रखते हैं।

मॉरीशस में सी० आई० ए० के परदाकाश से पैदा हुई नाराजगी की लहर अभी शांत भी न हो पायी थी कि लैंग्ली की एक नयी गुप्त योजना प्रकाश में आ गयी। यह लीबियाई नेता कर्नल मुअम्मर कद्दाफी की हत्या करने की योजना थी।

पोल बेरोम्बे की ही भांति मुअम्मर कद्दाफी भी अफ्रीका में अमरीकी प्रशासन के मुख्य शत्रुओं की सूची में हैं। कारण? कारण यह कि लीबिया राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियों और उन स्वतंत्र देशों को सहायता देता है, जो अफ्रीका तथा मध्य-पूर्व के मामलों में साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का अविचल विरोध करते हैं और अमरीकी ध्वंसकार्य का प्रतिरोध करते हैं। जैसे कि अमरीकी पत्रिका 'न्यूजवीक' ने अपने ३ अगस्त, १९८१ के अंक में कहा था, यही कारण था कि सी० आई० ए० ने कर्नल कद्दाफी के "आखिरी तीर पर" सत्ता से अलग किये जाने की योजना तैयार की।

लीबियाई नेता की हत्या का दायित्व सी० आई० ए० ने अपने एक भूतपूर्व कर्मी एडविन बिल्सन को सौंपा। हत्या की यह योजना अमरीकी गुप्तचरों की ज्ञानदार परंपरा के अनुरूप ही थी। अमरीकी अखबार 'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार कर्नल कद्दाफी की हत्या

उनके शरीर में "एक ऐसी काशी मक्खी की, जिसकी लीबिया में भरमार है, शमल के नन्हे-से डार्ट द्वारा" \* एक घातक विष का प्रवेश करवाकर की जानी थी।

विष प्रेस में खबर के आ जाने के कारण सी० आई० ए० की ये योजनाएं साकार न हो सकीं, मगर इससे वाशिंगटन का लीबिया के विरुद्ध नयी आतंकवादी योजनाओं का तैयार करना बंद नहीं हो गया। अमरीकी जनमत का ध्यान १५ मई, १९८१ को अमरीकी कांग्रेस अनुसंधान सेवा द्वारा अफ्रीका में अमरीकी प्रभाव को फैलाने तथा सुदृढ़ करने के उद्देश्य से "लीबिया के विरुद्ध कार्रवाइयों" को तेज करने के बारे में प्रकाशित रिपोर्ट की तरफ गया। इस रिपोर्ट में उत्तरी अफ्रीका में वाशिंगटन के वास्तविक लक्ष्यों को प्रकट किया गया था :

- इस प्रदेश में संयुक्त राज्य अमरीका के साथ सामान्य हित रखनेवाले देशों को "लीबियाविरोधी आम राय" बनाने के लिए अफ्रीकी एकता संगठन का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना ;

- इस प्रदेश के देशों को सैनिक सहायता बढ़ाना ;

- कद्दाफी को डराकर रोकने के साधन के रूप में इस प्रदेश में कारगर अमरीकी सैन्य उपस्थिति का निर्माण करना।

लगता है कि कद्दाफी की हत्या इसी योजना का अंग थी। और इसीलिए अमरीकी प्रशासन द्वारा

\* Washington Post, 1981, April, 29.



नयी लीबियाविरोधी कार्रवाई प्रत्याशित हो थी।

इसमें कोई अधिक समय लगा भी नहीं।

जुलाई, १९८१ में सीनेट विदेश संबंध समिति के सामने बोलते हुए अफ्रीकी मामलों के लिए उत्तरदायी सहायक विदेश मंत्री चैस्टर कोंकर ने कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका "लीबिया के ध्वंसकार्य और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के समर्थन के राजनय" का प्रतिरोध करनेवाले किसी भी देश को सहायता बढ़ाने के लिए तैयार है। इसके फौरन बाद ट्यूनीशिया को अमरीकी सैनिक सहायता एकदम बढ़ाकर ५०० लाख डॉलर से ६५० लाख डॉलर और सूडान को ३०० लाख डॉलर से १००० लाख डॉलर कर दी गयी। १६ अगस्त को सीदरा की खाड़ी पर नियमित गश्ती उड़ान करते दो लीबियाई विमानों को अमरीकी छठे बेड़े के एक विमान-बाहक पोत से उड़े अमरीकी विमानों ने मार गिराया। लीबियाई विमानों पर इस अकारण आक्रमण ने संपूर्ण अरब विश्व ही नहीं, पश्चिमी यूरोप में भी सख्त नाराजी पैदा की। प्रगतिशील प्रेस ने इस दस्यु-कार्य को लीबिया के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमरीका के आक्रामक दराजों का सबूत बताया। मगर अमरीकी अधिकारियों ने पाखंड-पूर्वक कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका अपने को दोषी नहीं मानता और ज़रूरत पड़ने पर लीबिया के खिलाफ भविष्य में भी ऐसे ही क्रदम उठायेगा।

लीबिया में अस्थिरता पैदा करने की अमरीकी योजना का ही एक हिस्सा चाद की घटनाओं के सिलसिले में व्यापक लीबियाविरोधी अभियान का छेड़ा

जाना है। जैसे कि ज्ञात है, दिसंबर, १९८० में चाद की विधिसम्मत सरकार के अनुरोध पर लीबियाई सेनाएं वहां भेजी गयी थीं। चाद गणराज्य के नेता गूकूनी उएई ने लीबियाई सरकार से उन प्रतिक्रिया-कारियों का सामना करने के लिए सहायता देने की अपील की थी, जो मिन्न और संयुक्त राज्य अमरीका के प्रत्यक्ष समर्थन से सूडान के प्रदेश से हमला कर रहे थे। उएई ने बार-बार इस बात को बुझाया कि लीबियाई सेनाएं चाद में वैध आधार पर और पूर्णतः संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र की भावना के अनुसार ही मौजूद हैं और जैसे ही चाद की सरकार आवश्यक समझेगी, उन्हें वापस भेज दिया जायेगा।

लेकिन अमरीकी प्रशासन सहज बुद्धि के विरुद्ध फिर भी यही दावा करता रहा कि "लीबिया ने चाद पर सैरकानूनी तरीके से हमला किया है," कि वह चाद को "अपने में मिला लेने" की कोशिश कर रहा है और "उत्तरी अफ्रीका में अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहता है"। अमरीकी अधिकारियों ने अफ्रीकी एकता संगठन के अधिकांश सदस्यों को लीबिया के खिलाफ भटकाने की कोशिश में जबरदस्त प्रचार अभियान छेड़ दिया। संयुक्त राज्य अमरीका विशेषकर १९८३ में लीबिया की राजधानी त्रिपोली में अफ्रीकी एकता संगठन की महासभा का अधिवेशन न होने देने के लिए चाद विवाद का उपयोग करना चाहता था। जब अफ्रीकी एकता संगठन ने चाद में लीबियाई सेनाओं की जगह पर अंतःअफ्रीकी शांतिरक्षक सैन्य



दल भेजने का सुझाव दिया, तो संयुक्त राज्य अमरीका ने शोर मचाया कि लीबिया चाद से जाने को कभी सहमत न होगा।

अनुमान लगाया जा सकता है कि वाशिंगटन को तब कैसा धक्का लगा होगा, जब लीबियाई सरकार ने अफ्रीकी एकता संगठन के सुझाव का सस्ती से पालन करते हुए अपनी सेनाओं को एक सप्ताह के भीतर ही चाद से वापस बुला लिया। अमरीकी प्रशासन ने यह कहकर अपनी खिसियाहट छिपाने की कोशिश की कि लीबियाई फौजों की वापसी के पीछे जफर कोई "दुष्ट इरादे" हैं।

दिसंबर, १९८१ में सी०आई०ए० ने एक नया लीबियाविरोधी तमाशा खड़ा किया। लैन्सो के कर्णधारों ने राष्ट्रपति रैगन की हत्या के एक लीबियाई षड्यंत्र (!) से संबंधित "परम गोपनीय सूचना" के प्रेस में "पहुँचने" का इतज़ाम किया। इस आशय की बेसिरपैर की अफवाहें फैलायी गयीं कि राष्ट्रपति तथा उनके सहकारियों का खात्मा करने के लिए "दो लीबियाई हत्या-टोलियाँ" संयुक्त राज्य अमरीका भेजी गयी हैं। टेलीविज़न, रेडियो और प्रेस सी०आई०ए० द्वारा आविष्कृत "षड्यंत्र" के बारे में रोज़ नये-नये चटपटे किस्से पेश करते। संयुक्त राज्य अमरीका में लीबिया-विरोधी प्रचार अपने चरम पर पहुँच गया। लंदन के 'ऑब्ज़र्वर' अखबार ने इस सिलसिले में लिखा: "लगता था कि जैसे देश को लीबिया पर सैनिक प्रहार जैसी किसी निश्चयात्मक कार्रवाई के लिए तैयार किया

जा रहा है। लीबिया के विरुद्ध इस साल उठाये शोर ने फ़ीदेल कास्त्रो पर उस समय छेड़े वाग्बाणों की याद दिला दी है, जब कैनेडी कोचीनोस की खाड़ी की कार्रवाई की योजना बना रहे थे।"

दिसंबर, १९८१ में कर्नल कट्टाफ़ी से अमरीकी रेडियो तथा टेलीविज़न प्रसारण निगम ए० बी० सी० (अमेरिकन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) के संबाददाता ने भेंटवार्ता की। इस भेंटवार्ता का सारांश यहाँ दिया जा रहा है:

"प्रश्न: अमरीकी सरकार कहती है कि उसके पास इसका प्रमाण है कि आपने राष्ट्रपति रैगन तथा अन्य शीर्षस्थ अमरीकी अधिकारियों को मारने के लिए हत्या-दल भेजे हैं। क्या आप इसके बारे में कुछ कहेंगे?"

उत्तर: यह सुनते-सुनते हमारे कान पक गये हैं। ... हम किसी भी व्यक्ति की हत्या के सिलसिले हैं। ... किसी भी आदमी की हत्या करना हमारे चरित्र, हमारे आचरण का अंग नहीं है।

प्रश्न: अगर राष्ट्रपति के विरुद्ध लीबियाई षड्यंत्र की रिपोर्टें सही नहीं हैं, तो आपके खयाल में संयुक्त राज्य अमरीका आप पर ये आरोप क्यों लगा रहा है?"

उत्तर: इसलिए कि हम अमरीका के आगे मिर भुंकाने से इन्कार कर रहे हैं और हमने अमरीका का प्रभुत्व मानने से इन्कार किया है और हमने अमरीका के गुलाम होने से इन्कार किया है। हम एक ऐसी

छोटी सी ज़ौम है, जो आबाद रहना चाहती है... अमरीका सारी दुनिया पर दबदबा रखना और दुनिया को अमरीका के दुश्मनों या गुलामों में बांटना चाहता है, और हम गुलाम होने से इन्कार करते हैं।...

प्रश्न: आपके देश और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच विरोध वास्तव में हिंसा की तरफ ले जा चुका है।... अमरीकी छूटे बड़े के विमानों ने आपके दो विमानों को मार गिराया है... क्या आपने कुछ करने की, अमरीकी से बदला लेने की सोची है?

उत्तर: यह बदले की बात नहीं है, यह हमारे देश की रक्षा की, हमारी प्रतिष्ठा की बात है।... हम अपने सीमांतों पर आनेवाली अमरीकी सेना के खिलाफ लड़ने को तैयार हैं।... हम अमरीका का सामना करने को तैयार हैं और हम अमरीका से लड़ने से कतरायेगे नहीं।"

सी० आई० ए० का भूटा शोर साबुन के बुलबुले की तरह फिँट हो गया। लेकिन उमरीकी प्रशासन ने अपने फट्टू लीबियाविरोधी अभियान को पूर्ववत् जारी रखा। साथ ही उसने अब आर्थिक प्रतिषेधों की धमकी भी दी। लीबिया में काम करनेवाले अमरीकियों को सरकारी तौर पर स्वदेश लौट आने की सलाह दी गयी, क्योंकि उनकी जाने कथित रूप में खतरे में थीं। राष्ट्रपति रैगन ने खुले तौर पर लीबियाई तेल की खरीद पर रोक लगाने के अपने इरादों की घोषणा की। १९८२ के आरंभ में ये धमकियाँ वास्त-

विकता में बदल गयीं—संयुक्त राज्य अमरीका ने लीबिया के विरुद्ध आर्थिक प्रतिषेध लगा दिये।

ऐसे पर्याप्त तथ्य हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि वाशिंगटन सिर्फ लीबिया ही नहीं, बल्कि साम्राज्यवादविरोधी नीति पर चलनेवाले अन्य अफ्रीकी देशों के खिलाफ भी अशोषित युद्ध चला रहा है। लीबिया-विरोधी अभियान की पराकाष्ठा के समय सी० आई० ए० और दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या ने सेइलैंड की प्रगतिशील सरकार को उलटने की कोशिश की, जो हिंद महासागर में अमरीकी सैन्य उपस्थिति का अंत किये जाने और विशेषकर दीएगो गार्सीआ से अमरीकी नौसैनिक अट्टे के हटाये जाने की मांग कर रही है।

... २४ नवंबर, १९८१ की सुबह की बात है। दक्षिण अफ्रीकी की सीमा पर स्थित नन्हे से स्वाझीलैंड राज्य की राजधानी के निकट मांजीनी हवाई अड्डे पर एक बस कोई ४० मुसाफिरों को लेकर पहुंची। हवाई अड्डे पर ड्यूटी अधिकारी ने सोचा कि ये लोग किसी रम्बी टीम के सदस्य हैं। कस्टम और सुरक्षा जांच से गुजरने के बाद वे रॉयल स्वाझी एयरवेज के एक विमान पर सवार हो गये।

कुछ घंटे बाद विमान सेइलैंड द्वीप-समूह के प्वाइंट-लार्च हवाई अड्डे पर उतरा। "रम्बी खिलाड़ी" बस पर सवार होकर अपने होटल के लिए रवाना होने को ही थे कि कस्टम अधिकारियों की निगाह एक सूटकेस से बाहर निकली बंदूक की नाल पर पड़ी। देखने पर पता चला कि सूटकेस में एक गुप्त खाना है। शेष सामान

में भी खिलातों और मिठाइयों के नीचे, जिन्हें कस्टम डिक्लेरेशन में पाश्चिमपूर्वक स्थानीय अपाहिज बाल-अस्पताल के लिए भेंट बतलाया गया था, हथियार छिपे हुए निकले। जब "रखी खिलाड़ियों" ने देखा कि भेद खुल गया है, तो उन्होंने बंदूकें निकाल लीं। गोलियां चलने लगीं। सेरील्वज के सुरक्षा दस्तों ने दस्युओं को जल्दी ही काबू में ले लिया। मुठभेड़ में उनमें से कुछ मारे गये और सात को हिरासत में ले लिया गया। शेष दस्यु एयर इंडिया के एक विमान को हाईजैक करके दक्षिण अफ्रीका भाग गये...

"रखी खिलाड़ी" दक्षिण अफ्रीकी तथा अमरीकी गुप्तचर्या सेवाओं द्वारा सेरील्वज की सरकार का तत्काल उलटने के लिए भरती किये गये भाड़े के सैनिक निकले। कांगो में अपने कारनामों के लिए कुख्यात कर्नल माइकेल होर, जो अपनी व्याधिक्रीय रक्तपिपासा के कारण "पागल माइक" के नाम से जाना जाता था, इन लोगों का नेता था। पागल माइक के गिरोह में अमरीकी, ब्रिटिश, फ्रांसीसी और न्यूजीलैंडी नागरिक भी थे, मगर अधिकांश भदौती भूतपूर्व रोडेसियाई सुरक्षाकर्मी थे, जो जिंबाब्वे में देशभक्त शक्तियों की विजय के बाद भागकर दक्षिण अफ्रीका चले गये थे।

भाड़े के सैनिकों में से प्रत्येक को १,००० डॉलर मिले थे। कार्रवाई के सफल होने की सू्रत में प्रत्येक को १०,००० डॉलर और देने का आश्वासन दिया गया था।

बंदी बनाये गये इन सैनिकों में से दो, रॉजर

इंग्लैंड और ऑब्री ब्रुकस, ने पूरी योजना पर प्रकाश डाला है। रॉजर इंग्लैंड ने कहा कि "यह सत्ता-परिवर्तन का प्रयास था। हमने यह समझा था कि वह रक्तहीन होगा। सत्ता को हाथ में लेने के बाद हमें उसे स्थानीय सरकार को सौंपकर सायब हो जाना था।"

ऑब्री ब्रुकस ने बतलाया कि उसे सेरील्वज रेडियो पर दो टेपों का प्रसारण करना था, जो वे लोग अपने साथ लेकर आये थे। "पहला टेप आबादी को यह बतलाता था कि सत्ता बदलने के बाद कैसे और क्या किया जाना चाहिए और दूसरा टेप यह घोषित करता था कि सत्ताच्युत राष्ट्रपति ने सत्ता को फिर संभाल लिया है।"

जैसा कि जांच से पता चला, षड्यंत्र की तैयारी मुकम्मल तरीके से की गयी थी और उसे कार्यक्रम देने के लिए "योग्यताप्राप्त" विशेषज्ञों को चुना गया था। षड्यंत्रकारियों का तो राष्ट्रपति पद के लिए भी अपना उम्मीदवार था—भूतपूर्व राष्ट्रपति जेम्स मैकेम, जिन्हें १९७७ में सत्ताच्युत किया गया था। भावी सरकार का अपना "कार्यक्रम" तैयार था—पश्चिम-समर्थक-विदेश नीति, अफ्रीका में अमरीकी मुहिम-बाजियों का पूर्ण समर्थन और नसलबादी दक्षिण अफ्रीका के साथ दोस्ताना संबंध।

भला षड्यंत्र की योजना को इतनी सावधानी के साथ किसने तैयार किया था? सेरील्वज के भूतपूर्व राष्ट्रपति जेम्स मैकेम ने उससे किसी भी तरह के सरोकार से साफ इन्कार किया। दक्षिण अफ्रीकी सरकार

ने जल्दी से यह ऐलान किया कि उसे षड्यंत्र-प्रयास की "कोई भी जानकारी नहीं" है। अमरीकी विदेश मंत्रालय ने भी यह कहकर फौरन ही सारे मामले से हाथ साफ कर लिये कि वह सिद्धांततः ऐसे हिंसात्मक प्रयासों के विरुद्ध है। दूसरे शब्दों में, ठीक जिन शक्तियों की सेशैल्व में राजकीय व्यवस्था को बदलने में खास दिलचस्पी हो सकती थी, वे ही दावा कर रही थीं कि उनका इस प्रयास से कोई संबंध नहीं है।

लेकिन इस प्रसंग में भी यही हुआ कि जो लोग इस षड्यंत्र के पीछे थे, वे अपने सुरागों को पूरी तरह से नहीं छिपा पाये। ७ जनवरी, १९८२ को ब्रिटिश अखबार 'डेली टेलीग्राफ' ने यह रिपोर्ट प्रकाशित की कि "मामले की जांच से सामने आनेवाला प्रमाण पश्चिमी गुप्तचर्या अभिकरणों, विशेषकर सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी, को पहले से जानकारी होने की ओर इंगित करता है और संभव है कि उन्होंने प्रच्छन्न समर्थन प्रदान किया हो।" ब्रिटेन की ही 'लेबर वीकली' पत्रिका के अनुसार यह मानने का हर कारण है कि सेशैल्व के हमले को दक्षिण अफ्रीकी गुप्तचर्या और सी० आई० ए० - दोनों ने ही प्रायोजित किया था। आखिर यह सर्वज्ञात है कि संयुक्त राज्य अमरीका सेशैल्व के राष्ट्रपति फ्रांस आल्बेर रेने की स्वतंत्र नीति से बहुत असंतुष्ट है, जो हिंद महासागर के और अधिक सैन्यीकरण की अमरीकी योजनाओं के विरोधी है। पत्रिका ने इंगित किया कि "यह एकदम साफ है कि अगर यह प्रयास सफल हो जाता, तो इस देश में सत्ता

पश्चिम-समर्थक सरकार के हाथों में आ जाती, जो गुटनिरपेक्षता की नीति को त्याग देती।" 'लेबर वीकली' ने आगे कहा कि "दक्षिण अफ्रीकी भड़कियों में इस बात की बहुत से लोग जानते हैं कि सेशैल्व में ध्वस्त गिरोह का साज-सामान अमरीकी सी० आई० ए० के पैसे से हासिल किया गया था।"

सेशैल्व के विदेश उपमंत्री जेरोमी बोनेलैम के कथनानुसार सत्ता-परिवर्तन का यह प्रयास हिंद महासागर को नियंत्रण में लेने की अमरीकी रणनीति का अंग था। उन्होंने इसकी पुष्टि की कि नसलवादी दक्षिण अफ्रीका और सी० आई० ए० षड्यंत्र के प्रत्यक्ष संगठनकर्ता थे।

२७ मार्च, १९८२ को अमरीकी अखबार 'पीपुल्स वर्ल्ड' ने यह खबर दी कि सी० आई० ए० गाना में जैरी रॉबिन्स की सरकार को उलटने की साजिश रच रही है, जिसने १९८१ के अंत में सत्ता-ग्रहण करने के साथ अविचल साम्राज्यवादविरोधी नीति पर चलने के अपने निश्चय की घोषणा की थी। पत्र की सूचना के अनुसार इस षड्यंत्र की योजना सेशैल्व योजना की कार्बन कॉपी थी।

सी० आई० ए० ने इस कार्य के लिए काफ़ी रकम निर्धारित की और ब्रिटेन तथा अन्य देशों में भाड़े के सैनिकों को भरती करना शुरू कर दिया। लेकिन षड्यंत्र की तैयारी का भंडा तब फूट गया कि जब एक भड़कती, ब्रिटिश सेना के भूतपूर्व अफसर निक हॉल ने प्रस्तावित संक्रिया की कुछ तफ़्सीलें पत्रकारों को

जाहिर कर दीं। हॉल के अनुसार सत्ता-परिवर्तन प्रयास की तैयारियां लगभग पूरे हो चुकी थीं और उनका गानाई संपर्क व्यक्ति क्वेजी ओफोरी वाशिंगटन से सी० आई० ए० से १,८०,००० डॉलर अतिरिक्त भट्टियों के लिए और इसके अलावा ६०,००० डॉलर, रॉलिंग्स को खत्म करने के लिए लेकर लंदन पहुंच भी चुका था। भाड़े के यंत्रिकों ने हथियार अफ्रीका से खरीदने का निश्चय किया। इसके बाद कई गानाई नगरों पर एकसाथ हमला किया जाना था और देश में शासनविरोधी असंतोष फैलाया जाना था...

सी० आई० ए० ने कितनी और ऐसी ही आतंकवादी कार्रवाइयों की तैयारी की है? कौनसे अफ्रीकी राज्य अमरीकी प्रशासन की मुहिमवाजाना नीति के शिकार हो सकते हैं?

संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा अफ्रीका में अनुसृत अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की नीति कितने ही नकाबों और तरीकों का उपयोग करती है और ये आसानी से पकड़ में नहीं आते हैं। लेकिन देर-सदेर सब सामने आ ही जाता है और विश्व एक बार फिर साम्राज्यवाद की गर्हित और रक्तमय चालों से सिहर उठता है।

आज अफ्रीकी जन वाशिंगटन द्वारा समय-समय पर बदले जानेवाले मुखौटों के पीछे देखना सीख चुके हैं। 'आफ्रीक-आजी' पत्रिका के अनुसार "अगर उसके हितों को खतरा होता है, तो संयुक्त राज्य अमरीका किसी भी आतंकवादी कार्रवाई का सहारा

ले सकता है।" वाशिंगटन किसी भी देश द्वारा अपने को नवउपनिवेशवाद से मुक्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के "बुनियादी हितों" के लिए खतरा मानता है। 'आफ्रीक-आजी' पुछता है: "क्या इस तरह के राजकीय आतंकवाद से भी बदतर किसी आतंकवाद की कल्पना की जा सकती है?"

न अमरीकी प्रशासन ही इस सवाल का कदाचित्त जवाब देगा और न सी० आई० ए० के सूत्रधार ही इसका जवाब देंगे—आखिर विश्व-प्रभुत्व के संघर्ष में आतंकवाद हमेशा ही उनका मुख्य हथियार जो रहा है!

## मित्र-देशों के ही खिलाफ ...

जनवरी, १९८१ में इतालवी पत्रिका 'इल सेत्तीमनाले' में प्रकाशित एक भेंटवार्ता में रॉनल्ड रैगन ने कहा था कि वह "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उद्गम केंद्रों" पर प्रहार करने की ठान चुके हैं। इस प्रकार, औपचारिक सत्ता ग्रहण के भी पहले अमरीकी राष्ट्रपति ने एक अभियान छेड़ दिया, जिसे, तत्कालीन अमरीकी विदेश मंत्री अलेग्ज़ेंडर हेग के शब्दों में, अमरीकी नीति में वही भूमिका अदा करनी थी, जो कार्टर के राष्ट्रपतित्व में "मानव-अधिकार" अभियान ने की थी। नये प्रशासन के बिल्कुल प्रारंभिक दिनों से ही हेग ने सोवियत संघ पर अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादियों को "प्रशिक्षित करने, पैसा देने और शस्त्र-सज्जित करने" का आरोप लगाना शुरू कर दिया।\*

यह सोवियतविरोधी लांछन-अभियान अधिकांशतः पश्चिमी यूरोप को ध्यान में रखकर छेड़ा गया था, जो आतंकवाद की कष्टदायी जकड़ में प्रस्त था। इसके जरिए मित्र-देशों को जताया गया कि यह सोवियत

संघ ही है कि जो आतंकवाद की सहायता से नाटो देशों को कमजोर और अस्थिर करने की कोशिश कर रहा है। इस अभियान के संचालकों में एक ब्रिटिश पत्रकार रॉबर्ट मांस भी थे, जिन्हें मिथ्या सूचना फैलाने का प्रभूत अनुभव था। यह कहना ही काफी होगा कि वह उस "विज्ञ-मंडल" में थे, जिसे सी० आई० ए० ने धिंधी में अत्येदे सरकार के अस्थिरीकरण के लिए बनाया था। रोम में कार्यरत अमरीकी पत्रकार क्लेअर स्टर्लिंग भी इस गाड़ी पर सवार हो गयीं और उन्होंने भट से 'आतंक का जाल' नामक एक पुस्तक रच डाली। स्टर्लिंग की किताब को हाथ में लेकर सबकी आखों के आगे उसे नचाते हुए हेग कहते: "इसमें सभी कुछ कह दिया गया है!" लेकिन पत्रकारों का ध्यान दूसरी ही बात आकर्षित करती थी—मांस के लेखों और स्टर्लिंग की पुस्तक में प्रमाणों का सर्वथा अभाव और पूर्ण एकतरफ़ापन। अमरीकी हितों के लिए अतीव महत्वपूर्ण कहे जानेवाले अभियान की बुनियाद आश्चर्यजनक रूप से कमजोर थी।

अतः यह प्रत्यक्ष था कि पेशेवर मिथ्यावादी मांस की ईजादों और स्टर्लिंग की मनगड़तो की अनुपूर्ति करने के लिए किसी ठोस चीज की सख्त जरूरत थी। सोचा यह जाता था कि इसमें मिथ्या सूचना के मामले में मुख्य खेत सी० आई० ए० अपना योग देगी। मगर सी० आई० ए० ने अचानक अपने हाथ खींच लिये। 'न्यूयॉर्क टाइम्स' के अनुसार ह्यूडट हाउस की सोवियत-विरोधी अभियान के लिए प्रमाण उपलब्ध करने की

\* The New York Times, May 3, 1981, p. 1.



मांग ने "सरकार के गुप्तचर्या अभिकरणों को अकबका दिया।" सी० आई० ए०, एफ० बी० आई० और अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या को स्वीकार करना पड़ा कि उनके पास आतंकवाद में सोवियत शिरकत का कोई प्रमाण नहीं है। प्रशासन के आग्रह पर सी० आई० ए० ने इस विषय के बारे में तीन रिपोर्टें पेश कीं, मगर परिणाम वह का वही रहा—"कोई प्रमाण नहीं है।"

इसके अलावा, जैसे कि अमरीकी समाचार एजेंसी एसोशियेटेड प्रेस ने १९८१ के अंत में सूचना दी, सी० आई० ए० के प्रवक्ता ने बतलाया कि लैंगली ने भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विषय पर कुछ भी प्रकाशित अथवा अनुसंधान न करने का फ़ैसला कर लिया है। इसका कारण यह दिया गया कि इस प्रकार के प्रकाशन "बहुत विवाद उत्पन्न करते हैं... और सी० आई० ए० की तरफ़ अनावश्यक ध्यान आकर्षित करते हैं।"

यह एक खुली आत्मस्वीकृति थी। सी० आई० ए० इस नतीजे पर पहुंची कि अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के "उद्गम" की खोज लैंगली पर पहुंचा सकती है, क्योंकि आतंकवाद अमरीकी विदेश नीति का एक स्थायी उपकरण बन गया है और इसमें वह प्रच्छन्न लड़ाई भी शामिल है, जो संपुक्त राज्य अमरीका कई बरसों से खुद अपने ही मित्र-देशों के खिलाफ़ चलाता आ रहा है। आइये, इस लड़ाई के कुछ प्रसंगों को लें।

## सीन्योरा दोनीनी का पर्स

३ जुलाई, १९८१ को दोपहर के कुछ बाद नीस से आया एक विमान रोम के फ़्यूमीचीनो हवाई अड्डे पर उतरा। मुसाफ़िर घोड़े से ही थे और धूप की तेज़ी से अलसाये कस्टम अधिकारी बिना ज्यादा मीन-मेस निकाले औपचारिकताएं पूरी कर रहे थे। सब कुछ ऐसे ही चल रहा था कि एक सुदर्शना स्वर्णकेशी ने मारीआ घात्सीआ दोनीनी के नाम बना अपना पासपोर्ट उनके हाथों में दिया। अधिकारियों में अचानक जैसे बिजली सी दौड़ गयी—महिला के सारे सामान की बहुत बारीकी से जांच की जाने लगी, उनके पर्स की सीबनों को उछेड़ा गया और उसके अस्तर के नीचे छिपाये हुए कागज़ निकाल लिये गये। इन कागज़ों को ज़ब्त कर लिया गया और महिला को जेल पहुंचा दिया गया।

इन कागज़ों में इटली के ग्वादीआ दी फ़्रीनांसा की कुछ परम गुप्त दस्तावेजों भी थीं, जिनमें अवैध लेन-देन में शामिल कुछ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों के नाम थे। उनमें एक इतालवी मेसन लॉज \* 'प्रोफ़ागोन्दा-२' के सदस्यों को लिखे पत्र भी थे और एक गुप्त अमरीकी दस्तावेज़ की फ़ोटो प्रति भी थी।

इस तरह से पी-२ मेसन लॉज के "सम्मानी प्रधान" लीचिओ जेल्ली, जो सरकार द्वारा अपने पर मुकदमा

\* श्री मेसन समाज की शाखा अथवा मिलनस्थली।—सं०

चलाये जाने से बचने के लिए सातवीं अमरीका भाग गये थे, की श्रेटी पुलिस के जाल में फंसी। जेल्ली ने मारीआ ग्रास्सीआ को पत्रवाहक बनाकर अपने साथियों को वे दस्तावेजें पहुंचानी चाही थीं, जिनका इतालवी अधिकारियों और वाशिंगटन तथा नाटो मुख्यालय में कुछ अधिकारियों को ब्लैकमेल करने के लिए उपयोग किया जा सकता था।

जेल्ली ने सी० आई० ए० और नाटो के लिए वर्षों काम किया था और इतालवी मेसन संगठन के भीतर अति गुप्त पी-२ लॉज की स्थापना की थी, जिसका लक्ष्य देश में सत्ता को अपने अधिकार में ले लेना था। युद्धोत्तर वर्षों में जिन षड्यंत्रों ने इतालवी गणराज्य को डगमगाया था, उनमें यही सफलता के सबसे निकट पहुंचा था। और ऐसे षड्यंत्र भी बहुतेरे थे। आइये, देखें कि इस विषय में जनरल जान अदे-लीओ मालेत्ती क्या कहते हैं, जो कई साल इटली की प्रतिगुप्तचर्या सेवा के प्रधान रहे थे (यह अंश जनरल मालेत्ती के साथ 'ल'एक्सप्रेसो' पत्रिका के संवाद-दाता की भेंटवार्ता से लिया गया है, जो पत्रिका में १५ मार्च, १९८१ को प्रकाशित हुई थी) :

"प्रश्न: सीड\* में आपके कार्यकाल के दौरान कितने सत्ता-परिवर्तन षड्यंत्र रहे गये थे?

\* सीड-SID-(मूलतः सीफार-SIPAR इतालवी गुप्त सेवा का नाम है। अब इसे कई अलग-अलग सेवाओं में पुनर्गठित कर दिया गया है। -सं०)

उत्तर: कम से कम पांच। लेकिन वे सभी एक जैसे खतरनाक नहीं थे।

प्रश्न: इस तरह का पहला प्रयास दिसंबर, १९७० में प्रिंस बोरोगेजे ने किया था। खुलकर बतलाइये, क्या वह इटली में लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा था?

उत्तर: नहीं। बोरोगेजे शायद रोम तक को भी कब्जे में लाने में नाकाम रहते। मगर कुछ घुन-खराबा बेशक हो सकता था।

प्रश्न: क्या रोज़ा देई वेंती षड्यंत्र इससे ज्यादा खतरनाक था?

उत्तर: यह विद्रोह हो ही नहीं पाया। अलबत्ता षड्यंत्रकारी अत्यंत गंभीर समस्याएँ पैदा कर सकते थे।

प्रश्न: एदगादो सोन्यो का विद्रोह इस तरह का तीसरा षड्यंत्र था। उसके बारे में आपका क्या खयाल है?

उत्तर: उसे सफ़ेद विद्रोह भी कहा जाता था, क्योंकि उसका उद्देश्य वास्तविक सत्ता-परिवर्तन नहीं था। सोन्यो संविधान को बदलने की अपनी योजना के लिए समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन शक्ति का प्रयोग करने का उनका कोई इरादा नहीं था।

प्रश्न: और वाकी दो प्रयास?

उत्तर: वे संभवतः सबसे खतरनाक थे। पहला विद्रोह अगस्त, १९७४ में शुरू होनेवाला था। सेना के निम्नपदस्थ अफसरों के एक गुट ने कुछ उच्चतम

अफसरों के साथ मिलकर घट्यंत्र रचा था और वह रोम को काबू में लेने के लिए तैयार था। योजना के अनुसार राष्ट्रपति लेओने को गिरफ्तार कर लिया जाता था, जिन्हें घट्यंत्रकारी विद्रोह के पक्ष में आने को विवश करना चाहते थे। घट्यंत्र का बिल्कुल आखिरी घड़ी में ही निवारण किया जा सका। दूसरा विद्रोह एक महीने बाद होनेवाला था। इसमें बोरगेजे के अनुगामी भी शामिल थे। इसका भी निवारण कर दिया गया।”

पाँच साल में पाँच घट्यंत्र ... वैसे इनके अलावा भी कितनों ही का उल्लेख किया जा सकता है। सातवें दशक में जनरल दे लोरेन्सो ने, जो पहले सैनिक पुलिस और बाद में सीफ़ार के प्रधान रहे थे, सत्ता दबोचने की कोशिश की। उनकी योजना में ( जिसका कूटनाम सोलो था ) वामपंथी पार्टियों तथा मजदूर संघों पर पाबंदी लगाये जाने और उनके नेताओं की गिरफ्तारी की कल्पना की गयी थी। इस घट्यंत्र का परदाफ़ाश होने के बाद सीफ़ार का पुनर्गठन हुआ और उसका नाम सीद हो गया। लेकिन नाम में परिवर्तन से संगठन के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया। नाटो की गुप्तचर सेवाओं ने अपनी अंटार्कटिक सक्रिया इसकी सहायता से ही तैयार की थी। इसकी तैयारी प्रोमेथियस संक्रिया के नमूने पर ही की गयी थी, जिसने यूनान में “काले कर्नल” को सत्तारूढ़ करवाया था। लगभग सारे य़ूरोप काल

में इटली एक देशव्यापी शासनविरोधी घट्यंत्र के साथे में ही रहता रहा है। उसमें भाग लेनेवाले बदलते रहते हैं, इसी प्रकार जिन गुटों के हाथ में पहल रहती है, वे भी बदलते रहते हैं, मगर उसका लक्ष्य वही बना रहता है—जनवादी शक्तियों पर प्रहार करना, श्रमिक आंदोलन को लून में डुबो देना और देश में प्रतिक्रियावादी तानाशाही की स्थापना करना।

जनरल मालेत्ती ने इन घट्यंत्रों के खतरे को जान-बूझकर कम करके दिखलाया था। सीन्योरा दोनीनी के पर्स की ही तरह उनकी इस भेंटवार्ता में भी एक गुप्त छाना है। फ्रांशिस प्रिंस वलेरीओ बोरगेजे ने अपने गिरोहों को गृह मंत्रालय के शस्त्रागार के हथियारों से लेस किया था और घट्यंत्रकारी सार्वजनिक इमारतों और टेलीविजन केंद्र को अपने नियंत्रण में लेने ही वाले थे।

विद्रोही बोरगेजे को एक “नया मुसोलिनी” घोषित करने की तैयारियाँ कर रहे थे। वे सेना में अपने हमदर्दों—जनरल उमो रिचची की कमान में स्थित टैंक कोर और जमरीकी अड्डों के निकट तैनात सेना की तीसरी कोर—को अपनी सहायता के लिए बुलाने की सोच रहे थे। सैनिक गुप्तचरों के कर्नल आमोस स्पियात्सी के नेतृत्व में बापी टुकड़ियों को रोम को इटली के मजदूरप्रधान उत्तरी भाग से काट देना था।

मालेत्ती के दावों के विपरीत भूतपूर्व छापामार और पी-२ लॉज के सदस्य एदगार्दो सान्यो ( उन्होंने

अमरीकी गुप्तचर्या एजेंट की तरह फ़ाशिस्तविरोधी प्रतिरोध आंदोलन में भाग लिया था) के सफ़ेद विद्रोह को, अपने संगठनकर्ताओं के ही शब्दों में, "प्रचंड, त्वर और निर्मम" होना था और भूतपूर्व प्रतिरक्षा मंत्री रांदोल्फ़ो पाल्म्यादी का अधिनायकत्व स्थापित करना था। स्पियाल्सी ने ही रोज़ा देई बेती पड़मंत्र भी रचा था।

मालेत्ती का इन बातों का उल्लेख न करना सभी कुछ स्पष्ट कर देता है—इटली की गुप्तचर सेवाओं ने इन सभी घट्यंत्रों में प्रमुख भूमिका निवाही थी। मालेत्ती और सोद के प्रमुख जनरल मिचेल्ती उसी पी-२ लांज के सक्रिय सदस्य थे, जिसने प्रकाश में आये घट्यंत्रकारियों की मदद को आकर नये घट्यंत्रकारियों से उनकी प्रतिस्थापना की थी। यह बात इस भेंटवार्ता के प्रकाशित होने के कुछ ही दिन बाद सामने आ गयी और मालेत्ती को अपने ऊपर फ़ौजदारी मुकदमा चलाये जाने से बचने के लिए दक्षिण अफ़्रीका भाग जाना पड़ा।

इससे यह समझ में आ जाता है कि क्यों जनरल मालेत्ती ने घट्यंत्रों की मुख्य संगठक सी० आई० ए० का उल्लेख नहीं किया। और असल में ये सी० आई० ए० और नाटो गुप्तचर्या अभिकरण—अमरीकी सैनिक-औद्योगिक गठबंधन के अभिकरण—ही हैं कि जो संयुक्त राज्य अमरीका की अपने मित्र-देशों के विरुद्ध गुप्त अंतर्ध्वसात्मक लड़ाई के मूल में हैं और जिन्होंने इस लड़ाई की रणनीति तैयार की है।

## जनरल वैस्टमोरलैंड का "गुटका"

मारीआ वात्सीआ के कागज़ों में पायी गयी गुप्त अमरीकी दस्तावेज़ थी 'स्थिरीकरण सक्रिया आसूचना—विशेष क्षेत्र'। यह गुटका १९७० में अमरीकी संयुक्त स्ट्राफ़-अध्यक्ष समिति के प्रधान और बियतनाम में अमरीकी सेनाओं के भूतपूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वैस्टमोरलैंड के निदेशन में तैयार किया गया था। इस दस्तावेज़ के उद्धरण अमरीकी, फ़्रांसीसी, इतालवी और स्पेनी प्रेस में अनेक बार उद्धृत किये गये हैं और वाशिंगटन ने हर बार इसकी प्रामाणिकता को क़बूल करने से इन्कार किया है। बेशक, ज़ेल्टी को इसकी जानकारी थी और इस बार उन्होंने उसे फ़ाशिस्त साप्ताहिक 'बोरगेजे' में प्रकाशनार्थ भेजा था, जिसके संपादक उनके मित्र और पी-२ लांज के सदस्य (सदस्यता कार्ड नं० २१२७) मारीओ तेदेस्की थे। ऐसा करने का उद्देश्य पूर्णतः स्पष्ट था—सी० आई० ए० के टहलुए ज़ेल्टी ने इसकी पुष्टि की थी कि दस्तावेज़ में सन्निहित कार्यक्रम प्रामाणिक है और पी-२ लांज द्वारा अनुसृत नीति से मेल खाता है।

अमरीकी प्रशासन के राजनीतिक लक्ष्यों को प्रतिबिम्बित करनेवाले इस गुटका की स्थापनाओं के अनुसार संयुक्त राज्य इसका एकमात्र निर्णेता है कि उसके पूर्ण समर्थन के भागी "शासन का स्वरूप" कैसा हो।

अगर "अमरीकी समर्थन का उपयोग करनेवाली कोई सरकार संकल्प के अभाव अथवा शक्ति के अभाव में कम्युनिस्ट या कम्युनिस्ट-प्रेरित विद्रोह से लड़ने में कमजोरी दिखलाती है" या वह "अमरीकी हितों से असंगत अथवा उनके प्रतिकूल आत्यंतिक राष्ट्रवादी रख" अपनाती है, तो वह समर्थन समाप्त कर दिया जाता है।

लेकिन अगर "एकमात्र निर्णेत" की हैसियत से संयुक्त राज्य अमरीका यह निर्णय करे कि उसके मित्र-देश निर्धारित शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं, तो? ऐसी सूरत में संयुक्त राज्य अमरीका मित्र-देश की "संरचना को रूपांतरित" करने के अपने अधिकार को जताता है। गुटका में कहा गया है कि अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या के पास "ऐसी विशेष कार्रवाइयां शुरू करने के साधन होने चाहिए, जो मेक्सिकन देशों की सरकारों और जनमत को विद्रोह के खतरे की वास्तविकता और निर्णायक क्रम उठाने की आवश्यकता का कायल कर सकें। इस प्रयोजन के लिए अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या को विद्रोही आंदोलन में विशेष एजेंटों की सहायता से प्रवेश पाने की कोशिश करनी चाहिए, जिनका कार्यभार आंदोलन के अधिक उच्च तत्वों में विशेष कार्य-दल बनाना हो। ऊपर परिकल्पित स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर अमरीकी सैनिक गुप्तचर्या के नियंत्रण में इन दलों का हिसात्मक अथवा अहिंसात्मक कार्रवाइयां शुरू करने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ... उपरोक्त लक्ष्यों की सिद्धि में चरम वामपंथी

संगठनों का उपयोग करना सहायक सिद्ध हो सकता है।"\*

अशांति पैदा करने के इस कुटिल निर्देश की यह व्यावहारिक सैली उस तथाकथित तनाव की रणनीति को प्रतिबिम्बित करती है, जो अमरीकी पद्धतकारियों और उनके इतालवी सहियों की तानाशाही शासन की बुनियाद तैयार करने के लिए लंबे समय से सहायता कर रही है।

इस कार्य-प्रणाली में मौलिक कुछ भी नहीं है। इसके लिए राइखस्टाग अग्निकांड का स्मरण कराना ही काफी होगा, जिसे हिटलरियों ने कम्युनिस्टों और विरोध-पक्ष का सफाया करने के लिए करवाया था। नाटो के रणनीतिज्ञों ने पश्चिम में वामपंथ के विरुद्ध अपने संघर्ष में हिंसा, आतंकवाद और जान से मारने की नात्सी मिसाल का ही अनुकरण किया है।

अप्रैल, १९६७ में यूनान में फ्रांशिस्त कर्नलों ने सत्ता हड़प ली। उसी घड़ी से अमरीकी गुप्तचर्या ने अपना सारा ध्यान इटली पर केंद्रित कर रखा है। भड़कावा, "स्याह" और छद्म लाल आतंकवाद का जारी-जारी से सहारा लिये जाने की प्रविधि यहीं अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची है। लेकिन ठीक इटली को ही इसके लिए क्यों चुना गया?

हाल ही में संयुक्त राज्य अमरीका में राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की १० फरवरी तथा ८ मार्च, १९४८ की

\* Covert Action Information Bulletin, No 3, January, 1979, p. 18.

रिपोर्टों को गुप्त दस्तावेजों की सूची से अलग करके प्रकाशित किया गया है। सारतः, वे निष्पक्ष "तनाव की रणनीति" के आधारवर्ती कार्यक्रम को निरूपित करती हैं। हम यहां इनके कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं:

"इटली में संयुक्त राज्य अमरीका का बुनियादी लक्ष्य इस अत्यंत महत्वपूर्ण देश में हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के अनुकूल अवस्थाएं स्थापित और कायम रखना है।... अगर सोवियत संघ इन देशों—इटली, यूनान, तुर्की या ईरान—में से किसी पर भी नियंत्रण प्राप्त करने के अपने प्रयासों में सफल हो जाता है, तो समूचे पूर्वी भूमध्यसागर क्षेत्र और मध्य-पूर्व की सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी।" याद दिला दें कि साम्राज्यवादियों की शब्दावली में इस "नियंत्रण प्राप्त करने" का अर्थ इन देशों में वामपंथी सरकारों का विधिसम्मत, संसदीय तरीके से सत्ता में आना है।

१९४७ में संयुक्त राज्य अमरीका ने इटली और फ्रांस की सरकारों से कम्युनिस्ट मंत्रियों को बरखास्त करवाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। लेकिन इटली में अप्रैल, १९४८ में पहले मुद्रोत्तर चुनाव होनेवाले थे और वाशिंगटन इस आशंका से संक्रांत था कि कहीं चुनावों में कम्युनिस्ट और उनके साथ सहबंध में शामिल दल न जीत जायें। संयुक्त राज्य अमरीका ने इतालवी मतदाताओं और राजनीतिज्ञों को खरीदने के लिए करोड़ों डॉलर लगा दिये। कारण राजनीतिक और सैनिक अर्थों में रणनीतिक थे। रिपोर्ट में आगे कहा गया है: "भूमध्यसागर क्षेत्र में इटली की स्थिति

मध्य-पूर्व के साथ संचार-मार्गों को नियंत्रित करती है और बाल्कन देश उसकी सीमा से लगे हुए हैं। इटली में अवस्थित अहों से उनकी कब्जेदार शक्ति (अर्थात् संयुक्त राज्य अमरीका - लो० ७) के लिए जिब्राल्टर तथा स्पेन के बीच भूमध्यसागरीय यालायात को नियंत्रित करना और बाल्कन अथवा आसपास के इलाक़े में किसी भी स्थल पर काफ़ी हवाई ताक़त का उपयोग करना संभव है।"\*

रिपोर्ट आगे कहती है कि अपने लक्ष्यों की सिद्धि के लिए संयुक्त राज्य अमरीका "अपनी राजनीतिक, आर्थिक तथा, यदि आवश्यक हो, सैनिक शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग" करने के लिए तैयार है। और इसका मतलब है कि "कारगर अमरीकी सहायता" का आश्वासन "इटली में गैर-कम्युनिस्ट तत्वों की कम्युनिस्ट नियंत्रण के सुदृढ़ीकरण को रोकने के वास्ते गृहयुद्ध के खतरे को उठाते हुए भी एक अंतिम, जोरदार प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। इस प्रसंग में अमरीकी सैनिक शक्तियों की "सीमित लामबंदी" और "भूमिगत कम्युनिस्टविरोधी गुटों को वित्तीय तथा सैनिक सहायता प्रदान करने" की पूर्व-कल्पना की गयी थी।\*\* अगर विधिसम्मत सरकार को उसटने का यह तरीक़ा असफल हो गया होता,

\* *Foreign Relations of the United States, 1948, Vol. III, Western Europe, US Government Printing Office, Washington, 1974, pp. 765-769.*

\*\* *Ibid.*, pp. 767, 777, 779.



तो संयुक्त राज्य अमरीका सिसिली और सार्दीनिया पर सीधा आक्रमण करने का इरादा रखता था। इन टापुओं में जयचंदों के दल कायम किये गये थे, जो इटली से अपने विद्योवन की और संयुक्त राज्य अमरीका में शामिल होने की इच्छा घोषित करने के लिए तैयार थे। सिसिली में पार्थक्यवादी आंदोलन में अगुआ भूमिका माफिया अदा करता था, भावी अधिमिलन से वह मादक द्रव्यों की तस्करी और अपने अन्य गैर-कानूनी कामों को बढ़ा सकता था।

प्रसंगतः, पार्थक्यवादी प्रवृत्तियों की सी० आई० ए० आज भी प्रोत्साहित करती है। लेकिन आइये, अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की दस्तावेजों को फिर लें। उनकी बात करते हुए 'ल'एक्सप्रेसों' पत्रिका लिखती है: "दूसरे शब्दों में, संयुक्त राज्य अमरीका गृहयुद्ध भड़काने और दक्षिणपंथी अधिनायकत्व स्थापित करने का प्रयास कर रहा था।"

### तीन "मकार"

पचास के दशक में इटली में संयुक्त राज्य अमरीका की राजदूत और 'टाइम' पत्रिका के स्वामी की पत्नी क्लेअर बूथ लूस ने एक बार अमरीकी पत्रकार साइरस मूल्लसबर्गर से कहा था, "शायद मुसोलिनी के सिर पर जैफरसन का विग चिपका दिया जाना चाहिए था, न?"

मूल्लसबर्गर के शब्दों में "धमिती लूस प्रत्यक्षतः हर किसी की बौद्धिक कुशाग्रता को घोर तिरस्कार के साथ देखती हैं और इसे वह छिपाने की परवाह भी नहीं करती। वह कहती है कि इतालवी लोग भ्रष्ट कायर हैं और अपने देश का शासन लोकतांत्रिक साधनों से नहीं चला सकते। वह कहती है कि जैसे फ्रांस जैसे इटली में भी वर्तमान सरकार जैसी किसी भी सरकार के लंबे समय तक चलने की कोई संभावना नहीं है और अगर कोई सोचता है कि यह संभव है, तो वह इटली को नहीं जानता। अकेला रास्ता यही है कि दक्षिणपक्ष सत्ता में आ जाये।"

उनका आशय नवफाशिस्त मिस्सीनी (Missini - यह शब्द "मोबीमेंतो सोनियाले इतालियानो" अथवा "इतालवी सामाजिक आंदोलन" से बना है) - पर भरोसा करने से था। मिस्सीनी उन तीन "मकारों" में से एक है, जो संयुक्त राज्य अमरीका की इटली के स्थिरीकरण - अथवा, अधिक सटीक, अस्थिरीकरण - की नीति के आधार हैं। शेष दो "मकार" माफिया और मेसन हैं। यह क्योंकि हुआ कि फाशिस्त सत्ता के साथ-साथ ये दोनों संगठन इटली में सी० आई० ए० के मुख्य सहायक बन गये? माफिया की गोपनीयता और निर्ममता और मेसनों के दूरव्यापी तथा लचीले संगठन सूत्रों और साथ ही इन दोनों संगठनों के कम्युनिजमविरोध ने अमरीकियों को अपने लक्ष्यों की आधिकारिक माध्यमों का सहारा लिये बिना - दूसरों के जरिए, अर्थात् न्यूनतम जोखिम और अधिकतम

प्रभाविता के साथ सिद्धि करने की अनुपम संभावना प्रदान की है। माफ़िया की कार्यकुशलता तो स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका में भी प्रमाणित हो चुकी है, जहाँ उसने दस्यु नियंत्रित व्यवसाय का लगभग अभेद्य सिंडीकेट बना लिया है। जब द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमरीकी गुप्तचर्या तथा सेना को इतालवियों के समर्थन की जरूरत पड़ी, तो इसके लिए कोजा नोस्त्रा को ही चुना गया। उसके सरगनों में से एक, साल्वातोर्रे लूचीआनो को, जो लक्की लूचीआनो (सुश-क्रिस्मत लूचीआनो) के नाम से अधिक सुजात है, जेल की कोठरी से एकदम एक आलीशान होटल में पहुँचा दिया गया। लूचीआनो के सूत्रों को सिसिली में माफ़ीओजियो (माफ़िया-सदस्यों) के साथ संपर्क कायम करना सुगम बनाना था। सिसिली में अमरीकी सेनाओं के उतरने के पहले उन्हें "गुप्त उग्रवादी गुटों, उदाहरण के लिए, माफ़िया, के नेताओं के साथ संपर्क तथा संचार" स्थापित करने और उन्हें "हर संभव सहायता" देने का आदेश दिया गया था।\*

इस तरह से माफ़िया और अमरीकी गुप्तचर्या ने अपने भावी निरंतर बढ़ते सहयोग की नींव डाली, जो राजनीतिक हत्याओं और भड़कावे की कार्रवाइयों जैसे ध्वंसात्मक कार्यों के लिए अपरिहार्य था।

मेसन संगठन सी० आई० ए० के लिए इसलिए

\* Gaia Servadio, *Mafioso. A History of Mafia from its Origins to the Present Day*, Secker and Warburg, London, 1976, p. 82.

उपयोगी था कि जहाँ माफ़िया की ही भाँति वह भी एक संवृत संस्था है, वहाँ वह उसकी तरह कुत्तित नहीं लगता। फ्रांसीसी क्रांति के समय कितने ही प्रमुख प्रबोधक फ्री मेसन थे। गरीबाल्दी और मार्त्सीनी भी फ्री मेसन थे। लेकिन यह बहुत-बहुत पहले की बात है। लॉजों का आभिजात्यप्रभु, विशेषाधिकारयुक्त डाँचा अपना काम कर चुका था। जहाँ नये सदस्य आम तौर पर वित्तपति और प्रतिक्रियावादी राज-नीतिज्ञ थे, वहाँ वे क्रांतिकारी और समतावादी नारे, जो कभी मेसन संगठन के उच्च लक्ष्यों को शोषित करते थे, शनैः शनैः सामान्य बुद्धि के बिंदूप में परिणत हो गये थे। मेसनों ने इस बात को महसूस कर लिया था कि सी० आई० ए० और उसके पूर्वगामी सामरिक सेवा कार्यालय (सा० से० का०) ने उनके संगठन में नवमुक्त यूरोप में अपने प्रच्छन्न तथा गोपनीय प्रभुत्व को फैलाने की असीम संभावनाएं देखी हैं।

ठेठ १९४२ में ही सा० से० का० ने मैक्स कोवों नामक इतालवी मूल के अमरीकी को "इतालवी गुप्त-चर्या योजना" तैयार करने के काम पर लगा दिया था, जिसमें इतालवी मेसन उत्प्रवासियों को एजेंटों की तरह भरती किये जाने का प्रावधान था। कोवों ने अपने एजेंटों के जाल में जुझेपे ("जो") लूपीस को भी खींच लिया, जो आगे चलकर इतालवी सरकार में मंत्री बने। न्यूयॉर्क के गरीबाल्दी लॉज के सदस्य रांदोल्फो पच्चीआर्दी को भी एजेंटों की कतारों में लाया गया। ठीक है कि स्पेनी गृहयुद्ध में पच्चीआर्दी ने

गणतंत्रवादियों की तरफ से भाग लिया था और सा० से० का० तथा सी० आई० ए० ने आरंभ में उन पर वामपंथी भूकाव रखने का संदेह किया था। बाद में कोवों ने अपने संस्मरणों में लिखा: "कैसी भारी गलती थी! जरा यही देखिये कि शीतयुद्ध के समय पच्चीआदीं ने इतालवी सशस्त्र सेनाओं को किस तरह से पुनर्गठित किया।" बफ़ादार अमरीकी एजेंट ने इटली के प्रतिरक्षा मंत्री की हैसियत से अपने मालिकों की ईमानदारी से सच्ची सेवा की। हैमिंग्वे ने अपने 'नदी के पार, पेड़ों की छांह में' उपन्यास में इस "धंदे" सैन्यवादी-मंत्री के बारे में मर्मभेदी कटाक्ष के साथ लिखा है। आगे चलकर पच्चीआदीं इटली में अपना अधिनायकत्व स्थापित पच्चीआदीं इटली में अपना अधिनायकत्व स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील फ़ाशिस्त-समर्थक शक्तियों के आदर्श बन गये। कोवों ने सिसिलियाई वकील सीदोना को भी अपने एजेंटों के जाल में शामिल किया। था, जो बाद में एक बैकर बन गये और घटुंगों का संगठन करने में सी० आई० ए० के सहयोगी और पी-२ लॉज के वित्तदाता बने।

अमरीकी यह बहुत अच्छी तरह से जानते थे कि इस तरह के एजेंटों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहिए। सा० से० का० के कर्णधारों द्वारा अनुमोदित अपनी योजना के बारे में मैक्स कोवों ने कहा था कि "यह केवल गुप्तचरों की ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक युद्ध की भी योजना थी।"\* युद्ध किसके खिलाफ़?

मेहनतकशों की पार्टियों और संगठनों के खिलाफ़ जनतंत्र और शांति की शक्तियों के विरुद्ध युद्ध। उनके द्वारा शुरू किये गये कार्य को बाद में औरों ने आकर संभाला। मतांध, "प्रतिगुप्तचरों के कवि" जेम्स एंगलटन ने कोवों द्वारा स्थापित एजेंटों के जाल में नये लोगों को शामिल किया, यानी उन फ़ौजी अफ़सरों को जो स्कोल्सेनी द्वारा इल दूबे की हिरासत से बहा ले जाने और विमान द्वारा उत्तर इटली में गेस्टापो की छत्र-छाया में स्थापित "सालो गणराज्य" में पहुंचा दिये जाने के बाद भी मुसोलिनी के बफ़ादार रहे थे और जिन्हें बाद में एंगलटन ने फ़ाशिस्त विरोधी युद्ध-अभियान से बचाया था। कोवों के अनुसार इनमें से उन लोगों को, जिन्हें अभी इतालवी पुलिस या गुप्तचरों में भरती करने का समय नहीं आया था, एंगलटन ने फ़्रांको द्वारा प्रदत्त संरक्षण का लाभ उठाने के लिए स्पेन भेज दिया। सी० आई० ए० के एक प्रमुख अधिकारी जनरल वाल्टर्स\*, वियतनाम के जल्लाद और सी० आई० ए० निदेशक विलियम कॉल्बी और सी० आई० ए० के राजनीतिक विभाग "हत्या-क्षमता" के सर्जक विलियम किंग हार्वी ने, यानी सी० आई० ए० के सर्वोत्कृष्ट कर्मियों ने इटली में ही जनतांत्रिक संस्थाओं के तलछेदान में नैपुण्य पाते हुए व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था। ये लोग अमरीकी दूतावास के घनिष्ठ सहयोग से काम करते थे। कोल्बी

\* *L'Espresso*, February 2, 1980, pp. 41-49.

\* बाद में राष्ट्रपति रैगन के विशेष सहायक।

अमरीकी राजदूत श्रीमती लूस की बड़े उत्साह के साथ सराहना करते हैं: "क्लेअर बूथ लूस अपने दूता-वास से संचालित सी० आई० ए० सक्रियाओं में गहरी दिलचस्पी - और हिस्सा - लेती थीं... अत्यंत आकर्षक, बुद्धिमान और सुविज्ञ, आत्मविश्वास और शांतिनता से परिपूर्ण, तेज और दृढ़संकल्प, किसी को भी इसके बारे में संदेह न रहने देनेवाली कि प्रमुख कौन है, श्रीमती लूस... जोरदार और प्रभावी राजदूतों की मेरी सूची में बहुत ऊंचे स्थान पर है।" और होता भी क्या! आखिर श्रीमती लूस तो मुसोलिनी के सिर पर जैफ़रसन का बिग चस्पान करना चाहती थीं! राजदूतों के अधिकारों का स्पष्टतः उल्लंघन करते हुए वह मनमाने ढंग से आदेशित करती थी कि इतालवी सरकार में किसे शामिल किया जाना चाहिए और किसका शामिल होना रोका जाना चाहिए। वामपंथी ईसाई जनवादी जोवान्नी ग्रोकी के इटली का राष्ट्रपति चुने जाने का विरोध इसकी एक ज्वलंत मिसाल है।\*

## मात्तेई का दूर किया जाना

जोवान्नी ग्रोकी सोवियत संघ के साथ राजनीतिक तथा आर्थिक संबंधों के सामान्यीकरण के पक्ष में थे। वह

\* १९२२ में राष्ट्रपति रैगन ने श्रीमती लूस को अपनी कि-सदस्यीय गुप्तचरों सचिवा परिषद के सदस्य मनोनीत किया।

सोवियत संघ की यात्रा करनेवाले पहले इतालवी राष्ट्रपति थे। उनके राष्ट्रपति-काल में दोनों देशों के बीच व्यापार धीरे-धीरे बढ़ने लगा। व्यापार तथा आर्थिक सहयोग के विभिन्न रूपों के इस प्रसार में एनरीको मात्तेई ने बहुत योग दिया था। राष्ट्रपति के मित्र और भूतपूर्व फ़ासिस्तविरोधी छापामार मात्तेई राष्ट्रीय द्रव ईंधन समाज के प्रधान थे। वह बड़े उद्यमी और कर्मठ व्यक्ति थे और इटली के आर्थिक विकास में बाधक उग्र ऊर्जा संकट को हल करने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया। उत्तरी इटली में मेथेन के और सिसिली में तेल के निक्षेपों की खोज में मात्तेई ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की थी। इसके बाद उन्होंने तेल उत्पादक अरब देशों के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किये और इस प्रकार सात विशालतम तेल इजारों के हितों के लिए खतरा पेश कर दिया। उन्होंने सोवियत तेल के अग्र और कई-इतालवी उद्योगों को सोवियत आर्डर दिलवाने के सिलसिले का भी समारंभ किया।

मात्तेई का रवैया अमरीकी हुकमशाही के खिलाफ़ जाता था और वेस्टमोरलैंड के गुटका के शब्दों में "आत्यंतिक राष्ट्रवादी रुझान" की अभिव्यक्ति था। और, जैसे कि मुद्रोत्तर काल का समस्त इतिहास दर्शाता है, अमरीकी वर्जुआजी के शीर्षस्थ स्तर के लिए अपने मित्र-देशों के आर्थिक हितों पर प्रहार करना और उन्हें अपने द्वारा एकाधिकारी दामों पर बेचे जानेवाले तेल पर आश्रित बनाना उतना ही महत्व-

पूर्ण था कि जितना अंतर्राष्ट्रीय तनावों को बढ़ाना और हथियारों की होड़ को तेज करना। तेल इजारेदारियां अपने अतिनाभों को युद्ध उद्योगों में सहर्ष लगाती हैं। वे ह्लाइट हाउस पर अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी नीति धोषने के लिए भी जोरदार प्रयास करती हैं। इसलिए इसमें अचरज की कोई बात नहीं कि सोवियत संघ के विरुद्ध राष्ट्रपति कार्टर और ऐसे ही राष्ट्रपति रेगन द्वारा भी लगावे गये प्रतिपेधों में तेलबेधन उपकरण और इलेक्ट्रानिकी उपकरण भी शामिल हैं। बुरी तरह से चढ़ाये हुए दामों पर तेल की बिक्री से अतिलाभ तेल इजारेदारियों के लिए इतने ही महत्वपूर्ण है कि जितने फौजी ठेकों से प्राप्त लाभ। इसके अलावा उनका सोवियतविरोध उन्हें पश्चिमी यूरोपीय वृजुआजी के कम्युनिस्टविरोधी प्रतिवर्तों का लाभ उठाने और ईंधन तथा सैनिक सामग्री के लिए अतिशय दाम वसूल करके अपने ही साभेदारों को ठगने में समर्थ बना देता है। तनाव-वैधिल्य का विरोध करते हुए अमरीकी अत्यंत नेता एक पत्थर से दो शिकार करना चाहते हैं। वे अपने बिचार-धारात्मक विरोधियों को हानि पहुंचाने के उतने ही आकांक्षी हैं कि जितने अपने "मित्रों" को, क्योंकि "मित्र" का मतलब "प्रतिद्वंद्वी" भी है। और जब बात अरबों-शरबों डॉलरों की हो, तो उसके लिए सभी कुछ बाजिव है।

जिस सन्धि का अंत २७ अक्टूबर, १९६२ को एनरीको मातेई के निजी विमान की दुर्घटना में हुआ,

उसकी योजना वाशिंगटन में विलियम हार्वी के निदेशन में बनायी गयी थी, जिन्होंने उसके लिए अमरीकी माफिया के सरसना रोसेल्ली को लगाया था। सिने उद्योग और जूआघरों में निवेशों से धनी बने रोसेल्ली का पहले फ्रीडेल कास्त्रो के विरुद्ध सी० आई० ए० षड्यंत्रों में भी हाथ रहा था। बाद में रोसेल्ली को राष्ट्रपति कैंनेडी ही हत्या में खींचा गया (तेल इजारों ने इसमें भी काफी बड़ी भूमिका अदा की थी)। कितने ही अन्य अवांछित साधियों की भांति उन्हें भी दूर कर दिया गया—डैलास में कैंनेडी की त्रासद हत्या के बाद रोसेल्ली को गला घोटकर मार दिया गया और उसकी लाश को टुकड़े-टुकड़े करके समुद्र में फेंक दिया गया। बहरहाल, मातेई की हत्या में रोसेल्ली की सहभागिता जॉन कैंनेडी की हत्या का उपोद्घात ही थी।

रोसेल्ली ने बिमान-दुर्घटना करवाने का काम अपने सहकारी, लुइजीजाना में माफिया के सरसना कार्लोस मार्चेल्लो के सुपुर्द किया। उधर, रोम में, सी० आई० ए० केंद्र के प्रमुख टॉमस कारामेसिनेस ने उसकी तफसीलों का इतालवी सुरक्षा सेवा के प्रधान जनरल दे लोरेंसो के साथ समायोजन किया। कारामेसिनेस मातेई की मृत्यु के फौरन ही बाद डटली से चले गये। बाद में उन्होंने बिनी में अत्येदे सरकार के उलटे जाने की सन्धि का निदेशन किया।

मातेई की हत्या ने दीर्घकालिक परिणाम पैदा किये। सी० आई० ए० और उसके संचालकों ने

राष्ट्रीय द्रव ईंधन समाज को "सात बहनों" (सात विशालतम तेल इजारेदारियों) को रियायतें देने के लिए विवश करने के वास्ते सभी कुछ किया।

मातेई की मृत्यु के रहस्य का पता लगाने का प्रयत्न करनेवाले लोग स्वयं इस विमान-दुर्घटना के बरसों बाद भी शायब होते रहे। उदाहरण के लिए, सिसिलियाई पत्रकार माउरो दे माउरो ने अपने प्राण गंवाये, जिन्होंने मीलान को अपनी घातक उड़ान के पहले सिसिली में मातेई के अंतिम दिनों के बारे में सूचना एकत्र की थी। सिसिली के महाअभियोजक स्कालीओने मारे गये, जो मातेई की हत्या और दे माउरो के शायब होने के बारे में अवश्य ही बहुत कुछ जानते रहे होंगे। इसी प्रकार न्यायाधीश फ्रांचेस्को कोको भी मारे गये, जो स्कालीओने की हत्या की जांच करने के लिए जेनोवा से सिसिली आये थे। ये सभी अपराध सी० आई० ए०, तीन "मक्कार" और इटली की गुप्तचर्या सेवाओं के संयुक्त कार्य की बदौलत ही संभव हुए थे।

### उकसावा-तंत्र

१९७६ में दक्षिण इटली के कातांदजारो नगर में इतालवी तथा सुनानी गुप्तचर्या एजेंटों द्वारा १९६६ में रोम और मीलान में कराये गये विस्फोटों के बारे में सुनवाइयां शुरू हुईं। सीद के भूतपूर्व प्रधान,

फ्रांस्तिस् जनरल बीतो मोन्तेली को अपने बयान में यह कहना पड़ा कि सीद में अधिक "नाज़ुक" मामलों से निपटने के लिए एक परमगुप्त प्रभाग है। इस प्रभाग को उन्होंने सुपर-सीद की संज्ञा दी।

इटालवी पत्रिका 'पैनोरामा' के अनुसार सुपर-सीद ही वह संरचना है, जो इटली की गुप्तचर्या को अन्य नाटो देशों की गुप्तचर सेवाओं के साथ जोड़ती है। विलकुल आरंभ से ही सी० आई० ए० ने इतालवी गणराज्य के भीतर नाटो के इस तत्त्वतः अनियंत्रणीय अभिकरण पर विनृंबकन संक्रिया को कार्यरूप देने का दायित्व सौंपा। रोबेर्तो फ्राएन्सा अपनी मीलान से १९७६ में प्रकाशित पुस्तक 'काले कारनामे' में कहते हैं कि यह "निरंतर कम्युनिस्ट-विरोधी आक्रमण की योजना" थी। इसे सी० आई० ए० और नाटो ने इटली तथा फ्रांस के लिए तैयार किया था। अमरीकी पक्ष की ओर से इसका कार्यान्वयन पहले जनरल वाल्टर्स और बाद में सी० आई० ए० के रोम केंद्र के प्रमुख कारमेसिनेस के नियंत्रण में था।

सुपर-सीद का काम अधिकांशतः अमरीकी पैसे से ही चलता था। 'पैनोरामा' के अनुसार "अब इस पर इटली में सारी ही आतंकवादी कार्रवाइयों में शामिल होने का संदेह किया जाता है। चाहे कुछ हो, यह सबाल बना रहता है कि सुपर-सीद को जो पैसा सी० आई० ए० से मिलता था, क्या उसका इस्तेमाल सिर्फ दक्षिणपक्ष का वित्तपोषण करने के लिए ही होता था या उसे 'तनाव की रणनीति'



के लिए काम करनेवाले डकार जाते थे?"\*

प्रश्न स्वतःस्पष्ट है। सरसरी निगाह भी इटली को हिला देनेवाले लगभग हर ही घपले अथवा अपराध में सी० आई० ए० की शिरकत को सामने लाने के लिए काफी है।

१९६३ से इतालवी सेना में फ़ाशिस्त-समर्थक तत्व कुख्यात "कम्युनिस्ट खतरे" से टक्कर लेने के लिए तैयार होने लगे। उनके नेता इतालवी सेना के जनरल स्ट्राफ़-अध्यक्ष जनरल आलोया थे। उनके निकटतम सहयोगी फ़ाशिस्त पत्रकार जानेत्तीनी थे, जिन्होंने नयी "मनोवैज्ञानिक युद्ध" विधियाँ विकसित करने में उनकी सहायता की (कोवों को याद कीजिये!)। जानेत्तीनी ने विशेषकर "विरोधी राजनीतिक शक्तियों में घुसपैठ करने की प्रवृत्ति" का सुझाव दिया। जानेत्तीनी फ़ाशिस्तों के "लाल स्वांग" के प्रणेताओं में एक थे। उनके सुझाव पर ओर्बोने नूओवो नामक नवफ़ाशिस्त संगठन के नेता जुझेपी पीनो राऊती ने यूनानी फ़ाशिस्तों के अनुभव से लाभ उठाने के लिए अपने तुर्कानी दस्तों को यूनान भेजा था। वामपंथी होने का दिखावा करते हुए फ़ाशिस्त कितने ही चरमपंथी संगठनों में जा घुसे। उनका कार्यभार इन चरम वामपंथियों को ऐसी कार्यवाहियाँ करने के लिए उकसाना था, जिनका शेष कम्युनिस्टों के मध्ये मड़ा जा सके। राऊती स्वयं भी यूनान गये, जहाँ उन्होंने चार अगस्त

आंदोलन के नेता प्लेविस के साथ संपर्क स्थापित किये। (यह "आंदोलन" तानाशाह मेताक्सस के विचारों से निदेशित होता था, जिन्होंने ४ अगस्त, १९३६ को यूनानी संसद को भंग कर दिया था और राजनीतिक दलों पर पाबंदी लगा दी थी) अप्रैल, १९६६ में राऊती ने पादुआ में एक गुप्त सम्मेलन में भाग लिया, जिसमें समस्त उत्तरी तथा मध्य इटली में उकसावे की कार्यवाहियाँ करने का निश्चय किया गया था। इन उकसावों को दो कट्टर फ़ाशिस्तों फ़ांको फ़ेदा और जोवान्नी बेवूरा के पादुआ स्थित गुट द्वारा संगठित किया जाना था। फ़ेदा "आर्य" विचारों के प्रचारक और प्रकाशनगृह का प्रधान था।

पादुआ सम्मेलन के बाद फ़ेदा गुट "काम" में लग गया—ती महीने की अवधि के भीतर उसने २२ हत्याओं और अग्नि-बमकादों का आयोजन किया। इन सभी कार्यवाहियों की परिणति १२ दिसंबर, १९६६ को मीलान के कृषि बैंक में एक जबरदस्त विस्फोट में हुई, जिसमें १६ लोग मारे गये और ८० घायल हुए। इसी के साथ-साथ रोम में भी विस्फोट हुए।

अपने एजेंट जेड (जानेत्तीनी) के जरिए सीद (और, निस्संदेह, सुपर-सीद) को प्रस्तावित अपराधों के बारे में मालूम था, मगर उसने उन्हें रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया। इन आतंकवादी कार्यवाहियों के कितने ही संगठनकर्ताओं—कट्टर फ़ाशिस्तों की सीमा पार करने में सहायता की गयी। उनके बजाय अराजकतावादियों को बलि के बकरे बनाया

\* Panorama, 12, XII, 1978, 3, I, 1980.

गया। उनमें से एक—वालप्रेदा—को अपराधी घोषित कर दिया गया। एक और अराजकतावादी पीनेल्ली मीलान पुलिस द्वारा पूछ-ताछ के दौरान मर गया। पीनेल्ली से पूछ-ताछ करनेवाले पुलिस आयुक्त कालाब्रेजी की आतंकवादियों ने हत्या कर दी।

जांच के दौरान महत्वपूर्ण साक्ष्य नष्ट कर दिया गया। जब मुख्य आधिकारिक विवरण अतर्कसंगत सिद्ध हुआ, तो गुप्तचर्या सेवाओं ने दूसरा विवरण गढ़ दिया। कई वर्ष बाद जाकर ही इस जघन्य अपराध के वास्तविक कर्ताओं फ़ेदा और वेंतुरा को कठपुतली में लाया गया। लेकिन कालाब्रेजी में मुकदमे का अंत अपराधियों की शर्मनाक दोषमुक्ति में हुआ।

इस प्रकार इटली में वर्तमान आतंकवाद के मूलों की खोज हमें आंतरिक तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के अलबरदारों, सर्वोपरि नाटो के मनोवैज्ञानिक युद्ध-भिकरणों, पर ले जाती है। वे व्यवस्थाभङ्ग शक्तियों के लिए दंडमुक्ति सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि तीन "मकारों" की सहायता से पड़ोसियों और आतंकवाद के सिलसिले को जारी रख सकें।

## रोजा देई वेंती

रोजा देई वेंती ('हवाओं का गुलाब') "क्राश्रिस्त पलीता, वामपंथी बहाना, दक्षिणपंथी सत्ता-परिवर्तन"

के नमूने पर होनेवाले बिड़ोहों के अबिराम सिलसिले में अपने ढंग का अनूठा पड़्यथ है।

१९७३ के वसंत की बात है। मीलान में पुलिस आयुक्त कालाब्रेजी के सम्मान में निर्मित स्मारक का अनावरण समारोह हो रहा था। समारोह में भाग लेने के लिए इटली के प्रधान मंत्री मारीआनो रूमोर विशेष रूप से आये थे। समारोह के दौरान भीड़ में एक दड्डियल आदमी ने "पीनेल्ली जिंदाबाद!" का नारा लगाते हुए एक हथगोला फेंक दिया। बिस्फोट से चार लोग मारे गये, बीसियों घायल हुए और भगदड़ मच गयी। लेकिन रूमोर को कोई हानि नहीं पहुंची और अपराधी को, पड़्यथकारियों की आशा के विपरीत, मौके पर ही पकड़ लिया गया। पूछ-ताछ के दौरान वह यही दुहराता रहा कि वह पीनेल्ली की मौत का बदला लेना चाहता था। मगर असल में रूमोर की हत्या को रोज़ा देई वेंती दल द्वारा आयोजित सत्ता-परिवर्तन के समारंभ का संकेत होना था।

हथगोला फेंकनेवाला बेर्तेली महज एक मोहरा था। वह एक सामान्य अपराधी था, जिसका राजनीति से कोई दूर का भी संबंध नहीं था। इसके लिए कि उसका उद्देश्य बिस्वसनीय प्रतीत हो सके, उसे "तजुरबा पाने" के लिए एक अराजकतावादी संगठन में शामिल होने का आदेश दिया गया था। इसके बाद बेर्तेली को, जिसके पकड़े जाने और अदालत में लाये जाने का खतरा था, इसराएल भेज दिया

या, जहाँ एक साल से अधिक वह एक कीब्लुस\* में रहा। जब उपयुक्त समय आया, तो उसे इटली वापस लाकर मीलान ले जाया गया और हाथ में एक हथगोला दे दिया गया। उसकावा फाँसीभूत हुआ - दक्षिणपंथी प्रेस ने कम्युनिस्टों के खिलाफ जबरदस्त होहल्ला खड़ा कर दिया। लेकिन हत्या-प्रयास की विफलता के कारण रोचा देई वेंती गुट सत्ता-परिवर्तन को कार्यरूप न दे सका।

ध्वंशकारियों द्वारा तैयार की गयी दस्तावेजों में कहा गया था कि कमोर की मृत्यु वह धमाका साबित होगी, जो "सशस्त्र सेनाओं को सीधे राष्ट्रीय संस्थाओं के रक्षार्थ सामने आने के लिए मजबूर कर देगा"। न्यायाधीश तांबूरीनो के कथनानुसार रोचा सत्ता-परिवर्तन के दौरान "२००० राजनीतिक और सैनिक हस्तियों का शारीरिक विलोपन" हो सकता था।

ध्वंश में कई शीर्षस्थ सेनाधिकारी शामिल थे। इतालवी प्रेस के अनुसार नाटो सुरक्षा सेवा के प्रधान जनरल जॉनसन ध्वंश से प्रत्यक्षतः जुड़े हुए थे। ध्वंश की तफ़्सीलों पर पी-२ लाँज के सदस्य, बैंकर सीदोना के घर पर बातचीत की गयी थी। जैसे कि सीदोना ने बाद में स्वयं स्वीकार किया, वह अमरीकी बैंकों\*\* के मित्र और सी० आई० ए० के एजेंट थे।

\* इसराएली सहायक जर्म और उसकी वस्ती। - सं०

\*\* आशय कॉनेली और डेविड कैनेडी से है। दोनों ही अमरीका के बित्त मंत्री रह चुके थे। डेविड कैनेडी राष्ट्रपति रैगन के आंतरिक हस्तियों से संबद्ध है।

## निशाना - दे गोल

अगर फ्रांस के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका और नाटो की प्रच्छन्न नीति से संबद्ध दस्तावेजें कभी प्रकाशित होती हैं, तो उनसे जनरल दे गोल द्वारा अनुसृत नीति के विरुद्ध लक्षित सहयोजित आक्रमण का अधिक संपूर्ण चित्र प्राप्त करना संभव हो जायेगा। यह तो सभी जानते हैं कि "बृहत फ्रांस" के विचार, फ्रांसीसी राष्ट्रपति द्वारा अमरीका के नेतृत्व को मानने से इन्कार और विशेषकर फ्रांस के नाटो सैन्य संगठन से बाहर आने ने वाशिंगटन में तीखी प्रतिक्रिया उत्पन्न की थी।

दे गोल इस बात को भली भाँति समझते थे कि डोलेस की सोवियत संघ को "पीछे धकेलने" और द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों की अवज्ञा करने की नीति एक तय संघर्ष की तरफ़ ले जा सकती है। उनका यह समझना सही ही था कि शीतयुद्ध की नीति संयुक्त राज्य अमरीका के लिए अपने मित्र देशों के हितों की ज़मीन पर एकांगी लाभ उठाना, पश्चिमी यूरोपीय अर्थ तथा वित्त व्यवस्थाओं को शासित करना और उनकी इस निर्भरता से भारी मुनाफ़े प्राप्त करना संभव करती है। फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने सोवियत संघ के साथ राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंधों और यूरोपीय सहयोग के विचारों को अमरीकी अधिदेशन का प्रतिरोधन माना।

फ्रांस के चरम दक्षिणपंथी दे गोल से उनके अल्जीरिया के साथ संबंधों का सामान्यीकरण करने के प्रयासों

और उनके द्वारा वियतनाम में अमरीकी मुहिमबाजी की निंदा के कारण नफरत करते थे। सी० आई० ए० के चरम दक्षिणपंथी संगठन ओ० ए० एस० के साथ, जिसकी दे गोल के विरुद्ध कितने ही षड्यंत्रों में शिरकात थी, संबंध कोई अज्ञात नहीं हैं। यह याद दिलाना ही काफी रहेगा कि दे गोल की हत्या के कोई ३० (!) प्रयास किये गये थे। अगर वह इनसे बच पाये, तो अंशतः फ्रांसीसी सुरक्षा सेवाओं के प्रयासों की बदौलत, जिनको उन्होंने पुनर्गठित किया था, और अंशतः शुद्ध संयोग से ही।

भूतपूर्व सी० आई० ए० कर्मी गोंसालेस-माता ने अपनी पुस्तक 'दुनिया के असली मालिक' में दे गोल के विरुद्ध सी० आई० ए० के प्रच्छन्न कार्यों का वर्णन किया है। सी० आई० ए० ने मई, १९६८ में पेरिस में छात्रों के जनरल दे गोल के विरुद्ध आंदोलन का किस प्रकार उपयोग किया, इसका विवरण विशेषकर रोचक है। एजेंट 'राजहंस' (स्वयं गोंसालेस-माता ही) को उग्रपंथी छात्र मंडलियों में घुसपैठ करने का कार्यभार सौंपा गया था। इसके बारे में उन्हें पेरिस में स्वयं जनरल वाल्टर्स ने निर्देश दिये थे और इस बैठक में अमरीकी धर्मिक संगठन ए० एफ० एल० - सी० आई० ओ० के मोलीजानी नामक एक प्रतिनिधि ने भी भाग लिया था।

यह सचमुच हैरत की बात है कि अमरीकी मजदूर संघों के कर्ता-धर्ता यूरोप में ध्वंसात्मक कार्रवाइयों में कितना सक्रिय भाग लेते हैं! उनके प्रतिनिधि अरविंग ब्राउन १४०

को विशेषकर इसीलिए पेरिस में तैनात किया गया है कि वह संबंधित धर्मिक संगठन खड़े करें और समाजवादी देशों में तोड़फोड़कार गुटों की सहायता करें। पोलैंड की हाल की घटनाओं में ए० एफ० एल० - सी० आई० ओ० की भूमिका इसकी एक मिसाल है। पोलिश समाचारपत्र 'त्रिबूना ल्यूड' ने १९८२ के आरंभ में यह खबर दी थी कि इतालवी धर्म संघ ने, जो मूलतः अमरीकी सहायता से ही स्थापित किया गया था, पोलैंड में एक सॉलिडैरिटी सम्मेलन में भाग लेने के लिए जो प्रतिनिधिमंडल भेजा था, उसके सदस्यों में लूइजी और पाओली स्त्रीच्छोभी भी थे। इतालवी धर्म संघ के अंतर्राष्ट्रीय विभाग के प्रतिनिधियों की हैसियत से उन्होंने पोलैंड के चरम प्रतिक्रांतिकारी गुटों के नेताओं से भेंट की। उन्होंने इटली में "सॉलिडैरिटी के साथ एकजुटता" प्रदर्शनों का भी आयोजन किया। फरवरी १९८२ में वे इतालवी पुलिस द्वारा आतंकवादी लाल ब्रिगेड के सदस्य होने के आरोप पर गिरफ्तार कर लिये गये। ये दोनों सही अर्थों में दोहरे एजेंट थे - वे दोनों ही इटली के सबसे प्रतिक्रियावादी तथा अमरीकी वित्तपोषित मजदूर संगठन के सदस्य होने के साथ-साथ ही एक चरम वामपंथी संगठन के भी सदस्य थे।

लेकिन आइये, पेरिस-प्रसंग को फिर से लें, जो वामपंथियों को अपनी मरजी के मुताबिक इस्तेमाल करने की सी० आई० ए० की प्रविधि और उसके दूरगामी लक्ष्यों को प्रकट करता है। पेरिस में सी०

आई० ए० तथा अमरीकी सैन्य गुप्तचर्या संक्रियाओं के समन्वयक ग्रैहम ने राजहंस को उनका कार्यभार स्पष्ट करते हुए कहा था कि "लक्ष्य वामपंथियों द्वारा सत्ता के हथियारे जाने को सुगम बनाना नहीं, बल्कि प्रदर्शनकारियों और व्यवस्था की शक्तियों के बीच मुठभेड़ें करवाकर और असंतोष को प्रोत्साहन देकर फ्रांस की 'मूक बहुसंख्या' को ऐसी कार्रवाई करने के लिए उकसाना है, जो दे गोल को अपनी नीति बदलने, पूर्वी देशों से विरत होने और संयुक्त राज्य अमरीका के साथ मैत्री-संबंधों से जुड़े यूरोप के आंचल में लौटने को विवश कर देगी। दायें बाजू के दबाव को इस्तेमाल करके दे गोल को इस्तीफा देने और ऐसी सरकार के वास्ते रास्ता छोड़ने के लिए भी मजबूर किया जा सकता है, जिसके साथ सहमति ज्यादा आसान होगी ... हमें विद्रोही नेताओं का विश्वासपात्र बनना होगा, ताकि उनकी योजनाओं को जान सकें और उन्हें अपने हित में प्रभावित कर सकें।"

"प्रारंभिक अवस्थाओं में यह महत्वपूर्ण है कि हमारे मित्र, जो आंदोलनकारी गुटों में शामिल हो गये हैं, प्रदर्शनकारियों को यथासंभव अधिक टकराव की स्थितियाँ पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करें।"

राजहंस को सौरवोन (पेरिस विश्वविद्यालय) में पहुंचा दिया गया और वह ओडियन थियेटर में स्थित लड़ाकू वामपंथी शोधियों\* के मुख्यालय

में पहुंच गये। राजहंस कोई अकेले नहीं थे - "पेरिस की मई" के आंदोलनकारियों में उन्होंने और भी कई सी० आई० ए० प्रोत्सेजकों को पाया।

स्थिति तनावपूर्ण थी। मई के अंत में राष्ट्रपति एबीसेई प्रसाद से चले गये। सेना ने अपने "सी० आई० ए० मित्रों" की सलाह पर अतिरिक्त कुमक बुला ली। इसके बाद जो हुआ, वह सर्वज्ञात है। दे गोल ने राष्ट्रीय विधानमंडल को भंग कर दिया और वह "मूक बहुसंख्या" पेरिस की सड़कों पर निकल आयी, अमरीकी गुप्तचर्या ने "गोष्ठी" आंदोलन के प्रोत्सेजकों के जरिए जिसे उकसाने के लिए इस कदर एड़ी-चोटी का जोर लगाया था।

परिणाम? दे गोल अपना प्रभाव गंवाने लगे और कुछ ही समय बाद उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया।

## बास्क आंदोलनकारी या "शांत अमरीकी"?

उधर, वाशिंगटन के सारे ही प्रयासों के बावजूद फ़ाशिस्त शासनों की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही थी। यूनानी "काले कर्नलों" का शासन, जिस पर इतना पैसा खर्च किया गया था और इतनी आशाएं लगायी गयी थी, सतरे में था। स्पेन में फ्रांको का शासन अपने अनिवार्य पतन के निकट पहुंचता जा रहा था। पुर्तगाल में सालाज़ार शासन मृत्यु-वेदना में छटपटा रहा था।

\* गोष्ठी (फ्रांसीसी) - उपर वामपंथी। - सं०

कुदरती पर ये सभी बातें वाशिंगटन को बहुत चिन्तित कर रही थीं। यही कारण है कि स्पेन में फ्रांसीस फ़्लांजी आंदोलन और तानाशाही शासन में नवजीवन का संचार करने के उद्देश्य से उसी पुरानी "तनाव की रणनीति" का प्रयोग किया गया। इसके लिए इटली की ही भांति यहां भी एक लाल हौआ बड़ा करना, आतंकवाद की समस्या पैदा करना जरूरी था। अमरीकी गुप्तचरों और स्पेनी सुरक्षा सेवाओं ने इस कार्य के लिए पार्थक्यवादी प्रवृत्तियों का उपयोग करने का निश्चय किया।

पार्थक्यवाद पर, अनेक यूरोपीय देशों में अपनी विशिष्टताओं को बनाये रखनेवाले संजातीय समूहों पर दांव लगाना "लाल और काले" आतंकवाद के खेल की तरह ही सी० आई० ए० का एक सामान्य तरीका बन गया है। "पार्थक्यवादी तुरुप" का सि-सिली और सार्दीनीआ में भी प्रयोग किया गया था। १९७८ के फ़्रांसीसी संसदीय चुनावों की पूर्ववेला में समाजवादी नेता मिशेल रोकार ने कहा था कि सी० आई० ए० ने वामपक्ष के विजयी होने की सूरत में फ़्रांस के अस्थिरीकरण की एक योजना तैयार की है। इस योजना के अनुसार फ़्रांसीसी वामपक्ष के विरुद्ध विभिन्न संजातीय—कोर्सिकाई, ब्रेटन, एलसास-लोरी-गी—आतंकवादी गुटों का उपयोग किया जाना था। और सचमुच, चुनावों के ठीक पहले उनकी सरग-मियों में ज्यादा तेजी आ गयी। १९७८ के आम चुनावों में दक्षिणपंथियों की ही जीत हुई, मगर १९८१ में

फ़्रांस ने एक समाजवादी राष्ट्रपति चुना और समयपूर्व हुए आम चुनावों के परिणामस्वरूप देश में सत्ता वामपक्षी पार्टियों के हाथों में आ गयी। और सत्ता बदलने के साथ ही कोर्सिका, पेरिस तथा अन्यत्र अग्नि-बमकांडों की एक नयी लहर आ गयी। चुनाव परिणामों और बमकांडों की एकात्मिकता स्वतःस्पष्ट है।

लेकिन आइये, स्पेन वापस चले, जहां प्रति-क्रियावादियों ने "बास्की पते" पर दांव लगाने की ठानी थी। दिसंबर, १९७२ में मैड्रिड के एक इलाके में संदेहास्पद नौजवानों का एक दल देखने में आया। ये लोग एक गिरजाघर के आस-पास घूम रहे थे, जिसके सामने, सड़क पार एक राजनयिक मिशन स्थित था। स्पेन के प्रधान मंत्री कारेरो ब्लांको इस गिरजाघर में नियमित रूप से आया करते थे। नौजवानों ने पास ही एक मकान किराये पर ले लिया, जो इस राजनयिक मिशन से दिखायी देता था। राजनयज्ञों ने चोरी से इन संदेहास्पद लोगों के छायाचित्र खींचकर स्पेनी सुरक्षा अधिकारियों को दे दिये। सुरक्षा अधि-कारियों ने बतलाया कि ये सभी लोग एता (ETA) नामक बास्क आतंकवादी संगठन के सदस्य हैं और यह जताया कि स्पेनी पुलिस को इस दल की तैयारियों की जानकारी है। मिशन के कर्मचारियों ने (पाठक उनके वास्तविक पेशे का आसानी से अनुमान कर सकते हैं) आतंकवादियों के मकान में छिपे हुए माइक्रोफ़ोन लगा दिये और उनकी बातचीत को सुनना शुरू कर दिया। स्पष्ट था कि प्रधान मंत्री ब्लांको की हत्या



करने का षडयंत्र रचा जा रहा था। इन "राजनयज्ञों" में से एक ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को इसकी सूचना दी और, जैसे कि गोंसालेस-माता अपनी पुस्तक में लिखते हैं, "यह मानते हुए कि कार्ररो ब्लॉको का हटाया जाना स्पेन तथा पुर्तगाल में अपनी रणनीति के प्रयोग में सहायक रहेगा", उस "राजनयज्ञ" से "हत्या-प्रयास की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सभी कुछ" करने को कहा गया। लेकिन इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि सभी कुछ "पार्थक्यवादियों द्वारा की गयी आतंकवादी कार्रवाई" ही प्रतीत हो। आतंकवादियों ने उस सड़क के नीचे एक सुरंग खोद डाली, जिससे कार्ररो ब्लॉको आम तौर पर गिरजाघर आया करते थे। १६ दिसंबर, १९७३ को उन्होंने सुरंग को विस्फोटकों से भर दिया। "राजनयज्ञों" के एजेंटों ने चोरी से सुरंग में प्रवेश किया और ("ताकि पूर्ण सफलता मिले") उनमें इलेक्ट्रानि पलीते लगी दो टैंकनाथी सुरंगें और रख दीं। अगली सुबह "बास्क आतंकवादियों" और स्पेन के साथ मैत्री संबंध रखनेवाले एक देश के "राजनयज्ञों" ने मिलकर स्पेनी प्रधान मंत्री और उनके अलावा दो पुलिसवालों को विस्फोट द्वारा स्वर्ग पहुंचा दिया। भूतपूर्व सी० आई० ए० एजेंट गोंसालेस-माता ने ब्लॉको की हत्या का यही विवरण दिया है। उन्होंने "राजनयज्ञों" के नाम भी दिये हैं—अमरीकी दूतावास के मुरसा अधिकारी वेन तथा स्पेन में अमरीकी गुप्तचर्या-प्रमुख राबर्ट। एलैक्जेंडर हेग को, जो उस समय सहायक विदेश

मंत्री थे, सूचित कर दिया गया था कि हत्या किस दिन होनेवाली है।\*

बाद में स्पेन से शीर्षस्थ सैनिक व्यापाधीशों और बकीलों की हत्याओं और शासक वर्गों के कार्यकर्ताओं के अपहरणों की खबरें आयीं। १९८१ में स्पेनी बोरगेजे-अंतोनीओ तेहेरो मोलीना—ने अपने सह-अपराधियों के साथ आंतरिक अस्थिरता और आतंकवादी खतरे के आगे सरकार की "शक्तिहीनता" को कारण बताकर स्पेनी संसद-भवन को कब्जे में ले लिया। बिड़ोह को तो कुचल दिया गया, मगर अमरीकी सरकार स्पेनी सरकार को इस सफलता पर बधाई देना "मूल" गयी—प्रत्यक्षतः, "शांत अमरीकियों" की लाक्षणिक सलज्जता के कारण ही।

### लाल बिड़ोहों के अजीब पहलू

इटली में तथाकथित लाल बिड़ोहों की सरगरमियों में आठवें दशक के आरंभ में सासकर तेजी आयी। उनकी "चोट करो और भाग जाओ" की कार्यनीति ने विकसित होकर "अराजकतापूर्ण आतंकवाद" का रूप ले लिया। शहरी अवस्थाओं में यौद्धिक कार्य-कलाप को प्रचारित किया जाने लगा। हथियारों की दुकानों पर छापों और फिरोती के लिए अपहरणों

\* Gonzales-Mata L., *Les vrais maîtres du Monde*, Paris, 1979, pp. 111-116.

का एकांतरण होने लगा। फिरीती से प्राप्त पैसे का हथियार खरीदने और रोम, ल्यूरेन, बेनिस तथा नेपल्स में सशस्त्र "दस्ते" स्थापित करने के लिए उपयोग किया जाता था। लाल ब्रिगेडों की कार्यवाहियाँ अधिकाधिक साहसिकतापूर्ण होती जा रही थी। जेल में लाल ब्रिगेडों के सदस्य सामान्य अपराधियों पर राजनीतिक रंग चढ़ाने की कोशिश करते। उनकी कारगुजारियों में कज़ाब्रीयाई माफ़िया के सदस्य भी भाग लेने लगे, जो अपहरण करने में माहिर थे। इस प्रकार अपराध जगत और अतिक्रांतिकारियों के हितों में पूर्ण एकरूपता आ गयी।

लाल ब्रिगेडों के विचारधारा-निरूपक प्रोफ़ेसर अंतोनीओ नेप्पी ने अपने एक लेख में लिखा है: "विप्लवी गतिविधियों को फैलाकर राज्य के विनाश की ओर ले जाना चाहिए।" प्रसंगतः, बतला दें कि नेप्पी को अमरीका में प्रवेश के लिए वीजा अविलंब मिल जाता था। लगता है कि "शहरी विप्लव" के पैरोकर की ख्याति अमरीकी अधिकारियों के लिए कोई परेशानी नहीं पैदा करती थी; सिर्फ़ यही नहीं, नेप्पी के मित्र फ्रांको पीनेर्नो को लाल ब्रिगेडों के सहयोगी होने के संदेह पर गिरफ्तारी से सिर्फ़ अमरीकी वीजा ने ही बचाया।

चरम वामपंथ के विचारधारा-निरूपकों के प्रति अमरीकियों की सहिष्णुता की समझना कोई कठिन नहीं है। सी० आई० ए० के विशेष संक्रिया प्रभाग के प्रधान जनरल विलियम यारबोरो ने कहा है कि

तथाकथित अराजकतापूर्ण (अंधा) आतंकवाद सी० आई० ए० द्वारा अपने मित्र नाटो-देशों की विभिन्न समान सेवाओं के सहयोग से निरूपित कार्यनीति है, जिसका उपयोग अधिकांशतः सरकारों को अस्थिर करने और संबद्ध आबादी से एक सशक्त पुलिस राज्य की स्थापना को स्वीकार करवाने के लिए अभीष्ट कार्यक्रमों के एक मुख्य तत्व की तरह किया जाना चाहिए।

चरम वामपंथी नेताओं के अमरीकियों और दक्षिण पक्ष के साथ संपर्कों में कोई असामान्य बात नहीं है। पहले फ़ाशिस्त और बाद में लाल ब्रिगेडों के एक नेता रेनातो कूर्चीओ पेरिस में लंबे समय नेप्पी के साथ-साथ रहे थे। उन्हें अनेक बार गिरफ्तार किया गया, पर हर बार वह जेलों से बड़ी आसानी से निकल भागते थे, जो है तो अजीब, मगर उनके बहुत से मित्रों के लिए भी लाभान्वित है। लेकिन जब उन्हें पीजा नगर के जेलखाने में डाला गया, तो एक अद्भुत संयोग से उन्हें किसी रॉनल्ड स्टार्क नामक अमरीकी के साथ एक ही कोठरी में रखा गया। स्टार्क ने कूर्चीओ को मध्य-पूर्व में अपने मित्रों के पते दिये, जो हथियारों की खरीद में उनकी सहायता कर सकते थे। स्टार्क ने कूर्चीओ को यह भी सिखलाया कि विस्फोटकों को किस तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

स्टार्क को जल्दी ही रिहा कर दिया गया, यद्यपि उन पर कितने ही आरोप लगाये गये थे। यह ज्ञात है कि वह संयुक्त राज्य अमरीका में और बाद में बेल्जियम में शक्तिशाली मादक द्रव्य बनाया करते

थे। उनके मध्य-पूर्व में सबसे बड़े हेरोइन तस्करों के साथ संबंध थे। उनका कैलीफ़ोर्निया में एक रैच (पशु-फार्म) था, जहाँ "मादक द्रव्यों के कवि" टिमोथी लीरी रहा करते थे, जिन्होंने सारे अमरीका में एल० एस० डी० का गुणगान किया था। लीरी एल० एस० डी० को अपने हिप्पी अनुयायियों पर परीक्षण करना पसंद करते थे। बाद में यह प्रकट हुआ कि ये प्रयोग एक सी० आई० ए० कार्यक्रम के अंग थे, जिसके अंतर्गत "मानव आचरण बदलने", मनुष्य की मनोवृत्ति को विकृत करने और उसे अपने हाथों का औज़ार बनाने में समर्थ औद्योगिक कर्मकों को विकसित किया जाना था।

जब ११ अप्रैल, १९७६ को (इटली में आल्दो मोरो की हत्या के बाद) एक बार फिर—इस मर्तबा बोलोन्या में—स्टार्क को जेल से रिहा किया गया, तो इसलिए कि न्यायाधीश का कहना था कि उनपर मुकदमा चलाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि अभियुक्त "सी० आई० ए० एजेंट है और वह इसी हैसियत में काम कर रहा था" (!)।

तो यह रहा जनरल बैस्टमोरलैंड के गुटका में "चरम वामपंथी संगठनों" के अमरीकी गुप्तचरों द्वारा उपयोग किये जाने के प्रकरण का जिंदा सबूत!

क्या यह अचरज की बात है कि लाल ब्रिगेडों और सर्वहारा संग्राम के मुद्दों पर पहनकर पूंजीवादी व्यवस्था को "उलटनेवालों" ने प्रगति के घोर शत्रु—फ़ाशिस्त होने की अपनी असन्नियत को उघाड़ दिया है! स्पेनी फ़लागियों के नेता, नाटों की गुप्तचरों सेवाओं

की सहायता से स्थापित नवफ़ाशिस्त काले इंटरनेशनल के सदस्य लोलो ब्लास्को ने इतालवी पत्रिका 'एऊरो-पीओ' के संवाददाता से बातें करते हुए कहा था: "हम एक आश्चर्यजनक परिघटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं। हमने दिखला दिया है कि माओ के विचार हिटलर के विचारों के निकट हैं..." "स्पेन में लाल ब्रिगेडों ने कितने ही लोग चीन-समर्थक क़त्लान के हैं। हम उनसे कहते हैं: 'स्वागतम्!'"\*

दक्षिणपक्ष को वामपंथी आवरण ओढ़ने से कोई आपत्ति नहीं। लैंग्ली के सिद्धांतकार इसकी उपयोगिता को बहुत पहले ही खोज चुके हैं—वामपंथी आतंकवादी उकसावों के लिए बढ़िया आवरण पेश करते हैं, फिर चाहे वे अपने वास्तविक विश्वासों के अनुसार काम कर रहे हों, अथवा खरीदे हुए प्रोतेजक ही हों। इस आवरण का कैसा भी राजनीतिक अपराध करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। आल्दो मोरो की हत्या इसकी एक मिसाल है।

**"मैं संयुक्त राज्य अमरीका में सर्वथा कोई सहानुभूति नहीं पाता"**

कैनेडी बंधुओं की हत्याओं की ही भांति इटली की ईसाई-लोकतांत्रिक पार्टी के अध्यक्ष आल्दो मोरो की

\* L'Europeo, 17.XI.1978, 18.I.1979.

मृत्यु बीसवीं सदी के उत्तरार्ध का एक गंभीरतम राजनीतिक अपराध है। बाहरी घटनाक्रम सर्वज्ञात है। १९७० में मार्च के मध्य में लाल ब्रिगेडों ने रोम में वीआ फ़ानी (फ़ानी मार्ग) पर ज़ाल्दो मोरो की कार को रोक लिया। उनके अंगरक्षकों का आसानी से सात्मा कर दिया गया और मोरो को तय्यकथित "जन-कारागार" में डाल दिया गया। १ मई को लाल ब्रिगेडों से एक टेलीफ़ोन-संदेश प्राप्त होने के बाद मोरो की लाश राजधानी के केंद्र में, ईसाई-लोकतांत्रिक पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यालयों के बीच, पायी गयी। लाश का इस तरह से पाया जाना अपने ही ढंग का एक प्रतीक था—मोरो को शासक ईसाई-लोकतन्त्रवादियों और कम्युनिस्टों के बीच सौहार्द-स्थापन करवाने के अपने सौदेश्य प्रयासों के लिए "दंडित" किया गया था।

मोरो के अपहरण में भाग लेनेवाले ६३ व्यक्तियों में से ५४ को गिरफ़्तार कर लिया गया। फ़रवरी, १९८२ में गृह मंत्रालय ने रोम के निकट ही "जन-कारागार" का पता लगाये जाने की घोषणा की। अप्रैल, १९८२ में आतंकवादियों पर मुक़दमा शुरू हुआ। लेकिन सवाल अब भी बना हुआ है—इस दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की हत्या से लाभ असल में किसे होना था?

क्या लाल ब्रिगेडों को? शायद ही। मोरो की हत्या ने उनकी क़त्तारों में फूट पैदा कर दी। "जन-कारागार" में मोरो की पूछ-ताछ से प्राप्त

सामग्री इतनी अपर्याप्त सिद्ध हुई कि ब्रिगेडवाले अपने इस धमकीभरे वचन को भी पूरा न कर सके कि वे सनसनीखेज रहस्यों को प्रकाशित करने जा रहे हैं।

मोरो का अपहरण करने का निश्चय क्योंकर किया गया? उसकी प्रेरणा किसने दी? असहाय बंदी के मारे जाने पर किसने जोर दिया, जब यह स्पष्ट था कि उससे लाल ब्रिगेडों को फ़ायदे की जगह नुक़सान ही ज्यादा होगा?

सबसे तनावपूर्ण घड़ी में, जब यह आशा अब भी बनी हुई थी कि मोरो को बचाया जा सकता है, रोम की एक समाचार-एजेंसी ने यह रिपोर्ट प्रसारित की: "मोरो के अपहरण के मूल में जो निदेशनकारी केंद्र है, उसकी लाल ब्रिगेडों से कोई भी सामान्यता नहीं है।" और इसके आगे कहा गया था: "उनका अपहरण सिर्फ़ इस सूरत में ही कारगर हो सकता है कि वह ईसाई-लोकतन्त्रवादियों और कम्युनिस्टों को सौहार्द-स्थापन की ओर निरंतर धकेलनेवाले मौजूदा रुझान को उलटने में सहायक हो।"\*

यह समाचार-एजेंसी कारमीनो पेकोरेल्ली की थी, जो लीचो जेल्ली के भूतपूर्व मित्र और उनके पी-२ लाइ के सदस्य थे। लेकिन जेल्ली से गुप्तचर सेवाओं की फ़ाइलें प्राप्त करने के बाद, जिनमें इतालवी राजनीतिज्ञों से संबंधित फ़ाइलें भी थीं, पेकोरेल्ली अपने ही सहयोगियों को स्वैकमेल करने लगे। इन रहस्यों-

\* L'Unità, December 8, 1980.

घाटनों के कुछ ही महीने बाद पेकोरेल्ली को मार डाला गया। उनकी हत्या मुंह में गोली दागकर की गयी थी। यह अपना मुंह बंद न रख सकनेवालों के साथ निपटने का माफिया का तरीका है।

एक बात संदीहातीत है—पेकोरेल्ली जानते थे कि अपहरण के असली सूत्रधार लाल त्रिगेडवाले नहीं हैं और यह कि उसके सूत्रधारों की खोज अन्यत्र की जानी चाहिए। लेकिन कहाँ ?

आइये, कारामार से मोरो के पत्रों पर नज़र डालें। ईसाई-सोकात्रिक पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं की उन्हें बचाने की अनिच्छा को जानने के बाद मोरो ने लिखा था: “संभव है कि मेरे मामले में सख्ती की यह स्थिति अमरीकी अथवा पश्चिमी जर्मन प्रभाव के कारण है।” अपहरण के कुछ सप्ताह पहले मोरो ने सीनेटर चेरवोनो से कहा था: “आप देखने कि हमें अपनी नीति के लिए भारी कीमत अदा करनी होगी।” “किते?”—सीनेटर ने पूछा। मोरो ने कहा: “देश में और विदेश में हमारे शत्रुओं को। मिसाल के लिए, मैं संयुक्त राज्य अमरीका में संबंध और पश्चिमी जर्मनी में आंशिक रूप में कोई सहानुभूति नहीं पाता हूँ।”

मोरो राष्ट्रीय समझौते की अपनी नीति के प्रति संयुक्त राज्य अमरीका के विद्वेषपूर्ण रविये से बहुत परेशान थे। दिसंबर, १९७७ के अंत में उन्हें पता चला कि रोम में अमरीकी राजदूत रिचर्ड गार्डनर उनके बारे में वाशिंगटन को अत्यंत प्रतिकूल रिपोर्टें

भेज रहे हैं। मोरो ने अपने सहकारी पीजानू को वाशिंगटन भेजा, ताकि वह उनकी वाशिंगटन यात्रा की संभावनाओं की जाहू ले सके, जो इस तनाव को कम कर सकेंगी। पीजानू के साथ उदासीनता से पेश आया गया। ज्वीग्नेव ब्रुम्मेज़ीन्की के सहायक ने उन्हें बताया कि वाशिंगटन में “कोई भी ईसाई-लोकतंत्रवादियों के नेता से मिलना नहीं चाहता”।

संयुक्त राज्य अमरीका को यह आशंका थी कि मोरो की नीति यूरोप में समग्र स्थिति को, विशेषकर फ्रांस में आम चुनावों को, जिसमें वामपक्ष की विजय बिल्कुल संभाव्य प्रतीत होती थी, प्रभावित कर सकती है। १२ जनवरी, १९७८ को अमरीकी विदेश मंत्रालय ने एक कड़ा वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमें फ्रांसीसियों और इतालवियों को स्पष्ट सलाह दी गयी थी कि वे कम्प्युनिस्टों को अपनी सरकारों में किसी भी रूप में प्रवेश न दें।

मोरो जानते थे कि इस चेतावनी का मतलब क्या है। उन्होंने चेरवोनो से कहा था: “ये लोग इसके लिए सब कुछ करेंगे कि खट्टे से खट्टे कैलीफ़ोर्नियाई संतरे बेच सकें।” निस्संदेह, “संतरे” शब्द का प्रयोग यहाँ श्लेष में किया गया था—कैलीफ़ोर्निया अमरीकी सैनिक-औद्योगिक गंडबोड़ का हृद-स्थल था और अगला अमरीकी राष्ट्रपति वहीं से आनेवाला था।

मोरो पर प्रहार अधिकाधिक कटु होते जा रहे थे। ‘एकरोपीजो’ में प्रकाशित एक समाचार के

अनुसार ३ मार्च को कोलंबिया विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए राजदूत गार्डनर ने कहा था: "आल्दो मोरो इतालवी राजनीतिक रंगमंच पर सबसे सतरनाक और वुहरी बात करनेवाले व्यक्ति हैं।"

और १६ मार्च को मोरो को राह से हटाने के पद्यंत्र के पलों में फ़ाली मार्ग पर चिनगारी लगा दी गयी।

## नाटो के कठपुतली नचानेवाले

एक भेंटवार्ता में लीचो जेल्ली ने कहा था कि वह बचपन से ही ऐसा कठपुतली नचानेवाला "बूरात्तीनाइजो" बनने का सपना देखते आये हैं, जो "सत्ता के संचालकों" सहित लोगों को मन-मरजी के मुताबिक नचा सकता है। यह कोई फ़ोरी डींग नहीं थी—पी-२ लॉज के लगभग १,००० सदस्यों\* में इटली की सभी सशस्त्र सेनाओं के शीर्षस्थ अधिकारी, समस्त गुप्तचर सेवाओं के संचालक सम्मिलित थे—जनरल शास्सीनी, सांतोबीतो, ज़ान्नीनी और पैलोडी, नाटो संगठन में एक उच्च पद पर नियुक्त ऐडमिरल तोरीज़ी।

\* यह ओरेलो में जेल्ली के निवास की तलाशी में मिली दस्तावेजों में उल्लिखित नामों की संख्या है। वास्तव में, इतालवी प्रेस रिपोर्टों के अनुसार, उच्च पदाधिकारियों में उसकी सदस्य-संख्या २,००० से अधिक है।

उसके सदस्यों में प्रमुख बैंकर तथा उद्योगपति, अखबारों और टेलीविजन केंद्रों के मालिक, ईसाई-लोकतंत्रवादी तथा समाजवादी मंत्री और संसदीय नेता भी थे। लॉज के अफ्रीका और लातीनी अमरीका के साथ संपर्क थे, मगर घनिष्ठतम संबंध संयुक्त राज्य अमरीका के साथ ही थे।

इतना ही नहीं—पी-२ लॉज के जरिए कोई २०,००० इतालवी मेसन सी० आई० ए० की एक तरह की शाखा का निर्माण करते थे। ऐसा क्यों? इसलिए कि अन्य पश्चिमी यूरोपीय देशों की भांति इटली में भी मेसोनिक लॉजों का युद्धोत्तर पुनर्गठन अमरीकी गुप्तचर्या के नियंत्रण में हुआ था। इस पुस्तक में पूर्वोद्धृत मेसक कोर्वो के कथनानुसार सी० आई० ए० का संचालन करनेवाले अमरीकी मेसन फ़ौरन ही इटली जा पहुँचे, जो अभी पूरी तरह से मुक्त भी नहीं हुआ था, ताकि वहाँ अपना जाल फैला सकें। यह कार्य फ्रैंक जील्पोली नामक एक मेसन और शीर्षस्थ सी० आई० ए० अधिकारी के निदेशन में हुआ। उदाहरण के लिए, जेल्ली स्पेनी गृहयुद्ध में फ़्रांसिस्तों के पक्ष में लड़नेवाले स्वयंसेवकों में एक थे। मुसोलिनी की सेना में अफ़सर बनने के बाद उन्होंने इतालवी प्रतिरोध आंदोलन के छापामारों के खिलाफ़ अपनी बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयों से कुख्याति अर्जित की थी। वह उन लोगों की एक मिसाल थे, जिन्हें नये अमरीकी मेसन संगठनों में लिया गया था।

जैसे कि पहले ही बतलाया जा चुका है, संयुक्त



राज्य अमरीका के राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक प्रवर समुदाय में—राष्ट्रपतियों से लेकर विंशतम निगमों के प्रधानों और सेना के सर्वोच्च अधिकारियों तक—मेसन परंपरा से ही प्रमुख स्थानों पर रहे हैं। उदाहरण के लिए, लगभग सारे ही नाटो कमांडर मेसन हैं। पचास के दशक के अंत और साठ के दशक के आरंभ में इटली में नाटो के कार्यालयों और अमरीकी फौजी अहों में अमरीकी अफसरों के लिए विशेष मेसोनिक लांज स्थापित किये गये थे—वेरोना में वेरोना एमेरिकन, वीचेन्सा में जार्ज वाशिंगटन, लियोनों में बैजिमिन फ्रेकलिन, नेपल्स के निकट हैरी एस० ट्रूमेन और फ्रीडली में एवीआनो लांज। रोम में कोलोज्जिअम लांज अमरीकी राजनयकों और सैनिक अफसरों के लिए है। नाटो के मेसन मास्टर (मुखिया) संयुक्त राज्य अमरीका और इटली, दोनों देशों की 'फ्रैंड ओरीएंट' मेसोनिक सोसाइटियों के एकसाथ सदस्य हो सकते हैं—इसकी बदौलत वे अपने इतालवी अधीनस्थों की ओर की हाथ में रख सकते हैं।

इस अमरीकी सहायता के बिना जेल्ली कहां हुए होते, जिन्होंने शुकजात मणियों को अपनी प्रेम द्वारा निर्मित गढ़े भेंट करके की थी? अपनी जारी में स्वयं फ्रांशिस-बुरासीनाइयो की हैसियत कही अधिक कुशल कठपुतली नचानेवालों की कठपुतली से अधिक नहीं थी। अमरीकी सैन्य-औद्योगिक गंठजोड़, ह्याड्रट हाउस, सी० आर्द० ए० और बिल्डरवर्ग क्लब तथा त्रिपक्षीय आयोग के अधिपति जेल्ली और उनके सर्व-

व्यापी अनुचरों के जरिए इटली को अपने नियंत्रण में लाते जा रहे थे। इसमें सर्वथा कोई संदेह नहीं कि इटली में नये अमरीकी प्रक्षेपास्त्र लगाये जाने के निर्णय में पी-२ लांज ने भी अपना योगदान किया था, जिसके सदस्यों में तीन मंत्रिमंडल-सदस्यों और सात उच्चतम प्रतिरक्षा मंत्रालय अधिकारियों के अलावा ४२ जनरल तथा ऐडमिरल और ५१ कर्नल भी थे। पेकोरेल्ली ने लिखा था कि मेसन संगठन के प्रति निष्ठा की शपथ लेकर "उद्योगपति और वित्त-पति, राजनीतिज्ञ, जनरल और न्याय मंत्रालय के अधिकारी अमरीकी सेंट्रल इंटील्लिजेंस एजेंसी की सेवा में आ गये, जिससे कि किसी भी क्रीम पर कथ्युनिस्ट पार्टी को सत्ता में न आने दें।" उन्होंने स्वयं भी यह शपथ ग्रहण की थी और उसका उल्लंघन करने के लिए मारे गये थे।

पेकोरेल्ली ने अंत में कहा था: "वर्षों से हमारे देश में समाचारपत्रों के पहले पन्नों पर छपनेवाला हर अपराध मेसन संगठन से संबद्ध रहा है। कल, सामूहिक हत्याएं, सत्ता-पर्युत्थेपण प्रयास—इनमें से प्रत्येक के पीछे मेसनों की छाया रही है।"

पेकोरेल्ली ने उन अपराधों की सूचीबद्ध किया, जिनमें मेसनों की गुप्तचर्या सेवाओं के साथ सह-भागिता रही थी—मीलान में विस्फोट, इन अपराधों के मेसनी-फ्रांशिस मूलों का पता लगानेवाले न्यायाधीश ओक्कोसीओ की हत्या, इटालीकूस ट्रेन पर हमला, जिसमें १२ लोग मारे गये थे, और बो-

लोन्वा रेल स्टेशन पर विस्फोट, जिसमें २०० से अधिक लोग मारे गये और अपंग हुए थे। जेल्ली और उनके गुरगों के लॉज ताल ब्रिगेडों से सीधे-सीधे जुड़े हुए थे।

ईसाई-लोकतांत्रिक पार्टी के राजनीतिक सचिव पीकोली ने कहा था कि "मोरो को इसलिए हटाया गया कि वह नहीं चाहते थे कि इटली में सैन्य गति-विधियों का खुला मंच बन जाये।" जुलाई, १९८१ में पुलिस इंस्पेक्टर मास्सीए के परिवार की मार्सेई के एक शांत उपनगर में बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गयी। मास्सीए पी-२ लॉज के फ्रांसीसी समकक्ष-यरुगलम मंदिर के नाइटों के संघ-से संबद्ध रहे थे। वह तुर्की में हथियार सौदा करते थे और उन्हें इटली भेज देते थे, जहाँ वे लाल ब्रिगेडों को दे दिये जाते थे। मास्सीए को ऐसे एक सौदे से हुई प्राप्तियों को खा जाने के कारण मारा गया था। इसके अलावा, फ्रांसीसी अधिकारियों की जांच से यह पता चला कि हथियारों का प्रेषण सी० आई० ए० के निर्देशों पर जेल्ली के लॉज द्वारा संगठित किया जाता था। इतालवी और अमरीकी गुप्तचर्या सेवाओं के साथ यह लॉज इटली में "काले" और "लाल" आतंक का संचालन करता था। इस प्रकार इटली लंबे समय से अमरीकी "तनाव की रणनीति" के लिए भारी कीमत अदा करता आया है।

आज यह सुज्ञात है कि जेल्ली का न्यूयार्क के इतालवी समुदाय के नेता और रॉनल्ड रैगन के राष्ट्रपति

के चुनाव-अभियान के संगठनकर्ताओं में एक फिलिप मूआरीनो के साथ अक्सर पत्रव्यवहार होता था। मूआरीनो ने अपने एक पत्र में लिखा था: "रिपब्लिकनों की हालत बहुत अच्छी है। मुझे पक्का विश्वास है कि रैगन और बुश जीतेगे।"

जेल्ली ने बिलकुल कामकाजी लहजे में जवाब दिया था: "अगर तुम यह चाहते हो कि राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की इटली में अनुकूल छाप बने, तो मुझे अपनी पसंद की सामग्री भेजो। और मैं इसकी व्यवस्था करूंगा कि वह प्रकाशित हो।"

और जेल्ली और उनके लॉज के सभी तरह के घोटालों और अपराधों में शिरकत के प्रकाश में आने के बाद भी इस महाघट्यकार को वाशिंगटन आमंत्रित किया गया। जेल्ली राष्ट्रपति रैगन के शपथग्रहण समारोह में एक अतिविशिष्ट अतिथि थे।

क्या इस पर अचरज होता है? रॉनल्ड रैगन की पृथ्वी यूरोपीय भेंटवार्ता 'इल सेस्तीमाले' में प्रकाशित हुई थी। इस पत्रिका पर जेल्ली के साथियों का स्वामित्व था। दूसरे शब्दों में, अमरीकी राष्ट्रपति ने "आतंकवाद के जनन केंद्रों पर प्रहार करने" की अपनी आकांक्षा को और किसी नहीं, बल्कि स्वयं सी० आई० ए० के निदेशन के अंतर्गत और अमरीकी प्रशासन की शुभकामनाओं के साथ लीचो जेल्ली द्वारा सर्जित आतंकवाद के जनन केंद्र के आगे ही स्पष्ट किया था।

क्या इस पर भी कोई टीका करना आवश्यक है?

"संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" की प्रस्थापना ने, जो अमरीकी हस्तक्षेपवाद का संकल्पनात्मक आधार है, पचास के दशक के उत्तरार्ध में राजनीतिक शब्दावली में पक्की तरह से प्रवेश पा लिया था। मिश्र के विरुद्ध निष्कल ऑयल-फ़ांसीसी-इसराएली आक्रमण के दौरान ही बाद राष्ट्रपति आइज़नहावर ने कांग्रेस से मध्य-पूर्व में सशस्त्र शक्ति का प्रयोग करने का विवेकाधिकार प्रदान करने का अनुरोध किया। ह्वाइट हाउस ने "सोवियत तथा कम्युनिस्ट सतरे" की कपोल-कल्पना को अपने नये आक्रामक सिद्धांत की आधारशिला बनाया।

५ मार्च, १९५७ को अमरीकी कांग्रेस के दोनों सदनों ने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें, और बातों के साथ-साथ, कहा गया था:

"अगर राष्ट्रपति इसकी आवश्यकता समझे, तो संयुक्त राज्य अमरीका किसी भी ऐसे राष्ट्र अथवा राष्ट्रों के ऐसे समूह को सहायता देने के लिए सशस्त्र सेनाओं का उपयोग करने को तैयार है, जो अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म के नियंत्रणाधीन किसी भी देश द्वारा सशस्त्र आक्रमण के विरुद्ध सहायता का अनुरोध करता है।" \*

इस तरह से तथाकथित आइज़नहावर सिद्धांत

अस्तित्व में आया था, जिसने न केवल आनेवाले कई वर्षों के लिए अमरीकी रणनीति को आक्रामक हो नहीं बनाये रखा, बल्कि तत्त्वतः, कार्टर सिद्धांत के आदर्श का काम भी किया, जिसे सर्वप्रथम जनवरी, १९८० में इस प्रकार सूचित किया गया था:

"फ़ारस की खाड़ी के क्षेत्र में बाहरी शक्तियों द्वारा नियंत्रण प्राप्त करने के किसी भी प्रयास को संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों पर प्रहार माना जायेगा, और इस तरह के प्रहार का सैनिक शक्ति सहित आवश्यक हर साधन से निवारण किया जायेगा।" \*

दोनों ही सूत्रीकरणों में युग्मजों जैसी समानता है। लेकिन फिर भी उनके बीच एक तात्त्विक अंतर है—आइज़नहावर सिद्धांत जहां किसी के "सहायता का अनुरोध" करने के प्रत्युत्तर में अमरीकी हस्तक्षेप की परिकल्पना करता है, वहां कार्टर सिद्धांत अमरीकी राष्ट्रपति को सैनिक शक्ति का, जहां कहीं भी वह "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" पर "प्रहार" का खतरा महसूस करे, वहां उपयोग करने का अनन्य अधिकार प्रदान करता है।

कार्टर सिद्धांत की बात करते समय इसका विशेषकर उल्लेख किया जाना चाहिए कि अपने निरूपण में उसने राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में राष्ट्रपति के तत्कालीन विशेष सलाहकार ब्रम्सेलीन्की द्वारा प्रतिपादित तथा-

\* The New York Times, January 27, 1980, p. E 19.

\* The Washington Post, February 4, 1980, p. A 25.

कथित "संकट के चापों" अथवा "अस्थिरता के चापों" की संकल्पना से बहुत कुछ ग्रहण किया है। इस संकल्पना का सारतत्त्व यह है कि कितने ही अफ्रीकी तथा एशियाई देशों में क्रांतिकारी तथा मुक्तिकारी प्रक्रियाएं "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" के लिए एक संभाव्य स्रोत प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रपति कार्टर ने २३ जनवरी, १९८० को अमरीकी कांग्रेस में सम्मुख भाषण देते हुए अपने नये सिद्धांत के मूलाधारों को प्रस्तुत किया। यह सिद्धांत संयुक्त राज्य अमरीका के सशस्त्र सैन्यशक्ति के बल पर विश्व-प्राधान्य के दावे पर आधारित था। कार्टर सिद्धांत को अपना प्रस्थान-बिंदु बनाकर पैटागॉन ने तुरंत तड़ितपात संच्रिया की योजनाएं तैयार करना शुरू कर दिया। इन योजनाओं में उन देशों तथा क्षेत्रों को अमरीकी सेनाओं की विशेष दृष्टांतों के दृढ़ प्रेषण की परिकल्पना की गयी थी, जहां बर्मे-जॉन्सकी की संकल्पना के अनुसार "संयुक्त राज्य अमरीका के बुनियादी हितों" के लिए खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। तात्त्विक रूप में यह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को कुचलने के लिए एक नया हथियार निकालने की ही बात थी।

अतः रैगन प्रशासन द्वारा सत्ता में आने के साथ प्रतिपादित "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष" का सिद्धांत पूर्ववर्ती प्रशासन की आक्रामक सामरिक-सैनिक संकल्पनाओं का तार्किक सिलसिला ही है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की छब्बीसवीं

कांग्रेस में प्रस्तुत केंद्रीय समिति की रिपोर्ट में इंगित किया गया है कि "मुहिमबाजी और संकीर्ण तथा स्वार्थपरक लक्ष्यों की खातिर मानवजाति के हितों को दांव पर लगा देने की उद्यतता—अधिक आक्रामक साम्राज्यवादी हलकों की नीति में जो भीड़ विशेषकर खुले तौर पर सामने आयी है, वह यही है। राष्ट्रों के अधिकारों और आकांक्षाओं के लिए चरम तिरस्कार का प्रदर्शन करते हुए वे जनसाधारण के मुक्ति संघर्ष को आतंकवाद की तरह से दिखलाने का यत्न कर रहे हैं। उन्होंने सर्वथा असाध्य की सिद्धि करने के लिए—संसार में प्रगतिशील परिवर्तनों के आगे अवरोध खड़ा करने के लिए, जनगण की नियति का फिर से नियामक बनने के लिए—पग उठाया है।"\*

एशियाई, अफ्रीकी तथा लतीनी अमरीकी जनगण के अपनी स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता के लिए न्यायसंगत संघर्ष को ह्वाइट हाउस अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की तरह पेश करने का हठपूर्वक प्रयास कर रहा है। "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष" के गढ़े हुए बहाने की आड़ में अमरीकी साम्राज्यवाद राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर और सर्वोपरि समाजवादोन्मुख देशों पर झुला हमला बोल रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या बहुत समय से विद्वद समुदाय के ध्यान का केंद्रबिंदु रही है। ठेठ

\* सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की छब्बीसवीं कांग्रेस। दस्तावेजें तथा प्रस्ताव', मास्को, नोवोस्ती प्रेस एजेंसी प्रकाशनगृह, १९८१, पृ० २३ (अधेनी में)।

१९३७ में २४ देशों के प्रतिनिधियों ने जेनेवा में आतंकवाद के निवारण तथा उसके लिए दंड के बारे में एक अभिसमय पर हस्ताक्षर किये थे। इस अभिसमय ने अंतर्राष्ट्रीय कानून के इस उसूल की पुनर्पुष्टि की थी, जिसके अनुसार किसी भी राज्य के विरुद्ध लक्षित किसी भी आतंकवादी गतिविधि का निरोध करना प्रत्येक राज्य का कर्तव्य है और अभिसमय के हस्ताक्षर-कर्ताओं ने ऐसी गतिविधि के दोषी व्यक्तियों को दंडित करने का दायित्व लिया था। अभाग्यवश यह अभिसमय प्रचलन में आया ही नहीं।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समस्या पर हाल के समय में संयुक्त राष्ट्र संघ में भी विचार किया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के २७वें अधिवेशन में उस पर विशेषकर विस्तारपूर्वक तथा तेज बहस हुई। पश्चिमी देशों के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय मुक्ति तथा आर्थिक उद्धार के लिए न्यायसंगत संघर्ष को अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के साथ समीकृत करके राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों पर कलंक लगाने का प्रयास किया। अमरीकी प्रतिनिधिमंडल द्वारा अपनायी स्थिति में यह रवैया विशेषकर प्रत्यक्ष था। लेबनान के विरुद्ध इसराएल की नवीनतम आक्रामक कार्रवाइयों और फ़िलिस्तीनी तथा लेबनानी जनगण के प्रति व्यवहृत जनसंहार की नीति के लिए ह्वाइट हाउस के आपराधिक समर्थन में भी यही बात सामने आयी।

लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकांश सदस्यों ने इन प्रयासों की भरसना की। सोवियत संघ तथा

अन्य समाजवादी देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने गुट-निरपेक्ष देशों द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का एकमत समर्थन किया। इस प्रस्ताव का शीर्षक था: "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का निरोधन करने के लिए उपाय, जो निरपराध लोगों को संकट में डालता या उनकी जानें लेता है अथवा मूलभूत स्वतंत्रताओं के लिए खतरा है तथा आतंकवाद और हिंसा की कार्रवाइयों के उन रूपों के आधारभूत कारणों का अध्ययन, जो निर्धनता, कुंठा, शिकायत तथा हताशा में निहित हैं और जो कुछ लोगों को आमूल परिवर्तन लाने के प्रयास में अपने प्राणों सहित लोगों के प्राणों को बलि करने के लिए प्रेरित करते हैं।"

प्रस्ताव के शीर्षक से यही निष्कर्ष निकलता है कि उसके प्रस्तावक आतंकवाद और निश्चित सामाजिक कारणों से जनित हिंसात्मक कार्यों के बीच स्पष्ट सीमांकन करते हैं। प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद की सभी कार्रवाइयों की दृढ़तापूर्वक निंदा और शांति तथा मानवतावादी आदर्शों की खातिर उनके विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता को अपना प्रस्थानबिंदु बनाता है।

अमरीकी सत्ताधारी "अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष" की अपनी अपीलें आम तौर पर सोवियत-विरोधी लहजे में करते हैं। लेकिन हकीकत यही है कि आतंकवाद में हमारे देश के शामिल होने का हर दावा भोंडा और कुटिल इरादों से गढ़ा गया झूठ है। सोवियत संघ अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद सहित आतंकवाद के सिद्धांत और व्यवहार का सिद्धांततः सदा से विरोधी रहा है और विरोधी है।

"अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष" के सिद्धांत की उद्घोषणा ने सी० आई० ए० तथा पैदागान को ससार भर में अपने ध्वंसकार्य को तेज करने के लिए हरी झंडी दिखाता दी। अमरीकी सीनेट की विदेशी मामलों की समिति द्वारा अंगोला में संयुक्त राज्य अमरीका की ध्वंसात्मक कार्रवाइयों पर से पाबंदी उठाने के राष्ट्रपति रैगन के सुभाष के अनुमोदन से अथवा लाओस के विरुद्ध अमरीकी गुप्तचर्या सेवाओं के अब प्रकाश में आये अपराध से, जहाँ वाशिंगटन से अमरीकी प्रतिरक्षा मंत्रालय गुप्तचर्या के उपाध्यक्ष ऐडमिरल जैरी टेटल द्वारा निदेशित कार्रवाई के अंतर्गत जासूसों और तोड़फोड़ करनेवालों के दल भेजे गये थे, सिर्फ यही मतलब निकाला जा सकता है। लेबनान पर इसराएल के पिछले आक्रमण और फ़िलिस्तीनी और लेबनान जनगण के प्रति सियोनवादियों द्वारा अनुसृत जनसंहार की नीति को ह्लाइट हाउस से मिला प्रोत्साहन भी यही प्रमाणित करता है।

सल्वादोर से, जहाँ अमरीकी परामर्शदाता शांति-प्रिय नागरिकों के कत्लेआमों का निदेशन कर रहे हैं, लेकर धार्ड-कंपूचिया सीमा तक, जहाँ अमरीका द्वारा समर्थित पोल पोट के बचे-बूचे गिरोंहों ने शरण ली है, यही सुस्थापित और सुस्पष्ट कार्य-प्रणाली देखने में आती है। संयुक्त राज्य अमरीका की सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी कभी का वह मुख्य केंद्र बनी हुई है, जो अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष-रत जनगण के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का निदेशन कर रहा है।



अंतर्राष्ट्रीय

आतंकवाद

और सी० आई० ए०

यह पुस्तक संयुक्त राज्य  
अमरीका की सी० आई० ए०  
( सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी )  
के आपराधिक कार्य-कलाप पर  
प्रकाश डालती है। अमरीकी  
कापेस के ऊपरी सदन  
( सीनेट ) की एक प्रवर  
समिति द्वारा प्रस्तुत सूचना,  
नाच संबंधी दस्तावेजों और  
मूलपूर्व सी० आई० ए०  
एजेंसियों की आत्मस्वीकृतियों  
के आधार पर सौचित्य  
पत्रकारों और अंतर्राष्ट्रीय  
विषयों के विशेषज्ञों ने  
दक्षिण-पूर्वी एशिया, लातीनी  
अमरीका, मध्य-पूर्व,  
अफ्रीका और पश्चिमी यूरोप  
के देशों में इस बुद्धिवा  
एजेंसी की ज्वंसात्मक-  
ज्यवस्वाभंजक कार्रवाइयों  
का वर्णन किया है।

किये गये एक वक्तव्य में कहा  
ए० स्वतंत्र अफ्रीकी देशों में  
से दक्षिण अफ्रीकी गणराज्य  
दस्यु-दलों के मुख्य अड्डे की  
यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि  
अफ्रीकी गणराज्य साम्राज्य  
नीति का मुख्य उपकरण

मोजांबीक में सी० आ  
के रहस्योद्घाटन ने वाशिंगटन  
अमरीकी प्रशासन ने जासूस  
अस्वीकार करते हुए और  
के उद्देश्य से उसे खाद्य पदार्थ  
तरह की सहायता के निमित्त

मोजांबीक के विदेश मंत्रालय  
इस अमरीकी निर्णय को  
आर्थिक युद्ध का अभिलक्ष्य  
ने मोजांबीक लोक गणराज्य  
आई० ए० पर हाथ उठाने का  
लागू करने का निर्णय कि  
से ले लिया। ये निश्चय कदाचित्त  
को सिर्फ कुछ ही दिन लगे  
दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ  
जाना रोकने के लिए संयुक्त  
सभी कुछ किया है और कि

मोजांबीक में सी० आ  
अभी कुछ ही महीने हुए थे